अलेक्सांद्र बेल्यायेव

एक था जलथलिया

साहसिक और वैज्ञानिक
गल्प माला

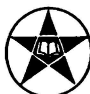
रादुगा प्रकाशन में 'साहसिक और वैज्ञानिक गल्प माला' की पुस्तकों में से प्रकाशित हो चुकी हैं: अ० तोलस्तोय 'चार दिन की चांदनी', अ० तोलस्तोय 'अएलीता'।

अलेक्सांद्र बेल्यायेव

एक था जलथलिया


रादुगा प्रकाशन
मास्को


पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५


राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवाद: भीष्म साहनी
संपादन: संगम लाल मालवीय
डिज़ाइन: आल्ला स्योमा

Александр Беляев
ЧЕЛОВЕК-АМФИБИЯ
Роман
На хинди

Alexander Belyaev
THE AMPHIBIAN
A novel
In Hindi

पहला संस्करण 1964

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-002408-0

अनुक्रम

भाग 1

भाग 2

भाग 3

भाग 1

'समुद्री दैत्य'

समुद्र पर अर्जेन्टीना की गर्मियों की घुटन भरी रात घिर आयी। गहरे बैंगनी रंग के आकाश में तारे छिटक आये। दो मस्तूलोंवाला जहाज़ 'जेलीफ़िश' चुपचाप लंगर डाले पड़ा था। उसके आस-पास न तो पानी का छपाका उठ रहा था, न मस्तूलों की चरचराहट ही सुनाई दे रही थी। लगता था जैसे जहाज़ और सागर गहरी नींद में सोये हुए हैं।

समुद्र के तल पर से मोती निकालनेवाले ग़ोताख़ोर अधनंगे, पांव फैलाये, डेक पर सोये पड़े थे। दिन भर चिलचिलाती धूप में काम करने के कारण वे थककर चूर हो चुके थे और दुःस्वप्नों से भरी नींद में बार-बार करवटें बदलते, कराहते थे। उनके हाथ-पैर हिलते, ऐंठते,—शायद नींद में वे अपने जानी दुश्मनों—शार्क-मछलियों से—पिण्ड छुड़ाने के लिए उनके साथ जूझ रहे थे। कुछ दिनों से मौसम में तपिश और घुटन चली आ रही थी जिसके कारण लोग इतने ज़्यादा थक

जाते थे कि दिन के काम के बाद नावों को जहाज़ के ऊपर भी नहीं चढ़ा पाते थे। यों, इसकी ज़रूरत भी नहीं जान पड़ती थी क्योंकि मौसम बदलने का कहीं कोई लक्षण नहीं नज़र आ रहा था। इसलिए रात को नावों को लंगर की ज़ंजीर के साथ बांधकर पानी की सतह पर ही छोड़ दिया गया था। किसी को ख़्याल नहीं आया कि मस्तूलों की रस्सियां कस दी जायें या छोटे तिकोनिया बादबान को लपेट दिया जाये, जो हवा का तनिक सा झोंका आने पर भी फड़फड़ाने लगता था। जहाज़ के अग्र भाग में खड़े खम्भे से लेकर जहाज़ के पिछले हिस्से के डंडहरे तक, जहाज़ में ढेरों मोतियों के सीप, मूंगे, ग़ोताख़ोरी के रस्से, किरमिच के थैले, जिनमें सीप भरे जाते थे, और ख़ाली पीपे लुढ़के पड़े थे।

पिछले मस्तूल के पास पानी का एक बड़ा-सा पीपा रखा था, जिसके साथ ज़ंजीर से बंधा पानी पीने का लोटा रखा था। पीपे के आस-पास का डेक पानी गिरने के कारण काला-सा दिख रहा था।

बीच-बीच में कोई ग़ोताख़ोर नींद की ख़ुमारी में उठता, दूसरे सोए हुए ग़ोताख़ोरों पर गिरता-पड़ता और लड़खड़ाता हुआ पानी के पीपे के पास जाता। बिना आंखें खोले वह लोटा भर पानी चढ़ाता, और लौटते हुए कहीं भी पड़ जाता, मानो उसने पानी नहीं शुद्ध मद्यसार पिया हो। ग़ोताख़ोरों को सारा वक़्त प्यास सताती रहती: वे सुबह का खाना नहीं खाते थे, क्योंकि जल के आन्तरिक दबाव के कारण भरे पेट से ग़ोता लगाना ख़तरनाक होता है, इसलिए वे बिना कुछ खाये दिन भर काम करते, उस वक़्त तक जब पानी के नीचे अन्धेरा छा जाता। वे रात को सोने से पहले भोजन किया करते थे और वह भोजन नमकीन मांस का हुआ करता था।

जहाज़ के मालिक और कप्तान पेद्रो ज़ुरीता का

मुख्य सहायक रेड इण्डियन बाल्तासार रात का पहरा दे रहा था।

अपने ज़माने में मोती निकालनेवाले शानदार ग़ोताख़ोर के नाते बाल्तासार की ख्याति दूर दूर तक फैली थी। वह पानी के नीचे नव्वे सेकंड तक, यहां तक कि सौ सेकंड तक भी ठहर सकता था, जो औसत ग़ोताख़ोर की तुलना में लगभग दुगना था।

"हम यह कैसे कर पाते थे? मेरे ज़माने में वे ग़ोताख़ोरों की सिखलाई करना जानते थे और बचपन से ही सिखलाई शुरू कर देते थे," बाल्तासार नौजवान ग़ोताख़ोरों से कहा करता। "मैं अभी कोई दस साल का ही था कि मेरा बाप मुझे खोज़े के पास ले गया, जो एक छोटे प्रशिक्षण-जहाज़ का मालिक था। वहां हम बारह लोग थे, सभी मुझ जैसे छोकरे थे। उसका सिखलाई का ढंग यह था: वह पानी में सफ़ेद रंग का कंकड़ या सीप फेंक देता और हममें से किसी एक को कहता कि ग़ोता लगाकर उसे निकाल लाओ। हर बार वह कोई ज़्यादा गहरी जगह ढूंढ़ लेता। अगर हममें से कोई लड़का ख़ाली हाथ लौटता तो खोज़े उसे दो-एक हन्टर रसीद करता और फिर एक बार कोशिश करने के लिए उसे पानी में धकेल देता। यह ढंग कारगर होता था। फिर वह हमें ज़्यादा देर तक पानी के नीचे रहना सिखाने लगा। एक सधा हुआ ग़ोताख़ोर पानी के नीचे जाता और कोई टोकरी या जाल का टुकड़ा लंगर की ज़ंजीर के साथ बांध आता। फिर हम गांठें खोलने के लिए ग़ोते लगाते। जब तक सभी गांठें न खोल डालें हमें पानी की सतह पर आने की इजाज़त नहीं होती थी। अगर हम बिना गांठें खोले ऊपर चले आते तो हम पर फिर हन्टर पड़ने लगते।

"हमारी कितनी पिटाई होती थी! हर कोई उसे बरदाश्त नहीं कर पाता था। पर इसने मुझे ग़ोताख़ोर बना दिया,

और वह भी ज़िले भर में सबसे बढ़िया। इससे मैंने पैसे भी अच्छे कमाये।"

फिर वक़्त आया जब बाल्तासार को ग़ोताख़ोरी का जोखिम भरा काम छोड़ना पड़ा। अब वह जवान नहीं था, उसकी बायीं टांग पर शार्क-मछली के दांत भयानक चिन्ह छोड़ गये थे और कमर पर लंगर की ज़ंजीर के निशान थे। उसने ब्वेनस-ऐरीज़ में एक छोटी सी दूकान खोल ली और मोतियों, मूंगों, सीपों और समुद्र की दुर्लभ वस्तुओं का व्यापार करने लगा। पर तट की ज़िन्दगी से वह ऊब उठा; उसने निश्चय किया कि कभी-कभार हवा-बदली करनी चाहिए और इस तरह ग़ोताख़ोरों के साथ समुद्र में निकल पड़ा। उसे विश्वास था कि वह जहां जायेगा उसका स्वागत किया जायेगा, क्योंकि रियो-दि-ला-प्लाता की खाड़ी और उसके मोती-गाहों के बारे में किसी को भी उससे बेहतर जानकारी नहीं थी। ग़ोताख़ोर उसे बड़ा मानते थे। सभी उसका स्वागत करते—ग़ोताख़ोर और मालिक, वह सभी को ख़ुश करना जानता था।

नौजवान ग़ोताख़ोरों को वह अपने धन्धे के भेद बताया करता, किस तरह पानी के नीचे दम साधा जाता है और शार्क-मछलियों के हमलों का कैसे सामना किया जाता है, और जब वह बतियाने के मूड में होता तो यह भी बता देता कि किस तरह कोई बढ़िया मोती मालिक की नज़र से बचाकर उड़ा लिया जाता है।

मालिक उसकी क़द्र इसलिए करते थे कि वह एक ही नज़र से मोतियों को कोटि के अनुसार अलग-अलग करने और सबसे बढ़िया मोतियों का मूल्य आंकने में किया करता था।

बाल्तासार उलटा कर रखे हुए एक पीपे पर बैठा था और मज़े से मोटा-सा सिगार पी रहा था। मस्तूल पर टंगी लालटेन की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। चेहरा लम्बोतरा था, नाक बढ़िया तराश की, आंखें बड़ी बड़ी

और सुन्दर—एक आराउकाना-इण्डियन का चेहरा था। बाल्तासार ऊंघ रहा था। उसकी आंखें भले ही सो रही हों, पर उसके कान जाग रहे थे और गहरी से गहरी नींद में भी उसे सावधान कर देते थे। ग़ोताख़ोरों के आहें भरने और बुदबुदाने के अलावा कोई शब्द सुनाई नहीं दे रहा था। किनारे की ओर से मोतियों के सीप की सड़ांध आ रही थी। यह भी काम का ही एक हिस्सा था: सीप के अन्दर कीड़ा मर जाये तो सीप ज़्यादा आसानी से खुलता है। जो बदबू एक अनभ्यस्त नाक के लिए परेशान करनेवाली होती, वही बाल्तासार की नाक के लिए लगभग ख़ुशबू के समान होती थी। उस सागर-सैलानी के लिए इसका मतलब था समुद्री जीवन की सभी ख़ुशियां और सभी जोखिम।

मोती निकाल चुकने के बाद सबसे बड़े सीपों को 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर लाया जाता था। ज़ुरीता ने कोई कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं कि किसी चीज़ को भी ज़ाया जाने देता। सीपों को वह एक फ़ैक्टरी में बेच दिया करता था, जिनसे वहां बटन और स्टड बनाये जाते थे।

बाल्तासार सो रहा था। उसकी उंगलियों के बीच से सिगार फिसलकर गिर गया था। उसकी ठुड्डी छाती पर टिक गई थी।

अचानक दूर समुद्र में से एक आवाज़ उसकी नींद में विघ्न डालती हुई आयी। फिर वह ज़्यादा नज़दीक आने लगी। बाल्तासार ने आंखें खोलीं। वही आवाज़ फिर एक बार आयी, जैसे नरसिंघा बजाया गया हो और उसके बाद किसी तरुण मानवीय कण्ठ की आह्लाद भरी गूंज सुनाई दी, जो कुछ देर के बाद पहले से ज़्यादा ऊंचे स्वर में दोहरायी गयी।

नरसिंघे की यह आवाज़ जहाज़ी भोंपू की तीखी आवाज़ के साथ बिल्कुल नहीं मिलती थी, और न ही वह आह्लाद भरी आवाज़ किसी डूबते आदमी की चिल्लाहट से मिलती

थी। वास्तव में वह किसी भी चीज़ की आवाज़ से मेल नहीं खाती थी जिसके बारे में बाल्तासार सोच सकता हो। वह उठ खड़ा हुआ। लगता था जैसे उसकी नींद को हवा उड़ा ले गयी है। वह डंडहरे के पास गया और अंधेरे में झांक-झांककर देखने लगा। चारों ओर नीरवता का साम्राज्य था। न तो उसकी आंखों को और न ही उसके कानों को किसी बात का पता चल पाया। बाल्तासार ने पांव से ठोंसा देकर एक रेड इण्डियन को जगा दिया जो डेक पर पड़ा सो रहा था।

"मैंने एक आवाज़ सुनी है। ज़रूर उसी की आवाज़ होगी," उसने धीमे-से ग़ोताख़ोर से कहा।

"मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं देता," गुरोना-इण्डियन ने, जो अब घुटनों के बल बैठा बड़े ध्यान से सुन रहा था, उतनी ही धीमी आवाज़ में जवाब दिया। सहसा वही नरसिंघा बज उठा और वही गूंज बोझल सन्नाटे को बेधती हुई सुनाई दी।

गुरोना सिकुड़कर बैठ गया, मानो किसी ने उसकी पीठ पर कोड़ा दे मारा हो।

"हां, वही है," उसने कहा, उसके दांत डर के मारे कटकटाने लगे थे।

अन्य ग़ोताख़ोर भी जग गये। वे लालटेन की रोशनी के घेरे की ओर खिसकते हुए जाने लगे, मानो भयावह अन्धेरे से बचने के लिए रोशनी की उस पीली किरण में आश्रय खोज रहे हों। वहां वे एक दूसरे के साथ सिमटकर कूल्हों के बल बैठ गये और कान लगाकर सुनने लगे। नरसिंघे की आवाज़ और वही ध्वनि फिर एक बार बहुत दूर से आयी और उसके बाद सुनाई नहीं दी।

"वही है..."

"समुद्री दैत्य," ग़ोताख़ोर एक दूसरे को फुसफुसाकर कह रहे थे।

"हमें यहां से फ़ौरन निकल जाना चाहिए!"

"इसके मुक़ाबले में शार्क-मछली तो बिल्ली के बच्चे के बराबर है!"

"आओ, मालिक से बात करें!"

नंगे पैरों की आहट सुनाई दी। जम्हाइयां लेता और बालों से भरी अपनी छाती को खुजलाता हुआ पेद्रो ज़ुरीता डेक पर आया। बदन पर उसने केवल किरमिच की पतलून पहन रखी थी; चौड़ी-सी पेटी पर रिवाल्वर लटक रहा था। ज़ुरीता ग़ोताख़ोरों के पास गया। लालटेन की रोशनी में उसका सूर्य की किरणों से झुलसा, उनींदा-सा चेहरा दिखाई पड़ा। मोटे-मोटे बालों की कुछेक लटें छूट कर माथे पर लटक आये थे, काली भवें, घनी, ऊपर उठी हुई मूंछें और छोटी सी दाढ़ी थी, जिसके बाल कुछ-कुछ सफ़ेद हो चुके थे।

"क्या बात है?"

आत्म-विश्वास से भरी उसकी रूखी-सी आवाज़ और निश्चिंत गति से ग़ोताख़ोर शान्त हो गये।

वे सब एक साथ बोलने लगे।

उन्हें चुप कराने के लिए बाल्तासार ने अपना हाथ उठाया।

"हमने उसकी... 'समुद्री दैत्य' की आवाज़ सुनी है," थोड़ी देर के लिए फिर से शान्ति हो जाने पर उसने कहा।

"तुमने सपना देखा होगा," पेद्रो ने उनींदी आवाज़ में कहा।

"नहीं, यह सपना नहीं था। हम सभी ने उसके नरसिंघे की आवाज़ सुनी है!" ग़ोताख़ोरों ने चिल्लाकर कहा।

फिर एक बार बाल्तासार ने हाथ हिलाकर उन्हें चुप कराया।

"मैंने अपने कानों से नरसिंघे की आवाज़ सुनी है। उसके अलावा समुद्र में कोई भी जीव नरसिंघा नहीं बजा सकता। हमें फ़ौरन यहां से वक़्त ज़ाया किये बिना निकल जाना चाहिए।"

"मन-गढ़न्त क़िस्से हैं," पेद्रो ज़ुरीता ने कहा। उसे यह विचार पसन्द नहीं आया कि वे लोग मोती निकालने की इस जगह से रवाना हो जायें और जहाज़ पर वे सभी सीप लादें जो किनारे पर पड़े बदबू छोड़ रहे थे और जो अभी तक इस स्थिति में नहीं थे कि उन्हें खोला जाये। लेकिन ग़ोताख़ोरों को यहां बने रहने के लिए समझाने की कोशिश करना दीवार के साथ सिर फोड़ने के बराबर था। वे विरोध में चिल्लाने और बाज़ू झटकने लगे और धमकियां देने लगे कि अगर ज़ुरीता ने लंगर नहीं उठाया तो वे जहाज़ छोड़कर पैदल ब्वेनस-ऐरीज़ चले जायेंगे।

"भाड़ में जाओ तुम और 'समुद्री दैत्य'!" उसने अन्त में कहा। "तुम जीते। पौ फटने पर हम लंगर उठा देंगे।" और बड़बड़ाता, गालियां बकता हुआ वह नीचे चला गया।

उसकी नींद ग़ायब हो चुकी थी। लैम्प जलाकर उसने सिगार सुलगाया और अपने छोटे-से केबिन में इधर-उधर टहलने लगा। उसका ध्यान उस रहस्यपूर्ण जीव की ओर गया जो कुछ समय से खाड़ी के इस भाग में, जहां वे काम कर रहे थे, मण्डराने और मछुओं तथा तटवर्ती गांवों के लोगों को भयाकुल करने लगा था।

अभी तक किसी ने भी इस विचित्र जीव को नहीं देखा था, मगर वह अब तक कई बार अपने बारे में याद दिला चुका था।

नाविक और मछुए उसके क़िस्से सुनाते, और बार बार सिर घुमाकर पीछे की ओर देखते, मानो उन्हें इस बात का डर हो कि 'समुद्री दैत्य' की चर्चा करने पर वह कहीं पहुंच ही न जाये।

कहा जाता था कि इस जीव ने कुछ लोगों की मदद की थी और कुछ को नुक़सान पहुंचाया था।

"यह समुद्र का देवता है," बड़ी उम्र के रेड इण्डियन कहते, "वह हज़ार साल में एक बार पृथ्वी पर न्याय की पुनर्स्थापना करने के लिए महासागर में से निकलता है।"

कैथोलिक पादरी अपने अन्धविश्वासी स्पेनी मतानुयाइयों को धर्म की शरण लेने का आह्वान करते, यह कहते हुए कि 'समुद्री दैत्य' के रूप में ख़ुदा का क़हर नाज़िल हो रहा है, क्योंकि उन्होंने पवित्र कैथोलिक धर्म की उपेक्षा की है।

अफ़वाहें फैलती गयीं और आख़िर ब्वेनस-ऐरीज़ तक जा पहुंचीं। सनसनीख़ेज़ ख़बरों के भूखे अख़बारों में हफ़्तों तक 'समुद्री दैत्य' सुर्ख़ियों का विषय बना रहा। किसी जहाज़ या मछलीमार नाव के अज्ञात परिस्थितियों में डूब जाने, या जालों के ख़राब हो जाने अथवा फांसी हुई मछलियों के चोरी हो जाने को 'समुद्री दैत्य' की करतूत बताया जाता। लेकिन साथ ही कुछ और कहानियां भी सुनने में आती थीं—मछलीमार नावों में बड़ी-बड़ी मछलियां बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से रखी पायी गयी थीं, या लोगों को डूबने से बचाया गया था।

इनमें से कम से कम एक व्यक्ति ने तो क़सम खाकर कहा कि जब वह आख़िरी बार पानी में नीचे डूब रहा था तो किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया और बड़ी तेज़ी से किनारे की ओर ले जाने लगा और फिर ऐन तट पर उसे पहुंचा दिया; और जब लड़खड़ाते हुए अपने पांव पर खड़े होकर उसने पीछे की ओर देखा तो वह उसी क्षण लहरों के पीछे ग़ायब हो गया था।

किसी ने 'समुद्री दैत्य' को नहीं देखा था, या यों कहें कि किसी के बारे में भी विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता था कि उसने 'समुद्री दैत्य' को देखा है। बेशक कुछेक ऐसे लोग थे जो भगवान को हाज़िर-नाज़िर मान कर कहते कि उस जीव के सिर पर सींग लगे हैं, और उसकी बकरेनुमा दाढ़ी, शेर की सी टांगें, मछली की सी पूंछ है या उसकी व्याख्या एक प्रकार के मेंढ़क के रूप में करते जिसकी टांगों की बनावट इनसान की टांगों जैसी है।

शुरू में अधिकारियों ने इन सभी अफ़वाहों और अख़बारी लेखों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, यह आशा करते हुए

कि सभी अख़बारी सनसनीखेज़ ख़बरों की तरह यह ख़बर भी ठण्डी पड़ जायेगी। लेकिन अफ़वाहों ने आशंका को जन्म दिया और आशंका ने त्रास को, विशेष रूप से मछुओं के बीच। मछुए समुद्र में अपनी नावें ले जाने से डरने लगे, मछलियों की पकड़ाई कम होने लगी। ब्वेनस-ऐरीज़ में मछलियों का तोड़ा पड़ गया। अधिकारियों ने निश्चय किया कि अब हस्तक्षेप करने का वक़्त आ गया है। तट की रखवाली करनेवाली मोटर-बोटों और पुलिस की नावों का एक दस्ता तैयार किया गया और उसे हुक्म दिया गया कि "उस अज्ञात व्यक्ति को हिरासत में ले लें जो तटवासियों में भय और त्रास का कारण बना हुआ है।"

दो सप्ताह तक खोजी-दस्ता रियो-दि-ला-प्लाता की खाड़ी और समुद्र-तट को छानता रहा, लेकिन कुछेक ऐसे रेड इण्डियनों को छोड़कर उसके हाथ कुछ नहीं लगा जिन्हें उसने ऐसी अफ़वाहें फैलाने के लिए हिरासत में ले लिया था जो आशंका और त्रास का कारण बन सकती थीं।

पुलिस के चीफ़ ने अधिकृत रूप से इस आशय की घोषणा जारी की कि 'दैत्य' केवल अज्ञानी लोगों द्वारा फैलायी गयी अफ़वाहों में ही पाया जाता है, और ऐसे लोगों को पहले से हिरासत में ले लिया गया है और उन्हें यथोचित सज़ा दी जानेवाली है। उसने मछुओं को सावधान किया कि वे इन अफ़वाहों पर विश्वास न करें और अपना धन्धा जारी रखें।

कुछ समय के लिए तो इससे मदद मिली लेकिन ज़्यादा समय के लिए नहीं: शीघ्र ही 'दैत्य' अपने नये हथकण्डों पर उतर आया।

गहरी रात गये बकरी के किसी बच्चे का मिमियाना सुनकर कुछेक मछुओं की नींद टूटी; केवल जादूवश ही यह बकरी का बच्चा जहाज़ में आ सकता था, जबकि नाव तट से काफ़ी दूर थी। अन्य मछुओं ने समुद्र में से अपने जाल

खींचे तो क्या देखते हैं कि उन्हें काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है।

'दैत्य' के पुन: प्रगट होने पर अखबार खुशी से फूले नहीं समाये, और अब वैज्ञानिकों की राय के लिए बावेला मचाने लगे। उन्हें देर तक इन्तज़ार भी नहीं करना पड़ा।

वैज्ञानिकों का दावा था कि महासागर के उस भाग में बुद्धिसंगत कार्रवाइयां करनेवाला कोई भी ऐसा समुद्री जीव नहीं हो सकता, जिसकी जानकारी विज्ञान को न हो। उन्होंने यह भी कहा कि "जहां तक महासागर के अधिक गहरे स्थलों का सवाल है, जिनकी अभी तक गहरी छानबीन नहीं हुई है, तो यह दूसरी बात है", हालांकि उन्होंने इस बात से भी इनकार किया कि कोई जीव मानव जैसी कार्रवाइयां कर सकता है। उनकी राय पुलिस-चीफ़ की राय से मिलती-जुलती थी, कि इस सारी बात की तह में किसी मसखरे का हाथ है।

लेकिन सभी वैज्ञानिकों की यह राय नहीं थी। अपने तर्कों में कुछ वैज्ञानिक विश्व-विख्यात प्रकृतिशास्त्री कोनरड हैसनर* का हवाला देते थे जो समुद्री अप्सरा, समुद्री दैत्य, समुद्री साधु और समुद्री लाट पादरी के विवरण छोड़ गये हैं।

"क़िस्सा यह है कि प्राचीन और मध्ययुगीन वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित बहुत-सी बातें सच साबित हुई हैं, बावजूद इस बात के कि आधुनिक विज्ञान उनकी खिल्ली उड़ाते हुए उनकी हस्ती को मिटाने की कोशिश करता रहा है। दैवी सृष्टि सचमुच अक्षय है, और अन्य लोगों की तुलना में हम वैज्ञानिकों का यह कर्तव्य है कि अपने निष्कर्षों के बारे

---

* कोनरड हैसनर—सोलहवीं शताब्दी के स्वीट्ज़रलैंड के वैज्ञानिक। उन्होंने 'पशुओं का इतिहास' नामक पुस्तक लिखी जो दीर्घकाल तक प्रकृतिशास्त्रियों को अत्यंत प्रभावित किये रही।—ले०

2—1536

में कुछ विनम्रता और सावधानी से काम लें," कुछ वृद्ध वैज्ञानिकों ने लिखा।

प्रकटत: ये आखिरी लोग विज्ञान की तुलना में धर्म में अधिक विश्वास रखते थे और उनके व्याख्यान धर्मोपदेशों से ज़्यादा मिलते-जुलते थे।

अन्त में विद्वानों के इस झगड़े का फ़ैसला करने के लिए एक वैज्ञानिक अभियान साज़-सामान से लैस करके भेजा गया।

अभियान के सदस्यों को कोई 'दैत्य' नहीं मिला लेकिन उन्हें "अज्ञात व्यक्ति" के कारनामों के बारे में बहुत कुछ पता चला (अभियान के बुज़ुर्ग सदस्य इसरार करते थे कि "व्यक्ति" शब्द के स्थान पर "जीव" शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए)।

अख़बारों में अभियान की रिपोर्ट प्रकाशित की गयी, जिसमें लिखा था:

"1. अनेक स्थानों पर, जिनकी हमने जांच की है, तटवर्ती रेत पर हमें पैरों के निशान मिले जो स्पष्टत: मानवीय आकार के थे। इनका रुख़ समुद्र से तट की ओर और तट से समुद्र की ओर था। लेकिन ऐसे पद-चिन्ह नावों पर आने-जानेवाले लोगों द्वारा भी छोड़े जा सकते हैं।

"2. जिन जालों की हमने जांच की उन पर ऐसे कटन पाये गये थे जैसे तेज़ औज़ारों द्वारा पहुंचाये जाते हैं। संभव है जल-मग्न नुकीली चट्टानों या ध्वस्त जहाज़ों के अवशेषों में मुड़े हुए धातु के टुकड़ों पर जाल फंस गये हों।

"3. कुछ लोगों की यह गवाही है: एक दिन तूफ़ान के कारण एक डालफ़िन मछली पानी से काफ़ी दूर तट से जा लगी और किसी ने—जिसके पद-चिन्ह नाख़ूनोंवाले पद-चिन्हों से मिलते-जुलते थे—उसे खींचकर वापस समुद्र में डाल दिया था। प्रकटत: किसी नेकदिल मछुए ने डालफ़िन मछली को जल में फिर से छोड़ा था।

डालफ़िन मछलियों के प्रति मछुओं की दयालुता की यही

एकमात्र मिसाल नहीं है क्योंकि सर्वविदित है कि मछलियों का पीछा करते हुए डालफ़िन मछलियां मछुओं की इस बात में मदद करती हैं कि वे मछलियों को समुद्र-तट के समीप छिछले पानी में ले आती हैं। जहां तक नाखूनोंवाले पद-चिन्हों का सम्बन्ध है तो वे गवाहों की कल्पना की उपज हो सकते हैं।

"4. मेमने को, संभव है, कोई मसखरा चुपके से नाव पर लाया हो और जहाज़ पर छोड़ गया हो।"

'दैत्य' के कारनामों को व्याख्या द्वारा निःसार बनाने की चेष्टा में वैज्ञानिकों के पास कहने को और भी बहुत कुछ था। उन्हें विश्वास था कि वे काम कोई भी समुद्री जीव नहीं कर सकते थे।

परन्तु वैज्ञानिकों की व्याख्याओं से हर किसी को सन्तोष नहीं हुआ। कुछेक वैज्ञानिकों को भी वे अपर्याप्त जान पड़ती थीं। कोई भी मसखरा—वह कितना भी साधन-सम्पन्न और चतुर क्यों न हो—इतनी देर तक अपना अता-पता कैसे छिपाये रह सकता है? तिस पर भी जिस चीज़ ने सारी बात को सचमुच आश्चर्यजनक बना दिया था, वह यह थी कि अभियान की खोजों के अनुसार—प्रसंगवश उन्हें रिपोर्ट में शामिल नहीं किया गया था—'दैत्य' अपने कौतुक समय के थोड़े-थोड़े अन्तर पर ऐसे स्थानों पर कर दिखाता था जो एक दूसरे से बहुत दूरी पर स्थित होते थे। या तो 'दैत्य' बेहद तेज़ रफ़्तार से एक जगह से दूसरी जगह तैर कर जा सकता था, या फिर एक नहीं, अनेक 'दैत्य' काम कर रहे थे। इस स्थिति में किसी मसखरे का विचार गले से नहीं उतरता था।

अपने केबिन में टहलते हुए पेद्रो ज़ुरीता के मन में यही विचार चक्कर काट रहे थे।

पौ फटी—ज़ुरीता ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया—और उसके साथ गुलाबी रोशनी की एक किरण

खिड़की में से अन्दर सरक आयी। पेद्रो ने लैम्प बुझा दिया और हाथ-मुंह धोने लगा।

उसने सिर पर गुनगुना पानी डाला ही था कि डेक पर से ख़तरे की चिल्लाहट सुनायी दी। बिना पूरी तरह से हाथ-मुंह धोये वह जल्दी से डेक की ओर जानेवाली सीढ़ी पर चढ़ने लगा।

ग़ोताख़ोर समुद्र की दिशा में लगे जहाज़ के डण्डहरे पर झुके हुए शोर-गुल के बीच हाथों से इशारे कर रहे थे। पेद्रो ने झांककर नीचे की ओर देखा। किश्तियां उस जगह पर नहीं थीं, जहां पिछली रात को बांधी गयी थीं। रात के वक़्त किनारे से बहनेवाली हवा में किश्तियां किसी तरह बहती हुई दूर चली गयी थीं। अब सुबह की हवा उन्हें धीरे धीरे किनारे की ओर ला रही थी। उनके चप्पू खाड़ी भर में बिखरे हुए पानी की सतह पर तैर रहे थे।

ज़ुरीता ने किश्तियों को इकट्ठा करने के लिए ग़ोताख़ोरों को हुक्म दिया। कोई भी अपनी जगह से नहीं हिला। ज़ुरीता ने अपना हुक्म दोहराया।

"तुम ख़ुद जाकर 'दैत्य' के साथ क़िस्मत-आज़माई क्यों नहीं करते?" किसी ने कहा।

ज़ुरीता ने एक हाथ पिस्तौल पर रखा। ज़ुरीता की ओर शत्रुता से घूरते हुए ग़ोताख़ोर पीछे हट गये और मस्तूल से जा लगे। लगता था जैसे आज मामला आर या पार लग कर रहेगा। फिर बाल्तासार ने बीच में क़दम रखा।

"आराउकाना को दुनिया की कोई चीज़ नहीं डरा सकती," उसने कहा। "शार्क-मछली को मेरा बूढ़ा शरीर पसन्द नहीं आया, और 'समुद्री दैत्य' को भी पसन्द नहीं आयेगा।" उसने बाज़ू ऊपर को उठाये, पानी में ग़ोता लगाया और तैरता हुआ किश्तियों की ओर जाने लगा। ग़ोताख़ोर फिर डण्डहरे से झुक-झुककर बड़े त्रास के साथ बाल्तासार को आगे बढ़ते हुए देखने लगे। उम्र और ज़ख़्मी टांग की रुकावट के बावजूद वह मछली की तरह तैरता जा

रहा था। कुछेक बार ही ज़ोर से हाथ चलाने के बाद वह एक किश्ती के सामने पहुंच गया। उसने एक तैरते चप्पू को पकड़ा और किश्ती पर चढ़ गया।

"नाव को बांधने वाली रस्सी चाक़ू से काट दी गयी है," उसने चिल्लाकर कहा। "बड़ी सफ़ाई से काटी गयी है—रेज़र से भी इतनी अच्छी तरह नहीं काटी जा सकती।"

बाल्तासार को सही-सलामत देखकर कुछेक और ग़ोताखोरों ने भी उसका अनुसरण किया।

डालफ़िन की सवारी

सूरज अभी-अभी निकला था लेकिन फिर भी तपिश बहुत ज़्यादा थी। आकाश में बादलों का नाम-निशान नहीं था, समुद्र में कहीं हल्की सी लहर तक नहीं उठ रही थी। 'जेलीफ़िश' जहाज़ ब्वेनस-ऐरीज़ से कोई बीस किलोमीटर दक्षिण की ओर रहा होगा जब बाल्तासार के परामर्श पर एक छोटी-सी खाड़ी में लंगर डाल दिया गया, एक ऐसे तट के निकट जो दो चट्टानी परतों के रूप में सीधा पानी में से उठ आया था।

किश्तियां सारी खाड़ी पर छितर गयीं। प्रत्येक में दो ग़ोताख़ोर थे, जो बारी-बारी से ग़ोता लगाते और एक दूसरे को ऊपर खींचते थे।

तट के सबसे निकटवाली नाव में ग़ोताख़ोर ने रस्सी से बंधे मूंगे के बड़े से टुकड़े को टांगों के बीच दबाया और तेज़ी से समुद्र के तल की ओर जाने लगा।

पानी गुनगुना था और इतना साफ़ कि समुद्र-तल पर पड़े

कंकड़ भी गिने जा सकते थे। तट के निकट मूंगे इस तरह उठ रहे थे जैसे किसी जल-मग्न बाग़ की शिलीभूत झाड़ियां हों। चांदी जैसे सफ़ेद बदन वाली छोटी-छोटी मछलियां झिलमिलाती हुई झाड़ियों के बीच आ-जा रही थीं।

ग़ोताख़ोर समुद्र-तल पर दबक कर बैठ गया, और तेज़ी से सीपों को उठा उठाकर चमड़े की पेटी के साथ बन्धे छोटे-से थैले में डालने लगा। उसका गुरोना-इण्डियन साथी ग़ोताज़नी की रस्सी का दूसरा सिरा पकड़े था और ग़ोताख़ोर को ज़्यादा अच्छी तरह से देख पाने के लिए किश्ती के किनारे पर सिर और कन्धे झुकाये बैठा था।

उसके देखते ही देखते सहसा ग़ोताख़ोर उछला और रस्सी को पकड़कर इस ज़ोर से झटका दिया कि गुरोना पानी में गिरते-गिरते बचा। किश्ती हिल उठी। रेड इण्डियन जल्दी से रस्सी खींचने लगा। शीघ्र ही वह अपने ग़ोताख़ोर साथी की—जिसका सांस फूल रहा था—किश्ती पर चढ़ने में मदद करने लगा। ग़ोताख़ोर की आंखों की पुतलियां फैल गयी थीं और सांवला चेहरा राख जैसा हो गया था।

"क्या शार्क-मछली थी?"

लेकिन जवाब देने के लिए ग़ोताख़ोर के पास अभी काफ़ी दम नहीं था। वह नाव में गिर पड़ा।

क्या चीज़ हो सकती थी जिसने उसे इस बुरी तरह से डरा दिया था? ज़्यादा अच्छी तरह से देख पाने के लिए गुरोना पानी की ओर अधिक नीचे झुक गया। नीचे समुद्र-तल पर सचमुच कोई गड़बड़ी हुई थी। छोटी मछलियां तेज़ी से जल-मग्न जंगल के झुरमुटों में पनाह लेने के लिए भागती जा रही थीं, वैसे ही जैसे बाज़ को देखकर पक्षी भागने लगते हैं।

फिर उसने देखा: जल-मग्न चट्टान के पीछे से बैंगनी रंग का धुएं का बादल उभरकर सामने आया। ज्यों ज्यों बादल बड़ा होता जाता, पानी का रंग गुलाबी-सा होता जाता। फिर चट्टान के पीछे से किसी का अन्धियारा आकार आधा

प्रगट हुआ, धीरे-से मुड़ा और फिर चट्टान के पीछे ग़ायब हो गया। वह शार्क-मछली थी और बैंगनी रंग का बादल ख़ून था, जो समुद्र-तल पर बहाया गया था। वहां नीचे कौन-सी घटना घट सकती थी? गुरोना ने अपने साथी की ओर देखा। लेकिन वह जवाब देने की स्थिति में नहीं था: पीठ के बल लेटा हुआ वह मुंह खोले एक एक सांस के लिए हांफ रहा था और भावशून्य आंखों से आकाश की ओर देखे जा रहा था। उसे सीधे 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर पहुंचाना एकदम ज़रूरी हो गया था।

आख़िर ग़ोताख़ोर को होश आया, मगर वह बोल नहीं पा रहा था जैसे उसे काठ मार गया हो, वह सिर्फ़ डकारे मार रहा था, सिर हिला रहा था, गहरी सांसें भर रहा था, उसके ओंठ बाहर निकले पड़ रहे थे।

जहाज़ पर जितने भी ग़ोताख़ोर मौजूद थे, सभी इस आदमी को घेर कर खड़े हो गये।

"कुछ तो बोलो," एक नौजवान रेड इण्डियन ने ग़ोताख़ोर को झंझोड़ते हुए कहा। "बोल, अगर तुझे जान प्यारी है!"

ग़ोताख़ोर ने सिर हिलाया, वह धीरे-धीरे होश में आ रहा था।

"मैंने 'समुद्री-दैत्य' को देखा है," उसने खोखली, लड़खड़ाती आवाज़ में कहा।

"'समुद्री दैत्य'?"

"तो ख़ुदा के वास्ते उसके बारे में हमें कुछ बताओ!" ग़ोताख़ोरों ने अधीरता से चिल्लाकर कहा।

"मैंने आंख उठायी तो सामने एक शार्क-मछली थी। सीधे मेरी ओर बढ़ती आ रही थी। काले रंग का बड़ा-सा जीव और उसके बड़े-बड़े जबड़े झपटने के लिए तैयार थे। मुझे तो लगता था कि मेरा काम तमाम हुआ। फिर एक और नज़र आया..."

"एक और शार्क-मछली?"

"नहीं, 'दैत्य'!"

"वह देखने में कैसा है? क्या उसके सिर है?"

"सिर? शायद है। आंखें भी तश्तरियों जैसी बड़ी बड़ी हैं।"

"अगर उसकी आंखें हैं तो सिर भी होगा," नौजवान इण्डियन ने अपना फ़ैसला देते हुए कहा, "आंखें अपने आप तो नहीं आ जातीं।.. उसके पंजे हैं?"

"पंजे? आगे के पंजे मेंढ़कों जैसे हैं। लम्बी लम्बी हरे रंग की उंगलियां हैं, झिल्लीदार और उनके साथ नाख़ून हैं। और चोइंटोंवाली मछली की तरह ख़ूब चमकता है। उसने शार्क-मछली पर हमला किया, पंजा तेज़ी से चलाया और लो! ख़ून का फ़ौवारा छूटने लगा..."

"और उसके पीछे के पंजे कैसे हैं?" एक ग़ोताख़ोर बीच में बोल उठा।

"पीछे के पंजे?" उसने याद करने की कोशिश की। "पीछे के पंजे नहीं हैं। केवल एक बड़ी-सी पूंछ है—जो अन्त में दो सांपों में ख़त्म हो जाती है।"

"तुम्हें किससे ज़्यादा डर लगा—उससे या शार्क-मछली से?"

"'दैत्य' से," निःसंकोच जवाब आया, "हालांकि उसने मेरी जान बचायी है। बेशक यह वही था।"

"'समुद्री दैत्य'," एक इण्डियन बोला।

"समुद्र का देवता जो ग़रीबों की मदद करता है," एक बूढ़े इण्डियन ने संशोधन करते हुए कहा।

अब तक यह ख़बर दूर तैरती हुई किश्तियों तक भी पहुंच चुकी थी और अधिकाधिक संख्या में ग़ोताख़ोर कहानी सुनने के लिए बेताब जहाज़ पर आ रहे थे।

उस आदमी से बार-बार अपनी कहानी दोहराने का आग्रह किया जाता। इससे उसे अधिक ब्योरे याद हो आते। अब यह बात प्रगट हुई कि दैत्य आग उगलता था, अपने कान हिलाता था, उसके दांत कटारों जैसे, पर बड़े-बड़े थे, उसके बाज़ुओं में पंख थे और पूंछ चप्पू जैसी थी।

सफ़ेद पतलून और चौड़े किनारेवाला तिनके का हैट पहने पेद्रो ज़ुरीता पैर घसीटता हुआ डेक पर इधर-उधर टहल रहा था। चप्पलों में उसने पैर खोंस रखे थे, और उसके कान ग़ोताख़ोरों की बातों की ओर लगे थे।

ग़ोताख़ोर की वाक्शक्ति ज्यों ज्यों लौटती आती, उतना ही अधिक पेद्रो को विश्वास होता जाता कि यह सब शार्क-मछली से डरे हुए ग़ोताख़ोर की कल्पना है। "पर यह केवल कल्पना ही नहीं हो सकती। खाड़ी में पानी तो लाल हो गया है, किसी ने ज़रूर उस शार्क-मछली की कमर चाक की है। इण्डियन झूठ बोल रहा है, लेकिन प्रत्यक्षत: जो कुछ नज़र आ रहा है, उससे अधिक ज़रूर कुछ होगा। अजीब मामला है!" उसने सोचा।

ऐन उसी वक़्त चट्टानों की ओर से नरसिंघा बजने की आवाज़ आयी, जिससे ज़ुरीता के विचारों का तांता टूट गया।

नरसिंघा क्या बजा मानो गाज गिरी हो। ज़बानों को लक़वा मार गया, चेहरे राख जैसे भूरे पड़ गये। भयाकुल आंखें चट्टानों की दिशा में एकटक देखने लगीं।

चट्टानों के निकट डालफ़िनों का एक परिवार अठखेलियां कर रहा था। उनमें से एक डालफ़िन, मानो नरसिंघा के बुलावे के जवाब में ज़ोर से हुंकारी, चट्टान की ओर बढ़ी और शीघ्र ही उसके पीछे आंखों से ओझल हो गयी। कुछेक तनाव भरे क्षणों के बाद वह फिर प्रगट हुई। उसकी पीठ पर एक विचित्रतम जीव सवार था, वास्तव में वही 'समुद्री दैत्य' था, जिसका ग़ोताख़ोर ने अभी अभी ज़िक्र किया था। दैत्य का शरीर और सिर इनसान का था, बड़ी बड़ी आंखें धूप में इस तरह चमकती थीं जैसे मोटरकार की बत्तियां हों, झिलमिलाती नीले रंग की चमड़ी, हाथ गहरे हरे रंग के, लम्बी-लम्बी और झिल्लीदार उंगलियां। जीव की टांगें पानी में डूबी थीं, इसलिए कहना कठिन था कि वे इनसान की टांगें थीं या जानवर की। हाथ में उसने

लम्बा-सा घुमावदार शंख उठा रखा था। उसे एक बार फिर बजाने के बाद वह जीव ज़ोर से आदमियों की तरह ठहाका मारकर हंसा और सहसा चिल्लाकर शुद्ध स्पेनी भाषा में बोला:

"पूरी रफ़्तार से बढ़ी चलो, लीडिंग!" और अपने मेंढ़क के से हाथ से डालफ़िन की चिकनी पीठ थपथपाकर पंजों से अपनी सवारी को एड़ लगायी। एक सधे हुए घोड़े की तरह डालफ़िन ने रफ़्तार तेज़ कर दी।

ग़ोताख़ोर हैरत से चीख़ उठे।

जीव ने घूमकर देखा। दूसरे क्षण वह डालफ़िन की पीठ पर से उतर चुका था और उसके दूसरी ओर था। हरे रंग का हाथ डालफ़िन की पीठ पर ठोंका देने के लिए क्षण भर के लिए उठा और उसके आदेशानुसार सवारी जल-मग्न हो गयी।

बस इतना ही दिख पाया कि उस विचित्र जोड़े ने पानी के नीचे बड़ी तेज़ी से गोलार्द्ध लगाया और चट्टान के पीछे ग़ायब हो गया...

यह सारी घटना मिनट भर में घट गयी होगी लेकिन इसे देखनेवाले लोग कुछ देर तक मूर्त्तिवत खड़े रहे।

इसके बाद तो कोहराम मच गया। कुछ ग़ोताख़ोर चिल्लाकर इधर-उधर भागने लगे मानो पागल हो गये हों, रेड इण्डियन घुटनों के बल बैठ गये और समुद्र के देवता से जीवन-दान की प्रार्थना करने लगे। एक नौजवान मैक्सिकी भय से चिल्लाते हुए बड़े मस्तूल पर ऊंचा चढ़ गया और वहां जाकर पनाह ली। नीग्रो रेंगते हुए जहाज़ के तलपेट में चले गये।

काम को जारी रखने का सवाल ही नहीं उठता था। पेद्रो और बाल्तासार जहाज़ पर थोड़ी व्यवस्था स्थापित करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाये। 'जेलीफ़िश' जहाज़ ने लंगर उठाया और उत्तर की ओर जाने लगा।

ज़ुरीता का दुर्भाग्य

मामले पर विचार करने के लिए जहाज़ का मालिक नीचे अपने केबिन में चला गया।

"यह तो इन्सान को पागल करने के लिए काफ़ी है!" एक पात्र में से सिर पर गुनगुना पानी डालते हुए ज़ुरीता बुदबुदाया। "एक समुद्री जीव शुद्धतम स्पेनी में बोल रहा है! यह क्या है? क्या यह शैतान का काम है? क्या यह दृष्टि-भ्रम है? लेकिन यह सारे नाविक-दल को तो नहीं हो सकता। कोई भी दो व्यक्ति एक जैसा सपना नहीं देखते। लेकिन हम सब ने उस जीव को देखा है। यह वाक़ई सच है। इसका मतलब है कि 'समुद्री दैत्य' आख़िर मौजूद है, भले ही यह बात नामुमकिन जान पड़े।" ज़ुरीता ने सिर पर और पानी डाला और खिड़की में से ताज़ी हवा लेने के लिए बाहर की ओर झुका। "'समुद्री दैत्य' हो या न हो," कुछ शान्त हो कर वह सोचने लगा, "ज़ाहिर है इस जीव में अक़्ल है और स्पेनी भाषा वह बहुत अच्छी

जानता है। इसके साथ तो बातें की जा सकती हैं। प्रकटतः वह जल और स्थल दोनों में बड़े मज़े में रह सकता है। फ़र्ज़ किया कि—हां, क्यों नहीं?—फ़र्ज़ किया कि मैं उसे पकड़ लूं और मोतियों के लिए उसे अपना ग़ोताख़ोर बना लूं! उस जैसा जीव तो सैकड़ों ग़ोताख़ोरों से भी ज़्यादा मूल्यवान होगा। धन की नदियां बह निकलेंगी! हर ग़ोताख़ोर जितने सीप निकालता है, मुझे उसका एक चौथाई उसे दे देना पड़ता है, लेकिन यह मेंढ़क तो मुफ़्त में काम करेगा! इसका मतलब है हज़ारों, लाखों पेसो के अम्बार लगने लगेंगे!"

धन-दौलत की कल्पना करके ज़ुरीता का चेहरा दमक उठा। धन की ऐसी कल्पना उसने पहली बार नहीं की थी। कई बार उसने सीप के नये स्थलों को ढूंढ़ निकालने के स्वप्न देखे थे जिनकी अभी तक खोज नहीं की गयी थी। फ़ारस की खाड़ी, श्रीलंका का पश्चिमी तट, लाल सागर और आस्ट्रेलिया के तट उसके लिए बहुत दूर थे और यों भी उनसे जो कुछ निकाला जा सकता था, निकाल लिया गया था। और उसके पुराने जहाज़ के लिए तो मेक्सिको की खाड़ी, केलिफ़ोर्निया की खाड़ी, और वेनिज़ुएला के तट, जहां सब से बढ़िया अमरीकी मोती मिलते थे, बहुत दूर थे, उसे अधिक संख्या में ग़ोताख़ोरों की भी ज़रूरत पड़ेगी। और इसके लिए ज़ुरीता के पास धन नहीं था। इसलिए वह अपने देश के निकट ही रहता था। परन्तु अब बात दूसरी थी! अब एक बार 'समुद्री दैत्य' उसके हाथ आ जाये तो वह एक साल में अच्छी दौलत कमा सकता था।

वह अर्जेन्टीना का, शायद दोनों अमरीकी महाद्वीपों का सब से धनी आदमी होगा। धन उसके लिए अधिकार का पथ प्रशस्त करेगा। संसार के कोने-कोने में उसके नाम का डंका बजेगा... लेकिन उसे अपने पत्ते ध्यान से खेलने चाहिए—और सब से पहले इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि नाविक-दल बतियाये नहीं।

जुरीता डेक पर गया और सारे नाविक-दल को, यहां तक कि बावर्ची तक को, बुला भेजा।

"तुम सभी जानते हो," उसने कहा, 'समुद्री दैत्य' के बारे में अफ़वाहें फैलानेवालों की क्या गति हुई थी? अगर तुम नहीं जानते तो मैं तुम्हें बता दूं, वे अभी भी जेल में सड़ रहे हैं। अब कान खोलकर सुन लो। अगर तुममें से किसी ने 'समुद्री दैत्य' को देखने के बारे में एक शब्द भी मुंह से कहा तो जेलख़ाने में फेंक दिया जायेगा और वहां पड़े रहोगे सड़ते हुए, समझ लिया? अब यह बात गांठ बांध लो, अगर मुसीबत को बुलाना नहीं चाहते।"

यों भी इन पर कोई विश्वास नहीं करेगा, इस क़िस्म की परी-कथा को कौन मानेगा, जुरीता ने सोचा और बाल्तासार को यह कहकर कि वह उसके साथ आये, नीचे चला गया।

बाल्तासार जुरीता की योजना को ग़ौर से सुनता रहा।

"लगती तो अच्छी है," क्षण भर सोचने के बाद उसने कहा। "वह जीव सौ ग़ोताख़ोरों के बराबर है। सारा वक़्त 'दैत्य' आपके इशारों पर नाचेगा, बुरा तो नहीं है, क्यों? पर पहले आपको उसे पकड़ना होगा।"

"एक मज़बूत जाल यह काम कर देगा," जुरीता ने कहा।

"वह जाल को भी उसी तरह काट डालेगा जिस तरह उसने शार्क-मछली का पेट चाक किया था।"

"हम तारों का जाल बनवा सकते हैं।"

"मगर उसे पकड़ेगा कौन? हमारे ग़ोताख़ोर तो यह काम करने से रहे। इनमें एक भी ऐसा नहीं जिसे उसका नाम तक सुन कर कंपकंपी न होने लगती हो। दुनिया की सारी दौलत भी उन्हें दे दो तो भी इस काम में वे हाथ नहीं बंटायेंगे।"

"और तुम, बाल्तासार?"

इण्डियन ने कन्धे बिचकाये।

"मैंने कभी भी 'समुद्री दैत्यों' का शिकार नहीं किया

है। मैं समझता हूं उसे घेरना आसान नहीं होगा। अगर वह हाड़-मांस का बना है तो शायद उसे जान से मार डालना मुश्किल न हो, मगर आप उसे ज़िन्दा पकड़ना चाहते हैं।"

"तुम डरते तो नहीं हो, बाल्तासार? यों भी तुम इस 'समुद्री दैत्य' के बारे में क्या सोचते हो?"

"मैं उस शेर के बारे में क्या सोच सकता हूं, जो उड़ने लगे या उस शार्क-मछली के बारे में, जो पेड़ों पर चढ़ने लगे? जिस जानवर को आप जानते न हों, उससे हमेशा डर लगता है। लेकिन मुझे डरावने खेल पसन्द हैं।"

"मैं तुम्हें इसके लिए मुनासिब उजरत दूंगा। तुम्हें अफ़सोस नहीं होगा," बाल्तासार के बाज़ू पर हाथ रखकर उसे यक़ीन दिलाते हुए ज़ुरीता ने कहा। "इसमें जितने कम लोग होंगे, उतना अच्छा," उसने अपनी योजना का परिष्कार करते हुए कहा। "जहाज़ पर के आराउकानों से तुम बात करो। उनमें और लोगों से ज़्यादा हिम्मत और अक्ल है। उनमें से तुम आधे दर्जन लोगों को चुन लो, ज़्यादा नहीं। अगर हमारे आदमी ख़म खा जायें, तो तट पर के लोगों में से ढूंढ़ लो। जान पड़ता है कि 'दैत्य' तट के निकट ही कहीं रहता है। सब से पहले हम कोशिश करके उसकी मांद का पता लगायेंगे। तब हमें मालूम हो जायेगा कि अपना जाल कहां डालें।"

उन्होंने वक़्त ज़ाया नहीं किया। ज़ुरीता ने थैले की शक्ल का तारों का एक जाल बनवाया। देखने में यह ऐसे बड़े पीपे से मिलता-जुलता था, जिसका तला नहीं हो। उसके अन्दर उसने साधारण जाल इस ढंग से बिछा दिये कि दैत्य उनमें फंस जाये। ग़ोताख़ोरों को पैसे देकर बरख़्वास्त कर दिया गया। नाविक-दल में से बाल्तासार केवल दो आराउकानों को भरती कर पाया था। तीन और आराउकानों से उसने ब्वेनस-ऐरीज़ में इक़रारनामे पर दस्तख़त करवाये।

'दैत्य' की खोज उन्होंने उसी खाड़ी में शुरू करने का

निश्चय किया जहां उन्होंने उसे पहली बार देखा था। खाड़ी से कुछ दूर हट कर जहाज़ का लंगर डाल दिया गया ताकि 'दैत्य' को शक न गुज़रे। ज़ुरीता का दल कभी-कभी मछलियां पकड़ने निकल जाता ताकि उस जगह पर उनका मंडराना यथोचित जान पड़े, लेकिन तट-वर्ती चट्टानों की आड़ में से वे बारी-बारी से खाड़ी के जल को एकटक देखते रहते।

दूसरा सप्ताह भी बीत चला था पर अभी तक 'दैत्य' का कोई निशान तक नज़र नहीं आ रहा था।

नज़दीक ही किसानों के एक गांव में बाल्तासार ने कुछेक रेड इण्डियनों के साथ वाक़िफ़ीयत गांठ ली। सब मछलियां, जो दिन भर में वे पकड़ पाते थे, बाल्तासार सस्ते दामों पर गांववालों को बेच देता और उसके बाद गपशप के लिए वहीं रुक जाता और चालाकी से 'समुद्री दैत्य' का ज़िक्र छेड़ देता। शीघ्र ही अनुभवी इण्डियन को पता चल गया कि उन्होंने ठीक जगह चुनी है। बहुत से ग्रामवासियों ने शंख की आवाज़ सुनी थी और तट पर पैरों के निशान देखे थे। उनका कहना था कि उसकी एड़ियां इन्सानों की सी नज़र आती हैं लेकिन पैरों की उंगलियां अत्यधिक लम्बी हैं। कभी कभी उन्हें तट पर 'दैत्य' की पीठ की छाप भी मिलती जहां वह लेटा रहा था।

गांववाले यह मानते थे कि 'दैत्य' ने किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया था, इस लिए उन्होंने उन चिन्हों की परवाह करना मुद्दत से छोड़ दिया था। इसके अतिरिक्त, उनमें से किसी ने भी उसे वास्तव में देखा नहीं था।

दो सप्ताह तक 'जेलीफ़िश' खाड़ी के निकट लंगर डाले पड़ा रहा और मछली के शिकार का बहाना करता रहा। दो हफ़्तों तक ज़ुरीता, बाल्तासार और भाड़े के इण्डियनों ने खाड़ी पर से नज़र नहीं हटायी, लेकिन कोई भी 'समुद्री दैत्य' दिखायी नहीं दिया। ज़ुरीता झींकता, ग़ुस्से से बोलता। जितना ही वह बेसब्र था उतना ही कंजूस

भी था। एक एक दिन का ख़र्च उठाना पड़ता था और 'दैत्य' बहुत दिनों से उन्हें इन्तज़ार करवा रहा था। पेद्रो को सन्देहों ने आ घेरा। मान लो कि वह जीव सचमुच ही शैतान हो? फिर तो किसी भी जाल से उसे पकड़ा नहीं जा सकता। अन्धविश्वासी ज़ुरीता को किसी शैतान के साथ उलझने का विचार बहुत पसन्द भी नहीं था। बेशक वह इस उद्यम को आशीर्वाद देने के लिए जहाज़ पर किसी पादरी को बुला लेगा, पर इसका मतलब होगा अतिरिक्त ख़र्च। और फिर, संभव है, वह जीव 'दैत्य' के वेष में कोई अव्वल दर्जे का तैराक हो, जो केवल अपने मनबहलाव के लिए लोगों को डरा रहा हो। बेशक, डालफ़िन मछली भी थी। लेकिन उसे तो किसी भी अन्य जानवर की तरह पालतू बना कर सिखाया जा सकता था। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि सारे मामले से ही मुंह फेर लिया जाये, वह सोचता।

ज़ुरीता ने वचन दिया कि जो आदमी 'दैत्य' को सब से पहले देखेगा, वह उसे इनाम देगा, और संशयों की यातना सहते हुए उसने कुछेक दिन और इन्तज़ार करने की ठान ली।

पर तीसरे सप्ताह में ऐसे चिन्ह पाकर वह बेहद ख़ुश हुआ, जिनसे पता चलता था कि 'दैत्य' ने फिर से अपनी सरगर्मियां शुरू कर दी हैं।

एक शाम बाल्तासार ने मछलियों से भरी नाव को—जो दिन भर में पकड़ी गयी थीं और जिन्हें दूसरे दिन सुबह बेचना था—तट के साथ बांधा और अपने किसी इण्डियन मित्र से मिलने के लिए नज़दीक के एक फ़ार्म में गया। जब वह लौट कर आया तो देखता है कि नाव ख़ाली पड़ी है। बाल्तासार को यक़ीन हो गया कि यह 'दैत्य' की करतूत है, हालांकि इस बात से उसे हैरानी भी हुई कि 'दैत्य' इतनी अधिक संख्या में मछलियों को उड़ा ले गया था।

देर गये उसी शाम को ड्यूटी पर तैनात इण्डियन

3 1536

ने रिपोर्ट दी कि उसने शंख के बजने की आवाज़ सुनी है, जो दक्षिण की ओर से आ रही थी। दो दिन बाद सुबह तड़के ही सब से छोटे आराउकाना ने अन्त में 'दैत्य' को देख लिया। वह समुद्र की ओर से डालफ़िन के संग आ रहा था। अब की बार वह उसकी सवारी नहीं कर रहा था, बल्कि उसके साथ साथ तैर रहा था और एक हाथ से चमड़े के चौड़े से पट्टे को पकड़े हुए था, जो डालफ़िन की गर्दन में पड़ा था। खाड़ी में 'दैत्य' ने डालफ़िन के गले में से पट्टा उतार लिया, उसकी पीठ को थपथपाया और तैरता हुआ एक तीखी चट्टान के दामन तक जा पहुंचा, जो किनारे पर पानी में सीधी खड़ी थी और फिर आंखों से ओझल हो गया।

इण्डियन की रिपोर्ट सुनकर ज़ुरीता ने वचन दिया कि वह इनाम के बारे में नहीं भूलेगा और बोला:

"संभवत: आज 'दैत्य' अपनी मांद में से नहीं निकलेगा। इससे हमें समुद्र-तल की नज़रसानी करने का अवसर मिल जाता है। अब कहो, कौन इसके लिए तैयार है?"

पर यह जोखिम उठाने के लिए कोई भी उत्सुक नहीं था।

फिर बाल्तासार आगे बढ़ आया:

"मैं तैयार हूं," उसने इतना ही कहा। बाल्तासार ऐसा आदमी नहीं था कि वचन से फिर जाये।

जहाज़ पर एक चौकीदार को छोड़कर सब किनारे पर गये और वहां से तीखी चट्टान पर जा पहुंचे।

बाल्तासार ने ग़ोताख़ोरी की रस्सी का एक सिरा कमर में बांधा, एक चाक़ू लिया, टांगों के बीच एक पत्थर जमाया और पानी में उतर गया।

तनाव भरे मौन में आराउकाना बाल्तासार के लौटने का इन्तज़ार करने लगे, वे पानी में झांककर देख रहे थे, जिसका रंग उस जगह, जहां चट्टान का गहरा साया पड़ रहा था, धुन्धला नीला हो रहा था। धीरे-धीरे एक मिनट

बीता। आखिर रस्सी पर झटके से खिंचाव आया। जब उनकी मदद से बाल्तासार तट पर पहुंचा, तो कुछ देर तक वह हांफता रहा, आखिर बोला:

"वहां, नीचे एक तंग-सा रास्ता है, जो एक गुफ़ा में जाता है। गुफ़ा में घुप अन्धेरा है। 'समुद्री दैत्य' केवल इसी गुफ़ा में छिप सकता है, इसके चारों ओर तीखी चट्टानी दीवार है।"

"ख़ूब!" ज़ुरीता ने चिल्लाकर कहा। "जितनी ज़्यादा अन्धेरी गुफ़ा होगी उतना ही अच्छा। बस, हमें जाल फेंकना है और इन्तज़ार करना है कि कब वह कम्बख़्त उसमें फंस जाये।"

शाम के साये गहरे हो रहे थे। रेड इण्डियनों ने पानी में, गुफ़ा के मुंह के आर-पार तारों का जाल उतारा और मज़बूत रस्सों के सिरों को चट्टानों के साथ बांध दिया। फिर बाल्तासार ने अनेक छोटी-छोटी घण्टियां रस्सों के साथ बांध दीं ताकि जल्दी चेतावनी मिल जाये।

यह कर चुकने के बाद ज़ुरीता, बाल्तासार और पांच आराउकाना बालू पर बैठ गये और चुपचाप इन्तज़ार करने लगे कि अब क्या होता है।

अब की बार जहाज़ पर किसी आदमी को भी नहीं छोड़ा गया। सभी लोगों की ज़रूरत थी।

रात का अन्धेरा जल्द ही गहरा गया। थोड़ी ही देर बाद चांद निकल आया और सागर की सतह चांदी की तरह झिलमिलाने लगी। रात की निस्तब्धता तट पर छा गयी। छोटा-सा दल तनाव-भरी ख़ामोशी में बैठा रहा। किसी भी क्षण वे शायद उस विचित्र जीव को देख पायेंगे, जो मछुओं और मोतियों के ग़ोताख़ोरों को डराता रहा है।

रात ख़त्म होने में नहीं आती थी। लोग ऊंघने लगे।

सहसा घण्टियां बज उठीं। आदमी उछलकर खड़े हो गये, लपक कर रस्सों के सिरों को पकड़ा और खींचने लगे।

जाल भारी लगने लगा था। रस्से कांप उठे। लगता था जैसे कोई चीज़ जाल के अन्दर छटपटा रही है।

आख़िर जाल ऊपर आया, चांद के क्षीण प्रकाश में एक जीव नज़र आया, जिसका शरीर आधा मनुष्य और आधा जानवर का था, जो आज़ाद होने के लिए छटपटा और जूझ रहा था। बड़ी बड़ी आंखें और चोइंटे चांद की रोशनी में झिलमिला रहे थे। 'दैत्य' जाल में फंसा हुआ अपना दायां हाथ छुड़ाने के लिए पागलों की तरह जूझ रहा था। अन्त में वह इसमें सफल हो गया। उसने खोल में से एक चाक़ू निकाला, जो कमर में पड़ी तंग सी चमड़े की पेटी के साथ लटक रहा था, और जाल काटने लगा।

"नहीं, यहां नहीं चलेगा, यह तारों का जाल है!" बाल्तासार धीरे-से बड़बड़ाया।

लेकिन बाल्तासार यह देखकर हैरान रह गया कि इस काम के लिए 'दैत्य' के चाक़ू की धार काफ़ी तेज़ थी। ग़ोताख़ोर बेतहाशा जाल को खींच रहे थे कि जितनी जल्दी हो सके उसे तट पर ले आयें, उधर 'दैत्य' बड़ी फुर्ती से उस दरार को चौड़ा किये जा रहा था जो उसने जाल में बना रखी थी।

"खींचो, खींचो, दोस्तो!" बाल्तासार ने आग्रह करते हुए चिल्लाकर कहा।

पर ऐन उसी क्षण जब लगता था कि उनका शिकार उनके हाथ में आ गया है, 'दैत्य' दरार में से निकलकर पानी में कूद गया। पानी में से झिलमिलाती फुहार उठी, और 'दैत्य' का कहीं पता नहीं चला।

मायूसी में ग़ोताख़ोरों ने जाल खींचना बन्द कर दिया।

"मान गये इस चाक़ू को—तार को इस तरह काट गया मानो ताज़ा डबल रोटी हो!" बाल्तासार ने प्रशंसा के स्वर में कहा। "समुद्र-लोक के लोहार हमारे लोहारों से लाख दर्जे बेहतर जान पड़ते हैं।"

ज़ुरीता पानी की ओर देखे जा रहा था, उसके चेहरे का

भाव उस आदमी का सा हो रहा था जो एक ही बार में अपनी सारी दौलत गंवा बैठा हो।

फिर उसने सिर ऊपर उठाया, अपनी घनी रोएंदार मूंछों को बल दिया और पैर पटककर बोला:

"नहीं, यहीं पर यह बात ख़त्म नहीं होगी! तुम अपनी जलमग्न गुफ़ा में चाहे मर जाओ, मगर मैं दबनेवाला नहीं। मैं पैसे की परवाह नहीं करूंगा, मैं आधुनिक साधनों से लैस ग़ोताख़ोरों को भाड़े पर भरती करूंगा, मैं हर जगह जाल और फंदे बिछाऊंगा लेकिन तुम्हें पकड़कर रहूंगा!"

ज़ुरीता के चरित्र में और कितने भी गुणों का अभाव रहा हो, साहस और सोद्देश्यता का अभाव नहीं था। ये गुण उसे स्पेनी विजेताओं के गर्म ख़ून के साथ मिले थे, जो उसकी रगों में बह रहा था। फिर उसने सोचा कि यहां अब जमकर लड़ना चाहिए, और यह देखते हुए तो और भी ज़्यादा कि 'दैत्य' इतना भयानक नहीं था जितना उसने समझ रखा था। फिर तो बस चांदी ही चांदी होगी।

एक जीव जिसे उसके लिए दुनिया की दौलत निकालने पर लगाया जा सकता था, अपनी क़ीमत कई गुना ज़्यादा अदा कर देगा। अगर समुद्र का देवता नेपचून भी उस पर पहरा दे रहा हो तो भी ज़ुरीता उसे पकड़ कर रहेगा।

डाक्टर साल्वातोर

ज़ुरीता अपने वचन पर दृढ़ रहा। गुफ़ा के मुंह पर और आस-पास के पानी में उसने कांटेदार तार की बाड़ें और अनगिनत मज़बूत जाल बिछवा दिये, और जो कुछेक खुले रास्ते बच रहे थे उन पर बड़ी चतुराई से बनाये गये फंदे लगवा दिये। पर इतनी तकलीफ़ उठाने के बावजूद केवल मछलियां ही उसके हाथ लग पातीं। 'समुद्री दैत्य' ने एक बार भी मुंह नहीं दिखाया जैसे कि उसे धरती निगल गयी हो। वह बिल्कुल ग़ायब हो गया हो। उसकी डालफ़िन मित्र हर रोज़ खाड़ी में आती, पानी में फुंकारती और उछलती-कूदती, प्रकटत: वह सैर पर जाने के लिए लालायित होती। पर सब बेसूद। शीघ्र ही डालफ़िन आखिरी बार फुंकार छोड़ती और खुले सागर की ओर निकल जाती।

फिर मौसम में तबदीली आयी। पूर्वी हवा के दबाव से लहरें बल्लियों उछलने लगीं, समुद्र-तल से उठे बालू

ने पानी को इतना गंदला कर दिया कि लहरों की फेन के नीचे कुछ भी दिखायी नहीं देता था।

जुरीता तट पर खड़े होकर घण्टों एक के बाद एक सफ़ेद फेन से लदी लहरों को समुद्र-तट से टकराते देख सकता था। टकराकर टूटने के बाद वे फुंकारती हुई बालू में से रास्ता बनातीं, कंकड़ों और घोंघों को उलटतीं, उसके क़दमों तक जा पहुंचतीं।

"यह नहीं चलेगा," एक दिन जुरीता ने मन ही मन कहा। "इस बारे में कुछ करना होगा। समुद्र के तल पर उस जीव की मांद है, और वहां से वह नहीं निकलेगा। अच्छी बात है। जो कोई भी उसे पकड़ना चाहता है, उसे ख़ुद जाकर उससे टक्कर लेनी होगी। बात दिन के उजाले की तरह साफ़ है।" और बाल्तासार को सम्बोधन करते हुए जो 'दैत्य' के लिए एक और नया पेचीदा फंदा तैयार कर रहा था, बोला:

"सीधे ब्वेनस-ऐरीज़ जाओ और ग़ोताख़ोरी के दो सूट, साथ में आक्सीजन सिलिंडरों के दो सेट लेकर आओ। सीधे-सादे सूटों से काम नहीं चलेगा। 'दैत्य' ज़रूर उन नलियों को काट देगा जिनमें से सांस लिया जाता है। इसके अलावा शायद पानी के नीचे हमें काफ़ी लम्बा दौरा करना पड़े। और ख़्याल रखना, बिजली के टार्च लाना न भूलना।"

"क्या 'दैत्य' से उसकी मांद पर मिलने का इरादा है?" बाल्तासार ने पूछा।

"तुम्हारे साथ, मेरे बूढ़े शेर, हां।"

बाल्तासार ने सिर हिलाया और अपने काम पर चला गया।

जब लौट कर आया तो ग़ोताख़ोरी की दो पोशाकों और टार्चों के अलावा उसने जुरीता को कांसे के बने दो घुमावदार चाक़ू भी दिखाये।

"आजकल इस क़िस्म के चाक़ू नहीं बनाये जाते," उसने

कहा, "ये पुराने चाक़ू हैं जिनसे—अगर बुरा न मानो तो कहूं—मेरे पुरखे तुम्हारे पुरखों के पेट चाक किया करते थे।"

ज़ुरीता को यह ऐतिहासिक ब्योरा पसंद न आया पर चाक़ू उसे जंच गये।

दूसरे दिन तड़के ही, बावजूद इस बात के कि समुद्र में ऊंची लहरें उठ रही थीं, बाल्तासार और ज़ुरीता ने ग़ोताख़ोरी के सूट पहने और पानी में उतर गये। अपने ही बिछाये हुए जालों में से गुफ़ा के मुंह तक पहुंचने में उन्हें काफ़ी कठिनाई हुई। चारों ओर घुप अन्धेरा था। उन्होंने चाक़ुओं को खोलों में से निकाला और टार्चों के बटन दबा दिये। छोटी-छोटी मछलियां सहसा चकाचौंध करनेवाली रोशनी से डर कर भाग गयीं, फिर मच्छरों की तरह उनके झुण्ड के झुण्ड नीले रंग की उन दो शमाओं पर मंडराने लगे।

ज़ुरीता ने उन्हें भगा दिया: उनके झिलमिलाते चोइंटे उसकी आंखों को कौंध रहे थे। ग़ोताख़ोर एक बड़ी सी गुफ़ा में पहुंच गये थे जो ऊंचाई में लगभग बारह फ़ुट थी और चौड़ाई में बीस फ़ुट रही होगी। वह ख़ाली पड़ी थी, हां, मछलियां वहां पर ज़रूर थीं, जो प्रकटत: तूफ़ान से या बड़ी मछलियों से बचने के लिए वहां पनाह लिये हुए थीं।

बड़ी सावधानी से क़दम रखते हुए वे गुफ़ा में आगे बढ़ने लगे। धीरे धीरे गुफ़ा तंग होती गयी। सहसा ज़ुरीता रुक गया, उसे जैसे काठ मार गया हो। अन्धेरे में टार्च की रोशनी लोहे की छड़ों की बनी एक मज़बूत झंझरी पर पड़ी, जो उनका रास्ता रोके हुए थी।

ज़ुरीता को अपनी आंखों पर यक़ीन नहीं हो रहा था। झंझरी को खींच कर खोलने की कोशिश में उसने लोहे की छड़ों को ज़ोर से पकड़ा। झंझरी हिली तक नहीं। ध्यान

से देखने पर ज़ुरीता को पता चला कि वह गुफ़ा की तराशी हुई दीवारों में मज़बूती से गड़ी हुई थी और उसमें अन्दर की ओर से ताला और चूलें थीं।

उनके सामने अब एक और पहेली थी।

प्रकटत: 'समुद्री दैत्य' में उससे कहीं ज़्यादा अक्ल थी जितनी वे समझ बैठे थे। वह डालफ़िन को पालतू बना चुका था और उसे धातुओं को काम में लाना आता था। अपनी जल-मग्न मांद का रास्ता रोकने के लिए वह लोहे की झंझरी बनाना जानता था। लेकिन यह सर्वथा अकल्पनीय था! उसने सचमुच तो इसे जल के नीचे नहीं गढ़ा होगा। इसका मतलब था कि वह पानी के नीचे नहीं रहता था, या फिर लम्बे अर्से के लिए तट पर चला जाता था।

ज़ुरीता को महसूस हुआ जैसे उसका ख़ून उसकी कनपटियों पर थपेड़े मार रहा है, मानो पानी के नीचे बिताये उन कुछेक मिनटों में ही उसने सारा आक्सीजन ख़त्म कर दिया हो।

उसने बाल्तासार को इशारा किया, और वे गुफ़ा से बाहर निकलकर ऊपर आ गये।

आराउकाना जो उनके इन्तज़ार में हतप्रभ बैठे थे, उन्हें वापस आया देख कर बड़े ख़ुश हुए।

"तुम इसका क्या अर्थ निकालते हो, बाल्तासार?" सिर से हेल्मेट उतारने के बाद जब उसका सांस कुछ ठीक हुआ तो ज़ुरीता ने पूछा।

आराउकाना ने कन्धे बिचका दिये।

"हमें उसके बाहर निकलने का सदियों इन्तज़ार करना पड़ेगा, हां, अगर झंझरी को बारूद से उड़ा दें तो दूसरी बात है। हम उसे भूखा रखकर भी निकलने पर मजबूर नहीं कर सकते, खाने के लिए उसे मछलियां चाहिए और वे भारी संख्या में मौजूद हैं।"

"तुम क्या सोचते हो, बाल्तासार, गुफ़ा में से निकलने

का कोई और रास्ता भी हो सकता है, मेरा मतलब है, ज़मीन की ओर खुलने वाला?"

बाल्तासार को यह नहीं सूझा था।

"बात सोचने की है, हमने पहले आस-पास देख क्यों नहीं लिया?" ज़ुरीता ने कहा।

इस तरह वह एक नयी खोज में लग गया।

तट पर ज़ुरीता को एक ऊंची, सफ़ेद पत्थर की दीवार नज़र आयी और वह उसके किनारे-किनारे चलने लगा। वह ज़मीन के एक टुकड़े को, जो पचीस एकड़ से कम नहीं होगा, पूरी तरह घेरे हुए थी। उसमें एक ही फाटक था जो ठोस इस्पात की चादरों का बना था। उसके एक कोने में छोटा-सा लौह द्वार था, जिसमें झांकने का एक छोटा सा छेद था, पर वह अन्दर से बन्द था।

"यह तो बाक़ायदा एक क़िला या जेल है," ज़ुरीता ने सोचा। "दाल में कुछ काला है। यहां आस-पास रहनेवाले फ़ार्मर ऐसी ऊंची और मोटी दीवारें नहीं बनाते। और कहीं कोई छिद्र तक नहीं, जिसमें से अन्दर झांका जा सके।"

आस-पास किसी बस्ती का निशान तक नहीं था, खाड़ी तक केवल नंगी-बूची भूरी चट्टानें खड़ी थीं, कहीं कहीं कांटेदार झाड़ियां या कैक्टस उग रहे थे।

ज़ुरीता का कुतूहल जागा। कई दिनों तक वह दीवार के इर्द-गिर्द चट्टानों के बीच मंडराता रहा, लौह फाटक पर विशेष रूप से पैनी नज़र रखते हुए। पर कोई भी अन्दर नहीं गया, न ही बाहर आया, और न ही अन्दर की ओर से कोई आवाज़ तक आयी।

एक दिन शाम को 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर ज़ुरीता ने बाल्तासार को बुलवाया और उससे पूछा:

"क्या तुम्हें कुछ मालूम है कि खाड़ी के ऊपर के उस क़िले में कौन रहता है?"

"साल्वातोर—इण्डियन फ़ार्म-मज़दूरों ने तो मुझे यही बताया है।"

"वह कौन है, यह साल्वातोर?"

"भगवान।"

स्पेनी की काली, घनी भौंहें चढ़ गयीं।

"मज़ाक कर रहे हो क्या?"

इण्डियन के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान दौड़ गयी।

"मैं वही आपको बता रहा हूं, जो मुझे बताया गया है। बहुत से इण्डियन साल्वातोर को भगवान और अपना रक्षक कह कर पुकारते हैं।"

"वह किससे उनकी रक्षा करता है?"

"मौत से। उनका कहना है कि वह सर्वशक्तिमान है। वह चमत्कार कर सकता है। उनका कहना है कि ज़िन्दगी और मौत उसकी मुट्ठी में है। वह लंगड़े लोगों के लिए नई मज़बूत टांगें बना देता है, अन्धों के लिए पैनी आंखें, यहां तक कि वह मुर्दों में जान फूंक देता है।"

"उसकी ऐसी की तैसी!" अपनी घनी मूछों को बड़ी चुस्ती से ऐंठते हुए ज़ुरीता बुदबुदाया। "नीचे खाड़ी में एक 'समुद्री दैत्य' है और उसके ऊपर एक 'भगवान'। मैं सोचता हूं, कहीं वे एक ही थैली के चट्टे-बट्टे तो नहीं?"

"अगर मेरी सलाह मानें तो हमें यहां से निकल जाना चाहिए, और वह भी फ़ौरन, पेश्तर इसके कि ये सभी चमत्कार हमारे दिमाग़ का भुरता बना दें।"

"क्या तुमने कोई ऐसा व्यक्ति देखा है, जिसका साल्वातोर ने इलाज किया हो?"

"हां, देखा है। मुझे एक आदमी दिखाया गया, जो साल्वातोर के पास ऐसी हालत में लाया गया था जब उसकी टांग टूट चुकी थी। अब वह हिरन की तरह कुलांचें भरता है। फिर मैंने एक ऐसे रेड इण्डियन को भी देखा है, जिसे साल्वातोर ने फिर से ज़िन्दा कर दिया था। सारा गांव कहता है कि उसकी खोपड़ी फटी हुई थी और उसका

शरीर बिल्कुल काठ हो रहा था। साल्वातोर ने उसे फिर से अपने पांवों पर खड़ा कर दिया। वह चहकता, हंसता वहां से लौटा। उसने एक प्यारी-सी लड़की के साथ शादी भी कर ली। और फिर, वे सभी बच्चे..."

"इसका मतलब है, साल्वातोर मरीज़ों का इलाज करता है!"

"सिर्फ़ इण्डियनों का। वे हर जगह से उसके पास भारी संख्या में जाते हैं—यहां तक कि टिएरा देल फ़्यूगो और एमेज़न जैसी दूर-दराज़ इलाक़ों से भी।"

इस जानकारी से ज़ुरीता को सन्तोष नहीं हुआ, वह ब्वेनस-ऐरीज़ चला गया।

वहां भी उसे यही पता चला कि साल्वातोर केवल इण्डियनों का इलाज करता था और उनके बीच उसे जादूगर की ख्याति प्राप्त थी। डाक्टरों ने ज़ुरीता को बताया कि साल्वातोर विशेष रूप से एक योग्य सर्जन था, वास्तव में प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति था, लेकिन बड़ा सनकी था, जैसा कि उस जैसी योग्यता रखनेवाले लोग अक्सर होते हैं। एटलांटिक महासागर के दोनों ओर चिकित्सा सम्बन्धी हल्क़ों में उसके नाम से लोग भली भांति परिचित थे। अमरीका में वह अपनी साहसिक शल्य-चिकित्सा के लिए मशहूर था। जब सर्जन किसी मरीज़ की स्थिति से निराश हो जाते, तो साल्वातोर से उसका इलाज करने का अनुरोध करते। वह कभी इनकार नहीं करता था। पहले महायुद्ध के दिनों में वह फ़्रांसीसी मोर्चे पर था, जहां वह अधिकांश दिमाग़ के आपरेशन करता रहा। हज़ारों लोगों की उसने जान बचायी। युद्ध-विराम के बाद वह अर्जेन्टीना लौट गया। अपने चिकित्सा व्यवसाय से और ज़मीन-जायदाद के सट्टे से उसने अच्छी दौलत जमा कर ली। उसने डाक्टरी प्रेक्टिस छोड़ दी, ब्वेनस-ऐरीज़ के निकट कुछ ज़मीन ख़रीद ली, उसके चारों ओर ऊंची दीवार खड़ी कर ली (उसकी सनकों में से एक और सनक) और वहीं पर बस गया। लोगों को

मालूम हुआ कि उसने अनुसन्धान का काम शुरू कर दिया है। अब वह केवल इण्डियनों का इलाज करता था, और साल्वातोर को वे भगवान का अवतार मानते थे।

अन्ततः जुरीता को पता चला कि युद्ध से पहले उसी स्थान पर, जहां आज उसकी विशाल ज़मीन-जायदाद थी, साल्वातोर का छोटा-सा घर और बाग़ हुआ करते थे, और उनके चारों ओर भी दीवार हुआ करती थी। जब साल्वातोर फ़्रांस में, मोर्चे में था, तो एक नीग्रो और ख़ूंख़ार कुत्तों का एक झुण्ड घर की कड़ी रखवाली किया करते थे। अन्दर जाने की इजाज़त किसी को नहीं थी।

कुछ मुद्दत से साल्वातोर पहले से भी अधिक एकान्त-जीवी हो गया था। अब वह विश्वविद्यालय के पुराने सहकर्मियों तक को अपने घर नहीं बुलाता था।

यह सारी जानकारी इकट्ठी कर लेने के बाद जुरीता ने निश्चय किया कि वह बीमारी का बहाना करेगा ताकि उसके घर के अन्दर पहुंच सके। फिर देखा जायेगा।

एक बार फिर वह उसी मज़बूत, लौह फाटक के सामने खड़ा था, जो साल्वातोर की ज़मीन-जायदाद की हिफ़ाज़त करता था। उसने फाटक पर दस्तक दी। किसी ने जवाब नहीं दिया। वह कुछ देर तक ज़ोर ज़ोर से दस्तक देता रहा, लेकिन अन्दर से किसी के हरकत तक करने का आभास नहीं मिला। जुरीता क्रुद्ध हो उठा और एक पत्थर उठाकर फाटक को पीटने लगा, और इस क़दर शोर मचाने लगा कि जिससे मुर्दे भी जाग उठें।

दूर अन्दर कहीं कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आयी और आखिर झांकनेवाले छिद्र पर से पर्दा हटा दिया गया।

"क्या चाहते हो?" टूटी-फूटी स्पेनी भाषा में किसी ने पूछा।

"बीमार हूं—डाक्टर से मिलना चाहता हूं। जल्दी करो, दरवाज़ा खोलो।"

"बीमार आदमी इस तरह फाटक नहीं तोड़ते," उसी

तरह धीर-गंभीर जवाब आया और छिद्र में से एक आंख ने ज़ुरीता की ओर झांक कर देखा। "डाक्टर इस वक़्त मरीज़ों को नहीं देख रहे हैं।"

"वह एक बीमार को मदद देने से तो इनकार नहीं कर सकते," ज़ुरीता ने इसरार किया।

झांकनेवाला छिद्र बन्द कर दिया गया। क़दमों की आहट दूर चली गयी और सुनाई देना बन्द हो गयी। केवल कुत्ते अभी भी निर्ममता से भूंके जा रहे थे।

चुनी हुई गालियों में अपना ग़ुस्सा निकालते हुए स्पेनी अपने जहाज़ की ओर जाने लगा।

जहाज़ पर पहुंचने के बाद उसने मन ही मन ख़ुद से पूछा: क्या मुझे साल्वातोर के ख़िलाफ़ ब्वेनस-ऐरीज़ में शिकायत करनी चाहिए? लेकिन इससे क्या लाभ? क्रोध से ज़ुरीता सिर से पांव तक कांप रहा था। उसकी घनी काली मूंछों के लिए अब सचमुच का ख़तरा पैदा हो गया था, क्योंकि अपनी उत्तेजना में ज़ुरीता बार-बार उन्हें खींच कर नीचे कर रहा था।

परन्तु धीरे-से वह शान्त हो गया और सोचने लगा कि उसे आगे क्या करना चाहिए।

आख़िर वह डेक पर आया और नाविक-दल को लंगर उठाने का हुक्म दिया, जिसे सुनकर सभी लोग हैरान रह गये।

'जेलीफ़िश' ने ब्वेनस-ऐरीज़ का रुख़ पकड़ा।

"अच्छा, बहुत हो चुका," बाल्तासार ने टिप्पणी की, "इतना वक़्त ज़ाया किया, मेहनत ज़ाया की। भाड़ में जाये 'समुद्री दैत्य', 'भगवान' जिसका लंगोटिया यार है!"

बीमार नातिन

चिलचिलाती धूप पड़ रही थी। एक बूढ़ा रेड इण्डियन, दुबला-पतला और फटेहाल, देहात की एक धूलभरी सड़क पर, जो बारी बारी से गेहूं, जुआर और जई के खेतों के पास से जा रही थी, चला जा रहा था। उसकी गोद में एक बच्चा था, धूप से बचाने के लिए उसने एक फटा-पुराना कम्बल उसपर ओढ़ा रखा था। बच्चे की आंखें अधमुंदी थीं। बच्चे की गर्दन पर बहुत बड़ा फोड़ा था। जब कभी बूढ़े के पांव को ठोकर लगती तो बच्चा फटी आवाज़ में कराह उठता और उसकी पलकें कांप उठतीं। फिर बूढ़ा खड़ा हो जाता और बच्चे के मुंह पर अपनी सांस छोड़ता।

"बच्चे को ज़िन्दा पहुंचा भर दूं," वह फुसफुसाता और रफ़्तार तेज़ कर देता।

लौह फाटक के सामने पहुंचने पर बूढ़े इण्डियन ने बच्चे

को बायें बाज़ू पर उठा लिया और दायें हाथ से छोटे दरवाज़े को चार बार खटखटाया।

झांकनेवाले छिद्र में से किसी ने देखा। सिटकिनियों की आवाज़ आयी और दरवाज़ा खुल गया।

इण्डियन ने डरते-डरते अन्दर क़दम रखा। उसके सामने सफ़ेद लबादा पहने एक बूढ़ा नीग्रो खड़ा था, जिसके सिर पर बर्फ़ से सफ़ेद घुंघराले बाल थे।

"मैं एक बीमार बच्चे को लाया हूं," इण्डियन ने कहा।

नीग्रो ने सिर हिलाया, सिटकिनियां चढ़ा दीं और इण्डियन को पीछे-पीछे आने का इशारा किया।

इण्डियन ने आस-पास देखा। वह जेलख़ाने से मिलते-जुलते एक छोटे-से आंगन में खड़ा था, ज़मीन पर पत्थरों के बड़े-बड़े चौके लगे थे, घास का कहीं तिनका तक नज़र नहीं आ रहा था। एक दीवार, जो बाहर की दीवार से कुछ छोटी थी, आंगन को बाक़ी जायदाद से अलग किये हुए थी। आंगन के कोने में, अन्दर वाली दीवार के फाटक के पास एक इमारत थी, जिसमें बड़ी-सी खिड़कियां थीं और जिस पर सफ़ेदी की गयी थी। उसके निकट इण्डियनों की एक टोली—पुरुष, स्त्रियां और बच्चे बैठे थे।

लगभग सभी बच्चे बिल्कुल भले-चंगे लग रहे थे। कुछेक बच्चे सीपियों के साथ जैक-स्टोन का खेल खेल रहे थे, और बाक़ी बच्चे चुपचाप कुश्ती लड़ रहे थे। बूढ़ा नीग्रो बड़ा सतर्क था कि किसी तरह भी इस स्थान की निस्तब्धता भंग न होने पाये।

बूढ़ा इमारत के साये में विनम्रता से बैठ गया और बच्चे के गतिहीन चेहरे पर—जो नीला पड़ गया था—सांस छोड़ने लगा। उसकी बग़ल में बैठी एक बूढ़ी इण्डियन औरत ने जिसकी टांग सूजी हुई थी, आंख उठाकर दोनों की ओर देखा।

"बेटी को लाये हो?" उसने पूछा।

"नहीं, नातिन है," इण्डियन ने जवाब दिया।

"दलदल का भूत तुम्हारे बच्चे में घुस गया है। लेकिन डाक्टर किसी भी भूत-प्रेत से ज़्यादा ताकतवर है। वह इसे चंगा कर देगा।"

इण्डियन ने सिर हिलाया।

सफ़ेद लबादेवाला नीग्रो, जो बीमारों को बारी-बारी से देख रहा था, इण्डियन के सामने रुक गया और उसे अन्दर जाने का इशारा किया।

जिस कमरे में इण्डियन ने क़दम रखा, वह आकार में बड़ा था और पत्थर के चौकों के फ़र्श पर, ऐन बीचोंबीच एक तंग, लम्बी-सी मेज़ को छोड़कर—जिस पर सफ़ेद चादर बिछी थी—बिल्कुल ख़ाली था। एक दूसरा दरवाज़ा, जिसमें दानेदार शीशे का कपाट लगा था, खुला और डाक्टर साल्वातोर ने प्रवेश किया। डाक्टर ऊंचा-लम्बा, चौड़े कन्धों और सांवले रंग का आदमी था और सफ़ेद लबादा पहने हुए था। चेहरे और सिर पर काली पलकों और भौंहों को छोड़कर कहीं कोई बाल नहीं था। उसने काफ़ी मुद्दत से उस्तुरे से सिर मुंड़वाना शुरू कर दिया होगा, क्योंकि उसकी खोपड़ी भी उतनी ही अधिक संवलायी हुई थी जितना उसका चेहरा। बड़ी उक़ाबी नाक, आगे को बढ़ी हुई नुकीली ठुड्डी और भिंचे हुए होठों से उसके चेहरे का भाव क्रूर, यों कहें, लुटेरों का सा नज़र आता था। उसकी भूरी आंखों की सर्द नज़र से इण्डियन को कंपकंपी होने लगी।

इण्डियन ने नीचे झुककर अभिवादन किया और अपने दोनों हाथ जिनमें उसने बच्ची को उठा रखा था, डाक्टर की ओर बढ़ा दिये। बड़ी फुरती और आत्मविश्वास, पर साथ ही सावधानी के साथ साल्वातोर ने इण्डियन के हाथों में से बीमार लड़की को ले लिया और वे चिथड़े उतार कर, जिनमें वह लिपटी थी, बड़ी सफ़ाई से कोने में रखे एक पात्र में फेंक दिये। इण्डियन उन्हें उठाने के लिए

4—1536

लपका, लेकिन डाक्टर का अलंघनीय आदेश—"उन्हें वहीं पड़ा रहने दो!"—सुनकर वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

फिर साल्वातोर ने नन्ही लड़की को मेज़ पर लिटा दिया और उसके ऊपर झुक गया। अब उसके चेहरे का पार्श्व-भाग नज़र आ रहा था, जो इण्डियन को उस शिकारी पक्षी का सा लगा जो अपने शिकार पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो। साल्वातोर अपनी उंगलियों से फोड़े की जांच कर रहा था। उसकी उंगलियों ने भी इण्डियन को प्रभावित किया। उंगलियां लम्बी और आश्चर्यजनक रूप से लचीली थीं, और लगता था जैसे वे न केवल नीचे की ओर, बल्कि दायें-बायें और ऊपर की ओर भी मुड़ सकती थीं। इण्डियन जो सामान्यतः साहसी व्यक्ति था अपने डर को दबाने की कोशिश करने लगा, जो इस विलक्षण डाक्टर ने उसके मन में पैदा कर दिया था।

"बहुत ख़ूब, बहुत अच्छा," साल्वातोर कह रहा था, मानो जो कुछ उसने देखा था, उसके प्रति उसके मन में बड़ी श्रद्धा पैदा हो गयी हो। जांच कर चुकने के बाद वह इण्डियन की ओर मुख़ातिब हुआ।

"महीने भर बाद आ जाओ, जब आकाश में नया चांद होगा, और तुम्हें तुम्हारी नन्ही लड़की तन्दुरुस्त हालत में लौटा दी जायेगी।" और लड़की को दानेदार शीशेवाले दरवाज़े के पीछे ले गया।

इस बीच नीग्रो अगले मरीज़ को, सूजी हुई टांगवाली बूढ़ी को अन्दर ले आया था।

इण्डियन ने शीशेवाले दरवाज़े की दिशा में ख़ूब झुक कर अभिवादन किया और बाहर चला गया...

ठीक अठाईस दिन बाद शीशेवाला दरवाज़ा फिर खुला।

नन्ही लड़की नयी पोशाक में सजी-धजी दरवाज़े से प्रगट हुई। उसका चेहरा गुलाब-सा खिला हुआ था। अपने नाना की ओर देख कर उसकी आंखों में त्रास छा गया। इण्डियन झट से आगे बढ़ा, लड़की को उठाया, उसे चूमा और

उसका गला देखने लगा। फोड़ा ग़ायब हो चुका था। उस जगह पर, जहां लड़की का आपरेशन किया गया था, केवल नन्हा-सा एक लाली-मायल निशान बाक़ी रह गया था।

बच्ची हाथों से अपने नाना को धकेलती रही, यहां तक कि वह रोयी भी, जब बच्ची को चूम कर नाना ने अपनी ठुड्डी पर उगती हुई कंटीली दाढ़ी चुभा दी। साल्वातोर अन्दर आया। उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट थी। बच्ची के सिर को थपथपाते हुए उसने कहा:

"लो, ले जाओ अपनी बच्ची को। तुम उसे ऐन वक़्त पर लाये। कुछेक घण्टे की देर हो जाती तो मैं भी उसे मौत के मुंह से नहीं निकाल पाता।"

बूढ़े इण्डियन के चेहरे पर झुर्रियां उभर आईं, होंठ कांप उठे और आंखों में कृतज्ञता के आंसू भर आये। उसने नन्ही लड़की को फिर एक बार छाती से लगाया और साल्वातोर के सामने घुटने टेक दिये।

"आपने मेरी नातिन की जान बचायी है," उसने रुंधे हुए गले से कहा। "बदले में हाज़िर करने के लिए एक ग़रीब इण्डियन के पास अपनी ज़िन्दगी के सिवा कुछ नहीं है।"

"तुम्हारी ज़िन्दगी से मुझे क्या लेना-देना?" साल्वातोर ने हैरान होकर पूछा।

"मैं बूढ़ा हो गया हूं बेशक, लेकिन मेरे बाजुओं में अभी भी ताक़त है," इण्डियन कहता गया, वह अभी भी घुटनों के बल बैठा था। "बच्ची को मैं उसकी मां के पास ले जाऊंगा और फिर सीधा लौट आऊंगा। मेरी ज़िन्दगी अब आपकी है—आपने मुझ पर बहुत बड़ा एहसान किया है। मैं एक कुत्ते की तरह आपका हुक्म बजा लाऊंगा। मेरी यही प्रार्थना है, कृपया इनकार न कीजिये।"

साल्वातोर सोच में पड़ गया।

वह नये नौकर रखने के बारे में बड़ा चौकन्ना रहता था। इसलिए नहीं कि उसे उनकी ज़रूरत नहीं थी। करने

को वहां बहुत काम था। मिसाल के तौर पर बाग़बानी में जिम को मदद की ज़रूरत रहती थी। सोचा जाये तो उसे एक नौकर की तो अवश्य ज़रूरत थी। अगर कोई नीग्रो मिल जाता तो ज़्यादा अच्छा था, लेकिन यह रेड इण्डियन भी ठीक ही जान पड़ता था।

"तुम अपना जीवन मुझे सौंप रहे हो। अच्छी बात है, मैं मंज़ूर करता हूं। तुम कब आ सकते हो?"

"मैं सात दिन के अन्दर-अन्दर वापस लौट आऊंगा," इण्डियन ने साल्वातोर के लबादे का छोर चूमते हुए कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम?.. क्रिस्टोफ़ोर, संक्षेप में क्रिस्टो।"

"जाओ, क्रिस्टो। मैं तुम्हारी राह देखूंगा।"

"चलो, बिटिया," क्रिस्टो ने लड़की से कहा और उसे फिर उठा लिया। बच्ची रोने लगी। क्रिस्टो जल्दी से उसे वहां से ले गया।

चमत्कारों से भरा बाग़

जब हफ़्ते भर बाद क्रिस्टो फिर आ पहुंचा तो डाक्टर साल्वातोर ने उसकी ओर पैनी नज़र से देखते हुए कहा:

"अब, क्रिस्टो, कान खोलकर सुन लो। मैं तुम्हें नौकर रख रहा हूं। तुम्हें अच्छी तनख़्वाह और अच्छा खाना मिलेगा..."

क्रिस्टो ज़ोर ज़ोर से हाथ हिलाने लगा।

"मुझे कुछ नहीं चाहिए, आप केवल मुझे अपनी सेवा की आज्ञा दें।"

"चुप रहो और सुनो," साल्वातोर ने उसकी बात काटते हुए कहा। "जैसा कि मैंने कहा है, तुम्हें सब कुछ दिया जायेगा। लेकिन एक शर्त है: जो कुछ भी यहां देखो उसके बारे में अपना मुंह बन्द किये रहना!"

"मैं अपने हाथ से अपनी ज़बान काटकर कुत्तों को फेंक दूंगा, पेश्तर इसके कि एक शब्द भी ज़बान पर लाऊं।"

"तुम्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं होगी," साल्वातोर

ने सावधान करते हुए कहा, फिर सफ़ेद लबादेवाले नीग्रो को बुलाया और उसे हुक्म दिया कि क्रिस्टो को बाग़ में ले जाये और जिम के सुपुर्द कर दे।

नीग्रो ने चुपचाप झुक कर आदाब बजाया और इण्डियन को बाहर ले गया, फिर आंगन लांघ कर अन्दरवाली दीवार के लौह फाटक के पास जा पहुंचा।

नीग्रो ने दरवाज़े पर दस्तक दी जिसके जवाब में दीवार के पीछे से कुत्तों के भूंकने की आवाज़ आयी, फिर फाटक चरमराया और धीरे-धीरे खुल गया। नीग्रो ने क्रिस्टो को हल्का-सा धक्का दिया और उस दूसरे नीग्रो को, जो फाटक के अन्दर खड़ा था, गहरी आवाज़ में चिल्लाकर कुछ कहा, और तुरन्त लौट गया।

डर के मारे क्रिस्टो दीवार से सट गया। जानवरों का एक झुण्ड, जिनकी काले धब्बोंवाली लाल-पीले रंग की खाल थी, उसकी ओर झपटता हुआ आ रहा था। अगर वे दक्षिणी अमरीका के पाम्पास मैदानों में होते तो क्रिस्टो उन्हें जागुआर समझता। लेकिन भौंकते वे कुत्तों की तरह थे। कुछ भी हो इस गोरख-धंधे को सुलझाने के लिए वक़्त नहीं था। क्रिस्टो सिर पर पांव रखकर सब से निकटवाले पेड़ की ओर भागा, और इस फुर्ती से उस पर चढ़ गया, जो उस जैसी उम्रवाले आदमी के लिए आश्चर्यजनक था। नीग्रो ने काले नाग की तरह कुत्तों पर फुंकारा और वे फ़ौरन संभल गये। जानवरों ने अपनी भयानक चीत्कार बन्द कर दी, ज़मीन पर लेट गये, अपने नथुने अगले पंजों पर रख दिये और तिरछी नज़रों से अपने मालिक की ओर देखने लगे।

नीग्रो ने फिर एक बार फुंकार की, अब की क्रिस्टो को लक्ष्य करके, और उसे उतरने का इशारा किया।

"सांप की तरह फुंकार किस लिये रहे हो? अपनी ज़बान निगल चुके हो क्या?"

क्रिस्टो ने सोचा कि यह आदमी ज़रूर गूंगा होगा, और

उसे फ़ौरन साल्वातोर की चेतावनी याद आ गयी। क्या साल्वातोर सचमुच उन लोगों की ज़बानें काट लेता है, जो उसके भेद बता देते हैं? यह बदनसीब भी शायद उन्हीं में से एक हो। क्रिस्टो सहसा इतना डर गया कि पेड़ के तने पर उसकी पकड़ शिथिल पड़ गयी। काश, वह फिर से ऊंची दीवार की दूसरी ओर पहुंच पाता! उसने भगवान का नाम लेकर, मन ही मन अपनी इच्छा व्यक्त की। आंखों ही आंखों से उसने पेड़ और दीवार के बीच के फ़ासले का अन्दाज़ लगाया, लेकिन समझ गया कि वह उसे पार नहीं कर सकता था। इस बीच नीग्रो पेड़ के पास पहुंच चुका था और क्रिस्टो का पैर पकड़कर बड़ी अधीरता से उसे खींच रहा था। मान लेने के सिवा कोई चारा नहीं था। क्रिस्टो छलांग लगाकर नीचे आ गया, अपनी लुभावनी मुस्कान दिखाने के लिए बत्तीसी खोल दी, हाथ आगे बढ़ाया और बड़े मिलनसारी के अन्दाज़ में बोला:

"जिम?"

नीग्रो ने हां में सिर हिलाया।

क्रिस्टो ने उससे हाथ मिलाया। "नरक में पहुंच जाओ तो शैतानों की भी चापलूसी करनी चाहिए," उसने सोचा। फिर ऊंची आवाज़ में क्रिस्टो ने पूछा:

"गूंगे हो?"

कोई जवाब नहीं मिला।

"तुम्हारे ज़बान नहीं है?"

नीग्रो अब भी ख़ामोश था।

क्रिस्टो ने सोचा कि अगर इस आदमी के ज़बान न भी हो तो भी वह कम से कम इशारों के ज़रिये तो बातें कर सकता था। इसके बजाय जिम ने क्रिस्टो का हाथ पकड़ा और उसे उन्हीं लाल-पीले खालवाले जानवरों के पास ले गया और उन पर कुछ फुंकारा। जानवर उठ खड़े हुए, क्रिस्टो को सूंघा और चुपचाप वहां से चले गये। क्रिस्टो की जान में जान आयी।

फिर जिम उसे बाग़ दिखाने के लिए ले चला।

पत्थर के चौकों वाले नंगे-बूचे आंगन के बाद बाग़ तो स्वर्ग के समान था, वहां हरियाली और फूल ही फूल थे। बाग़ पूर्व की ओर फैलते हुए धीरे-धीरे नीचे उतर गया था, यहां तक कि लगभग समुद्र-तट तक जा पहुंचा था। आड़ू और ज़ैतून के झुरमुटों के बीच छोटे छोटे तंग रास्ते थे, जिन पर लाली-मायल रंग के सीपों का चूरा बिछाया गया था। उनके दोनों तरफ़ अनोखे कैक्टस, नीले-हरे रंग के एगेव और हल्के पीले-हरे रंग के फूलों की झाड़ियां उग रही थीं। पेड़ों के साये में घास का बिछावन बिछा था। उसकी घनी हरियाली में कहीं कहीं छोटे-छोटे सफ़ेद पत्थरों के बने तालाब थे, और रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां थीं। हवा में ताज़गी लाने के लिए कुछेक फ़ौवारों की झिलमिलाती धार बहुत ऊंची उठ रही थी।

सारा बाग़ जानवरों के चिल्लाने और किकियाने, पक्षियों के चहचहाने और गाने से मुखरित हो रहा था। क्रिस्टो ने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी भी ऐसे विचित्र पक्षी और जानवर नहीं देखे थे, जिन्हें आज वह देख रहा था।

छः टांगोंवाली एक छिपकली तेज़ी से रास्ता पार कर गयी, खिली धूप में उसकी हरे रंग की चमड़ी तांबे जैसी चमक रही थी। एक सांप, जिसके दो सिर थे, पेड़ पर से लटक रहा था, उसने दोनों कण्ठों का प्रयोग करते हुए क्रिस्टो पर फुंकारा, जिससे क्रिस्टो डर के मारे उछल पड़ा। नीग्रो ने उससे भी ज़्यादा ऊंची आवाज़ में फुंकारा, जिस पर सांप चुप हो गया। वह पेड़ पर से गिरा और झाड़ियों की एक क़तार में खो गया। एक और लंबा सांप, जो रास्ते में लेटा मज़े से धूप सेंक रहा था, जल्दी से रेंगता हुआ वहां से जाने लगा, उसकी दो टांगें थीं, जो चलने में उसकी मदद कर रही थीं। रास्ते के निकट, एक बाड़े के अन्दर एक सूअर घों-घों कर रहा था, उसकी एकमात्र

आंख, जो माथे के बीचोंबीच जड़ी थी, क्रिस्टो को घूर रही थी।

फिर लाली-मायल रास्ते पर से दो बड़े बड़े, सफ़ेद रंग के चूहे, जो एक दूसरे के साथ जुड़े हुए थे, उनकी ओर भागते हुए आये, लगता था जैसे दो सिरों और आठ टांगोंवाला कोई भयानक जन्तु चला आ रहा हो। किसी-किसी वक़्त इस दोहरे जीव को कठोर संघर्ष का सामना करना पड़ता: प्रत्येक चूहा अपनी ओर खींचने की कोशिश करता और दोनों ग़ुस्से में किकियाते। लेकिन जीत हमेशा दायें पक्ष की होती। पथ के निकट ही एक और "सियामी जोड़ा" था—"अब की बार बढ़िया रोयेंदार भेड़ों का जोड़ा, जो घास चर रहा था। चूहों की भांति वे लड़ती-भिड़ती नहीं थी, मुद्दत से ही उनके बीच मानसिक समझौता हो गया जान पड़ता था। लेकिन जिस अजीबोग़रीब जन्तु को क्रिस्टो ने आगे चल कर देखा, वह उसकी कल्पना पर अपनी अमिट छाप छोड़ गया। वह गुलाबी रंग का बड़ा-सा कुत्ता था, जिसकी खाल पर एक भी बाल नहीं था, और उसकी पीठ में से बन्दर की शकल का एक जानवर—कम से कम जिसका ऊपर का हिस्सा ज़रूर बन्दर जैसा था—निकला हुआ था। कुत्ता क्रिस्टो के पास चला आया और अपनी दुम हिलाने लगा, जबकि नन्हा बन्दर अपना सिर दायें-बायें झुलाता हुआ, अपने बाज़ू हिलाता, कुत्ते की पीठ हथेलियों से थपथपाता और क्रिस्टो को देख-देखकर किकियाता था। इण्डियन ने अपनी पतलून के जेब में हाथ डालकर चीनी का एक टुकड़ा निकाला और बन्दर को देने जा ही रहा था कि किसी ने उसका हाथ थाम लिया और ज़ोर से फुंकारा। यह जिम था। क्रिस्टो इन सभी विचित्र जीवों को देखते हुए उनमें इस क़दर खो गया था कि जिम के अस्तित्व से ही बेख़बर हो चुका था। बूढ़े नीग्रो ने इशारों से उसे समझाया कि बन्दर को खिलाने की इजाज़त नहीं है। इस अन्तराल से लाभ उठाते हुए एक

गौरैया, जिसका सिर तोते का था, झपट कर नीचे उतरी और चीनी के टुकड़े को क्रिस्टो के हाथ से छीनकर एक झाड़ी के पीछे सुरक्षित जगह पर ले गयी। दूर चरागाह में से एक घोड़े के रम्भाने की आवाज़ आयी—इसका सिर गाय का था। दो लामा ऊंट चरागाह में से तेज़ी से गुज़रे; घोड़ों जैसी उनकी दुमें छितरी हुई थीं। चारों ओर से अजीबोग़रीब जानवर क्रिस्टो को नज़र आ रहे थे: बिल्लियों के सिरवाले कुत्ते, सींगोंवाले सूअर, मुर्ग़ों के सिरवाली बत्तखें, उक़ाब की चोंचवाले शुतुरमुर्ग, अमरीकी बिल्ली के धड़वाली भेड़ें...

क्रिस्टो को लगा जैसे वह दिवास्वप्न देख रहा हो, उसने अपनी आंखें मलीं, तालाब में से सिर पर ठण्डा पानी डाला, पर कुछ लाभ नहीं हुआ। तालाबों में उसे मछलियों के सिर और गलफड़ोंवाले सांप नज़र आये, मेंढकों की टांगोंवाली मछलियां, भीमाकार मेंढक, जिनके शरीर छिपकली जैसे लम्बे थे।

"काश, मैं दीवार के बाहर होता!" क्रिस्टो ने फिर एक बार मन ही मन चाहा।

अन्त में जिम उसे बालू से बिछे मैदान में ले आया, जिसके बीचोंबीच सफ़ेद संगमरमर का मूर शैली में बना आवास-गृह था। ताड़-वृक्षों के पीछे उसकी मेहराबें और स्तम्भों की क़तारें बहुत कुछ छिपी हुई थीं। तांबे के बने, डालफ़िन की शक्ल के फ़ौवारों से उन तालाबों में पानी के झरने गिर रहे थे, जहां स्वच्छ निर्मल जल में सुनहरी मछलियां तैर रही थीं। उनमें सब से बड़ा फ़ौवारा, जो प्रधान प्रवेश-द्वार के सामने था, डालफ़िन पर सवार एक युवक की शक्ल का था—शायद वह पुराने ज़माने के लोगों का सामुद्रिक देवता ट्रिटन था—और उसके मुंह के पास एक घुमावदार शंख था। आवास-गृह के पीछे नौकरों के कुछेक घर और अन्य कोठरियां थीं, उनसे आगे कांटेदार

कैक्टसों का पूरा जंगल था, और अन्तिम सिरे पर सफ़ेद दीवार थी।

"एक और दीवार!" क्रिस्टो ने सोचा।

जिम उसे एक छोटे से शीतल कमरे में ले गया। उसने इशारों से समझाया कि क्रिस्टो को वहीं रहना है और उसके बाद उसे अकेला छोड़कर चला गया।

तीसरी दीवार

इस नयी अनोखी दुनिया में धीरे-धीरे क्रिस्टो अपना रास्ता पहचानने लगा। कुछ ही देर बाद उसे पता चल गया कि बाग़ के सब जीव-जन्तु बड़े सधे हुए थे। कुछेक के साथ तो उसके सम्बन्ध भी मैत्रीपूर्ण हो गये। जागुआर की चमड़ीवाले कुत्ते, जिन्होंने बाग़ में उसे पहले दिन इतना डरा दिया था, उसके हाथ चाटते और उसके पीछे-पीछे चलते थे। लामा ऊंट उसकी हथेली पर से खाते। तोते उसके कन्धों पर आकर बैठ जाते।

बारह नीग्रो बाग़ और जानवरों की रखवाली करते थे, और सभी जिम की ही भांति ख़ामोश या गूंगे थे। कुछ भी हो, क्रिस्टो ने उन्हें आपस में भी बोलते कभी नहीं सुना था। सभी चुपचाप अपने अपने काम में लगे रहते। जिम उन पर एक तरह से निरीक्षक का काम करता था। वह उन्हें काम देता और कड़ाई से उसे पूरा करवाता। क्रिस्टो यह देखकर काफ़ी हैरान हुआ कि उसे जिम का

सहायक नियुक्त किया गया था। उसका काम कठिन नहीं था, बहुत ज़्यादा काम नहीं करना पड़ता था और खाने के लिए बहुत मिलता था। लेकिन नीग्रो नौकरों की वह बोझल चुप्पी उससे बरदाश्त नहीं हो पा रही थी। उसे यक़ीन हो गया था कि साल्वातोर ने सब की ज़बानें काट डाली हैं। हर बार जब साल्वातोर उसे कमरे में बुला भेजता—हालांकि ऐसे अवसर कम हुआ करते थे—क्रिस्टो सोचता कि उसकी बारी आ गयी है। फिर एक ऐसी बात हुई जिससे क्रिस्टो का डर जाता रहा।

एक दिन उसने देखा, जिम एक ज़ैतून के पेड़ के साये में गहरी नींद सोया पड़ा था। नीग्रो पीठ के बल लेटा था और उसका मुंह खुला था। नीग्रो के ज़बान है या नहीं, यह देखने के लिए क्रिस्टो ने मौक़े से फ़ायदा उठाया, और जब उसे पता चला कि ज़बान मौजूद है, तो वह कुछ आश्वस्त हो गया।

डाक्टर साल्वातोर की दिन-चर्या नियमबद्ध और व्यस्त होती थी। सात से नौ बजे तक वह मरीज़ों को देखता, नौ से ग्यारह तक उन मरीज़ों के आपरेशन करता, जिन्हें इसकी ज़रूरत होती थी। फिर वह प्रयोगशाला में काम करने के लिए—जिसमें जानवरों के आपरेशन करना और उनका अध्ययन करना शामिल होता था—अपने आवास-गृह में चला जाता था। अध्ययन और अनुसंधान के बाद जानवरों को बाग़ में भेज दिया जाता था। क्रिस्टो, जो आवास-गृह में झाड़-पोंछ का काम किया करता था, कभी कभी प्रयोगशाला में भी जा पहुंचता। जो चीज़ें उसे वहां देखने को मिलतीं, वे बाद में देर तक उसके दिमाग़ पर छायी रहतीं। शरीर में से काट कर रखे गये दिल और गुर्दे कांच के मर्तबानों में पड़े मिलते। लगता जैसे कटे हुए अंग अपने मालिक का इन्तज़ार कर रहे हैं।

उन्हें देखकर क्रिस्टो को कंपकंपी होने लगती, और वह बाहर निकल जाता। बाग़ के जीते-जागते भयानक जन्तुओं के बीच रहना उसे ज़्यादा पसन्द था।

इसके बावजूद कि साल्वातोर रेड इण्डियन पर विश्वास करता था, फिर भी क्रिस्टो को तीसरी दीवार से आगे बढ़ने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन इस दीवार के पीछे क्या था, ठीक यही बात जानने के लिए क्रिस्टो का मन लालायित था। एक दिन दोपहर के वक़्त, जब सभी आराम कर रहे थे, वह चुपके से दीवार के पास गया। उसे बच्चों की आवाज़ें सुनाई दीं। वे किसी इण्डियन बोली में बातें कर रहे थे, जिससे क्रिस्टो परिचित था, लेकिन उनकी आवाज़ों के बीच और आवाज़ें भी सुनाई पड़ती थीं, किकियाती हुई-सी, मानो झगड़ रही हों, जो, क्रिस्टो को लगा, इण्डियन भाषा के किसी अजीब-से रूप में बोल रही थीं।

एक दिन बाग़ में क्रिस्टो को देखकर साल्वातोर रुक गया और अपनी आदत के मुताबिक़ पैनी नज़र से उसकी ओर देखते हुए बोला:

"तुम्हें मेरे यहां काम करते एक महीना हो चुका है, क्रिस्टो, और मैं तुम्हारे काम से ख़ुश हूं। निचले बाग़ में एक नौकर बीमार हो गया है। तुम उसकी जगह काम करो। तुम्हें वहां बहुत-सी नयी चीज़ें देखने को मिलेंगी। लेकिन तुम्हारी ज़बान के बारे में जो हमारे बीच छोटा-सा वार्तालाप हुआ था, उसे याद रखना, हां, अगर ज़बान को खोना चाहते हो तो दूसरी बात है।"

"आपके इन गूंगे नीग्रो नौकरों के बीच तो मैं ज़बान का इस्तेमाल ही लगभग भूल चुका हूं, डाक्टर," क्रिस्टो ने कहा।

"बड़ी अच्छी बात है। मौन श्रेयस्कर होता है, तुम जानते ही हो। प्रसंगवश, क्या तुम एन्डीज़ से भली भांति परिचित हो?"

"पहाड़ों में मेरा जन्म हुआ है और वहीं मैं पलकर बड़ा हुआ हूं।"

"ख़ूब। शीघ्र ही मुझे अपने चिड़ियाघर के लिए पक्षियों और जानवरों के एक नये समूह की ज़रूरत होगी। मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा। अब तुम जा सकते हो। जिम तुम्हें निचले बाग़ में ले जायेगा।"

क्रिस्टो इस जगह की विचित्रताओं का अभ्यस्त हो चुका था, बेशक, पर उसे अब और विचित्रताएं देखने को मिलीं जिनसे वह चौंधिया गया।

धूप में नहाये, खुले घास के मैदान में नंगे बच्चे बन्दरों के साथ खेल रहे थे। तीन से बारह साल की उम्र के उन बच्चों में, लगता था जैसे अर्जेन्टीना की सभी जन-जातियों का प्रतिनिधित्व मिला हो। सभी साल्वातोर के मरीज़ थे। कुछेक के जटिल आपरेशन किये गये थे और साल्वातोर की ही प्रतिभा ने उन्हें मौत के मुंह से निकाला था। बच जाने पर बच्चे स्वास्थ्य-लाभ के लिए बाग़ में उस वक़्त तक खेलते जब तक वे हृष्ट-पुष्ट होकर घर जाने लायक़ न हो जाते।

बेदुम बन्दर, जिनके शरीर पर एक भी बाल न था, उनका साथ देते थे। लेकिन एक बात ने क्रिस्टो को सब से अधिक आश्चर्यचकित किया: वे सभी कोई न कोई इण्डियन भाषा बोल सकते थे। वे बच्चों के खेलों में भाग लेते, उनसे झगड़ते, पतली, तीखी आवाज़ में चिल्लाते, हालांकि समूचे तौर पर उनका व्यवहार काफ़ी मैत्रीपूर्ण था। कभी कभी क्रिस्टो सोचने लगता कि शायद ये इनसान थे।

जैसा कि क्रिस्टो को शीघ्र ही पता चल गया निचला बाग़ दूसरे बाग़ की तुलना में छोटा था, ज़्यादा तीखी ढाल पर था, जो समुद्र की ओर चली गयी थी और सीधी-सतर दीवार की सी एक ऊंची चट्टान में ख़त्म होता था। उसके पीछे कहीं अदृश्य महासागर था; लहरों के शोर से उसके

अस्तित्व का पता चलता था।

ज़्यादा ध्यान से देखने पर क्रिस्टो को मालूम हुआ कि चट्टान इन्सान के हाथ की बनी थी और वास्तव में एक और—चौथी—दीवार के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। इसमें क्रिस्टो को लोहे का एक दरवाज़ा नज़र आया, जिस पर चट्टान के रंग के साथ मिलान करने के लिए भूरे रंग का रोग़न किया गया था; इसके अतिरिक्त उस पर विस्तारिया बेल फैली हुई थी जिससे उस पर पर्दा सा हो गया था।

क्रिस्टो ने कान लगा कर सुना। लहरों के शोर के अतिरिक्त कोई शब्द सुनायी नहीं देता था। यह छोटा दरवाज़ा कहां खुलता था? समुद्र की ओर?

सहसा उसके पीछे बच्चों का शोर हुआ। क्रिस्टो झट से मुड़ा, देखता है कि बच्चे आंखें फाड़-फाड़कर आसमान की ओर देखे जा रहे हैं। उसने भी नज़र ऊपर उठायी, और देखा कि एक छोटा-सा लाल रंग का गुब्बारा धीरे-धीरे ऊंचा उठता हुआ बाग़ के आर-पार जा रहा था। हवा उसे समुद्र की ओर उड़ाये लिये जा रही थी।

यह था तो बच्चों का साधारण-सा गुब्बारा, लेकिन उसे देखकर क्रिस्टो उत्तेजित हो उठा। ज्यों ही वह नौकर, जो बीमार था, वापस काम पर आया, क्रिस्टो सीधा साल्वातोर के पास जा पहुंचा।

"शीघ्र ही हम एण्डीज़ पर्वत पर चले जायेंगे, डाक्टर। संभव है, देर तक वहां रहेंगे। क्या मैं अपनी बेटी और उसकी बच्ची को देखने जा सकता हूं?"

साल्वातोर नहीं चाहता था कि उसके नौकर घर से कहीं भी जायें। उसने फ़ौरन जवाब नहीं दिया। क्रिस्टो खड़ा इन्तज़ार कर रहा था, उसकी आंखें साल्वातोर की सर्द नज़र को देखे जा रही थीं।

"अपना वचन याद रखो," साल्वातोर ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि तुम्हें अपनी ज़बान खोनी पड़े। तुम जा

सकते हो, लेकिन तीन दिन के अन्दर-अन्दर तुम्हें लौट आना होगा। ठहरो!"

साल्वातोर दूसरे कमरे में गया और नरम चमड़े का बटुआ उठाये हुए लौटा।

"यह लो, तुम्हारी नातिन के लिए और तुम्हारी ख़ामोशी के लिए।"

घात

"अगर वह अब की बार भी नहीं आया तो मैं तुम दोनों का सफ़ाया कर दूंगा, न करूं तो मेरा नाम ज़ुरीता नहीं है। मैं ज़्यादा चुस्त लोगों को काम पर लगाऊंगा," बड़ी अधीरता से अपनी घनी मूछों को मरोड़ता हुआ ज़ुरीता कहे जा रहा था। ज़ुरीता सफ़ेद पोशाक और पनामा टोपी पहने था। वह बाल्तासार से ब्वेनस-ऐरीज़ के पास मिला।

सफ़ेद कमीज़ और नीली धारीदार पतलून पहने बाल्तासार सड़क के किनारे बैठा था और निराशा में घास के तिनके तोड़ रहा था, जो सूरज की गर्मी में सूखकर कुरकुरे हो रहे थे।

उसे स्वयं इस बात का पछतावा होने लगा था कि उसने अपने भाई को साल्वातोर की जासूसी करने के लिए क्यों भेजा।

बाल्तासार से लगभग दस साल बड़ा होने के बावजूद क्रिस्टो हृष्ट-पुष्ट और लचीले जिस्म का था और पाम्पास मैदानों की बिल्ली जैसा चालाक था। लेकिन उसका विश्वास नहीं किया जा सकता था। वह जमकर कोई भी काम नहीं

कर पाता था। ज़माना था जब उसने खेती-बारी का काम शुरू किया, पर शीघ्र ही ऊबकर छोड़ दिया। फिर बन्दरगाह पर उसने शराबख़ाना खोला, पर ख़ुद इतनी अधिक शराब पीने लगा कि उसी में घर-बार बिक गया। हाल ही में क्रिस्टो मुजरिमाना कार्रवाइयों से अनिश्चित ही कमाई कर पाता था। अपने तेज़ दिमाग़ से वह किसी भी चीज़ का भेद पा जाता था, लेकिन उसे बहुत विश्वास का काम नहीं सौंपा जा सकता था। अगर उसे अपनी जेब गर्म करने का मौक़ा मिले तो वह अपने भाई को भी धोखा दे सकता था। बाल्तासार अपने भाई को जानता था, और उतना ही चिन्तित था जितना ज़ुरीता।

"क्या तुम्हें यक़ीन है कि क्रिस्टो ने वह गुब्बारा देख लिया होगा?"

बाल्तासार ने कन्धे बिचका दिये। वह तो चाहता था कि सारे मामले को यहीं छोड़ दिया जाये और घर जाकर, अपनी दूकान के शान्त वातावरण में आराम से बैठकर, ठण्डे पानी में शराब मिलाकर पी जाये और जल्दी ही लम्बी तानकर सोया जाये।

सड़क के नाके पर धूल का बादल खुम्मी की तरह नमूदार हुआ और अस्तप्राय सूर्य के प्रकाश में चमक उठा। इसी समय सीटी बजने की तीखी, लम्बी आवाज़ सुनाई दी।

बाल्तासार की जान में जान आयी।

"वही है!" उसने कहा।

"अब भी कौन सा जल्दी आया है!" ज़ुरीता ने कहा।

लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ क्रिस्टो उनकी ओर तेज़ी से बढ़ता आ रहा था—इस समय यह आदमी वह कांपता, बूढ़ा इण्डियन नहीं था, जो बीमार नातिन को उठाये डाक्टर से मिलने आया था। क्रिस्टो ने एक बार फिर सीटी बजायी, नज़दीक आया और दोनों आदमियों को आदाब कहा।

"कहो, 'समुद्री दैत्य' को देखा?" अभिवादन के तौर पर ज़ुरीता ने पूछा।

"अभी नहीं, लेकिन वह वहां पर मौजूद ज़रूर है। साल्वातोर उसे चहारदीवारी के अन्दर रखता है। सब से बड़ी बात यह है कि साल्वातोर मेरा विश्वास करता है। उसी बीमार नातिन के ही कारण," अपनी छलपूर्ण आंखों को सिकोड़ते हुए क्रिस्टो ने हंसकर कहा। "वह तो सारा खेल ही चौपट किये दे रही थी, मतलब है, जब वह तन्दुरुस्त हो गयी। मैं तो उसे नाना की तरह उठाकर चूम रहा था, मगर वह लगी मुझे लातें जमाने यहां तक कि उसने रोना शुरू कर दिया था।" और क्रिस्टो फिर हंस दिया।

"लड़की तुम्हें मिली कहां से?" ज़ुरीता ने पूछा।

"पैसा पाना कठिन है, लड़कियां पाना कठिन नहीं," क्रिस्टो बोला। "और उसकी मां भी ख़ुश है। मुझे पांच पेसो मिले और उसे अपनी बेटी तन्दुरुस्त होकर मिल गयी।"

उसने इस बात का ज़िक्र करने की तकलीफ़ गवारा नहीं की कि उसे अच्छी-ख़ासी रक़म साल्वातोर से भी मिली थी। निश्चय ही वह इस रक़म में से कुछ भी बच्ची की मां को देने का इरादा नहीं रखता था।

"वह जगह तो बाक़ायदा चिड़ियाघर है—वहां तो भयानक जीव-जन्तु भरे पड़े हैं," क्रिस्टो अपनी कहानी कहने लगा।

"भले ही यह बड़ा दिलचस्प हो," कुछ देर बाद ज़ुरीता ने कहा और सिगार सुलगाया, "लेकिन तुमने असली माल, 'दैत्य' को नहीं देखा। अब आगे क्या करने का इरादा है?"

"एण्डीज़ पर्वत का दौरा करेंगे।" क्रिस्टो ने उन्हें साल्वातोर की योजना के बारे में बताया।

"बहुत ख़ूब!" ज़ुरीता चहक उठा। "ज्यों ही साल्वातोर

और उसकी मण्डली वहां से निकलेगी कि हम उनके घर पर हमला कर देंगे और 'समुद्री दैत्य' को ज़बरदस्ती उठा ले जायेंगे। वह जगह इतनी अलग-थलग है कि दिन-दहाड़े भी यह काम करो तो किसी को ख़बर नहीं होगी।"

क्रिस्टो ने सिर हिलाया।

"जागुआर तुम्हारा सिर काट खायेंगे। अगर वे न भी खायें, तो भी तुम्हें 'समुद्री दैत्य' नहीं मिलेगा। मैं ख़ुद अब तक उसका सुराग नहीं लगा पाया।"

"तो फिर हम यों करेंगे," कुछ देर तक सोचने के बाद ज़ुरीता बोला। "हम साल्वातोर की मण्डली की घात में रहेंगे, और पीछे से हमला करके साल्वातोर को गिरफ़्तार कर लेंगे, और उसकी रिहाई की क़ीमत तलब करेंगे। 'समुद्री दैत्य' ही हमारी क़ीमत होगा।"

क्रिस्टो ने बड़ी सफ़ाई से ज़ुरीता के जेब में से सिगार निकाल लिया।

"बहुत-बहुत शुक्रिया। घात में बैठना बेहतर है। लेकिन साल्वातोर ज़रूर तुमसे कोई दांव खेल जायेगा—माल तुम्हारे हवाले करने का वचन देगा और देगा नहीं, या ऐसी ही कोई बात होगी। वे स्पेनी लोग..." वाक्य के बाक़ी शब्द खांसी में खो गये।

"तो फिर तुम क्या सुझाव देते हो?" ज़ुरीता ने चिढ़कर कहा।

"धैर्य रखो। साल्वातोर मुझ पर विश्वास करता है, लेकिन केवल तीन दीवारों तक ही। पहले तो ऐसी युक्ति निकालनी चाहिए कि वह मुझ पर पूरी तरह से विश्वास करने लगे, उतना ही, जितना वह अपने साये पर करता है, तब वह ख़ुद ही मुझे 'समुद्री दैत्य' दिखा देगा।"

"कहो, कहते जाओ।"

"साल्वातोर पर राहज़न हमला करेंगे," क्रिस्टो ने ज़ुरीता की छाती पर उंगली रखते हुए कहा, "और एक ईमानदार आराउकाना उसे उनके पंजे से छुड़ा

लेगा," उसने अपनी छाती पर उंगली रखकर कहा। "तब साल्वातोर के घर में क्रिस्टो के लिए कोई भेद नहीं रह जायेंगे।" ("और सोने के पेसों की भी कमी नहीं होगी," स्वगत रूप से उसने जोड़ा।)

"ख़्याल बुरा नहीं है।"

फिर उन्होंने उस सड़क के बारे में निश्चय किया, जिधर से जाने का सुझाव क्रिस्टो साल्वातोर को देगा।

"प्रस्थान से एक दिन पहले मैं लाल रंग का एक पत्थर दीवार के पार फेंकूंगा। सब तैयारी पूरी कर लेना।" यह कहकर क्रिस्टो चला गया।

हमले की योजना बड़े अच्छे ढंग से तैयार की गयी थी, लेकिन एक अप्रत्याशित घटना ने उसे लगभग धूल में मिला दिया।

ज़ुरीता, बाल्तासार और एक दर्जन लुटेरे, जिन्हें बन्दरगाह पर से भाड़े पर लिया गया था, गाऊचो* के से कपड़े पहने, हथियारों से लैस और घोड़ों पर सवार, पाम्पास मैदानों को जानेवाली सड़क के किनारे बस्तियों से दूर अपने-अपने स्थानों पर शिकार की घात में खड़े हो गये।

सहसा लुटेरों को किसी इंजन की घरघराहट सुनायी दी, जो तेज़ी से नज़दीक आ रहा था। दो ज़बरदस्त रोशनी की बत्तियां अन्धकार को चीरती आ रही थीं, और पेश्तर इसके कि वे जान पाते कि वे कहां हैं, एक बड़ी-सी मोटरकार भागती हुई पास से निकल गयी।

क्रिस्टो के दिमाग़ को यह नहीं सूझा था कि साल्वातोर इस नये तरीक़े से शिकार के लिए निकल सकता था।

---

* गाऊचो—पाम्पास मैदानों में रहनेवाले चरवाहों के क़बीले जिनमें रेड इण्डियन और गोरे रक्त का मिश्रण है। ये बहुत बढ़िया घुड़सवार होते हैं।—ले०

निराशा और क्रोध से ज़ुरीता आपे से बाहर हो गया, बाल्तासार को हंसी आ गयी।

"धैर्य रखो, मालिक," उसने कहा। "वे लोग रात में सफ़र करते हैं और दिन में आराम। हम उन्हें दिन में जा पकड़ेंगे।" और उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी। बाक़ी लोग उसके पीछे-पीछे हो लिये।

लगभग दो घण्टे तक वे घोड़े दौड़ाते रहे, जब उन्हें दूर किसी अलाव की रोशनी दिखायी दी।

"वे ही हैं। कोई घटना घट गयी है। तुम यहां इन्तज़ार करो मैं थोड़ी जासूसी कर आऊं।"

और घोड़े पर से उतरकर बाल्तासार सांप की तरह रेंगता हुआ अन्धेरे में खो गया।

घण्टे भर में वह लौट आया।

"मोटर बिगड़ गयी है। वे उसे ठीक कर रहे हैं।"

काम बड़ी जल्दी पूरा हो गया। लुटेरे साल्वातोर की मण्डली पर अचानक टूट पड़े—ऐन उस वक़्त जब उन्होंने मोटर की मरम्मत कर ली थी—और साल्वातोर, क्रिस्टो और तीन नीग्रो नौकरों के हाथ-पांव बांध दिये।

एक लुटेरे ने जो सरदार बना हुआ था—ज़ुरीता ने पृष्ठभूमि में ही बने रहना पसन्द किया—साल्वातोर से कहा कि वे बड़ी सी रक़म लेकर उसे रिहा करने के लिए तैयार हैं। और उसने रक़म भी बता दी।

"तुम्हें मिल जायेगी," साल्वातोर ने कहा।

"यह तुम्हारी रिहाई के लिए है। अगर चाहते हो कि तुम्हारे आदमियों को भी छोड़ दिया जाये तो उनके लिए भी उतनी ही रक़म देनी होगी," मौक़े से लाभ उठाते हुए लुटेरे ने कहा।

"इतनी रक़म का मैं इन्तज़ाम नहीं कर सकता," कुछ देर बाद साल्वातोर ने कहा।

"इसे ख़त्म कर दो!" लुटेरे सहसा चिल्ला उठे।

"पौ फटने तक तुम इस बारे में सोच सकते हो," लुटेरों के सरदार ने कहा।

साल्वातोर ने कन्धे बिचकाकर अपने शब्द फिर दोहरा दिये:

"इतनी रक़म मेरे पास नक़द नहीं है।"

उसकी उपेक्षा को देखकर लुटेरे भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।

साल्वातोर और उसके आदमियों को एक ओर ले जाकर लुटेरों ने मोटर-गाड़ी की अच्छी तरह से तलाशी ली। वहां उन्हें स्पिरिट मिल गयी जिसे साल्वातोर प्राणिशास्त्र-संग्रहालय के लिए इकट्ठा कर रहा था। शीघ्र ही सभी स्पिरिट में मदहोश ज़मीन पर सोये पड़े थे।

ऐन पौ फटने से पहले कोई आदमी धीरे-से रेंगता हुआ साल्वातोर के पास गया।

"मैं हूं," क्रिस्टो की आवाज़ आयी। "मैंने किसी तरह अपनी रस्सियां खोल ली हैं और पहरेवाले लुटेरे को मार डाला है। बाक़ी सभी लुटेरे पिये हुए पड़े हैं और कुछ नहीं कर सकते। ड्राइवर ने कार ठीक कर दी है। चलिये, जल्दी से निकल चलें।"

वे मोटर में बैठे, नीग्रो ड्राइवर ने इंजन चालू किया, मोटर भाग निकली।

पीछे हो-हल्ला हुआ, कुछेक गोलियां तक चलने की आवाज़ आयी।

साल्वातोर ने कृतज्ञता से क्रिस्टो से हाथ मिलाया।

साल्वातोर के चले जाने के बाद ही ज़ुरीता को पता चल पाया कि साल्वातोर पैसे देने के लिए तैयार था। "उस 'समुद्री दैत्य' को अग़वा करने की कोशिश के बजाय, जिससे न जाने कोई लाभ भी होगा या नहीं, क्या पैसे हाथ में ले लेना ज़्यादा सरल नहीं था?" ज़ुरीता ने सोचा। पर अब खेल ख़त्म हो चुका था। अब क्रिस्टो से ख़बर पाने का इन्तज़ार करना ही बाक़ी रह गया था।

जलथलिया

क्रिस्टो यह आस लगाये बैठा था कि साल्वातोर उसे बुला भेजेगा और कहेगा: "क्रिस्टो, तुमने मेरी जान बचायी है। अब से यहां की कोई बात तुमसे छिपी नहीं रहेगी। मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें 'समुद्री दैत्य' दिखाऊंगा।" या इसी तरह के कुछ शब्द कहेगा।

लेकिन साल्वातोर क्रिस्टो की उम्मीदों पर पूरा नहीं उतरा। उसने साहसी आराउकाना को खुले दिल से इनाम दिया और फिर अपने अनुसन्धान में डूब गया।

इसलिए क्रिस्टो ने अपनी खोज खुद शुरू कर दी। गुप्त दरवाज़ा शुरू में टेढ़ी खीर साबित हुआ, लेकिन अन्त में उसे अपने धैर्य का फल मिल गया। एक दिन उसने दरवाज़े पर के फूलदार कांटे को दबाया और दरवाज़ा धीरे-धीरे खुलने लगा, बहुमूल्य पदार्थों को रखनेवाले मज़बूत कमरे के दरवाज़े की तरह। क्रिस्टो सरक कर अन्दर चला गया, जिसपर दरवाज़ा ठक से बन्द हो गया। इसपर क्रिस्टो हैरान रह गया। उसने दरवाज़े की जांच की, बारी-बारी

से प्रत्येक फूलदार कांटे को दबाया, पर दरवाज़ा नहीं खुला।

"मैंने एक अच्छे जाल में अपने को फंसा लिया है," वह बुदबुदाया, "पर देखें तो यहां पर है क्या?"

उसने अपने को एक बड़ी-सी खोह में पाया, जो पेड़ों और झाड़ियों से अटी पड़ी थी और जिसके चारों ओर इन्सान के हाथ की बनी चट्टानें खड़ी थीं।

क्रिस्टो को यहां उसी प्रकार के पौधे नज़र आये जो आम तौर पर नम ज़मीन पर उगते हैं। बड़े-बड़े सायेदार पेड़ों में से सूरज की रोशनी उन झरनों तक नहीं पहुंच पाती थी, जो घरघराते हुए नीचे बह रहे थे। पेड़ों के बीच जगह-जगह पर बने फ़ौवारों से हवा और भी ज़्यादा नम हो रही थी। यहां उतनी ही ज़्यादा सीलन थी, जितनी मिसिसिपी के नीचे तटों पर पायी जाती है। ज़मीन के बीचोंबीच एक छोटा-सा, चपटी छत का और पत्थर का बना घर था, जिसकी दीवारों पर उगी बेलों ने उसे पूरा ढक रखा था। खिड़कियों पर हरे रंग के पर्दे गिरा दिये गये थे। ऐसा लगता था जैसे इस घर में बहुत दिनों से कोई न रह रहा हो।

क्रिस्टो बाग़ के दूसरे छोर तक जा पहुंचा। दीवार के पीछे से आती हुई कंकड़ों की सरसराहट से अन्दाज़ लगाने पर समुद्र निकट ही जान पड़ता था। "तो यह साल्वातोर की मिल्कियत की सीमा है," क्रिस्टो ने सोचा। दीवार के सामने एक बहुत बड़ा चौकोर तैराकी तालाब था, जिसके चारों ओर पेड़ों की कतारें थीं, और जिसकी गहराई पन्द्रह फ़ुट से कम न रही होगी।

क्रिस्टो के नज़दीक आने पर कोई जीव, जिसकी क्रिस्टो केवल एक झलक ही देख पाया था, पेड़ों के नीचे से भागता हुआ तालाब में कूद गया और कूदने पर उस जीव ने पानी का बहुत बड़ा छींटा उड़ाया। जब क्रिस्टो तालाब के निकट गया तो उसका दिल धक्-धक् कर रहा

था। "यही है वह! 'समुद्री दैत्य'!" क्रिस्टो ने सोचा। आख़िर वह उसे देखेगा ही।

इण्डियन ने साफ़ पानी में झांक कर देखा।

तालाब के तल पर बिछे सफ़ेद पत्थर के चौकों पर एक बड़ा-सा बन्दर बैठा था। वह क्रिस्टो की ओर भय और कुतूहल से देख रहा। और वह सांस ले रहा था—पानी के नीचे बैठा सांस ले रहा था। क्रिस्टो मन्त्र-मुग्ध-सा उसके पार्श्वों की ओर एकटक देखे जा रहा था, जो फूलते और बैठते, फूलते और बैठते थे...

शीघ्र ही चौंककर क्रिस्टो संभल गया और हंसने लगा। तो यह 'समुद्री-दैत्य', मछुओं का हौवा और कुछ नहीं, महज़ एक बन्दर है, जो पानी के नीचे सांस ले सकता है।

क्रिस्टो को ख़ुशी भी हुई और निराशा भी। 'दैत्य' के विवरणों से तो वह बिल्कुल भिन्न जीव को देखने की उम्मीद लगाये बैठा था। "भय और कल्पना हमारे साथ कैसी कैसी चालें खेल जाते हैं," बूढ़ा इण्डियन सोच रहा था।

अब वहां से लौट चलने का वक़्त आ गया था। क्रिस्टो गुप्त दरवाज़े के पास गया, दीवार के निकट एक बड़े-से पेड़ पर चढ़ गया, वहां से दीवार पर आकर सीधा नीचे कूद गया, इस आशा से कि उसकी बूढ़ी टांगें उसे धोखा नहीं दे जायेंगी।

ज्यों ही क्रिस्टो सही-सलामत ज़मीन पर पहुंचा उसे साल्वातोर की आवाज़ सुनाई दी:

"अरे क्रिस्टो, कहां हो तुम?"

इण्डियन ने रास्ते पर पड़ी एक हेंगी को झट से उठा लिया और उससे सूखे पत्ते बटोरने लगा।

"मैं यहां रहा," उसने चिल्लाकर कहा।

"मेरे साथ आओ, क्रिस्टो," साल्वातोर ने लम्बे डग भरकर गुप्त द्वार की ओर जाते हुए कहा। "दरवाज़ा खोलने के लिए यहां से दबाना चाहिए," और उसने उसी

फूलदार कांटे को दबाया, जिसका प्रयोग कुछ ही देर पहले क्रिस्टो ने किया था।

"आपने थोड़ी देर कर दी, मैंने आपका 'दैत्य' देख लिया है," क्रिस्टो ने मन ही मन कहा।

वे बाग़ में दाख़िल हुए। बेलों से ढके घर के पास से होते हुए साल्वातोर सीधा तालाब की ओर गया। बन्दर अभी भी पानी के नीचे था, वहीं पर जहां क्रिस्टो उसे छोड़ गया था। वह बैठा हुआ था और प्रत्येक श्वास के साथ हवा के छोटे-छोटे बुलबुले छोड़ रहा था।

बन्दर को देखकर क्रिस्टो ने हैरानी का दिखावा किया, जो शीघ्र ही सच्ची हैरानी में बदल गयी।

साल्वातोर बन्दर की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, सिवाय इसके कि उसने एक बार हाथ हिलाया मानो उसे रुख़सत कर रहा हो। बन्दर फ़ौरन ही तैरता हुआ ऊपर आ गया, हाथ-पांव मारकर तालाब से बाहर निकला, बदन को झकझोरा और एक पेड़ पर चढ़ गया। साल्वातोर ने झुककर हरे रंग के एक छोटे-से चौखटे को दबाया, जो घास में छिपा हुआ था। एक खोखली-सी घरघराहट सुनाई दी और तालाब के तल पर फैले हुए गुप्त कपाट खुल गये। उनमें से पानी वेग से बहने लगा। कुछेक मिनटों में ही तालाब समूचा ख़ाली हो गया। कपाट ठक से बन्द हो गये। लोहे की एक सीढ़ी जो सीधी तल तक चली गयी थी, तालाब के पार्श्व में अपनी जगह से खिसककर सामने आ गयी।

"आओ, क्रिस्टो!"

वे नीचे उतरे। साल्वातोर ने एक और चौके पर क़दम रखा और तालाब के ठीक बीचोंबीच एक और कपाट खुल गया। लोहे की सीढ़ियां नीचे अन्धकार में उतरती थीं।

साल्वातोर के पीछे-पीछे क्रिस्टो एक तहख़ाने में पहुंचा, जिसमें कपाट से आनेवाली रोशनी मंद-मंद बिखरी हुई थी।

थोड़ी दूर आगे जाने पर घटाटोप अन्धेरा छा गया। तहख़ाने में उनके क़दमों की नीरस आवाज़ गूंज रही थी।

"बस, अब हम पहुंचने ही वाले हैं, क्रिस्टो।"

साल्वातोर रुक गया और अपने हाथ से दीवार को टोहने लगा। खटाक का शब्द हुआ और रोशनी जगमगाने लगी। वे एक गुफ़ा में खड़े थे जिसकी छत से स्टैलेक्टाइट लटक रहे थे। उनके सामने पीतल का दरवाज़ा था, जिसपर पीतल के छल्लों को अपने जबड़ों में दबाये शेर के सिर लगे थे। साल्वातोर ने एक छल्ले को खींचा। मज़बूत, मोटा दरवाज़ा खुल गया। सामने एक अन्धियारा हॉल था। एक बार और खटाक का शब्द हुआ और दूधिया रंग का गोल लैम्प जल उठा, जिससे बड़ी-सी गुफ़ा में रोशनी फैल गयी। गुफ़ा की सामनेवाली दीवार सारी की सारी कांच की बनी थी। साल्वातोर ने बटन दबाया, गुफ़ा में फिर अन्धेरा छा गया, इसके बाद बिजली की रोशनी की तेज़ किरणें कांच की दीवार के पीछे एक ऐसे स्थान को प्रकाशित करने लगीं, जो देखने में एक बहुत बड़ा मछलियों का हौज़ जान पड़ता था। सिवारों और मूंगों के बीच मछलियां क्रीड़ा कर रही थीं। सहसा क्रिस्टो ने देखा कि इन्सान से मिलता-जुलता एक जीव, जिसकी बड़ी-बड़ी, गोल आंखें और मेंढक के से पंजे थे, सिवारों के झुरमुट के पीछे से बाहर निकल आया। वह बड़ी सहज कमनीयता से तैरता हुआ कांच की दीवार के निकट आया, जहां से उसकी बड़ी बड़ी आंखें और झिलमिलाते नीले चोइंटे नज़र आ रहे थे। उसने सिर हिलाकर साल्वातोर का अभिवादन किया और एक छोटे-से कक्ष में, जो दीवार के एक ओर बिल्कुल कांच का बना था, दाख़िल होकर कांच का दरवाज़ा बन्द कर लिया। कक्ष बड़ी जल्दी पानी से ख़ाली हो रहा था। अजनबी ने दूसरा दरवाज़ा खोला और गुफ़ा में पहुंच गया।

"अपने दस्ताने और चश्मा उतार दो," साल्वातोर ने कहा।

नवागन्तुक ने बड़ी आज्ञाकारिता से ये चीज़ें उतार दीं और अब क्रिस्टो के सामने छरहरे बदन का एक सुन्दर युवक खड़ा था।

"आओ, मैं तुम्हारा परिचय करा दूं, यह है इकथियांदर—जलथलिया, या 'समुद्री-दैत्य' जिस नाम से भी लोग इसे जानते हैं," साल्वातोर ने क्रिस्टो का परिचय युवक से कराया।

इण्डियन की ओर हाथ बढ़ाते हुए युवक बड़ी मिलनसारी से मुस्करा रहा था।

"नमस्ते," उसने स्पेनी भाषा में कहा।

क्रिस्टो ने ज़ोर से हाथ मिलाया। वह इतना चकित हो रहा था कि उसके मुंह से बोल तक नहीं फूट पा रहा था।

"इकथियांदर की देख-भाल करनेवाला नीग्रो नौकर बीमार पड़ गया है," साल्वातोर कह रहा था। "कुछ दिनों तक तुम इकथियांदर के पास रहोगे। अगर तुमने सन्तोषजनक काम किया तो मैं तुम्हें इसी काम पर पक्का कर दूंगा।"

क्रिस्टो ने चुपचाप सिर हिला दिया।

इकथियांदर की दिन-चर्या

अभी रात है लेकिन पौ फटने को है।

हवा गर्म और नम है, और मैगनोलिया, गुलशबी और मिगनोनैट्ट की महक से ओत-प्रोत है। एक पत्ता तक नहीं हिल रहा है। चारों ओर मौन का राज्य है। पांवों के नीचे बालू की सरसराहट के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं देता। इकथियांदर बाग़ के रास्ते पर चलता जा रहा है। उसकी पेटी के साथ बंधी कटार, मोटा चश्मा, झिल्लीदार दस्ताने और तैराकी के जूते उसके क़दमों की लय के साथ झूल रहे हैं। रास्ता पेड़ों और झाड़ियों के बीच से चला गया है। किसी किसी वक़्त इकथियांदर का शरीर किसी शाख़ को छू देता है, जिससे उसके बालों और गालों पर, जो अभी भी नींद के कारण गरम हैं, ओस के कण झरकर गिरते हैं।

रास्ता दायीं ओर मुड़ जाता है और तनिक ढालुवां हो जाता है। यहां हवा में स्पष्टत: ज़्यादा ताज़गी और नमी है। इकथियांदर पांव के नीचे पत्थर के चौकों को महसूस करता है और ठहर जाता है। सुभीते से वह अपनी तैराकी

की पोशाक पहनता है। फिर वह अपने फेफड़ों में से सारी हवा निकाल देता है और तालाब में कूद जाता है। पानी ठण्डा है, उसमें बलवर्द्धक शीतलता है, जिसके कारण उसके गलफड़ों में, जो अब लयबद्ध रूप से हरकत करने लगे हैं, सुइयां सी चुभ रही हैं। मनुष्य मछली बन गया है।

कुछेक ज़ोर के हाथ मारने पर इकथियांदर तालाब के तल पर पहुंच जाता है, और कुछ दूर तक उसके सहारे-सहारे तैरता जाता है। आगे फैले हुए उसके हाथ को पत्थर की दीवार में जड़ा हुआ लोहे का ब्रैकेट मिलता है, पहले एक, फिर दूसरा, फिर कुछेक और। इकथियांदर सुरंग में जा पहुंचता है और आगे की ओर झुककर अंदर आनेवाले ठण्डे जल-प्रवाह के ख़िलाफ़ चलने लगता है। दोनों पैरों के एक ही झटके से वह ऊपर पहुंच जाता है। उसे लगता है जैसे वह गरम जल के स्नानागार में पहुंच गया है। यह वह जगह है जहां तालाबों का ज़्यादा गर्म जल खुले समुद्र में जाता है। इकथियांदर पीठ के बल लेट जाता है, अपने बाज़ू मोड़ लेता है और जल-प्रवाह में सिर आगे की ओर करके बहने लगता है। उसे हरकत करने की ज़रूरत नहीं, गर्म जल-धारा उसे बहा ले जाती है।

सुरंग का दूसरा सिरा नज़दीक आ रहा है। वह अभी से पत्थरों और सीपियों की सरसराहट सुन सकता है, जो सुरंग के मुंह के निकट से आ रही है, जहां समुद्र-तल में स्थित चश्मा गर्म जल का फ़व्वारा छोड़ता है।

ज़्यादा अच्छी तरह से देख पाने के लिए जलथलिया करवट बदलता है। पर अभी भी चारों ओर गहरा अन्धेरा छाया है। वह अपनी बांह आगे को फैलाता है, और दूसरे क्षण उसे लोहे की झंझरी मिल जाती है, उसके छड़ों पर चिपचिपी समुद्री झाड़ियां और खुरदरी सीपियां चिपकी हुई हैं। कुछ देर तक वह जटिल से ताले को खोलने की कोशिश करता है। बोझल गोलाकार दरवाज़ा धीरे-धीरे खुलने लगता है। इकथियांदर बाहर सरक जाता है, और

ज्यों ही वह महासागर का रास्ता लेता है, उसे पीछे से ताले के खटाक से बन्द होने की आवाज़ आती है।

पानी के नीचे अभी भी अन्धेरा है, केवल नीचे, काली गहराइयों में रह-रहकर अन्धेरे में चमकनेवाले सूक्ष्म जीवों की नीलाभ रोशनी और पास में से गुज़रती हुई किसी जेलीफ़िश की धुन्धली लाल चमक दिखायी दे रही है। पर पौ फटनेवाली है और अंधेरे में समुद्र के स्फुरदीप्त जीव एक एक कर अपने नन्हे लैम्पों को बुझाने लगते हैं।

इकथियांदर के लिए सांस लेने में कुछ कुछ कठिनाई होने लगी है। उसके गलफड़ों में अब बराबर सूइयां-सी चुभने लगीं। इसका मतलब है कि वह चट्टानी अन्तरीप से आगे निकल गया है और उस नदी के गंदले पानी की धारा में पहुंच चुका है, जो उस जगह महासागर में गिरती है।

"हैरानी की बात है कि नदी की मछलियां किस भांति इस मटमैले पानी में रह सकती हैं," वह सोचता है। "उनके गलफड़े ज़्यादा मज़बूत होते होंगे।"

इकथियांदर दायीं ओर दक्षिण की दिशा में सीधा घूम जाता है और उस वक़्त तक बहता रहता है जब तक कि साफ़ पानी की ठण्डी लहर तक नहीं पहुंच जाता, जो तट के साथ साथ उत्तर की दिशा में उस जगह तक चली जाती है, जहां से वह समुद्र में मिलती हुई वेगवती पाराना नदी के दबाव के नीचे पूर्व की ओर घूम जाती है। उसकी सबसे नीचे की परत काफ़ी गहराई में बहती है, लेकिन उसकी सबसे ऊपरी परत—इकथियांदर का लक्ष्य—पानी की सतह से केवल पचास फ़ुट नीचे है। अब वह आराम कर सकता है: बहाव का स्वच्छ जल उसे महासागर में काफ़ी दूर बहा ले जायेगा।

जब तक अन्धेरा है, और शिकारी मछलियां जागकर घूमने नहीं लगी हैं, वह झपकी ले सकता है। पौ फटने से पहले के वक़्त सबसे मीठी नींद आती है।

जितनी देर वह सोया रहता है, उसकी चमड़ी तापमान

और जल-दाब के प्रत्येक छोटे से छोटे परिवर्तन को भी आंकती रहती है। तुरन्त ही उसके कानों में खोखला-सा झनझनाहट का शब्द पड़ता है, फिर एक बार और उसके बाद फिर एक बार। वह लंगरों की ज़ंजीरों का शब्द है। कुछ मील दूर, उस खाड़ी में, जिसकी ओर वह सोये सोये बहता जा रहा है, प्रभात वेला में मछली का शिकार करनेवाले जल-पोतों के लंगर उठाये जा रहे हैं। उसके बाद सभी अन्य शब्दों पर अपने आधिपत्य जमाते हुए एक स्थिर ज़ोरदार गड़गड़ाहट दूर से सुनाई देती है। यह 'हार्लाक्स' नामक एक बड़े ब्रिटिश जहाज़ के प्रोपेलर से आ रही है, जो लिवरपूल और ब्वेनस-ऐरीज़ के बीच चलता है। जहाज़ अभी भी बीस मील दूर होगा, लेकिन ध्वनि के लिए यह बहुत मामूली दूरी है, समुद्र के जल में वह लगभग पचास मील फ़ी मिनट की रफ़्तार से चलती है। रात के वक़्त 'हार्लाक्स' जहाज़ को देखते ही बनता है—आह्लादपूर्ण नगर, रोशनियों से जगमग करता हुआ और पानी की सतह पर बहता हुआ। लेकिन उसे रात के वक़्त देख पाने के लिए इकथियांदर को शाम के वक़्त महासागर की ओर चल देना होता है। अब इकथियांदर को अपनी झपकी को छोड़ना चाहिए। जहाज़ के कारण—उसके प्रोपेलरों, इंजनों और बत्तियों के कारण—शीघ्र ही महासागर के सभी जीव जाग जायेंगे। निश्चय ही कुछ ही क्षण पहले, दबाव के जिस हल्के से परिवर्तन ने उसे सावधान किया था, वह डालफ़िन मछलियों के कारण था, जो जहाज़ के आगमन को सबसे पहले महसूस कर लेती हैं। जहाज़ से मिलने के लिए उत्सुक वे उसकी ओर काफ़ी दूर तक चली गयी होंगी...

ज्यों ही पोत-घाट पर और खाड़ी में चहल-पहल शुरू होती है, जहाज़ों के इंजनों की गड़गड़ाहट इकथियांदर को घेरने लगती है। वह आंखें खोलता है, नींद की ख़ुमारी को दूर करने के लिए वह सिर झटकता है और झटका लेकर ऊपर को उठता है।

सतह पर पहुंच कर वह ध्यान से चारों ओर नज़र दौड़ाता है कि कहीं कोई नाव या छोटा जहाज़ तो नहीं, फिर नज़दीक किसी को न पाकर, जिससे उसे परेशानी हो सके, वह पानी में आगे जाने लगता है।

उसके आस-पास केवल कार्मोरांट पक्षी और समुद्री चिल्लियां उड़ रही हैं, किसी किसी वक़्त पानी के इतने निकट आ जाती हैं कि उनकी छातियों या पंखों के सिरे पानी की शीशे के समान स्वच्छ सतह को छूते हैं, और तेज़ी से उड़ते हुए हल्की-हल्की लहरियां पैदा कर जाते हैं। सफ़ेद समुद्री चिल्लियों की कांव-कांव बच्चे के रुदन जैसी लगती है। इकथियांदर के सीधा ऊपर हवा में एक बर्फ़-सा सफ़ेद, भीमकाय एल्बेट्रोस पक्षी पंख फड़फड़ाता हुआ तट की ओर जाता है। लाल चोंच और नारंगी पंजोंवाले पक्षी के बारह फ़ुट लम्बे पंखों के किनारों पर, एक सिरे से दूसरे सिरे तक, काली झालर-सी लगी है। जब वह उसे उड़ते हुए देखता है तो अकारण ही उसके दिल में ईर्ष्या की हूक नहीं उठती है। ऐसे पंख पाने के लिए वह क्या नहीं देगा!

पश्चिम के दूरवर्ती पर्वतों के पीछे रात के साये हटते जा रहे हैं। पूर्वी आकाश पर धीरे-धीरे गुलाबी रंग फैलता जा रहा है। महासागर पर छोटी छोटी सुनहरी तारों की तरह हल्की हल्की लगभग अदृश्य-सी लहरियां प्रगट होती हैं। जब सफ़ेद समुद्री चिल्लियां उड़कर ऊपर उठती हैं तो उनका रंग गुलाबी पड़ जाता है।

ज्यों ही हल्का सा समीर बहने लगता है, समुद्र की हल्के पीले रंग की समतल सतह पर सिलवटें पड़ने लगती हैं और नीले रंग के नमूने से बनने लगते हैं। हवा तेज़ होने लगती है। अशान्त नीलिमा गहराने लगती है। फेन की पहली पीली-मायल जिह्वाएं तटों को चाटने लगती हैं। तट से निकटतम जल का रंग हरा हो उठता है।

एक-मस्तूली जहाज़ों की एक पांत प्रगट होती है।

इकथियांदर को अपने बाप का आदेश कि लोगों से दूर रहे, याद आ जाता है और वह ग़ोता लगाकर सीधा जल में नीचे उतर जाता है। शीघ्र ही वह पानी की ठण्डी धारा में पहुंच जाता है जो उसे तट से दूर, पूर्व की दिशा में ले जायेगी। इस गहराई में नील-लोहित धुंधलके का साम्राज्य है, और लाल, पीले और भूरे रंग की मछलियां तितलियों के रंग-बिरंगे झुण्ड की तरह इधर-उधर भाग रही हैं।

ऊपर से घरघराहट-सी सुनाई देती है; क्षण भर के लिए पानी का रंग काला पड़ जाता है। यह ज़रूर कोई समुद्री वायुयान रहा होगा, जो समुद्र की सतह से थोड़ा ही ऊपर उड़ रहा है।

उसे याद आया, एक बार एक समुद्री वायुयान उसके निकट ही पानी पर उतर आया था। उसे ज़्यादा अच्छी तरह से देख पाने के लिए इकथियांदर उसके समीप चला गया और एक डोंगी को पकड़े रहा था कि अचानक जान से हाथ धो बैठने की स्थिति में जा पहुंचा था। सहसा समुद्री वायुयान ने उड़ान भरी थी, इकथियांदर पानी की सतह से ३० फ़ुट ऊपर हवा में पहुंच चुका था और तब उसे अपनी जान बचाने के लिए इतनी ही ऊंचाई से पानी में कूदना पड़ा था।

इकथियांदर ऊपर देखता है। सूर्य लगभग ऐन उसके सिर के ऊपर चमक रहा है, जिससे पता चलता है कि दोपहर होनेवाली है। पानी की सतह अब उस विशाल दर्पण सी नहीं रही, जो समुद्र-तल के पत्थरों को, बड़े आकार की मछलियों को और इकथियांदर को प्रतिबिम्बित करता है। ऊटपटांग तमाशाई शीशे की तरह अब वह विकृत हो गयी है और तरह तरह के अनगिनत आकार ग्रहण कर रही है।

इकथियांदर ऊपर आता है। सतह के नज़दीक पहुंचने पर उसे पता चल जाता है कि समुद्र अशान्त है। लहरें ज़ोर

मार रही हैं। शीघ्र ही उसका सिर और कन्धे पानी से बाहर उठते हैं और वह एक लहर के शिखर पर सवारी करने लगता, फिर नीचे, फिर ऊपर... "अरे, समुद्र की सतह सचमुच कटी-फटी है!" जहां समुद्र का उठान ज़ोर-शोर से दहाड़ता और बड़े बड़े पत्थरों को उलटता हुआ तट से टकरा रहा है, वहां अभी से झाग फैलने लगी है। झाग की सफ़ेद रेखा के पीछे पानी हल्के हरे रंग का हो रहा है, जबकि दक्षिण-पश्चिम से आनेवाली तेज़ हवा लहरों को पीट रही है और झाग के सफ़ेद किनारे तोड़ रही है।

"क्या कारण है," इकथियांदर सोचता है, "कि लहरों में से तैरते हुए उनका रंग गहरा नीला नज़र आता है, लेकिन जब पीछे मुड़कर देखो तो वे हल्के पीले रंग की नज़र आती हैं?"

उड़ती मछलियों के दल पानी की सतह को मात्र छूते हुए निकल जाते हैं। लहरों के शिखरों पर वे तिरते हुए चढ़ आते हैं, और लहरों के बीच के गड्ढों के आर-पार लगभग चालीस फ़ुट का फ़ासला उड़कर नीचे उतरते हैं, और पानी को छूते ही फिर ऊपर को उड़ जाते हैं। सफ़ेद समुद्री चिल्लियां चीख़ती-चिल्लाती इधर से उधर तेज़ी से उड़ रही हैं। और वहां के सबसे तेज़-रफ़्तार पक्षी—फ़्रिगेट नामक शिकारी पक्षी—अपने चौड़े पंखों से हवा को काटते हुए निकल जाते हैं। वह बड़ी सी मुड़ी हुई चोंच और तेज़ पंजोंवाला फ़्रिगेट, जिसके गहरे भूरे रंग के पंखों में हरे रंग का पुट है और जिसके नारंगी रंग का गले का पोटा है, नर पक्षी है। उसकी संगिनी, सफ़ेद छाती और ज़्यादा हल्के रंग के पंखोंवाली मादा-फ़्रिगेट, उसके साथ साथ उड़ रही है। सहसा मादा-फ़्रिगेट एक पत्थर की तरह पानी की सतह पर गिर जाती है और अगले क्षण फिर ऊपर को उठ आती है, उसकी चोंच में चांदी से सफ़ेद चोइंटों वाली मछली अपनी जान बचाने के लिए जूझ रही है। ऊपर की ओर एल्बेट्रोस-पक्षी उड़ रहे हैं, जो इस बात

का निश्चित संकेत है कि तूफ़ान आनेवाला है। मछली पकड़नेवाली नावें अपने सभी बादबान खोले तेज़ी से बन्दरगाह की शरण लेने की कोशिश कर रही हैं।

लहरों के नीचे हल्के हरे रंग के धुंधलके का साम्राज्य है, और जलथलिया सूर्य के उस बड़े गोले से अपना रास्ता जान लेता है, जिसे अभी भी घुमड़ते बादलों और पानी के दोहरे पर्दे में से देखा जा सकता है। अगर उसे दिन का भोजन करना है तो उसे अवश्य ही बादलों के पीछे सूरज के छिप जाने से पहले छिछले पानी तक पहुंच जाना चाहिए। मेंढक की तरह तैरते हुए वह वेग से आगे बढ़ता जाता है।

किसी किसी वक़्त वह पीठ के बल लेट जाता है ताकि सिर के ऊपर सूर्य की रोशनी में अपनी स्थिति के बारे में निश्चित तौर पर जान सके, जो आस-पास के नीलिमा-रंजित हरे रंग के झुटपुटे की तुलना में कुछ ही हल्का है। उसके गलफड़े और चमड़ी से भी बड़ी मदद मिलती है, जो पानी में होनेवाले छोटे-छोटे परिवर्तनों को महसूस कर लेते हैं। छिछले पानी में आक्सीजन और नमक अधिक मात्रा में पाये जाते हैं और यह पानी शरीर को बहुत ही हल्का और प्यारा लगता है। इकथियांदर पानी को चखता है। वह अपना रास्ता निश्चित रूप से जानता है, उस पुराने अनुभवी मल्लाह की तरह, जिसे ज़मीन के निकट पहुंचने के बारे में ऐसे संकेतों से पता चल जाता है, जिन्हें केवल वही देख पाता है।

आख़िर उसके दायें-बायें जलमग्न चट्टानों की चिरपरिचित रूप-रेखाएं उभरने लगती हैं। उनके बीच समतल भूमि का एक टुकड़ा है और पीछे एक और चट्टान दीवार की तरह खड़ी है। इस जगह को इकथियांदर अपना जलगत बन्दरगाह कहता है, क्योंकि भयंकर से भयंकर तूफ़ानों के समय भी यह जगह शान्त रहती है।

मछलियों के अनगिनत झुण्डों के लिए भी यह जगह

बन्दरगाह का काम देती है, यहां मछलियां भरी पड़ी हैं। छोटी, पीली पूंछवाली मछलियां, जिनके शरीर पर आर-पार पीले रंग की पट्टी है; अन्य मछलियां, जिनके शरीर पर लगभग तिरछे बल, काले रंग की अनेक पट्टियां पायी जाती हैं, और भारी संख्या में ज़्यादा चमकीली क़िस्म की मछलियां, गुलाबी-लाल, नारंगी, आसमानी रंग की मछलियां। उनके झुंड के झुंड डरकर भाग जाते हैं, फिर न जाने कहां से प्रगट हो जाते हैं। जब आप ऊपर आते हैं, तो सारा रास्ता आपके चारों ओर मछलियों के झुण्ड ही झुण्ड होते हैं, लेकिन आप नीचे नज़र डालते हैं तो मछलियों का नाम-निशान नहीं होता। इकथियांदर देर तक इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करता रहा, तब उसने एक मछली पकड़ ली। वह आकार में उसकी हथेली जितनी होगी, लेकिन बिल्कुल चपटी थी। इसी लिए ऊपर से देखने पर वह लगभग बिल्कुल नहीं दिखायी देती।

अब नाश्ते का समय। समुद्र-तल के समतल टुकड़े पर बेशुमार घोंघे पाये जाते हैं। एक फलती-फूलती बस्ती के पास इकथियांदर आसन जमा लेता है, आराम से बैठ जाता है और जो भी घोंघा हाथ लगता है, उसे पकड़ लेता है। नन्ही-सी ज़ायकेदार चीज़ सीधी मुंह में पहुंच जाती है। पानी के नीचे खाने का उसका एक अपना ढंग है, जिससे यह क्रिया आसान हो जाती है। टुकड़े को मुंह में भर कर, होंठों को कुछ कुछ दबा कर वह मुंह से पानी निकाल देता है। ऐसा करने का वह इतना अभ्यस्त हो चुका है कि यह बिना किसी चेष्टा के होने लगता है। स्वाभाविक है कि ख़ुराक के साथ पानी की भी थोड़ी-सी मात्रा पेट के अन्दर चली जाती है, लेकिन इसका वह आदी हो चुका है।

समुद्री सिवार उसके चारों ओर झूम रहे हैं—एगार नाम के जालीदार हरे पौधे, मेक्सिकी कालेर्पा नामक घास जैसे हरे, छितरे हुए पत्ते और कोमल गुलाबी रंग

के जल-शैवाल। परन्तु आज तूफ़ान और उससे पैदा होनेवाले अन्धेरे के कारण सभी का रंग एक जैसा गहरा भूरा हो रहा है। बादलों की दबी-सी गड़गड़ाहट पानी को बेधती हुई उस जगह पहुंचती है जहां इकथियांदर बैठा है। वह ऊपर की ओर देखता है।

उसके ऐन सिर के ऊपर एक अन्धियारा-सा धब्बा है: वह क्या हो सकता है? इकथियांदर खाना खा चुका है, इसलिए ऊपर जाकर जांच कर सकता है। चट्टान के अगवाड़े के सहारे-सहारे ऊपर जाते हुए वह पानी की सतह के नज़दीक पहुंचता है और उसे एक बहुत बड़ा एल्बेट्रोस-पक्षी नज़र आता है, जो ऊपर-नीचे झुलारे ले रहा है। नारंगी रंग की उसकी टांगें इतनी नज़दीक हैं कि उन्हें पकड़ लेने को जी चाहता है। इकथियांदर के हाथ झट से ऊपर उठते हैं और पक्षी की टांगों को पकड़ लेते हैं। ख़ूब मज़ा रहा! एल्बेट्रोस घबराकर ऊपर को उड़ जाने के लिए शक्तिशाली पंख फैला देता है और इकथियांदर को खींचता हुआ अपने पीछे उड़ा ले जाता है। हवा में पहुंचने पर इकथियांदर का शरीर फिर से अपना वज़न प्राप्त कर लेता है और एल्बेट्रोस धड़ाम से नीचे गिर पड़ता है और नरम पंखोंवाली अपनी छाती से इकथियांदर को ढक लेता है। इकथियांदर भीमकाय पक्षी को इसका मौक़ा नहीं देता कि वह उसके सिर पर चोंच मारने लगे, वह ग़ोता लगा जाता है और अगले क्षण कुछ दूरी पर पानी में से फिर सिर निकालता है। एल्बेट्रोस अब पूर्व की ओर उड़ता जा रहा है और पहाड़ों के समान ऊंची लहरों के पीछे आंखों से ओझल हो जाता है।

इकथियांदर पीठ के बल डोल रहा है। बादलों की गरज पूर्व की ओर कहीं दूर होती जा रही है। लेकिन मूसलाधार बारिश अब भी हो रही है। इकथियांदर चित्त लेट जाता है, अकथनीय ख़ुशी से उसकी आंखें अधमुंदी हो जाती हैं। वह आंखें खोलता है और करवट बदलकर पानी

में सीधा-सतर खड़ा हो जाता है ताकि ज़्यादा अच्छी तरह से आस-पास देख सके। वह एक बहुत बड़ी लहर के शिखर पर है। आकाश, सागर, हवा, बारिश, लहरें—सभी मिलकर एक बहुत बड़े गीले बवण्डर के समान हैं, जो अपने आदिकालिक कोप में दहाड़ रहा है। झाग की छोटी-छोटी लटें मानों अपना दुर्बल क्रोध व्यक्त करती हुई लहरों के शिखरों पर कांपती हैं और उनके पार्श्वों पर ग़ुस्से से टेढ़ी-तिरछी दौड़ती चली जाती हैं। तूफ़ान के कारण समुद्र की उठान से और भयानक हवा से जल के पर्वत एक के ऊपर दूसरा जुड़ते जाते हैं और फिर भरभरा कर गिर पड़ते हैं, और फिर से एक के ऊपर दूसरा जुड़ने लगते हैं।

धरती पर रहनेवाले इनसान के दिल में जो चीज़ भय पैदा करती है, वही इकथियांदर के लिए मनोविनोद का कारण है। बेशक लहरें उसके लिए भी ख़तरे का कारण बन सकती हैं, लेकिन एक मछली की भांति वह उनके रंग-ढंग जानता है। लहरों की भी बहुत सी क़िस्में होती हैं। कुछ ऐसी हैं जो आपको ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे उछालती हैं, और अन्य पेश्तर इसके कि आपको पता चल पाये कि आप कहां पर हैं, आपको उलट देंगी। इकथियांदर यह भी जानता है कि लहरों के नीचे क्या होता रहता है और किस भांति हवा के शान्त होने पर लहरें ग़ायब हो जाती हैं। सबसे पहले छोटी लहरें ग़ायब होती हैं, उसके बाद बड़ी लहरें, लेकिन समुद्र का निश्चल उठान बाद में देर तक बना रहता है। इकथियांदर को तट से टकरानेवाली लहरों में कलाबाज़ियां लगाने में मज़ा आता है, हालांकि यह भी ख़तरे से ख़ाली नहीं है। एक बार असाधारण रूप से बड़ी एक लहर ने इकथियांदर को उलट दिया और एक चट्टान पर पटक दिया, जिससे वह बेहोश हो गया। साधारण इनसान इस स्थिति में जान से हाथ धो बैठता,

लेकिन इकथियांदर को पानी में होश आ गया, और उसे इस अनुभव के कारण मामूली-सा ही नुक़सान उठाना पड़ा।

अब बारिश बिल्कुल बन्द हो चुकी है; वह बादलों की गरज की ही भांति पूर्व की दिशा में चली गयी है। हवा का भी रुख़ बदल गया है। अब उष्णकटिबन्धीय उत्तर की ओर से हवा के गर्म थपेड़े आने लगे हैं। बादलों के फटने से जगह-जगह आकाश की नीलिमा झांक रही है। सूर्य की किरणें बादलों के बीच उत्पन्न हुए छेदों में से निकलकर समुद्र पर पड़ने लगती हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर, जहां अभी भी भयंकर काले बादल छाये हैं, इन्द्रधनुष अपनी दोहरी कमान आकाश के आर-पार फेंक देता है। जिस महासागर को इस समय इकथियांदर देख रहा है, उसका रूप बिल्कुल बदल चुका है। अब वह फेनिल कोप से काला नहीं, बल्कि नीलवर्ण, हंसमुख सागर है, और उसके वक्ष पर, जहां-जहां सूर्य की किरणें पड़ रही हैं, वहां मरकतमणि के रंग के पैवन्द नज़र आते हैं!

सूर्य! क्षण भर में उसने सब कुछ—आकाश, सागर, तट, दूरवर्ती पर्वत—बदल दिया है, यहां तक कि पहचान के बाहर। और वाह, तूफ़ान के बाद हवा में कितनी ताज़गी आ गयी है। इकथियांदर कभी इस स्वास्थ्यप्रद हवा को खींचता है, कभी अपने गलफड़ों से सांस लेता है। इकथियांदर से बेहतर कोई भी इस बात को नहीं जानता कि तूफ़ान से आकाश और सागर के घुलमिल जाने के बाद, जिससे पानी में आक्सीजन की मात्रा ख़ूब बढ़ जाती है, गलफड़ों से सांस लेना कितना आसान हो जाता है। कोई भी नहीं जानता, मतलब कि इनसानों के बीच कोई भी नहीं जानता।

परन्तु मछलियां और समुद्री जन्तु भी इसे समझ सकते हैं।

तूफ़ान के ख़त्म होने के बाद सागर की गहराइयों, चट्टानों की दरारों, मूंगे और स्पंज की झाड़ियों से सागर

निवासी बाहर निकलने लगते हैं; छोटी-छोटी मछलियां बड़ी मछलियों को रास्ता दिखाती हैं, और जब सागर फिर से बिल्कुल शान्त होता है तो नर्म, नाज़ुक जेलीफ़िश, पारदर्शी, भारहीन थृम्प मछलियां, नाज़ुक पोर्पीता और तरह तरह की स्तेनोफ़ोरा, जिनमें इस दल का सुन्दर प्रतिनिधि सेस्तस वेनेरिस भी शामिल है सतह पर तैरने लगती हैं।

इकथियांदर के निकट ही सूर्य की किरण पड़ती है, जिससे पानी का रंग शोख़ हरा हो जाता है। नन्हे बुलबुलों की चमक, फ़ेन की सिसकार... इकथियांदर की खेलकूद की साथिनें, डालफ़िन मछलियां, नज़दीक ही क्रीड़ा कर रही हैं, और ख़ुशी से, शरारत से उसे आंखें मार रही हैं। खेलकूद में जब वे एक दूसरी के पीछे नाक फुलाती भागती हैं तो उनकी चमकती काली पीठ की झलक मिलती है। इकथियांदर हंसता है और ख़ुद भी खेल में शामिल हो जाता है। उसे लगता है जैसे यह महासागर और ये डालफ़िन मछलियां, आकाश और सूर्य, सभी उसी के उपभोग के लिए बनाये गये हैं।

इकथियांदर सिर ऊपर उठाता है और आंखें सिकोड़ कर सूर्य की ओर देखता है। सूर्य आकाश में पश्चिम की ओर झुक चुका है। शाम होनेवाली है। लेकिन आज इकथियांदर जल्दी घर लौटना नहीं चाहता। वह उस वक़्त तक लहरों पर झुलारे लेता रहेगा, जब तक अन्धियारे आकाश में पहले सितारे झिलमिलाने नहीं लगते।

तिस पर भी सुस्ती से इधर-उधर डोलते रहने से वह शीघ्र ही तंग आ जाता है। और फिर वह उन सभी छोटे-छोटे समुद्री जीवों को कैसे भूल सकता है, जो उसी क्षण दम तोड़ रहे हैं? वह पानी में सीधा-सतर खड़ा हो जाता है, और दूर तट की दिशा में देखता है, रेतीली ज़मीन के उस टुकड़े की ओर जो समुद्र में आगे की ओर

बढ़ा हुआ है। वहीं पर वास्तव में उसकी सहायता की ज़रूरत है। वहीं पर जहां सागर की लहरें क़हर ढा रही हैं।

तूफ़ान के बाद लहरें ढेरों समुद्री सिवारों और जीवों को—तरह तरह की मछलियों, केकड़ों, जेलीफ़िश, स्टारफ़िश, कभी-कभी किसी असावधान डालफ़िन को भी तट पर पटक देती हैं। जेलीफ़िश तो फ़ौरन मर जाती हैं, लेकिन कुछेक मछलियां रेंगती हुई किसी तरह पानी में लौट आती हैं। इसी तरह अधिकांश केकड़े भी; वास्तव में वे स्वयं पानी को छोड़कर तट पर जा पहुंचते हैं ताकि तूफ़ान के पीड़ितों से अपना पेट भर सकें। इन जीवों की मदद के लिए आने में इकथियांदर को हार्दिक सन्तोष का अनुभव होता है।

वह घण्टों तट पर उन जीवों की तलाश में घूमता है, जिन्हें अभी भी बचाया जा सकता है। पानी में फेंकी गयी मछली को अपनी पूंछ से छपाका मारते और तैरकर जाते देख-कर उसके दिल को सच्ची ख़ुशी मिलती है। या इससे भी अधिक उस मछली को देख कर, जो पहले पहलू या पेट के बल मुर्दा सी डोल रही थी और आख़िर ज़िन्दा हो गयी है। एक बड़ी-सी मछली को उठाकर उसकी छटपटाती देह को अपनी देह से सटाये वह उसे समुद्र की ओर ले जाता है, हंसता है, ढाढ़स बंधाने के लहजे में उससे बातें करता है। बेशक अगर वह दूर समुद्र में होता और उसे भूख लग रही होती तो वह उसी मछली को स्वयं खा जाने में तनिक भी संकोच नहीं करता। लेकिन वह तो मजबूरी में किया गया कुकर्म है। यहां, समुद्र-तट पर वह समुद्री जीवों का सरपरस्त, मित्र और रक्षक है।

आम तौर पर इकथियांदर उसी रास्ते घर लौटता है, जिस रास्ते वह घर से आता है—जलमग्न लहर का प्रयोग करते हुए। पर आज सागर और आकाश इतने सुन्दर हैं कि वह ज़्यादा देर के लिए पानी के नीचे नहीं रहना चाहता।

वह ग़ोता लगाता है, पानी के नीचे तैरता है और फिर सिर बाहर निकालता है, उस समुद्री पक्षी की ही तरह, जो मछली का शिकार करता है।

सूर्य की अन्तिम किरणें भी छिप चुकी हैं। पश्चिमी क्षितिज पर पीली पट्टी घटती जा रही है। उदास लहरें अन्धियारे सायों की भांति एक दूसरी के पीछे भाग रही हैं।

गुनगुने जल की तुलना में हवा में खुनकी है। अन्धेरा हो गया है, पर इकथियांदर सुरक्षित महसूस करता है। दिन और रात को बांटनेवाली इस नि:स्तब्ध घड़ी में उस पर कोई हमला नहीं करेगा।

उसे ज़रूरत है दक्षिण की ओर बहनेवाले जल-प्रवाह की जो सागर की सतह के निकट ही बह रहा है। समुद्र का उफान अभी भी महसूस किया जा सकता है, उससे जलमग्न नदी के बहाव में, जो धीरे-धीरे गर्म उत्तर से सर्द दक्षिण की ओर जा रही है, थोड़ा-सा उतार-चढ़ाव पैदा हो जाता है। काफ़ी नीचे की ओर—और विपरीत दिशा में—ठण्डी लहर बह रही है। जब अपने दौरों में इकथियांदर को तट के साथ-साथ जाना होता है तो वह दोनों जल-प्रवाहों का अच्छा प्रयोग करता है।

गर्म जल-प्रवाह उसे घर तक का सारा रास्ता तय करवा देगा। उसे केवल जागते रहना होगा ताकि सुरंग के मुंह में ठीक अन्दर अन्दर प्रवेश कर सके, और इधर-उधर न निकल जाये जैसा कि एक बार हुआ था। सिर के पीछे अपनी बांहें फैलाये और फिर व्यायाम के लिए उन्हें बाहर की ओर खींचते हुए और टांगों को खोलते और फिर धीरे-धीरे जोड़ते हुए, वह जल-प्रवाह में दक्षिण की ओर बहने लगता है। गुनगुने पानी और शरीर की धीमी गतियों से वह बड़ी शान्ति का अनुभव करता है।

ऊपर नज़र उठाने पर इकथियांदर को समुद्र की सतह

नज़र आती है, जिसमें धूलि-कणों जितने छोटे छोटे तारे चमक रहे हैं। अवश्य ही वे नोक्तिलूकल होंगे, जो अपने नन्हे लैम्प जलाये समुद्र की सतह पर उठ आये हैं। अन्धेरे में किसी किसी जगह पर उसे नीलवर्ण और गुलाबी चमकती हुई नीहारिकाएं नज़र आती हैं—वे छोटे-छोटे चमकते जीवों के घने झुण्ड हैं। हल्की-सी हरे रंग की रोशनी छोड़ते हुए धीरे-धीरे सामने से बड़े गोले निकल जाते हैं। इकथियांदर के निकट ही रोशनी देती हुई एक जेलीफ़िश है, जो बिल्कुल एक लैम्प के समान नज़र आती है और जिसपर मानो लैस का बना, लम्बी झालर वाला परिष्कृत शेड लगा हो। जेलीफ़िश की प्रत्येक गति के साथ झालर हिलती है, मानो हवा में हिल रही हो। छिछले पानी में स्टारफ़िश ने अभी से बत्तियां जला दी हैं। नीचे गहराइयों में बड़ी शिकारी मछलियों की रोशनियां तेज़ी से इधर-उधर दौड़ती नज़र आती हैं। वे एक दूसरी के पीछे भागती हैं, चक्कर काटती हैं, बुझ जाती हैं और फिर से जगमगा जाती हैं।

छिछले पानी का एक और स्थल। मूंगे के अद्‌भुत डंण्ठल और टहनियां अन्दर से ही नीले, गुलाबी, हरे और सफ़ेद रंगों में उद्‌भासित हो उठे हैं। कुछेक मूंगे फड़फड़ाते हैं, जैसे उनकी रोशनी बुझने जा रही हो, अन्य धधकती धातु की भांति चमकते हैं।

भूमि पर रात के समय आप दूर छोटे-छोटे सितारों को देख सकते हैं, कभी-कभी चांद को देख सकते हैं। यहां हज़ारों की संख्या में सितारे हैं, हज़ारों चांद हैं, हज़ारों छोटे छोटे रंग-बिरंगे सूर्य हैं, सभी स्निग्ध, कोमल प्रकाश छिटकाते हैं। भूमि पर रात की तुलना में सागर में रात कहीं ज़्यादा सुन्दर होती है।

उनकी तुलना करने के लिए इकथियांदर फिर सतह पर आकर पानी में से सिर निकालता है।

हवा पहले से ज़्यादा गर्म हो गयी है। सिर के ऊपर

असंख्य तारों से जटित गहरे नीले रंग का आकाश है। क्षितिज के कुछ ही ऊपर चांद चमक रहा है। वहां से लेकर समुद्र की सतह के आर-पार एक झिलमिलाता चांदी का पथ बिछा है।

बन्दरगाह की ओर से देर तक दबा-दबा भोंपू का स्वर सुनायी देता है। वह विराटकाय 'हार्राक्स' जहाज़ है, वापसी के सफ़र की तैयारी कर रहा है। अरे, कितनी देर हो गयी, पौ फटने को है। इकथियांदर लगभग चौबीस घण्टे से बाहर है। पिता जी से ज़रूर डांट पड़ेगी।

इकथियांदर सुरंग की ओर जाता है, लोहे के छड़ों में हाथ डालता है, झंझरी खोल देता है, और घटाटोप अन्धेरे में तैरता चला जाता है। इस समय वह निचले, ठण्डे जल-प्रवाह में है, जो समुद्र से बाग़ के तालाबों में बहता है।

कन्धे पर हल्की-सी ठोकर महसूस करने पर इकथियांदर सचेत हो जाता है। वह तालाब में है। जल्दी ही वह ऊपर आ जाता है और सुपरिचित फूलों की ख़ुशबू से ओत-प्रोत हवा में फेफड़ों से सांस लेने लगता है।

कुछेक मिनट बाद अपने पिता को ख़ुश करने के लिए वह बिस्तर पर लेटा गहरी नींद सोने लगता है।

लड़की और अजनबी

एक बार तूफ़ान के बाद इकथियांदर समुद्र में तैर रहा था।

सतह पर आने पर उसे लगा जैसे सफ़ेद रंग का बादबान का एक टुकड़ा किसी नाव पर से तूफ़ान के समय फटकर समुद्र की सतह पर गिर गया है। ज़्यादा नज़दीक आने पर इकथियांदर यह देखकर हैरान रह गया कि वह लकड़ी के तख़्ते के साथ बन्धी कोई औरत थी या यों कहें कोई युवती थी। क्या वह मरी हुई थी? इस विचार से वह इतना बेचैन हो उठा कि जीवन में पहली बार उसके हृदय में समुद्र के प्रति विरोध का भाव पैदा हुआ।

या शायद वह केवल बेहोश थी? लड़की के सुन्दर सिर को थाम कर, जो एक ओर को झूल रहा था, इकथियांदर ने तख़्ते को पकड़ लिया और उसे धकेल कर तट की ओर ले जाने लगा।

वह पूरी ताक़त के साथ तैरता गया, ऐसे वह पहले कभी नहीं तैरा था, केवल किसी-किसी वक़्त लड़की के सिर को ठीक जगह पर रखने के लिए, जो बार-बार तख़्ते पर से फिसल जाता था, वह रुकता। वह लड़की के कान में उसी भांति फुसफुसाता, जिस तरह वह मुसीबत में फंसी मछलियों के कान में फुसफुसाया करता था: "थोड़ा इन्तज़ार करो, जल्द ही सब ठीक हो जायेगा।" वह चाहता था कि लड़की आंखें खोले, लेकिन इससे डरता भी था। वह चाहता था कि लड़की ज़िन्दा हो जाये, लेकिन फिर भी घबराता था कि वह उससे बेहद डर जायेगी। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि वह अपना चश्मा और दस्ताने उतार दे? लेकिन इसमें वक़्त लगेगा और दस्ताने उतार देने के बाद उसकी रफ़्तार भी कम पड़ जायेगी। इस लिए वह ज़ोर लगाता रहा और उस तख़्ते को जिस पर लड़की बन्धी थी, तट की ओर धकेलता रहा।

आख़िर वह तट के निकट की लहरों में पहुंच गया। अब सावधानी की ज़रूरत थी। लहरें उसे तट की ओर धकेल रही थीं। पैर से इकथियांदर किसी छिछली जगह को टटोल-टटोलकर ढूंढ़ रहा था। अन्त में उसका पैर तल से जा लगा, वह बड़ी हिफ़ाज़त से अपने बोझ को तट तक ले गया, लड़की की रस्सियों को खोल दिया और झाड़ियों से ढके बालू के एक टीले के साये में लिटाकर उसे कृत्रिम श्वास-क्रिया करवाने लगा।

इकथियांदर को लगा जैसे लड़की की पलकों में कम्पन हुआ है। लड़की के दिल के पास अपना कान रखने पर उसे हृदय की धीमी गति का हल्का-सा बोध हुआ। लड़की ज़िन्दा थी! ख़ुशी से उसका रोम-रोम नाच उठा।

फिर लड़की ने कुछ कुछ आंखें खोलीं, पर इकथियांदर को देखते ही कांप उठी और फिर से उन्हें बन्द कर लिया। इकथियांदर को ख़ुशी भी हुई और ख़ीझ भी। "कुछ भी हो, लड़की को तो मैंने बचा लिया है," उसने सोचा।

अब उसे वहां से चले जाना चाहिए, ताकि लड़की डरे नहीं। पर क्या वह लड़की को इस हालत में और बिल्कुल अकेले और असहाय छोड़ सकता है? इकथियांदर यह सोच ही रहा था जब उसके कानों में किसी के बोझल क़दमों की आवाज़ पड़ी। द्विविधा में पड़ने का समय नहीं था। वह एक लहर में घुस गया और निकटतम चट्टानों तक पानी के नीचे तैरता चला गया। फिर वहां एक चट्टान की ओट में उसने पानी में से सिर निकाला और झांक-झांककर तट पर देखने लगा कि आगे क्या होता है।

बालू के टीले के पीछे से सांवले रंग का एक आदमी नमूदार हुआ, चौड़े छज्जे के उसके टोप के नीचे से उसकी मूछें और बकर-दाढ़ी नज़र आ रही थीं। लड़की को देखते ही उसने चिल्लाकर कहा: "भगवान की क्या लीला है!" और उसकी ओर भागा, फिर मुड़कर पानी की ओर गया और आगे बढ़ती हुई लहर में घुस गया। जब उसके कपड़े पानी में अच्छी तरह से भीग गये तो वह फिर लड़की की ओर भाग कर आया और उसे कृत्रिम श्वास-क्रिया करवाने लगा ("यह किसलिए?" इकथियांदर सोच रहा था); फिर लड़की की ओर झुका और उसे चूम लिया। शीघ्र ही वह जल्दी-जल्दी और घबराये हुए लहजे में लड़की से कहने लगा: "मैंने तुम्हें पहले ही सावधान कर दिया था... यह निपट पागलपन था... अच्छा हुआ जो मुझे ख़्याल आ गया और मैंने तुम्हें तख़्ते के साथ बांध दिया।"

लड़की ने आंखें खोलीं और तनिक-सा सिर ऊपर को उठाया। उसके चेहरे पर पहले भय का, फिर आश्चर्य का भाव आया, उसके बाद रोष और अप्रसन्नता का। बकर-दाढ़ी वाले आदमी ने उसे सहारा देकर उठाया और सारा वक़्त बोलता रहा। पर प्रत्यक्षत: वह अभी भी बहुत कमज़ोर थी, इसलिए उस आदमी ने उसे फिर लिटा दिया। उसके लगभग आधे घण्टे बाद ही वह फिर से उठ कर

खड़ी हो पायी और क़दम उठा पायी। चलते हुए वे ऐन उस जगह के पास से गुज़रे जहां चट्टानों के पीछे इकथियांदर छिपा हुआ था। लड़की कह रही थी:

"तो आपने मेरी जान बचायी है? धन्यवाद। भगवान आपको इस नेकी का फल देंगे।"

"नहीं, इसका फल केवल तुम्हीं मुझे दे सकती हो," सांवले आदमी ने कहा।

लगा जैसे लड़की ने उस आदमी की बात नहीं सुनी है।

"अजीब बात है," कुछ देर बाद लड़की बोली, "मुझे तो ऐसा जान पड़ा था जैसे मेरे पास कोई दैत्य था।"

"यह तुम्हारी कल्पना थी," आदमी ने कहा। "या शायद शैतान ही रहा होगा, जिसने समझा कि आप मर गयी हों और वह आपकी आत्मा छीन ले जाने के लिए आया हो। भगवान का नाम लें और मेरे बांह का सहारा ले लें—मैं पास रहूं तो तुम्हें किसी शैतान से डरने की जरूरत नहीं है।"

और वे चले गये, अद्भुत लड़की और वह बुरा आदमी, जो लड़की को यक़ीन दिलाने की कोशिश कर रहा था कि उसी ने समुद्र से उसकी जान बचायी है। लेकिन इकथियांदर उसे झूठा सिद्ध करने की स्थिति में नहीं था। करने दो, जैसा करना चाहता है, मैं जो कर सकता था मैंने कर दिया है।

लड़की और उसका साथी बालू के टीलों के पीछे ग़ायब हो चुके थे, लेकिन इकथियांदर अभी भी उन्हीं की दिशा में देखे जा रहा था। फिर वह घूमकर समुद्र की ओर देखने लगा। कितना विशाल था सागर—और कितना शून्य!..

लहर ने झिलमिलाते सफ़ेद पेट और नीली पीठवाली किसी मछली को बालू पर पटक दिया था। इकथियांदर ने आस-पास देखा—कोई नहीं था। वह चट्टान के पीछे से निकल आया, उसने मछली को उठाया और उसे पानी

में फेंक दिया। मछली तो तैरती हुई चली गयी लेकिन न जाने क्यों, इकथियांदर उदास हो गया। कुछ देर तक वह सूने तट पर घूमता रहा, मछलियों को उठाता और उन्हें पानी में डालता रहा। धीरे धीरे वह अपने काम में खो गया। शीघ्र ही उसका उत्साह फिर से मचल उठा और वह समय को भूलकर इसी काम में लगा रहा, केवल किसी-किसी वक़्त वह पानी में ग़ोता लगा लेता ताकि उसके गलफड़े फिर से नम हो जायें।

इकथियांदर का नौकर

सात्वातोर फिर से पहाड़ों पर जा रहा था—अब की बार क्रिस्टो के बग़ैर। प्रकटत: वह क्रिस्टो के काम से सन्तुष्ट था और उसे इकथियांदर के नौकर के रूप में, जिस काम पर उसे अब पक्का कर दिया गया था, पीछे छोड़े जा रहा था। यह बात क्रिस्टो के मुआफ़िक़ बैठती थी, क्योंकि इससे उसे बाल्तासार से मिलने में सुविधा होती थी। क्रिस्टो ने पहले से ही उसे सन्देश भेज दिया था कि उसने 'समुद्री दैत्य' का अता-पता ढूंढ़ लिया है। उसे अग़वा करने के लिए योजना तैयार करने का वक़्त आ गया था।

कुछ वक़्त से अब क्रिस्टो सफ़ेद पत्थर के, बेलों से ढके बंगले में रह रहा था और इकथियांदर की गतिविधियों को अच्छी तरह से देख रहा था। शीघ्र ही वे अच्छे मित्र बन गये। इकथियांदर, जिसके लिए इनसान की दोस्ती एक बिल्कुल नयी और प्यारी चीज़ थी, बूढ़े इण्डियन के साथ हिल-मिल गया था। रेड इण्डियन उसे भूमि पर रहनेवाले

लोगों के जीवन की कहानियां सुनाने के लिए हमेशा तैयार रहता था, जिसके बारे में इकथियांदर बहुत ही कम जानता था। लेकिन सामुद्रिक जीवन के बारे में इकथियांदर का ज्ञान संसार के श्रेष्ठतम विशेषज्ञों के कुल ज्ञान से भी अधिक था। भूगोल में, कम से कम महासागरों, सागरों और बड़ी बड़ी नदियों के बारे में उसे अच्छा ज्ञान था; उसे खगोल-विज्ञान, जहाज़रानी, भौतिकी, वनस्पति-विज्ञान और जीव-विज्ञान की भी कुछ-कुछ जानकारी थी। लेकिन इनसानों के बारे में उसे बहुत कम मालूम था, वास्तव में इस तथ्य से अधिक कुछ नहीं कि पृथ्वी पर विभिन्न जातियां रहती हैं। उनके इतिहास के बारे में उसकी जानकारी और भी कम थी, और जहां तक उनके राजनीतिक और आर्थिक सम्बन्धों का सवाल है, उसका ज्ञान एक पांच-साला लड़के के ज्ञान से अधिक नहीं था।

दोपहर के वक़्त जब गर्मी बढ़ जाती तो इकथियांदर भूमिगत सुरंग में चला जाता और तैरकर कहीं निकल जाता। गर्मी कम होने पर वह बंगले में लौट आता और सुबह तक वहीं रहता। पर अगर पानी बरसता या समुद्र में तूफ़ान उठता तो वह दिन भर बंगले में ही बना रहता और अतिरिक्त नमी के कारण ठीक-ठाक महसूस करता।

घर बड़ा नहीं था, केवल चार कमरे थे, एक दूसरे में खुलते हुए, और एक रसोई। क्रिस्टो रसोई-घर के साथ वाले कमरे में रहता था। उसके बाद खाने का कमरा था और बड़ा सा पुस्तकालय (इकथियांदर स्पेनी और अंग्रेज़ी भाषाएं जानता था), सब से आखिर का और सब से बड़ा कमरा इकथियांदर का शयन-कक्ष था। उसके बीचोंबीच बहुत सा स्थान नहाने के बड़े टब ने घेर रखा था। पलंग एक ओर को, एक दीवार के साथ था, लेकिन पलंग की तुलना में इकथियांदर को टब ज़्यादा पसन्द जान पड़ता था। परन्तु जाने से पहले साल्वातोर ने क्रिस्टो को हिदायत दी थी कि इकथियांदर हफ़्ते में कम से कम तीन दिन बिस्तर में ज़रूर

सोये, और इस लिए हर रात क्रिस्टो इकथियांदर को बिस्तर में लिटाता, और अगर लड़का उसका कहना नहीं मानता तो वह बूढ़ी आया की तरह बड़बड़ाया करता।

"मगर पानी में सोकर मुझे ज़्यादा मज़ा आता है," इकथियांदर विरोध करता।

"डाक्टर साहब का हुक्म है कि तुम बिस्तर में सोओगे। तुम्हें अपने पिताजी की हुक्म उदूली नहीं करनी चाहिए।"

इकथियांदर हमेशा साल्वातोर को पिताजी कहकर पुकारता था, लेकिन बूढ़े इण्डियन को शक था कि वे दोनों एक ही खानदान के नहीं थे। यह सच है कि जलथलिये की चमड़ी, जहां कहीं वह नज़र आती थी, काफ़ी गोरी थी, लेकिन ऐसा तो पानी में ज़्यादा देर तक रहने के कारण भी हो सकता था। उसके लम्बोतरे सिर, सीधी-सतर नाक, पतले होंठों और बड़ी-बड़ी चमकती आंखों को देखते हुए क्रिस्टो को लगा जैसे इकथियांदर आराउकानों से ज़्यादा मिलता-जुलता था, जिस जाति का क्रिस्टो स्वयं था।

क्रिस्टो को यह देखने की बड़ी इच्छा थी कि किसी अज्ञात सामग्री की बनी ख़ूब कसी हुई इकथियांदर की पोशाक के नीचे उसकी चमड़ी का रंग कैसा था।

"क्या तुम इस चीज़ को कभी भी नहीं उतारते—रात के वक़्त भी नहीं?" उसने युवक से एक दिन शाम के समय पूछा।

"क्यों उतारूं? इसमें मुझे आराम रहता है। इससे न तो गलफड़ों से और न ही चमड़ी से सांस लेने में रुकावट पड़ती है। इसके अलावा यह अच्छे कवच का काम देती है। न तो इसे शार्क मछली के दांत काट सकते हैं, न ही तेज़ चाक़ू," इकथियांदर ने जवाब दिया।

"तुम यह मोटा चश्मा, दस्ताने और जूते क्यों पहनते हो?" पलंग के नज़दीक इन अनोखी चीज़ों की ओर देखते हुए क्रिस्टो ने पूछा। दस्ताने हरे रंग के रबर के बने

थे और उनमें उंगलियों के अतिरिक्त जोड़ और उनके बीच झिल्लियां बनी थीं। पैरों की उंगलियां और भी ज़्यादा लम्बी थीं।

"दस्ताने और जूते ज़्यादा तेज़ रफ़्तार से तैरने के लिए हैं। चश्मा इस लिए कि आंखों में रेत न पड़े। इसके अलावा चश्मा लगाकर मैं ज़्यादा अच्छी तरह देख सकता हूं। चश्मा न हो तो समुद्र की गहराइयों में मुझे सब कुछ धुंधला नज़र आयेगा।" और उसने मुस्कराते हुए जोड़ा, "जब मैं छोटा था तो पिताजी मुझे बच्चों के साथ दूसरे बाग़ में खेलने दिया करते थे। जब वे दस्तानों के बिना तैरते तो मुझे बड़ा अजीब लगता। 'तुम दस्तानों के बिना कैसे तैर सकते हो?' मैं उनसे पूछता, लेकिन वे मेरी बात को समझ नहीं पाते थे, क्योंकि मैं उनकी मौजूदगी में कभी भी नहीं तैरता था।"

"क्या तुम अब भी खाड़ी में तैरते हो?"

"हां, केवल अब मैं बग़लवाली सुरंग का इस्तेमाल करता हूं। कुछ नीच लोगों ने मुझे एक बार क़रीब-क़रीब पकड़ लिया था, इसलिए अब मैं ज़्यादा सावधान रहता हूं।"

"हुं। तो समुद्र की ओर जानेवाली एक दूसरी सुरंग भी है, क्यों?"

"हां, वास्तव में बहुत सी सुरंगें हैं। बड़े अफ़सोस की बात है कि तुम मेरे साथ पानी के नीचे तैरने के लिए नहीं चल सकते। मैं तुम्हें सचमुच अजीबोग़रीब चीज़ें दिखाता। हम एक साथ मेरे समुद्री घोड़े पर सवारी करते। काश सभी लोग पानी के नीचे रह पाते!"

"समुद्री घोड़ा? यह क्या बला है?"

"यह एक डालफ़िन मछली है। मैंने उसे सधा लिया है। बेचारी एक दिन तूफ़ान के बाद तट पर पड़ी थी और उसका सुफ़ना बुरी तरह से टूटा हुआ था। मैं उसे खींचकर पानी में ले गया। सच मानो, बड़ा मुश्किल काम था। डालफ़िन मछलियों का वज़न पानी के अन्दर इतना नहीं

होता जितना ज़मीन पर होता है। पर फिर हर चीज़ ही तुम्हारे इस संसार में ज़्यादा वज़नी है। यहां तक कि तुम्हारा अपना शरीर भी। तुम जानो, पानी में ज़िन्दगी ज़्यादा आसान होती है। तो जैसा मैंने कहा, मैं डालफ़िन को पानी में घसीट ले गया, पर मैंने देखा कि वह तैर नहीं सकती थी, और इसका मतलब था कि वह अपनी ख़ुराक भी हासिल नहीं कर सकती थी। मैं उसे मछलियां खिलाता रहा—पूरे एक महीने तक। उस काल में वह न केवल सध गयी, बल्कि एक तरह से मेरे साथ हिल-मिल भी गयी। हम अच्छे मित्र बन गये। तुम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि किसी धुपहले दिन लहरों पर डालफ़िन मछलियों के साथ खेलने में कितना मज़ा आता है! लहरों के नीचे भी बड़ा लुत्फ़ रहता है। लगता है जैसे तुम घनी नीली हवा में से तैरते चले जा रहे हो। चारों ओर मौन छाया रहता है। तुम अपने शरीर तक को महसूस नहीं करते; शरीर बिल्कुल बन्धनहीन, हल्का-फुल्का मालूम होता है, छोटी से छोटी हरकत भी महसूस होती है... वहां समुद्र में मेरे बहुत-से दोस्त हैं। मैं छोटी मछलियों को चुग्गा डालता हूं जैसे तुम पक्षियों को डालते हो, उनके झुण्ड के झुण्ड मेरे पीछे तैरते रहते हैं।"

"और तुम्हारे दुश्मन कोई नहीं?"

"हां हैं, शार्क मछलियां और अठबहिये। लेकिन मैं उनसे डरता नहीं हूं। मेरे पास मेरा चाक़ू जो है।"

"अगर तुम्हें पता ही नहीं चले और वे तुम पर चुपके-से हमला कर दें, तो?"

इकथियांदर के चेहरे पर आश्चर्य का भाव आ गया।

"क्यों, मैं तो दूर से उन्हें आते सुन सकता हूं।"

"पानी के नीचे सुन सकते हो?" अब की बार क्रिस्टो के चेहरे पर आश्चर्य का भाव छा गया। "अगर वे चुपके-से कपट से तुम्हारे पास आ पहुंचें तो भी?"

"हां। इसमें हैरानी की क्या बात है? मैं उन्हें अपने

कानों से, अपने सारे शरीर से सुन सकता हूं। वे पानी को हिला देते हैं, और ये कंपन उनसे आगे आगे दौड़ते हैं। मैं इन कंपनों को महसूस करते ही सावधान हो जाता हूं।"

"उस वक़्त भी जब तुम सो रहे होते हो?"

"बेशक।"

"पर मछलियां..."

"मछलियां अचानक हमले से नहीं, बल्कि ज़्यादा ताक़तवर मछलियों द्वारा मारी जाती हैं। और मैं किसी भी मछली से ज़्यादा मज़बूत हूं। शिकारी मछलियां भी यह जानती हैं, वे मेरे साथ छेड़छाड़ नहीं करतीं।"

ज़ुरीता ठीक कहता है। यह समुद्री छोकरा कितनी भी कठिनाई से हाथ क्यों न लगे, पकड़ने योग्य है, क्रिस्टो ने सोचा। लेकिन पानी में इसे पकड़ पाना आसान काम नहीं है। 'सारे शरीर से सुनता हूं!' जानवरों को पकड़नेवाले फन्दे से ही इसे पकड़ पायेंगे। मुझे ज़रूर ज़ुरीता के साथ इस बारे में बात करनी चाहिए, उसने निर्णय लिया।

"जल के भीतर की दुनिया कितनी रंगीन है!" इकथियांदर कह रहा था। "नहीं, मैं कभी भी सागर को छोड़ कर तुम्हारी घुटन भरी, धूल भरी पृथ्वी पर रहने के लिए तैयार नहीं।"

"हमारी क्यों? तुम भी तो उसी पृथ्वी पर पैदा हुए हो," क्रिस्टो ने कहा। "तुम्हारी मां कौन थी?"

"मैं... मैं नहीं जानता," इकथियांदर ने हकला कर कहा। "पिताजी कहते हैं कि मेरी मां मेरे जन्म के समय प्रसूति में मर गयी थीं।"

"पर थीं तो वह भी इनसान ही? मछली तो नहीं थीं?"

"शायद," इकथियांदर ने सहमति प्रगट की।

क्रिस्टो हंस दिया।

"मुझे बताओ तो, तुम मछुओं को क्यों परेशान करते

थे, उनके जाल काट डालते थे, उनकी मछलियां किश्तियों में से निकाल समुद्र में क्यों फेंक देते थे?"

"क्योंकि वे जितनी मछलियां खा सकते थे, उनसे कहीं ज़्यादा पकड़ते थे।"

"लेकिन वे बेचने के लिए उन्हें पकड़ते थे।"

बात इकथियांदर की समझ में नहीं आयी।

"ताकि और लोग भी मछलियां खा सकें," इण्डियन को समझाना पड़ा।

"क्यों, क्या लोग बहुत हैं?" इकथियांदर ने हैरान होकर पूछा। "क्या धरती पर उनके पास काफ़ी जानवर और पक्षी नहीं हैं? वे समुद्र पर क्यों आते हैं?"

"यह समझाना आसान नहीं है," क्रिस्टो ने जम्भाई लेकर कहा, "अब तुम्हारे सोने का वक़्त हो गया है। फिर से टब में न घुस जाना। तुम्हारे पिताजी नाराज़ होंगे," कहता हुआ वह बाहर चला गया।

दूसरे दिन प्रातः जब क्रिस्टो अन्दर आया तो इकथियांदर पहले ही जा चुका था, पत्थर के चौके गीले थे।

"फिर टब में ही सोया," रेड इण्डियन ने बड़बड़ाकर कहा। "और शायद फिर समुद्र में निकल गया है।"

उस रोज़ इकथियांदर नाश्ते पर देर से पहुंचा।

वह परेशान जान पड़ता था। मांस में कांटा खोंसते हुए बोला:

"फिर भुना हुआ मांस?"

"ठीक है," क्रिस्टो ने कड़ी आवाज़ में कहा। "डाक्टर साहब का हुक्म है। लगता है तुम फिर समुद्र में मछलियां खाते रहे हो। अगर यही चलता रहा तो तुम भुना हुआ मांस खाना तो दूर रहा, तुम उसे छुओगे भी नहीं। और तुम सोये भी टब में। हवा में सांस लेने की आदत छूट जायेगी तो शिकायत करने लगोगे कि कमर में दर्द उठता है। और अब नाश्ता करने भी देर से आये हो। डाक्टर

साहब लौटेंगे तो मैं ज़रूर उनसे शिकायत करूंगा, देख लेना। तुम तो क़ाबू से बाहर होते जा रहे हो।"

"उन्हें कुछ भी मत कहना, क्रिस्टो। मैं उन्हें क्लेश नहीं पहुंचाना चाहता," इकथियांदर सिर झुकाये किसी सोच में डूब गया। फिर सहसा बड़ी बड़ी उदास आंखों से इण्डियन की ओर देखकर बोला:

"सुनो, क्रिस्टो, आज सुबह मैंने एक लड़की देखी। मैंने पहले कभी भी कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी थी जो इतनी सुन्दर हो, सागर में भी नहीं।"

"आख़िर हमारी धरती इतनी बुरी नहीं है, क्यों?" क्रिस्टो ने कहा।

"मैं अपनी डालफ़िन पर सवारी कर रहा था जब मैंने उसे ब्वेनस-ऐरीज़ के निकट समुद्र-तट पर देखा। उसकी आंखें नीली और बाल सुनहरे थे। पर मुझे देखते ही वह डरकर भाग गयी। उफ़, मैंने उस वक़्त अपना चश्मा और दस्ताने उतार क्यों नहीं दिये?" थोड़ी देर रुकने के बाद उसने धीमी आवाज़ में कहा, "एक बार मैंने एक लड़की को समुद्र में डूबने से बचाया था। उस वक़्त मैंने ध्यान नहीं दिया कि उसकी शक्ल-सूरत कैसी थी। अगर यह वही लड़की हुई, तो? मुझे याद है उस लड़की के बाल भी सुनहरे थे। हां, मैं सोचता हूं कि यह वही लड़की है..." युवक फिर सोच में डूब गया। थोड़ी ही देर में वह उठा और आईने के पास जा पहुंचा, और ज़िन्दगी में पहली बार बड़े ध्यान से अपनी शक्ल-सूरत देखने लगा।

"लड़की भाग गयी तो तुमने क्या किया?"

"मैं इन्तज़ार करता रहा लेकिन वह लौटकर नहीं आयी। क्रिस्टो, क्या वह फिर कभी भी तट पर नहीं आयेगी?"

"शायद यह अच्छा ही है कि इसे लड़की पसन्द है," क्रिस्टो ने सोचा। अभी तक क्रिस्टो उसके सामने नगर की तारीफ़ें करता रहा था, लेकिन फिर भी इकथियांदर को

ब्वेनस-ऐरीज़ की सैर करने के लिए—जहां उसे पकड़ना ज़ुरीता के लिए बहुत ही आसान होता—रज़ामन्द नहीं कर पाया था।

"हो सकता है, लड़की तट पर न आये। लेकिन मैं उसे ढूंढ़ने में तुम्हारी मदद करूंगा। तुम शहरी पोशाक पहन लेना और हम उसे ढूंढ़ने ब्वेनस-ऐरीज़ जायेंगे।"

"क्या मैं उसे देख पाऊंगा?" इकथियांदर ने चिल्लाकर कहा।

"वहां बहुत सी लड़कियां हैं, शायद वहां तुम्हें वही तटवाली लड़की मिल जाये।"

"चलो, अभी चलें!"

"अब देर हो चुकी है। शहर तक पैदल जाना आसान नहीं है।"

"मैं अपनी डालफ़िन पर जाऊंगा, तुम तट पर साथ-साथ चलते आना।"

"बड़े उतावले हो," क्रिस्टो ने जवाब दिया। "कल तड़के ही एक साथ चल देंगे। तुम तैरते हुए खाड़ी में चले जाना और मैं तुम्हारे कपड़े लिये तट पर तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा। पर कपड़ों का पहले इन्तज़ाम करना होगा।" (आज रात मैं अपने भाई से मिलने जाऊंगा, क्रिस्टो ने सोचा)। "अच्छा तो फिर कल तड़के मिलेंगे। और अब अच्छी तरह से आराम करो। तुम्हें ख़ूब ज़िन्दादिल और तगड़ा होना चाहिए।"

नगर में

दूसरे दिन सुबह जब इकथियांदर खाड़ी में से तैर कर तट पर आया तो क्रिस्टो पहले से सफ़ेद रंग का एक सूट हाथ में उठाये उसका इन्तज़ार कर रहा था। इकथियांदर ने सूट की ओर देखा मानो सांप की केंचुली हो, और ठण्डी आह भरकर उसे पहनने लगा। ज़ाहिर था कि इससे पहले उसे सूट पहनने का बहुत कम मौक़ा मिला था। इण्डियन ने टाई बांधने में उसकी मदद की और सिर से पांव तक उसे देखकर मन ही मन ख़ुश हुआ।

"चलो चलें," क्रिस्टो ने चहक कर कहा।

रेड इण्डियन इकथियांदर को आश्चर्यचकित करना चाहता था, इसलिए उसे शहर की प्रमुख सड़कों पर—आवेनीदा आल्वार, वेरतीस—से उसे ले जाता हुआ विक्टोरिया मैदान में ले गया और मूर-शैली में बने गिरजा और टाउन-हॉल दिखाये, उसके बाद फ़ुएर्तो और 25 मई मैदान में ले गया, जहां स्वतन्त्रता-स्तम्भ और सुन्दर पेड़ों के कुंज के बीच प्रेसीडेन्ट का प्रासाद था।

लेकिन क्रिस्टो की छोटी सी स्कीम धूल में मिल गयी। शोर, नगर का कभी न थमनेवाला ट्रैफ़िक, धूल, घुटन, गर्मी और लोगों की भीड़ के कारण इकथियांदर परेशान हो उठा। भीड़ में वह लड़की को ढूंढ़ने की नाकाम कोशिश करता रहा, थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह क्रिस्टो का बाज़ू पकड़कर फुसफुसाकर कहता: "वह रही!" फिर समझ जाता कि उससे भूल हुई है और इसके बाद वह फिर आंखें फाड़-फाड़कर भीड़ में देखने लगता।

दोपहर तक तपिश असह्य हो उठी। क्रिस्टो ने निकट ही एक रेस्तरां में भोजन करने का सुझाव दिया जो नीचे, तहख़ाने में था। जगह ठण्डी थी, लेकिन वहां बड़ा शोर था, घुटन थी और लोग भरे पड़े थे, जो घटिया क़िस्म के, मैले-कुचैले कपड़े पहने थे और गन्दे सिगार पी रहे थे। धुएं के कारण इकथियांदर के लिए सांस लेना कठिन हो रहा था। इसी पर बस नहीं था, लोग किसी ख़बर के बारे में बड़ी गर्मजोशी से बहस कर रहे थे, मुड़े-तुड़े अख़बार बार बार हवा में झुलाते और चिल्ला-चिल्लाकर ऐसे शब्द कहते, जिन्हें इकथियांदर नहीं जानता था। इकथियांदर बर्फ़ डालकर ठण्डा किया हुआ पानी तो बहुत पीता रहा, लेकिन खाना उसने छुआ तक नहीं।

"समुद्र में जान-पहचान की किसी मछली को ढूंढ़ लेना ज़्यादा आसान है, बनिस्बत इनसानों के इस भंवर में किसी व्यक्ति को ढूंढ़ना," उसने उदास होकर कहा। "तुम्हारे शहर बड़े घिनौने हैं! यहां घुटन और गन्दगी है। मेरी कमर में दर्द हो रहा है। मैं घर लौटना चाहता हूं, क्रिस्टो।"

"अच्छी बात है," क्रिस्टो ने सहमति प्रगट की, "मैं थोड़ी देर के लिए एक दोस्त से मिलने जाऊंगा और उसके बाद सीधे घर चलेंगे।"

"मैं किसी से नहीं मिलना चाहता।"

"वह हमारे रास्ते में है। उसके यहां हम रुकेंगे नहीं।"

क्रिस्टो ने बिल अदा किया और वे सड़क पर

चिलचिलाती धूप में बाहर आ गये। इकथियांदर हांफ रहा था, उसका सिर एक ओर को लटक रहा था और वह इण्डियन के पीछे-पीछे, सफ़ेद घरों के साथ साथ, कैक्टस, आलिव और शफ़तालू के कुंजों के पास से पांव घसीटता जाने लगा। रेड इण्डियन उसे अपने भाई बाल्तासार के घर ले गया, जो नये बन्दरगाह पर रहता था।

समुद्र के निकट, जहां हवा में ज़्यादा नमी थी, इकथियांदर बड़ी उत्कण्ठा से सांस लेने लगा। उसका जी चाहा कि कपड़े उतार फेंके और समुद्र में कूद जाये।

"बस, अब हम पहुंचा ही चाहते हैं," अपने साथी की ओर शंकित नेत्रों से देखते हुए क्रिस्टो ने कहा।

उन्होंने एक रेलवे-लाइन पार की।

"लो आ गये। यही है वो जगह," क्रिस्टो ने कहा और वे कुछेक सीढ़ियां उतरकर एक छोटी-सी दूकान में पहुंचे, जहां काफ़ी अन्धेरा था।

इकथियांदर की आंखें जब झुटपुटे से अभ्यस्त हो गयीं तो वह हैरान-सा होकर अपने आस-पास देखने लगा। दूकान सागर के ही तल का एक कोना नज़र आती थी। तख़्तों पर, यहां तक कि फ़र्श के भी कुछ हिस्से पर छोटे, बड़े, तिरछे, तहदार, तरह-तरह के ढेरों सीप रखे थे। छत पर से मूंगे की लड़ियां, स्टारफ़िश, सूखे केकड़े और ठूंसकर भरी हुई मछलियां लटक रही थीं। शीशे की छोटी-छोटी आलमारियों में, जिन्हें जोड़कर काउन्टर बनाया गया था, मोती रखे थे। एक आलमारी में गुलाबी रंग के मोती थे, जिन्हें ग़ोताख़ोर 'फ़रिश्तों की चमड़ी' कहते हैं। इन जानी-पहचानी चीज़ों के बीच इकथियांदर ने चैन की सांस ली।

"यहां थोड़ी देर आराम करो, यहां ठण्डक और शान्ति है," क्रिस्टो ने अपने युवा साथी को बेंत की एक पुरानी कुर्सी में बिठाते हुए कहा।

"बाल्तासार! गुत्तिएरे!" रेड इण्डियन ने चिल्लाकर कहा।

"क्या तुम हो, क्रिस्टो?" दरवाज़े के पीछे से आवाज़ आयी। "यहां अन्दर आ जाओ।"

क्रिस्टो सिर नीचा करके साथवाले कमरे में चला गया।

इस कमरे में बाल्तासार की प्रयोगशाला थी। यहां पर वह मोतियों की चमक, जो नमी के कारण मन्द पड़ जाती थी, तेज़ाब के हल्के-से घोल में भिगोकर बहाल किया करता था। क्रिस्टो ने अपने पीछे दरवाज़ा पक्की तरह से बन्द कर दिया। दीवार में ऊपर की ओर एक छोटी सी खिड़की में से छनकर आनेवाली धुंधली-सी रोशनी में उसे कुप्पियां और कांच के छोटे हौज़ नज़र आये, जो एक पुराने, काले पड़े मेज़ पर रखे थे।

"कहिये, भाई साहब, गुत्तिएरे कहां है?"

"इस्त्री लेने पड़ोसी के घर गयी है। सारा वक़्त वह बनने-संवरने में लगाती है। अभी आती होगी।"

"और ज़ुरीता कहां है?" क्रिस्टो ने अधीरता से पूछा।

"अभी तक नहीं आया, लानती। कल हमारा झगड़ा हो गया था।"

"गुत्तिएरे की वजह से?"

"हां। कल लड़की को घेरकर खड़ा हो गया। लेकिन लड़की ने उसकी एक नहीं मानी। अब मैं उसे क्या कहूं? बड़ी हठी और सनकी है। अपने को जहान से ऊंचा समझती है। वह यह नहीं समझ पाती कि कोई भी रेड इण्डियन लड़की, चाहे वह कितनी ही हसीन क्यों न हो, ज़ुरीता जैसे आदमी से शादी कर पाना अपना सौभाग्य समझेगी। उसके पास अपना जहाज़ है और ग़ोताख़ोरों की अपनी टोली है," मोतियों को हौज़ में डालते हुए बाल्तासार ने बड़बड़ाकर कहा। "मैं सोचता हूं ग़म ग़लत करने कहीं बैठा शराब पी रहा होगा।"

"अब हमें क्या करना होगा?"

"तुम उसे ले आये हो क्या?"

"हां, वहां बैठा है।"

बाल्तासार दरवाज़े के पास गया और झुककर ताली के छेद में से देखने लगा।

"मुझे तो नज़र नहीं आ रहा है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

"वह काउण्टर के पास बैठा है।"

"मुझे तो नज़र नहीं आ रहा है। वहां तो अकेली गुत्तिएरे है।"

बाल्तासार ने दरवाज़ा खोल दिया और दूकान में दाखि़ल हुआ। क्रिस्टो उसके पीछे-पीछे था।

इकथियांदर वहां पर नहीं था। अन्धेरे कोने में बाल्तासार की गोद ली बेटी गुत्तिएरे खड़ी थी, जिसके सौंदर्य की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। शर्मीली और मनमानी करनेवाली लड़की, उसके प्रणय प्रार्थियों की कमी नहीं थी, लेकिन वह सभी को दृढ़ता से अपनी सुरीली आवाज़ में एक ही जवाब देती: "नहीं"।

एक दिन पेद्रो ज़ुरीता की उसपर नज़र पड़ गयी और उसी दिन से वह उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए ललक रहा था। बूढ़ा बाल्तासार भी उसका ससुर और भागीदार बनने के ख़िलाफ़ नहीं था।

पर ज़ुरीता के सभी प्रेम-प्रस्तावों का गुत्तिएरे अपनी दृढ़ सुरीली आवाज़ में एक ही जवाब देती: "नहीं!"

जब उसका बाप और क्रिस्टो अन्दर आये तो लड़की सिर झुकाये खड़ी थी।

"हल्लो, गुत्तिएरे," क्रिस्टो ने कहा।

"वह युवक कहां है?" बाल्तासार ने पूछा।

"मैं युवकों को छिपा कर नहीं रखती हूं," उसने कहा और मुस्करा दी। "जब मैं अन्दर आयी तो उसने अजीब ढंग से मेरी ओर देखा, मानो किसी बात से डर रहा हो, फिर उठ खड़ा हुआ और सहसा अपनी छाती को दबाता हुआ यहां से भाग निकला। पलक झपकते ही वह सीढ़ियां चढ़कर ग़ायब हो गया।"

"तो यही थी वह लड़की," क्रिस्टो ने सोचा।

फिर सागर में

कठिनाई से सांस लेते हुए इकथियांदर उस सड़क पर जो समुद्र के किनारे-किनारे बनी थी, भाग कर जाने लगा। ज्यों ही वह उस घिनौने शहर से बाहर निकला, वह सड़क पर से उतर आया और सीधे तट की ओर भागा। किनारे के पत्थरों के बीच छिपकर उसने अपने कपड़े उतारे, उन्हें पत्थरों के पीछे छिपा दिया, फिर पानी की ओर भागा और सागर में कूद गया।

वह थका हुआ था, फिर भी इतनी तेज़ रफ़्तार से तैरने लगा जितना पहले कभी नहीं तैरा था। मछलियां डरकर उसके रास्ते से हट जातीं। शहर से कुछेक मील दूर निकल जाने के बाद ही वह सतह के नज़दीक उठ आया और तट के निकट तैरने लगा। यहां वह घर जैसा महसूस करता था। यहां हर पत्थर, समुद्र-तल के हर गड्ढ़े से वह परिचित था। ऐन उसके नीचे सपाट रेतीले तल पर घरेलू स्वभाव की फ़्लौंडर मछलियां रहती थीं; कुछ दूर मूंगे की

लाल झाड़ियां उग रही थीं, जहां लाल परोंवाली छोटी-छोटी मछलियां छिपा करती थीं। मछली पकड़नेवाले नाव के अवशेषों में अठबहियों के दो परिवार रह रहे थे, और प्रसंगवश, हाल ही में उनके परिवारों में वृद्धि हुई थी। वे धूसर रंग के पत्थर केकड़ों के घर थे। इकथियांदर उनकी छोटी-छोटी ख़ुशियों से—कोई शिकार हाथ लग गया तो ख़ुश हो गये—अपना दिल बहलाता हुआ, या उनके छोटे-छोटे क्लेशों से—किसी का पंजा खो गया, या अठबहिये ने हमला कर दिया—सहानुभूति करता हुआ घण्टों उन्हें देखता रह सकता था। तट के निकट की चट्टानों में अनगिनत घोंघे रह रहे थे।

खाड़ी के पास पहुंचकर उसने पानी में से सिर निकाला और आस-पास नज़र दौड़ायी। नज़दीक ही डालफ़िनों का एक झुंड लहरों में खेल रहा था, जिसे देखकर उसने आवाज़ लगायी। एक बड़ी-सी डालफ़िन जवाब में सुड़सुड़ायी और अपने मित्र की ओर आने लगी, उसकी चिकनी, चमकती पीठ कभी लहरों में खो जाती, कभी फिर सतह के ऊपर आ जाती थी।

"आओ, लीडिंग, जल्दी करो!" इकथियांदर ने चिल्लाकर कहा और डालफ़िन से मिलने तैर चला। शीघ्र ही वह डालफ़िन की पीठ पर सवार हो गया। "चलो, आगे बढ़ो, जल्दी!"

युवक के हाथ के इशारे पर डालफ़िन खुले सागर की ओर तेज़ हवा और लहरों का सामना करती हुई तेज़ी से बढ़ चली। लहरों को काटकर जाते हुए डालफ़िन पानी को बिलो रही थी और अपने पीछे फेन छोड़ती जा रही थी। लेकिन इकथियांदर इस रफ़्तार से भी सन्तुष्ट नहीं था। वह उसे और भी तेज़ तैरने का आग्रह कर रहा था।

"चलो, लीडिंग, और भी तेज़ चलो!"

डालफ़िन का दम फूल रहा था जब इकथियांदर ने सहसा उसे रोक दिया, हालांकि इस सवारी से उसकी उत्तेजना

शान्त नहीं हो पायी थी। वह डालफ़िन की चमकती पीठ पर से फिसलकर पानी में उतर गया और अपनी मित्र को हैरान-परेशान छोड़कर सागर में निकल गया। डालफ़िन क्षण भर के लिए रुकी रही, फिर सुड़सुड़ायी, ग़ोता मारकर पुन: पानी की सतह पर आयी और इसके बाद एक बार फिर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने के लिए सुड़सुड़ायी और ज़ोर से पूंछ झटककर तट की ओर जाने लगी। वह तैरती जाती और मुड़-मुड़कर पीछे देखती जाती। इकथियांदर कहीं भी नज़र नहीं आ रहा था, इसलिए डालफ़िन अपने झुण्ड से जा मिली। इस बीच इकथियांदर, नीचे ही नीचे, समुद्र की अन्धकारपूर्ण गहराइयों में उतरता जा रहा था। उस रोज़ जो कुछ भी उसने देखा और सुना था, वह इतना अप्रत्याशित था, उसके अनुभव की दृष्टि से इतना अनूठा था कि वह निराले में जाना चाहता था। वह अधिकाधिक गहरा उतरता जा रहा था और इसके ख़तरे के प्रति बिल्कुल उदासीन था। वह निराले में जाकर यह समझने की कोशिश करना चाहता था कि वह अन्य लोगों से क्यों इतना भिन्न है, भूमि और सागर दोनों के लिए वह क्यों अजनबी बना हुआ है।

फिर नीचे उतरते हुए उसने रफ़्तार धीमी कर दी। पानी ज़्यादा घना हो गया था, वह उस पर दबाव डालता, जिससे सांस लेना अधिकाधिक कठिन हो रहा था। चारों ओर भूरे-हरे रंग का झुटपुटा छाया था। यहां समुद्री जन्तु संख्या में कम थे और उनमें बहुत-से ऐसे थे, जिनसे इकथियांदर अनभिज्ञ था। वह इतनी गहराई में पहले कभी नहीं उतरा था। पहली बार इस निस्तब्ध, अन्धियारे संसार को देखकर वह त्रस्त हो उठा। वह जितनी जल्दी हो सका ऊपर की ओर उठा और सतह पर आकर तट की ओर तैरने लगा। सूरज डूब रहा था, उसकी तिरछी, गहरी लाल किरणें सागर को बेध रही थीं। पानी में पहुंचकर किरणें सागर की नीलिमा में घुल-मिल जातीं और अधिक

मृदुल रंग—नील-लोहित गुलाबी से हरियाली-मायल नीला रंग तक ग्रहण कर लेतीं।

इकथियांदर चश्मा नहीं पहने था, इससे नीचे से पानी की सतह उसे वैसी ही नज़र आ रही थी, जैसी मछलियों को नज़र आती है—चपटी नहीं बल्कि शंकु के आकार की, मानो वह एक बहुत बड़ी कीप के तल पर हो। ऐसा लगता था जैसे लाल, पीले, हरे, नीले और बैंगनी रंग के छल्ले इस कीप के किनारों को घेरे हुए थे। उनके पार पानी की उजली सतह फैली हुई थी, जो दर्पण की भांति नीचे की चीज़ों को—चट्टानों, सिवार, और मछलियों को प्रतिबिम्बित कर रही थी।

इकथियांदर सिर नीचा करके तट की ओर तैरता हुआ जाने लगा और छिछले पानी के नज़दीक, जलमग्न चट्टानों के बीच एक जगह बैठ गया। निकट ही कुछ मछुए एक किश्ती से पानी में कूद पड़े और उसे खींचकर तट की ओर ले जाने लगे। उनमें से एक घुटनों तक पानी में खड़ा था। ऊपर की ओर देखते हुए इकथियांदर को जल के ऊपर बिना टांगों के एक मछुआ नज़र आया, जल के नीचे उसकी टांगें अलग नज़र आ रही थीं और जल की दर्पण जैसी सतह में पुन: प्रतिबिम्बित हो रही थीं। एक और मछुआ कन्धों तक पानी में उतरा और पानी के नीचे बिना सिर के और चार टांगोंवाला एक भयानक जीव सहसा उभर आया। लगता था जैसे एक के ऊपर दूसरा, दो एक दूसरे से मिलते हुए जुड़वां व्यक्ति खड़े हों, सिर कटे हुए और एक के कन्धे दूसरे के कन्धों के ऊपर। जब कभी लोग पानी के पास आ रहे होते तो इकथियांदर उन्हें एक मछली की आंखों से देखता—इस तरह मानो वे कांच के गोलक में प्रतिबिम्बित हो रहे हों। पेश्तर इसके कि वे तट की ओर आते हुए उसे देख पायें, इकथियांदर उन्हें सिर से पांव तक देख लेता और तैरकर वहां से निकल जाता।

आज चार टांगोंवाले और बिना सिर के शरीर और

बिना धड़ के सिर इकथियांदर को निश्चित रूप से घिनौने लगे। आदमी... वे बेतहाशा शोर मचाते, उनसे इतनी दुर्गन्ध उठती और वे बेशुमार गन्दे सिगार पीते। हां, डालफ़िनें ज़रूर उनसे अच्छी थीं—साफ़-सुथरी, ख़ुश-बाश डालफ़िन मछलियां। इकथियांदर यह याद करके कि उसने किस भांति एक बार डालफ़िन का दूध चखा था, मुस्कराने लगा।

दूर दक्षिण में एक छोटी-सी, अलग-थलग-सी खाड़ी थी। तीखी जल-मग्न चट्टानों और बहुत बड़ी रेतीली भू-जीभ के कारण समुद्र की ओर से जहाज़ों पर उस तक पहुंचना असंभव था, जबकि तट ऊबड़-खाबड़, चट्टानों से भरा और ढालवां था। इसलिए उस खाड़ी पर न मछुए और न ही मोतियों के ग़ोताख़ोर कभी आते थे। उसके छिछले तल पर रंग-बिरंगे पौधों का कालीन बिछा रहता। गुनगुने पानी में नन्ही-नन्ही मछलियां इधर से उधर तैरती फिरतीं। बहुत सालों से वहां कोई मादा डालफ़िन बच्चे जनने के लिए—दो, चार और कभी-कभी छ:-छ: भी—आया करती थी। नन्ही डालफ़िनों को निहारने में इकथियांदर को बड़ा मज़ा आता। घण्टों वह झाड़ियों के पीछे छिपा रहता और उन्हें लहरों में खेलते या भागकर मां के चूचुक चूसने के लिए जाते देखा करता। फिर इकथियांदर उन्हें छोटी-छोटी मछलियां खिलाकर धीरे-धीरे सधाने लगा। क्रमश: नन्ही डालफ़िनें और उनकी मां उससे हिल गयीं। जब वह नन्ही डालफ़िनों का पीछा करता, उन्हें पकड़ लेता, हवा में उछालता तो उन्हें बुरा नहीं लगता था। प्रकटत: लगता था जैसे डालफ़िनों को भी इसमें मज़ा आता हो, वे उसके पास ही बनी रहतीं और ज्यों ही वह हाथों में छोटी-मोटी चीज़ें—मछलियां या इससे बेहतर, छोटे-छोटे अठबहिये उठाये खाड़ी में प्रवेश करता तो दूर से तैरती हुई उसके पास आ जातीं।

एक दिन उसकी परिचिता डालफ़िन के बच्चे हुए ही थे और बच्चे अभी मछलियां न खाकर अपनी मां का दूध

ही पीते थे, इकथियांदर को सूझा कि वह स्वयं उसका दूध क्यों न चखे।

देखते ही देखते वह डालफ़िन के नीचे जा पहुंचा और उसे पकड़कर अपना मुंह एक चूचुक के साथ लगा लिया। डालफ़िन मछली, जो क्षण भर पहले लापरवाही से घूमती फिरती थी, सहसा घबरा गयी और वहां से भाग गयी। इकथियांदर ने फ़ौरन उसे छोड़ दिया। दूध का ज़ायका बहुत कुछ मछली का-सा था।

इस तरह बिन-बुलाये मेहमान से छुटकारा पाकर, भयाकुल डालफ़िन सीधी खाड़ी में से निकल गयी, जबकि उसके बच्चे वहीं पर रहे और वे भी त्रस्त और घबराये हुए इधर-उधर भागते रहे। उन्हें इकट्ठा करने में इकथियांदर को काफ़ी वक़्त लग गया और इसमें उसे काफ़ी कोशिश करनी पड़ी। जब वह उन सब को इकट्ठा कर पाया तो मां लौट आयी और नज़दीक की किसी खाड़ी में उन्हें ले गयी। बहुत दिनों के बाद ही कहीं इकथियांदर उस परिवार का विश्वास फिर से प्राप्त कर पाया।

क्रिस्टो चिन्ता से पागल हुआ जा रहा था। तीन दिन और तीन रात ग़ायब रहने के बाद इकथियांदर ने सूरत दिखायी थी। उसका चेहरा पीला और थका हुआ था, पर उसके चेहरे पर पहले का सा तनाव नहीं था।

"तुम कहां छिपे रहे?" रेड इण्डियन ने कड़ी आवाज़ में पूछा, भले ही दिल ही दिल में इकथियांदर को वापस आया देखकर वह फूला नहीं समा रहा था।

"समुद्र के तल पर था," इकथियांदर ने जवाब दिया।

"तुम इतने पीले क्यों हो रहे हो?"

"मैं... मैं तो लगभग जान से हाथ धो बैठा था," इकथियांदर ने ज़िन्दगी में अपना पहला झूठ बोला और

क्रिस्टो को एक ऐसी घटना के बारे में बताने लगा जो उसके साथ काफ़ी दिन पहले घटी थी।

दूर समुद्र में चट्टानों के बीच एक समतल मैदान-सा था, जिसके बीचोंबीच बड़ी-सी अण्डाकार खोह थी, और वह खोह बिल्कुल जलमग्न पहाड़ी झील जैसी लगती थी।

उसके ऊपर से तैरते हुए इकथियांदर का ध्यान तल के असाधारण रूप से हल्के भूरे रंग की ओर आकृष्ट हुआ। गहरा उतरते हुए वह यह देखकर हैरान रह गया कि वह खोह समुद्री जीवों—छोटी-छोटी मछलियों से लेकर शार्क और डालफ़िन मछलियों तक—के विशाल क़ब्रिस्तान के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। उनमें से कुछेक जीवों के शव वहां हाल ही में पहुंचे जान पड़ते थे। पर वह यह देखकर हैरान रह गया कि कहीं भी मुर्दा मांस खानेवाले जन्तु नज़र नहीं आ रहे थे। वहां मृत्यु और मौन का राज्य था। केवल कहीं-कहीं पर गैस के छोटे-छोटे बुलबुले निकलते और ऊपर की ओर उठ रहे थे। इकथियांदर ऊपर खोह के किनारे-किनारे तैर रहा था, जब उसकी इच्छा हुई कि थोड़ा और नीचे गहराई में उतरे। सहसा उसके गलफड़ों में तीखा दर्द उठा और वह निःसहाय खोह के किनारे पर गिर पड़ा, केवल उसकी चेतना ने अभी तक जवाब नहीं दिया था। वहां वह पड़ा रहा, उसका दिल धक्-धक् कर रहा था और कनपटियों पर जैसे हथौड़े चल रहे थे। अन्त निकट था। फिर आंखों में फैले लाल धुन्धलके में से उसे एक शार्क-मछली नज़र आयी, उसका शरीर तड़प रहा था और वह उससे कुछ ही मीटर की दूरी पर खोह में नीचे गिर रही थी। वह इकथियांदर का पीछा करती रही होगी, अब वह भी जलमग्न झील के उस घातक पानी के सम्पर्क में आ गयी थी। वह हांफ रही थी, जिससे उसका पेट और कमर बार-बार फूल रहे थे, उसका मुंह खुला था, तीखे सफ़ेद दांत नज़र आ रहे थे। शार्क दम तोड़ रही थी। इकथियांदर सिर से पांव तक कांप उठा। उसने दांत भींचे

और इस बात की हर मुमकिन कोशिश करते हुए कि गलफड़ों में पानी न आने पाये, वह हाथों और पैरों के बल रेंगता हुआ उस घातक स्थल से निकला, जलमग्न चट्टान पर पैरों के बल खड़ा हो गया और झटककर आगे की ओर बढ़ने लगा। उसका सिर चकराया और वह पत्थरों पर लड़खड़ा कर गिर पड़ा। बांहें ज़ोर ज़ोर से मारता हुआ वह आख़िर खोह से दर्जनों क़दमों की दूरी पर जा पहुंचा और फिर बेतहाशा तैरकर दूर जाने लगा।

कहानी को सफ़ाई से ख़त्म करने के इरादे से इकथियांदर ने क्रिस्टो के लाभ के लिए वे बातें भी जोड़ दीं, जो बाद में साल्वातोर से उसे पता चली थीं।

"संभवत: कोई हानिकारक गैस, हाइड्रोजन सल्फ़ाइड या कार्बन एनहाइड्राइड, बरसों से वहां जमा होती रही है," इकथियांदर ने कहा। "जब वह सतह पर आती है तो उसका आक्सीकरण हो चुका होता है और वह हानिकारक नहीं रहती, लेकिन खोह में वह बहुत संकेन्द्रित होती है। अब कृपया मुझे कुछ खाने को दो, मैं भूख से मरा जा रहा हूं।"

जल्दी से नाश्ता करने के बाद इकथियांदर ने झपटकर अपना चश्मा और दस्ताने उठाये और सीधा दरवाज़े की ओर लपका।

"क्या तुम केवल इन चीज़ों को ही लेने आये थे?" चश्मे की ओर इशारा करते हुए क्रिस्टो ने पूछा। "तुम्हें हो क्या गया है? तुम मुझे बताते क्यों नहीं हो?"

पर इकथियांदर अब पहले-सा निष्कपट युवक नहीं था।

"मुझसे मत पूछो, क्रिस्टो, मैं ख़ुद नहीं जानता, मुझे क्या हो गया है," उसने कहा और जल्दी से बाहर चला गया।

नन्हा प्रतिशोध

लड़की के सहसा प्रगट होने पर इकथियांदर इस क़दर विचलित हो उठा था कि वह बाल्तासार की दूकान में से भाग निकला और उस वक़्त तक दम नहीं लिया जब तक कि वह समुद्र में कूदकर तैरने नहीं लग गया था। अब वह लड़की से मिल पाने के लिए तड़प रहा था, लेकिन नहीं जानता था कि इसकी व्यवस्था कैसे करे। सब से आसान तरीक़ा था कि क्रिस्टो की मदद ली जाये। पर वह डरता था कि इससे उसे लड़की के साथ रेड इण्डियन की मौजूदगी में वार्तालाप करना पड़ेगा। हर रोज़ सुबह इकथियांदर तैरता हुआ उस जगह जा पहुंचता जहां उसने लड़की को तट पर पहली बार देखा था और इस आशा से कि वह लड़की को फिर से देख पायेगा वह बड़े-बड़े पत्थरों के पीछे छिप जाता और शाम तक वहीं बना रहता। तट पर पहुंचकर वह चश्मे और दस्ताने उतार देता और अपना सफ़ेद सूट पहन लेता ताकि लड़की फिर से डर

न जाये। रात को सागर में ग़ोता लगाकर वह मछलियों और घोंघों से पेट भर लेता और तट के निकट ही जल में बेचैनी से रात काट देता और पौ फटने से पहले फिर अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जाता।

एक दिन शाम को उसने बाल्तासार की दूकान में जाने का निश्चय किया। दरवाज़ा खुला था, लेकिन काउण्टर के पीछे उसे केवल बूढ़ा इण्डियन ही दिखाई पड़ा। इकथियांदर तट पर लौट आया। वहां एक चट्टान पर उसे एक लड़की नज़र आयी, जिसने हल्की-फुल्की सफ़ेद रंग की पोशाक पहन रखी थी और सिर पर सींकों की टोपी पहने हुए थी। वही लड़की थी! इकथियांदर खड़ा का खड़ा रह गया। लड़की के नज़दीक जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। प्रकटत: लड़की किसी का इन्तज़ार कर रही थी। वह बड़ी अधीरता से चट्टानी मंच पर इधर से उधर आ जा रही थी, कभी-कभी वह सड़क की ओर देख लेती थी। अन्तरीप के दामन में खड़े इकथियांदर को उसने नहीं देखा।

फिर युवती ने किसी की ओर हाथ हिलाया। इकथियांदर ने घूमकर देखा, एक ऊंचा-लम्बा, चौड़े कन्धोंवाला युवक सड़क पर तेज़ी से डग भरता हुआ चला आ रहा था। इकथियांदर ने पहले कभी भी ऐसे सुनहरे बाल और ऐसी आंखें नहीं देखी थीं, जैसी उस अजनबी की थीं। वह तगड़ा युवक लड़की के पास पहुंचा और अपना मज़बूत हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

"हलो, गुत्तिएरे, डियर!" उसने बड़े स्नेह से कहा।

"हलो, ओलसन।"

अजनबी ने ज़ोर से गुत्तिएरे के साथ हाथ मिलाया।

उनकी ओर देखते हुए इकथियांदर की आंखों में वैमनस्य का भाव था, जिसमें उदासी का हल्का-सा पुट मिला था।

"ले आयी हो?" युवक ने कहा।

लड़की ने केवल सिर हिला दिया।

"तुम्हारे पिताजी को तो पता नहीं चलेगा?" ओलसन ने पूछा।

"नहीं," युवती बोली, "मोती तो मेरे हैं, आख़िर मैं उनका जो चाहूं कर सकती हूं।"

धीमी आवाज़ में बातें करते हुए गुत्तिएरे और ओलसन चट्टानी तट के कगार तक पहुंच गये। गुत्तिएरे ने अपना मोतियों का हार खोलकर उतारा और उसे एक सिरे से पकड़े रही।

"देखो, डूबते सूरज की रोशनी में मोती कैसे चमकते हैं," उसने प्रशंसा से कहा। "लो इसे ले लो।"

ओलसन ने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि मोतियों का हार गुत्तिएरे के हाथ में से फिसलकर समुद्र में जा गिरा।

"अरे, मैं क्या कर बैठी!" लड़की चिल्लायी।

दोनों हताश होकर जहां खड़े थे वहीं खड़े रह गये।

"शायद उसे निकाला जा सकता है?" ओलसन ने कहा।

"नहीं, पानी यहां बहुत गहरा है," गुत्तिएरे ने कहा। "बहुत बुरी बात हुई है।"

लड़की को यों परेशान देखकर इकथियांदर भूल गया कि लड़की वह हार उस सुनहरे बालोंवाले युवक को उपहारस्वरूप देने जा रही थी। वह इस घटना का मूक साक्षी बनकर खड़ा नहीं रह सकता था। दृढ़ता से डग भरते हुए वह ऊपर जा पहुंचा और सीधा गुत्तिएरे के सामने जा खड़ा हुआ।

ओलसन की भौंहें चढ़ गयीं जबकि गुत्तिएरे इकथियांदर की ओर कुतूहल और आश्चर्य से देखने लगी—युवती ने झट से पहचान लिया कि यह वही लड़का है, जो उस दिन एकाएक उसके पिता की दूकान में से भाग गया था।

"लगता है आपके हाथ से मोतियों का हार समुद्र में गिर गया है?" उसने कहा, "अगर आप चाहें तो मैं उसे निकाल दूं।"

"इतनी गहराई से तो उसे मेरा बाप भी नहीं निकाल सकता, जो सब से बढ़िया ग़ोताख़ोरों में से है," लड़की ने झट से जवाब दिया।

"मैं कोशिश कर सकता हूं," इकथियांदर ने विनम्रता से कहा, लड़की और उसके साथी की हैरत का ठिकाना न रहा जब इकथियांदर वहीं से, जहां वे खड़े थे, पूरे कपड़े पहने समुद्र में कूद गया और लहरों में ग़ायब हो गया।

ओलसन की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या सोचे।

"यह कौन है? कहां से टपक पड़ा?"

एक मिनट गुज़र गया, फिर दूसरा, लेकिन युवक का कहीं पता नहीं था।

"वह डूब गया," पानी में बड़ी व्याकुलता से झांकते हुए गुत्तिएरे ने कहा।

इकथियांदर का हरगिज़ यह इरादा नहीं था कि लड़की को या ओलसन को इस बात का पता चल जाये कि वह पानी के नीचे रह सकता है। लेकिन हार को ढूंढ़ते हुए उसे वक़्त का अन्दाज़ न रहा और एक साधारण ग़ोताख़ोर की तुलना में वह ज़्यादा देर तक पानी के अन्दर बना रहा। सतह पर पहुंचकर वह मुस्कराया और बोला:

"धैर्य रखिये। तल पत्थर के टुकड़ों से अटा पड़ा है, लेकिन मैं उसे ढूंढ़ निकालूंगा," और फिर ग़ोता लगाकर ग़ायब हो गया।

गुत्तिएरे मोतियों की ग़ोताख़ोरी के बारे में काफ़ी कुछ जानती थी, इसलिए यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि दो मिनट तक पानी के अन्दर रहने के बावजूद इस आदमी का दम नहीं फूला था और वह अभी भी सामान्य नज़र आ रहा था।

दो मिनट के बाद उसने फिर पानी में से सिर निकाला। और जब हार दिखाने के लिए उसने एक हाथ उठाया तो उसका चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था।

"एक चट्टान के साथ अटका हुआ था," उसने कहा, और उसकी सांस इस तरह सामान्य गति से चल रही थी मानो वह साथवाले कमरे में से हार उठाकर लाया हो। "अगर किसी दरार में जा गिरता तो इसे निकालना बहुत मुश्किल होता।"

वह तेज़ी से चट्टानों पर चढ़कर गुत्तिएरे के पास आया और हार उसे दे दिया। उसके कपड़ों से पानी चू-चू कर गिर रहा था, पर उसकी ओर इकथियांदर कोई ध्यान नहीं दे रहा था।

"लीजिये।"

"बहुत बहुत शुक्रिया," गुत्तिएरे ने कहा और इकथियांदर की ओर पहले से भी अधिक कुतूहल से देखने लगी।

थोड़ी देर तक सभी चुप बने रहे। कोई भी नहीं जानता था कि आगे क्या कहा जाये। लगता था जैसे इकथियांदर की मौजूदगी में गुत्तिएरे ओलसन के हाथ में हार देने में झिझक महसूस कर रही है।

"लगता है, आप यह हार इन्हें देना चाहती थीं," ओलसन की ओर इशारा करते हुए इकथियांदर ने कहा।

ओलसन का चेहरा लाल हो गया।

"अरे, हां-हां," गुत्तिएरे ने झेंपकर कहा और अपना हाथ ओलसन की ओर बढ़ा दिया। ओलसन ने बिना कुछ कहे हार लेकर जेब में डाल लिया।

अपने इस छोटे-से प्रतिशोध से इकथियांदर को खुशी हुई। ठीक है कि खोया हुआ हार ओलसन को गुत्तिएरे के हाथ से मिला, लेकिन उसके लिये लाया तो इकथियांदर ही था।

लड़की को झुककर अभिवादन करने के बाद इकथियांदर लम्बे डग भरता हुआ सड़क पर जाने लगा।

लेकिन सुख की यह भावना लघु-जीवी साबित हुई। उसके दिमाग़ में नये सवाल और विचार उठने लगे। वह लोगों को अच्छी तरह से नहीं जानता था। सुनहरे बालोंवाला युवक कौन था? गुत्तिएरे उसे उपहार में अपना हार क्यों

दे रही थी? चट्टान के ऊपर वे एक दूसरे के साथ क्या बातें कर रहे थे?

उस रात फिर इकथियांदर अपनी डालफ़िन की पीठ पर बैठकर लहरों में दौड़ता रहा और अपनी भयानक चीत्कार से मछुओं के हृदय में त्रास पैदा करता रहा।

दूसरा सारा दिन इकथियांदर पानी के नीचे रहा; उसने चश्मा तो पहन रखा था लेकिन उसके हाथों पर दस्ताने नहीं थे, और वह रेतीले तल के साथ साथ तैरता हुआ मोतियों के सीप ढूंढ़ता रहा। शाम के वक़्त वह बड़बड़ाते क्रिस्टो के पास वापस लौटा। दूसरे दिन प्रात: वह उस चट्टान पर जा पहुंचा जहां गुत्तिएरे और ओलसन एक दूसरे से मिले थे। शाम को, जब सूरज डूब रहा था, गुत्तिएरे आयी।

इकथियांदर अपनी गुप्त जगह से निकलकर उससे मिलने आया। उसे देखकर गुत्तिएरे ने अभिवादन में सिर हिलाया।

"मेरा पीछा कर रहे हो क्या?" गुत्तिएरे ने मुस्कराकर कहा।

"हां," इकथियांदर ने सीधा-सा जवाब दिया। "जब से मैंने तुम्हें देखा है," और झेंप से उसका चेहरा लाल हो गया। फिर बोला, "तुमने अपना हार उसको—ओलसन को दे डाला। लेकिन देने से पहले तुम उसे बड़े चाव से देख रही थीं। क्या तुम्हें मोती अच्छे लगते हैं?"

"हां।"

"अच्छा तो, यह लो... मेरी ओर से," और उसने एक मोती गुत्तिएरे की ओर बढ़ा दिया।

गुत्तिएरे ख़ूब जानती थी कि एक बढ़िया मोती की पहचान क्या है। पर जो मोती इकथियांदर की हथेली पर चमक रहा था वह उन सभी मोतियों से बढ़िया था, जो उसने कभी देखे थे या जिनकी चर्चा उसने कभी अपने बाप के मुंह से सुनी थी: आकार में बड़ा, बेहद सुडौल, दूध जैसा सफ़ेद, वज़न में कम से कम 200 कैरट होगा और

क़ीमत में कम से कम दस लाख सोने के पेसो। आश्चर्यचकित गुत्तिएरे की नज़रें बेशक़ीमत मोती से हटकर सुन्दर युवक की ओर उठीं। हृष्ट-पुष्ट और लचीला, पर कुछ-कुछ शर्मीला, मुचड़ा हुआ सफ़ेद सूट पहने यह युवक ब्वेनस-ऐरीज़ के अमीर युवकों में से नजर नहीं आता था। वह यहां खड़ा ऐसा उपहार एक ऐसी लड़की को दे रहा था, जिसे वह अच्छी तरह से जानता तक नहीं था।

"ले भी लो न," इकथियांदर ने आग्रह किया।

"नहीं," गुत्तिएरे ने सिर हिलाकर कहा, "मैं तुमसे इतना क़ीमती तोहफ़ा नहीं ले सकती।"

"यह तो ज़रा भी क़ीमती नहीं है," इकथियांदर ने उत्तेजित होकर कहा, "इस जैसे हज़ारों मोती समुद्र के तल पर बिखरे पड़े हैं।"

गुत्तिएरे मुस्करा दी। इकथियांदर को फिर एक बार झेंप हुई और वह क्षण भर के लिए चुप रहा।

"ले लो न," उसने कहा।

"नहीं।"

इकथियांदर के माथे पर बल पड़ गये। उसे ठेस पहुंची थी।

"अगर अपने लिए नहीं लेना चाहती हो तो ओलसन के लिए ले लो। वह इनकार नहीं करेगा।"

गुत्तिएरे क्रुद्ध हो उठी।

"वह हार ओलसन ने अपने लिये नहीं लिया था," उसने कड़ी आवाज़ में कहा। "तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं।"

"तो तुम नहीं लोगी?"

"नहीं।"

इस पर इकथियांदर ने मोती को दूर समुद्र में फेंक दिया और अभिवादन में सिर झटककर वह घूम गया और सड़क की ओर चल पड़ा।

उसकी इस कारगुज़ारी को देखकर गुत्तिएरे स्तम्भित-सी रह गयी। दस लाख की क़ीमत के मोती को समुद्र में फेंक

9 1536

दिया, जैसे कोई मामूली कंकड़ हो! गुत्तिएरे भी शर्मिन्दा महसूस करने लगी और उस अजनबी युवक का दिल दुखाने के लिए अपनी हृदयहीनता पर मन ही मन अपनी भर्त्सना करने लगी।

"ठहरो, कहां जा रहे हो?"

लेकिन इकथियांदर सिर झुकाये चला जा रहा था। गुत्तिएरे भागती हुई उसके पास जा पहुंची और उसका हाथ पकड़कर उसकी आंखों में देखा। युवक की आंखों से आंसू बह रहे थे। वह पहले कभी नहीं रोया था और हैरान था कि आस-पास की सभी चीज़ें उसे इतनी धुन्धली क्यों नज़र आ रही हैं मानों वह चश्मे के बिना पानी के नीचे तैर रहा हो।

"मुझे माफ़ कर दो। मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहती थी," लड़की ने कहा और उसके दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये।

ज़ुरीता का अधैर्य

इस घटना के बाद इकथियांदर हर रोज़ शाम को शहर के निकटवर्ती तट तक तैरता हुआ जा पहुंचता, फिर चलता हुआ उस जगह तक जाता जहां वह अपना सूट छिपाया करता था और उसे पहनकर गुत्तिएरे से मिलने अन्तरीप तक जा पहुंचता। एक दूसरे के साथ बड़े उत्साह से बातें करते हुए वे दोनों तट पर चहलक़दमी करते रहते। गुत्तिएरे का यह नया दोस्त कौन था? गुत्तिएरे इसका उत्तर देने में असमर्थ थी। वह समझदार और हाज़िरजवाब था, बहुत-सी ऐसी बातें जानता था, जो गुत्तिएरे को नहीं मालूम थीं, तिस पर भी कभी-कभी वह ऐसी बातें नहीं समझ पाता था, जो एक शहरी लड़का पलक मारते समझ लेता था। इसका कारण गुत्तिएरे नहीं जानती थी। इकथियांदर अपने बारे में बहुत कम बोलता था। वह सारी बात सच-सच बताने से झिझकता था। लड़की जो कुछ जान

पायी वह इतना भर था कि इकथियांदर किसी डाक्टर का बेटा है जो प्रकटत: बहुत धनी है। उसने अपने बेटे को शहरों से और लोगों से दूर रखकर उसका पालन-पोषण किया है और उसे विचित्र एकांगी शिक्षा दी है।

कभी कभी वे घण्टों सांय-सांय करती सागर की तरंगों के पास तट पर बैठे रहते। ऊपर तारे जगमग करते। क्रमश: उनकी बातचीत खामोशी में बदल जाती। इकथियांदर बड़ा खुश था।

"मुझे अब जाना चाहिए," लड़की कहती।

अनिच्छा से इकथियांदर उठता, उपनगर तक उसे छोड़ने जाता, फिर जल्दी से लौटता और अपना सूट उतारकर तैरता हुआ घर लौट जाता। सुबह के वक़्त नाश्ते के बाद वह अपने साथ डबलरोटी का बड़ा-सा टुकड़ा ले कर तैरता हुआ खाड़ी में आ जाता। बलुवी-रेतीली तल पर आराम से बैठ कर वह मछलियों को रोटी के टुकड़े खिलाने लगता। वे झुण्डों में उसके पास आतीं, उसके इर्द-गिर्द उनकी भीड़ लग जाती, वे उसके हाथों के बीच घुसतीं और बाहर निकल जातीं और बड़े लालच से रोटी के पानी सने टुकड़ों पर झपटतीं। कभी कभी बड़े आकार की मछलियां आ टपकतीं और छोटी मछलियों को भगा देतीं। इकथियांदर उठ खड़ा होता और बड़ी मछलियों को पीटकर भगा देता, जब कि छोटी मछलियां उसकी पीठ पीछे पनाह लेतीं।

वह मोती भी इकट्ठे करने लगा था और उसने देखा कि यह काम उसे भाता था। कुछ ही दिनों से उसने इस काम में कमाल हासिल कर लिया और शीघ्र ही उसके पास अव्वल दर्जे के मोतियों का एक संग्रह उस भूमिगत कन्दरा के कोने में इकट्ठा हो गया था, जिसे वह अपने भण्डार के रूप में इस्तेमाल करता था।

वह बड़ी तेज़ी से—और बिना जाने—अर्जेन्टीना के, या शायद सारे दक्षिणी अमरीका के सब से धनी व्यक्तियों में से एक बनता जा रहा था। अगर वह चाहता तो बड़ी

आसानी से संसार का सब से धनी व्यक्ति बन सकता था। लेकिन इसका उसे कभी ख़याल तक नहीं आया था।

इसी तरह चुपचाप दिन बीतते गये। एक ही बात उसके सुख में बाधा डाल रही थी और वह यह कि गुत्तिएरे को उस घुटन भरे शहर में रहना पड़ रहा था, जो धूल-मिट्टी और शोर से भरा था। लोगों से और उनके शोर से दूर, पानी के नीचे गुत्तिएरे के लिए रहना संभव बनाने के लिए वह कुछ भी देने को तैयार था। यह कितनी शानदार बात होती! वह उसे एक नया संसार दिखाता, उसके साथ खिले फूलों से सुशोभित जलमग्न खेतों की सैर करता। लेकिन गुत्तिएरे पानी के नीचे नहीं रह सकती थी और न ही इकथियांदर धरती पर रह सकता था। यों भी वह ज़मीन पर ज़रूरत से ज़्यादा वक़्त बिता रहा था। यह उसके लिए हानिकारक था। अभी से उसे इसका मूल्य चुकाना पड़ रहा था: तट पर एक-एक दिन बिताने से उसकी कमर का दर्द उत्तरोत्तर बढ़ रहा था। पर उस समय भी जब दर्द लगभग असह्य हो उठता वह स्वयं लड़की से पहले नहीं उठता था। इसके अतिरिक्त चिन्ता का एक और कारण भी था। कुछ भी हो इकथियांदर उस वार्तालाप को कभी भी नहीं भूल पाता था, जो अन्तरीप के शिखर पर गुत्तिएरे और सुनहरे बालोंवाले युवक के बीच हुआ था। गुत्तिएरे से मिलने पर हर बार इकथियांदर उससे इस बारे में पूछना चाहता, लेकिन साहस नहीं बटोर पाता था, डरता था कि कहीं गुत्तिएरे नाराज़ न हो जाये।

एक शाम लड़की ने उससे कहा कि वह अगले दिन नहीं आयेगी।

"क्यों?" उसने पूछा और उसके माथे पर बल पड़ गये।

"मुझे काम है।"

"क्या काम है?"

"तुम्हें बहुत कुतूहली नहीं होना चाहिए," लड़की

ने मुस्कराकर कहा। "और मुझे छोड़ने भी न आओ," उसने जोड़ा और वहां से चली गयी।

इकथियांदर समुद्र में उतर गया। रात भर वह पत्थरों की सेज पर जिन पर काई उग रही थी, अत्यन्त दुःखी होकर लेटा रहा। पौ फटते ही वह घर की ओर जाने लगा।

खाड़ी के निकट पहुंचने पर उसने देखा कि कुछेक मछुए डालफ़िनों का शिकार कर रहे हैं। उसकी आंखों के सामने एक बड़ी-सी डालफ़िन बन्दूक की गोली खाकर पानी में से ऊंची उछली और फिर छपाके के साथ वापस पानी में गिरी।

"लीडिंग!" वह भयाकुल होकर फुसफुसाया।

एक मछुआ किश्ती पर से पानी में कूद गया था और इस इन्तज़ार में था कि कब ज़ख़्मी मछली सतह पर आयेगी। लेकिन डालफ़िन उससे लगभग सौ मीटर दूर पानी में से निकली और हांफती हुई फिर ग़ोता लगा गयी।

मछुआ तेज़ी से डालफ़िन की ओर तैरकर जाने लगा। इकथियांदर अपने मित्र की मदद करने के लिए लपका। डालफ़िन फिर सतह पर आयी, मछुए ने झट से उसे सुफ़ने से पकड़ लिया और खींचकर किश्ती की ओर ले जाने लगा।

इकथियांदर पानी के नीचे तैरता हुआ मछुए के पास जा पहुंचा और उसने ज़ोर से मछुए की पिण्डली में अपने दांत गड़ा दिये। मछुए ने अनेक बार ज़ोर ज़ोर से पांव झटके यह सोच कर कि उस पर शार्क-मछली ने हमला किया है और फिर अपने को बचाने की कोशिश करते हुए अंधाधुन्ध चाक़ू चलाने लगा, जो उसने दूसरे हाथ में पकड़ रखा था। चाक़ू इकथियांदर के गले पर उस जगह लगा जो चोइंटे से ढकी नहीं थी। उसने मछुए की टांग छोड़ दी और मछुआ तेज़ी से किश्ती की ओर तैर कर जाने लगा। इकथियांदर और डालफ़िन—दोनों ज़ख़्मी—खाड़ी की ओर

जाने लगे। जलथलिये ने डालफ़िन को साथ चलने का हुक्म दिया और ग़ोता लगाकर जलमग्न गुफ़ा में गया। गुफ़ा पानी से केवल आधी ही भरी थी। हवा चट्टान की दरार में से आ रही थी। यहां डालफ़िन चैन से सांस ले सकती थी। इकथियांदर ने उसके ज़ख़्म की जांच की। ज़ख़्म गंभीर नहीं था। गोली चमड़ी के नीचे जाकर चरबी में अटक गयी थी। इकथियांदर उसे उंगलियों से ही निकालने में कामयाब हो गया। डालफ़िन धैर्य से बरदाश्त करती रही।

"बस, जल्दी ही ज़ख़्म भर जायेगा," अपने मित्र की पीठ थपथपाते हुए इकथियांदर ने स्नेह से कहा।

अब अपनी ओर ध्यान देने की भी ज़रूरत थी। इकथियांदर जलमग्न सुरंग में से तैरता हुआ बाग़ में पहुंचा और अपने बंगले में दाख़िल हुआ।

इकथियांदर को ज़ख़्मी देखकर क्रिस्टो घबरा उठा।

"क्या हुआ?"

"जब मैं डालफ़ीन को बचा रहा था तो किसी मछुए ने मुझे ज़ख़्मी कर दिया।" लेकिन क्रिस्टो को यक़ीन नहीं आया।

"फिर शहर गये थे क्या, मेरे बग़ैर?" ज़ख़्म पर पट्टी बांधते हुए उसने सन्देहभरी आवाज़ में पूछा। इकथियांदर चुप रहा।

"अपने चोइंटों को थोड़ा उठा दो," क्रिस्टो ने कहा और इकथियांदर के कन्धे का एक भाग नंगा किया। उस पर एक लाल धब्बा था।

इसे देखकर क्रिस्टो और भी ज़्यादा घबरा उठा।

"क्या मछुओं ने तुम पर चप्पू मारा था?" उसने कन्धे को टटोलते हुए पूछा। लेकिन कोई गंभीर चोट नहीं आयी थी। धब्बा जन्म-चिन्ह सा लगता था।

"नहीं," इकथियांदर ने कहा।

इसके बाद युवक अपने कमरे में आराम करने चला गया

और बूढ़ा इण्डियन कुछ सोचने-विचारने के लिए बैठ गया। काफ़ी देर के बाद वह उठा और बाहर निकल गया।

क्रिस्टो शहर की तरफ़ रवाना हो गया। बाल्तासार की दूकान तक पहुंचा तो उसकी सांस फूल रही थी। उसने दूकान में क़दम रखा और काउण्टर के पीछे बैठी गुत्तिएरे को संदेह भरी नज़र से देखा।

"पिताजी घर पर हैं?"

"हां, अन्दर हैं," अपनी ठुड्डी से दूसरे कमरे की ओर इशारा करते हुए लड़की ने कहा।

क्रिस्टो बाल्तासार की प्रयोगशाला में चला गया और अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया।

उसका भाई अपनी सुराहियों के पीछे मोती साफ़ करने में व्यस्त था। पहली बार की ही तरह आज भी उसका मिज़ाज चिड़चिड़ा हो रहा था।

"तुम तो सब को पागल बनाकर छोड़ोगे," बाल्तासार ने बड़बड़ा कर कहा। "ज़ुरीता झींक रहा है कि तुम उस 'समुद्री दैत्य' को लाने में देरी कर रहे हो, गुत्तिएरे सारा-सारा दिन बाहर रहने लगी है और वह ज़ुरीता के बारे में सुनना तक नहीं चाहती। 'नहीं, नहीं' की रट लगाये रहती है। ज़ुरीता कहता है कि 'बहुत हो चुका, मैं इसे ज़बरदस्ती उठा ले जाऊंगा। थोड़ा रोयेगी, फिर सीधे रास्ते पर आ जायेगी'। उससे किसी भी बात की उम्मीद की जा सकती है।"

क्रिस्टो चुपचाप अपने भाई का शिकवा-शिकायत सुनता रहा।

"सुनो," उसने अन्त में कहा, "मैं इकथियांदर को अपने साथ नहीं ला सका क्योंकि वह मेरे साथ शहर नहीं आयेगा। पिछले कुछ दिन से वह भी गुत्तिएरे की तरह सारा-सारा दिन बाहर रहने लगा है। हाथ से निकल गया है। डाक्टर मुझ पर बहुत बिगड़ेगा कि मैंने उसका ठीक तरह से ख़्याल नहीं रखा।"

"इसका मतलब है कि हमें इकथियांदर को पकड़ने या चुराने में जल्दी करनी चाहिए, और साल्वातोर के लौटने से पहले तुम वहां से निकल आओ और..."

"ज़रा ठहरो, बाल्तासार। मेरी बात न काटो। सुनो। इकथियांदर के साथ हमें जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए।"

"क्यों?"

क्रिस्टो ने गहरी सांस ली मानो वह अपनी योजना को ज़बान पर लाने का निश्चय नहीं कर पा रहा था।

"तुम देखते हो कि..." उसने शुरू किया।

पर ऐन उसी वक़्त किसी ने दूकान में प्रवेश किया और ज़ुरीता की ऊंची आवाज़ सुनाई दी।

"लो," मुट्ठी भर मोतियों को हौज़ में डालते हुए बाल्तासार बड़बड़ाया। "फिर आ पहुंचा।"

ज़ुरीता ने धक्का देकर दरवाज़ा खोला और प्रयोगशाला के अन्दर घुस आया।

"दोनों भाई यहीं पर हैं। कब तक तुम मुझे बेवकूफ़ बनाते रहोगे?" बाल्तासार से क्रिस्टो की ओर देखते हुए उसने कहा।

"जो मैं कर सकता हूं, कर रहा हूं," क्रिस्टो ने उठकर विनम्रता से मुस्कराते हुए कहा। "धीरज रखिये। 'समुद्री दैत्य' कोई साधारण मछली नहीं है। आप उसे गिर्दाब से सीधा नहीं पकड़ सकते। मैं उसे एक बार शहर ले आया था, तब आप यहां नहीं थे, उसने शहर देखा, पर उसे रुचा नहीं और अब वह यहां नहीं आना चाहता।"

"नहीं आना चाहता, तो आने की ज़रूरत भी नहीं है, मैं और इन्तज़ार नहीं कर सकता। इस हफ़्ते में मैंने दो काम एक साथ करने का फ़ैसला किया है। साल्वातोर अभी तक नहीं लौटा?"

"अब किसी दिन भी आ सकता है।"

"इसका मतलब है जल्दी करनी होगी। शीघ्र ही तुम्हारे यहां मेहमान आयेंगे, क्रिस्टो। मैंने विश्वसनीय आदमी चुन

लिये हैं। तुम हमें दरवाज़ा खोल देना। बाक़ी सारा इन्तज़ाम मैं कर लूंगा। जब सब काम तैयार हो जायेगा तो मैं बाल्तासार को ख़बर कर दूंगा।" और फिर बाल्तासार को सम्बोधन करके बोला, "तुम्हारे साथ मैं कल फिर एक बार बात करूंगा। पर याद रखो, यह हमारी आख़िरी बातचीत होगी।"

दोनों भाइयों ने चुपचाप सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया। लेकिन ज्यों ही ज़ुरीता ने पीठ फेरी उनके चेहरों पर से विनम्र मुस्कानें ग़ायब हो गयीं। बाल्तासार ने गाली दी। क्रिस्टो कुछ सोचता जान पड़ा।

बाहर दूकान में ज़ुरीता धीमी आवाज़ में गुत्तिएरे से कुछ कह रहा था।

"नहीं!" दोनों भाइयों ने लड़की को जवाब देते सुना।

बाल्तासार ने दुःखी होकर सिर हिला दिया।

"अरे क्रिस्टो," ज़ुरीता ने पुकारा, "मेरे साथ चलो, आज मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी।"

अप्रिय मुलाक़ात

इकथियांदर की तबीयत बहुत ख़राब थी। ज़ख़्म अभी भी दुखता था। उसे बुख़ार भी था। हवा में सांस लेने में उसे कठिनाई होती थी।

पर इन सभी बातों के बावजूद वह सुबह गुत्तिएरे से मिलने के लिए तट पर, चट्टान के पास गया। गुत्तिएरे दोपहर में आयी जब बेहद तपिश थी। गर्म हवा और धूल के नन्हे सफ़ेद ज़र्रों के कारण इकथियांदर सांस नहीं ले पा रहा था। वह चाहता था कि गुत्तिएरे उसके पास समुद्र-तट पर बनी रहे, लेकिन वह जल्दी में थी, शहर लौटना चाहती थी।

"पिताजी काम पर बाहर जा रहे हैं, वह चाहते हैं कि मैं दूकान में ठहरूं," गुत्तिएरे ने कहा।

"तो चलो, मैं तुम्हें पहुंचा आता हूं," इकथियांदर ने कहा और दोनों तपती हुई धूल भरी सड़क पर शहर की ओर जाने लगे।

ओलसन सिर झुकाये उनकी ओर चला आ रहा था। प्रकटत: अपनी किसी उधेड़-बुन में खोया हुआ वह ऐन उनके सामने आ गया, और अगर लड़की उसे बुलाती नहीं तो वह उनके पास से निकल जाता।

"मुझे उससे कुछ कहना है," गुत्तिएरे ने इकथियांदर से कहा और ओलसन से जा मिली। दोनों जल्दी-जल्दी दबी ज़बान में बातें करते रहे। लगता था जैसे लड़की उसे किसी बात के लिए मनाने की कोशिश कर रही है।

इकथियांदर कुछेक क़दम दूर खड़ा इन्तज़ार कर रहा था।

"अच्छी बात है, आधी रात के क़रीब मिलेंगे," उसे ओलसन की आवाज़ सुनाई दी। ओलसन ने लड़की से हाथ मिलाया और जल्दी ही वहां से चला गया।

जब गुत्तिएरे इकथियांदर के पास लौटकर आयी तो इकथियांदर का चेहरा तमतमा रहा था। वह ओलसन के बारे में गुत्तिएरे से बात करना चाहता था, लेकिन उसे शब्द नहीं सूझ रहे थे।

"मैं बरदाश्त नहीं कर सकता," उसने हांफते हुए शुरू किया, "मैं जानना चाहता हूं... ओलसन... तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो... आज रात तुम उससे मिलने जा रही हो, नहीं क्या? क्या तुम उससे प्रेम करती हो?"

गुत्तिएरे ने इकथियांदर का हाथ अपने हाथ में लिया और बड़े कोमल भाव से उसकी ओर देखा।

"क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास है?" गुत्तिएरे ने कहा।

"हां... मैं तुमसे प्रेम करता हूं," आख़िर उसे शब्द मिल गया, "पर मैं... पर मैं बहुत दुखी हूं..."

और सचमुच वह दुखी था। वह दुखी था अनिश्चितता के कारण और इस कारण कि असह्य दर्द उसकी कमर में उठ रहा था। वह सांस लेने के लिए छटपटा रहा था। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था।

"तुम बहुत बीमार जान पड़ते हो," लड़की ने चिन्तित स्वर में कहा। "अपना ख़्याल रखो, मैं तुमसे आग्रह करती हूं। मैं तुम्हें सभी बातें नहीं बताना चाहती थी, लेकिन तुम्हारी दिलजमई करने के लिए बता दूंगी। सुनो।"

घोड़े पर सवार एक आदमी तेज़ी से उधर से गुज़रा, फिर घोड़ा मोड़कर सीधा युवक और युवती के पास आया। इकथियांदर ने आंख उठाकर देखा। यह सांवले रंग का अधेड़ उम्र का आदमी था, उसकी घनी मूंछें और बकर-दाढ़ी थी।

इकथियांदर को यक़ीन था कि उसने इस आदमी को कभी कहीं देखा है। शहर में? नहीं। हां, उस दिन तट पर देखा था!

घुड़सवार चाबुक से अपने चमकते बूटों को ठकोर रहा था, उसने सन्देह भरी नज़र से इकथियांदर की ओर देखा और फिर अपना हाथ गुत्तिएरे की ओर बढ़ा दिया।

गुत्तिएरे का हाथ अपने हाथ में लेकर उसने उसे चूमने के लिए सहसा ऊपर उठाया।

"पकड़ लिया!" उसने कहकहा लगाकर कहा और ग़ुस्से से बौखलाती गुत्तिएरे का हाथ छोड़कर उसी तरह मज़ाक़ और चिढ़ाने के से लहजे में बोला: "क्या यह मुनासिब बात है कि दुलहन शादी से एक दिन पहले किसी दूसरे छोकरे के साथ घूमती फिरे?"

ग़ुस्से से गुत्तिएरे का चेहरा तमतमा उठा, लेकिन घुड़सवार ने उसे बोलने का मौक़ा नहीं दिया।

"तुम्हारा बाप तुम्हारी राह देख रहा है। मैं घण्टे भर में वहां पहुंच जाऊंगा।"

इकथियांदर ने अन्तिम शब्द नहीं सुने। सहसा उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छा गया। उसका गला रुंधने लगा, उसकी सांस की गति लगभग रुक चली। उसे महसूस हुआ जैसे वह और ज़्यादा देर ज़मीन पर नहीं ठहर सकता।

"तो तुम... मुझे धोखा दे रही थीं," किसी तरह वह ये शब्द मुंह से निकाल पाया। उसके होंठ नीले पड़ गये थे। वह बोलना चाहता था, अपना ग़ुस्सा निकालना चाहता था, सारी सच्चाई को जानना चाहता था, लेकिन उसके पार्श्वों में उठता हुआ दर्द उसके लिए इतना असह्य हो उठा कि उसे लगा जैसे वह बेहोश होकर गिर पड़ेगा।

आखिर इकथियांदर समुद्र की ओर भाग खड़ा हुआ और चट्टान की चोटी पर से पानी में कूद गया।

गुत्तिएरे चिल्ला उठी और सिर से पांव तक कांप उठी। फिर वह भागती हुई पेद्रो ज़ुरीता के पास गयी।

"जल्दी करो, उसे बचाओ!"

लेकिन ज़ुरीता अपनी जगह से हिला तक नहीं।

"अगर कोई आदमी डूबना चाहता हो तो उसके काम में दख़ल देने की मुझे आदत नहीं है," उसने कहा।

गुत्तिएरे भागती हुई समुद्र की ओर गयी। लगता था जैसे वह स्वयं भी समुद्र में कूद जाना चाहती है। ज़ुरीता ने घोड़े को एड़ लगायी और लड़की के पास पहुंचकर उसे कन्धों से पकड़ा और उठाकर ज़ीन पर बिठा दिया और घोड़ा दौड़ाता हुआ सड़क पर जाने लगा।

"अगर कोई मेरी बातों में दख़ल न दे तो मैं भी उसके मामलों में दख़ल नहीं देता, ऐसी मेरी आदत है, यही बेहतर तरीक़ा है। अक्ल से काम लो, गुत्तिएरे!"

गुत्तिएरे के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। वह बेहोश हो गयी थी। अपने पिता की दूकान के पास पहुंचने पर उसे होश आया।

"वह छोकरा कौन था?" पेद्रो ने पूछा।

गुत्तिएरे ने ज़ुरीता की ओर नफ़रत से देखा।

"छोड़ दो मुझे," उसने कहा।

ज़ुरीता के माथे पर बल पड़ गये। "शायद इस मामले की तह में अब कुछ भी नहीं है," उसने सोचा। "और फिर गुत्तिएरे के नायक ने समुद्र में छलांग लगा दी है।

इससे बेहतर क्या हो सकता था।" दूकान की ओर मुंह करके ज़ुरीता चिल्लाया:

"अरे, बाल्तासार!"

बाल्तासार भागकर बाहर आया।

"लो, संभालो अपनी बेटी को और मेरा शुक्रिया अदा करो कि तुम उसे ज़िन्दा देख रहे हो। मैंने उसकी जान बचायी है—यह तो एक ख़ूबसूरत से जवान के पीछे समुद्र में कूदने जा रही थी। यह दूसरी बार है जो मैंने तुम्हारी बेटी की जान बचायी है, लेकिन वह अभी भी मुझसे शर्माती है। पर मैं इस झेंप-झिझक को जल्दी ही ख़त्म कर दूंगा," उसने कहकहा लगाकर कहा। "एक घण्टे तक लौट आऊंगा। अपना वायदा याद रखना!"

बाल्तासार ने ख़ुशामदियों की तरह झुककर पेद्रो से अपनी बेटी को ले लिया। ज़ुरीता ने घोड़े को एड़ लगायी और वहां से चला गया।

बाप और बेटी दूकान में दाख़िल हुए। गुत्तिएरे एक स्टूल पर लुढ़क गयी। और उसने दोनों हाथों से मुंह ढांप लिया।

बाल्तासार ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और दूकान में इधर से उधर चलते हुए बड़ी उत्तेजना और गर्मजोशी से बोलने लगा। लेकिन कोई भी उसकी बात पर कान नहीं दे रहा था मानो वह तख़्तों पर रखे सूखे केकड़ों और मछलियों को सम्बोधन कर रहा हो।

"समुद्र में कूद गया है, बेचारा," गुत्तिएरे सोच रही थी; इकथियांदर का चेहरा उसकी आंखों के सामने तैर रहा था। "पहले ओलसन और उसके बाद ज़ुरीता। मुझे दुलहन कहकर बुलाने की उसकी हिम्मत कैसे हुई। सब चौपट हो गया..."

गुत्तिएरे रो दी। इकथियांदर पर उसे तरस आ रहा था। सरल स्वभाव और शर्मीला, वह अपनी ही तरह का युवक था, उन छिछोरे और गुस्ताख़ लड़कों से किसी बात में भी मेल नहीं खाता था, जिन्हें गुत्तिएरे ने शहर में देखा था।

"अब मैं क्या करूं," वह सोचने लगी। "इकथियांदर की ही तरह समुद्र में कूद जाऊं? अपने को ख़त्म कर दूं?"

बाल्तासार कहे चला जा रहा था:

"तुम इसका मतलब समझती हो, गुत्तिएरे? इसका मतलब है बर्बादी। दूकान की हर चीज़ ज़ुरीता की मिल्कियत है। इसका दसवां हिस्सा भी मेरा अपना नहीं है। सभी मोती मैं ज़ुरीता से कमीशन पर लेता हूं। अगर अब की बार भी तुमने इनकार कर दिया तो वह अपना सारा माल उठा कर ले जायेगा और आगे से मेरे साथ व्यापार नहीं करेगा। और इसका मतलब है बर्बादी! निपट बर्बादी! कुछ तो अपने बूढ़े बाप पर तरस खाओ!"

"कहिये, आगे कहिये, यह क्यों नहीं कहते 'उसके साथ शादी कर लो'। लेकिन मैं नहीं करूंगी!" गुत्तिएरे ने तीखी आवाज़ में कहा।

"जाओ भाड़ में!" गुस्से से बौखलाते हुए बाल्तासार चिल्लाया, "अगर यह बात है तो... ज़ुरीता ख़ुद तुम्हें शादी करने पर मजबूर कर देगा!" और बूढ़ा इण्डियन तड़ाक से अपने पीछे दरवाज़ा बन्द करते हुए अपनी प्रयोगशाला में चला गया।

अठबहियों से लड़ाई

एक बार समुद्र में पहुंच जाने पर इकथियांदर उन सभी मुसीबतों को भूल गया, जो उस दिन ज़मीन पर उसे पेश आयी थीं। तपिश और धूल भरी ज़मीन के बाद शीतल जल और भी अधिक ताज़गी और आराम देनेवाला था। तीखा दर्द उठना बन्द हो गया। उसकी सांस की गति फिर से गहरी और सन्तुलित हो गयी। अब वह चाहता था कि आराम करे और वह सब कुछ भूल जाये जो ज़मीन पर हुआ था।

लेकिन इकथियांदर चपल वृत्ति का युवक था। निकम्मा बैठे रहने से उसे भूलने में मदद नहीं मिल सकती थी। वह सोचने लगा कि क्या करे। अन्धेरी रातों को उसे ऊंची चट्टान पर से समुद्र में ग़ोता लगाने में मज़ा आता था, इतना गहरा कि समुद्र के तल को छू ले। लेकिन अभी दोपहर का वक़्त था और सिर के ऊपर, पानी की सतह

10 1536

पर मछलियां पकड़नेवाले नावों के काले तले इधर से उधर आ जा रहे थे।

"मैं जान गया हूं मैं क्या करूंगा। मैं गुफ़ा को ठीक-ठाक करूंगा," इकथियांदर ने मन ही मन कहा।

खाड़ी की एक सीधी-सतर चट्टान में बड़ी-सी मेहराबवाली एक गुफ़ा थी, जहां से महासागर की गहराइयों में धीरे धीरे उतरती हुई जलमग्न घाटी का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखता था। मुद्दत से इकथियांदर को यह गुफ़ा प्यारी लगती थी। लेकिन उसमें बसने से पहले गुफ़ा के वैध निवासियों—अठबहियों के बहुसंख्यक परिवारों—को उसमें से निकालने की ज़रूरत थी।

अपने लम्बे और कुछ कुछ ख़मदार चाक़ू से लैस और चश्मा लगाकर वह तैरता हुआ गुफ़ा तक जा पहुंचा। लेकिन अन्दर जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई, वह उसके प्रवेश-द्वार पर ही रुक गया। फिर उसने सोचा कि वह दुश्मन को चिढ़ाकर बाहर निकालेगा। उसे याद आया: पहले यहां आने पर उसने निकट ही एक डूबी हुई किश्ती के पास एक लम्बी-सी बर्छी पड़ी देखी थी। वह उसे ढूंढ़कर उठा लाया और गुफ़ा के मुंह पर खड़ा होकर उसे गुफ़ा में भोंकने लगा। अठबहिये जाग गये और इस अनधिकार चेष्टा पर क्रुद्ध हो उठे। मेहराब में उनके रेंगते हुए स्पर्श-सींग प्रगट हुए। बड़ी सावधानी से वे बर्छी के पास जाते, लेकिन पेश्तर इसके कि वे उसे पकड़ पाते इकथियांदर बर्छी को खींच लेता। कुछ मिनटों तक यह खेल चलता रहा, जब दर्जनों की संख्या में स्पर्श-सींग मेदूसा गोर्गोन* के सर्पिल बालों की तरह मेहराब में झूमने और ऐंठने लगे। अन्त में एक वृहदाकार बूढ़े अठबहिये ने,

---

* मेदूसा गोर्गोन—यूनानी पौरानिक कहानियों में एक जीव, जिसके बालों से सांप लिपटे रहते थे।—ले०

जिसका धैर्य टूट चुका था, गुस्ताख़ दख़लन्दाज़ को सबक़ सिखाने का निश्चय किया। अठबहिया दरार में से रेंगकर बाहर निकला और अपने स्पर्श-सींग हिलाता धीरे-धीरे रंग बदलता हुआ दुश्मन की ओर आने लगा। इकथियांदर तैरकर एक तरफ़ हट गया, बर्छी फेंक दी और लड़ाई के लिए तैयार हो गया। इकथियांदर अनुभव से भली भांति जानता था कि दो बाहोंवाला आदमी, लम्बे-लम्बे और शक्तिशाली आठ स्पर्श-सींगोंवाले अठबहिये का मुक़ाबला केवल उसी सूरत में कर सकता है, जब वह सीधा उसके धड़ पर हमला करे। वरना जब तक वह उसके एक सींग को काटेगा, तब तक बाक़ी सात सींग उसे जकड़ लेंगे। उसने अठबहिये को काफ़ी नज़दीक आने दिया, फिर सहसा आगे बढ़कर स्पर्श-सींगों के जाल के ऐन बीच में, जन्तु की तोते की सी चोंच के पास जा पहुंचा।

इससे अठबहिया हमेशा हड़बड़ा जाता है। और सदा की ही भांति इस अठबहिये को भी अपने स्पर्श-सींगों के सिरे निकालने में कम से कम चार सेकण्ड लग गये। पर उस वक़्त तक इकथियांदर ने तेज़ी से अचूक वार कर के जन्तु के धड़ के दो टुकड़े कर दिये थे और उसकी गतिदायिनी नसों को काट डाला। उसके दिल की धड़कन बंद हो गयी। और बड़े-बड़े स्पर्श-सींग, जो इकथियांदर को चारों ओर से घेरे हुए थे, निस्पन्द होकर नीचे गिर गये।

"यह रहा पहला।"

उसने बर्छी को फिर उठा लिया। अब की बार दो अठबहिये तैरकर बाहर आये। उनमें से एक सीधा इकथियांदर पर हमला करने के लिए लपका, जबकि दूसरे ने कन्नी काटकर पीछे से हमला करने की कोशिश की। स्थिति ज़्यादा ख़तरनाक हो रही थी। निर्भीकता से इकथियांदर ने सामनेवाले अठबहिये पर हमला कर दिया, लेकिन अभी वह उसका काम तमाम नहीं कर पाया था कि दूसरे ने इकथियांदर के गले को अपने स्पर्श-सींग की लपेट

में ले लिया। युवक ने जल्दी से उसे अपने गले पर ही काट डाला, फिर घूमकर अठबहिये के अन्य स्पर्श-सींग काटने लगा। आख़िर जब कटा-फटा अठबहिया धीरे धीरे समुद्र-तल पर गिर रहा था तो इकथियांदर ने लौटकर पहले का ख़ात्मा कर दिया।

"तीन," इकथियांदर ने गिनकर कहा।

पर अब कुछ देर के लिए उसे पीछे हटना पड़ा। गुफ़ा में से अठबहियों का दल बाहर निकल रहा था, जो ख़ून से रंगे पानी में स्पष्टत: दिखायी नहीं दे रहा था। इस भूरे धुन्धले कुहासे में उसके लिए अठबहियों का मुक़ाबला कर पाना मुश्किल था, क्योंकि अठबहिये उसे स्पर्श द्वारा बड़ी आसानी से ढूंढ़ सकते थे। वह थोड़ी दूर तक तैरता हुआ चला गया, जहां पानी साफ़ था, और वहां चौथे अठबहिये का काम तमाम कर दिया, जो बेवकूफ़ी से उस रक्तरंजित बादल में से बाहर निकलने का दु:साहस कर बैठा था।

इस तरह मध्यान्तरों के साथ लड़ाई कई घण्टों तक चलती रही।

अन्त में जब आखिरी अठबहिया मार डाला गया और पानी फिर से साफ़ हो गया तो इकथियांदर ने देखा कि तल पर बहुत-से अठबहिये मरे पड़े हैं और कटे हुए स्पर्श-सींग अभी भी उस के चारों ओर ऐंठ रहे हैं। फिर उसने गुफ़ा में प्रवेश किया। कुछेक छोटे छोटे अठबहिये अभी भी वहां पर बने हुए थे—आकार में मुट्ठी भर, उनके स्पर्श-सींग मोटाई में उसकी उंगली जितने रहे होंगे। इकथियांदर उनका भी सफ़ाया कर देना चाहता था, लेकिन उसे उन पर रहम आ गया। "मैं इन्हें सधाने की कोशिश करूंगा," उसने सोचा। "इस जगह के लिए इनसे बेहतर चौकीदार नहीं मिलेंगे।"

चौकीदारी का सवाल हल कर चुकने के बाद इकथियांदर अपने नये निवास-स्थान को फ़र्नीचर से सजाने में लग गया।

अपने बंगले में से वह संगमर्मर के फलकवाली एक मेज़ उठा लाया, ज़िस की टांगें लोहे की बनी थीं। साथ ही दो चीनी फूलदान भी ले आया। उसने मेज़ को गुफ़ा के बीचोंबीच रख दिया, उस पर फूलदान रखे, उनमें मिट्टी भर दी और कुछेक समुद्री फूल उनमें लगा दिये। कुछ मिट्टी बह गयी और कुछ देर तक धुएं की दो शिखाओं के रूप में पानी में उठती रही, फिर पानी साफ़ हो गया। केवल फूल हौले-हौले झूलते रहे मानो हल्के-हल्के हवा के झोंके उन्हें हिला रहे हों।

गुफ़ा की एक दीवार में थोड़ा-सा बढ़ाव था, एक तरह का क़ुदरती पत्थर का बेंच बना हुआ था। गुफ़ा का नया स्वामी उस पर लेट गया और अपनी मेहनत के फल को प्रशंसा की दृष्टि से देखने लगा। पानी के नीचे पत्थर का बेंच भी काफ़ी नर्म महसूस हो रहा था।

बड़ा विचित्र था यह जलमग्न कमरा, जिसमें एक मेज़ और उस पर दो चीनी फूलदान रखे थे। गृह-प्रवेश के अनोखे उत्सव को देखने बहुत सी कुतूहली मछलियां आ पहुंचीं। मेज़ की टांगों के बीच से वे भागती हुई जातीं, फूलदानों में रखे फूलों की ओर तैर कर जातीं, मानो उनकी महक लेना चाहती हों, यहां तक कि इकथियांदर के सिर और उस बाज़ू के बीच में से निकल जातीं, जो उसने सिर के नीचे रखी थी। चौड़े सिरवाली मार्ब्ल-बुलहैड मछली ने प्रवेशस्थल से अन्दर झांककर देखा, घबराकर पूंछ हिलायी और वहां से चली गयी। एक बड़ा-सा केकड़ा सफ़ेद बालू पर रेंगता हुआ अन्दर आया, अपना एक पंजा ऊपर उठाया और फिर नीचा किया, मानो घर के मालिक का अभिवादन कर रहा हो, और फिर मेज़ के नीचे जमकर बैठ गया।

इस खेल में इकथियांदर को मज़ा आ रहा था। लेटे-लेटे अपने घर को सजाने-संवारने के लिए वह अन्य चीज़ों के बारे में सोचने लगा। "प्रवेश पर मैं सब से सुन्दर

समुद्री फूल लगाऊंगा। फ़र्श को मैं मोतियों से ढक दूंगा और दीवारों के नीचे सीप रखूंगा। काश, गुत्तिएरे मेरा समुद्री कमरा देख पाती। लेकिन वह मुझे धोखा दे रही है। क्या सचमुच धोखा दे रही है? आख़िर वह मुझे ओलसन के बारे में कुछ बताना चाहती थी, लेकिन उसे मौक़ा नहीं मिला।" इकथियांदर के माथे पर बल पड़ गये। वह अभी काम ख़त्म ही कर पाया था कि फिर से उसे महसूस होने लगा कि वह अकेला है, और लोगों से भिन्न है। "लोग मेरी तरह पानी के नीचे क्यों नहीं रह सकते?" वह सोचने लगा। "मैं कितना अकेला हूं। चाहता हूं पिताजी जल्दी लौट आये। मैं उनसे पूछूंगा..."

वह अपना नया घर किसी को दिखाना चाहता था। किसी को भी। सहसा उसे लीडिंग की याद आयी।

इकथियांदर ने अपना घुमावदार शंख उठाया और सतह पर जा कर उसे बजाया। शीघ्र ही उसे मछली की सुपरिचित सुड़सुड़ाहट सुनाई दी।

जब डालफ़िन आयी तो इकथियांदर ने उसे गले लगा लिया।

"चलो मेरे साथ, लीडिंग," उसने कहा, "मैं तुम्हें अपना नया घर दिखाऊंगा। तुमने पहले कभी भी कोई मेज़ या चीनी फूलदान नहीं देखा होगा।" फिर डालफ़िन को पीछे-पीछे आने का हुक्म देकर उसने ग़ोता लगा दिया।

लेकिन डालफ़िन परेशान करनेवाला मेहमान साबित हुई। बड़ी और बेडौल, उसने गुफ़ा में ऐसी खलबली मचायी कि फूलदान लड़खड़ाने लगे और गिरते-गिरते बचे। फिर उसने अपना थूथना मेज़ की एक टांग के साथ रगड़ दिया, जिससे मेज़ उलट गयी और फूलदान फ़र्श पर आ गिरे। अगर सूखी ज़मीन पर गिरते तो फ़ौरन चूर-चूर हो जाते, यहां कुछ भी नहीं हुआ, केवल केकड़ा डरकर तेज़ी से बाहर निकल गया।

"तुम कितनी बेढब हो," मेज़ को गुफ़ा में पीछे की

ओर धकेलते हुए इकथियांदर ने कहा और फूलदानों को उठा लिया।

फिर वह डालफ़िन के पास गया और दोनों बांहें उसके गले में डाल दीं।

"तुम यहीं मेरे पास रहो, लीडिंग," उसने कहा।

पर शीघ्र ही डालफ़िन सिर हिलाने लगी और बेचैनी के अन्य लक्षण प्रगट करने लगी। वह एक ही वक़्त ज़्यादा देर के लिए पानी के नीचे नहीं रह सकती थी। उसे हवा की ज़रूरत थी। इसलिए अपने परों के एक ही ज़बरदस्त झटके के साथ वह तैरती हुई बाहर निकली और सीधी सतह पर चली गयी।

इकथियांदर फिर अकेला रह गया। "लीडिंग भी मेरे साथ पानी के नीचे नहीं रह सकती," उसने उदास होकर सोचा। "केवल मछलियां ही रह सकती हैं, लेकिन वे मूढ़ और डरपोक होती हैं।"

वह फिर अपने पत्थर के कोच पर लेटा रहा। सूरज डूब चुका था, गुफ़ा में अन्धेरा था। पानी की हल्की-हल्की लहरें इकथियांदर को थपक-थपककर सुलाने लगीं।

शीघ्र ही दिन भर की उत्तेजना और काम से थककर इकथियांदर ऊंघने लगा।

नया मित्र

ओलसन एक बड़ी-सी नाव पर खड़ा डंडहरे पर से झुका हुआ पानी में देख रहा था। सूरज अभी अभी निकला था और उसकी तिरछी किरणें नील-वर्ण सर्चलाइटों की तरह छिछली खाड़ी को तल तक बेध रही थीं। तल के सफ़ेद बालू पर कुछेक इण्डियन रेंग रहे थे। किसी-किसी वक़्त वे सतह पर गहरी सांस लेने के लिए आते और फिर पानी में ग़ोता लगा जाते। ओलसन उन पर नज़र रखे हुए था। सुबह का वक़्त था, फिर भी तपिश बहुत थी। शीघ्र ही उसका मन नहाने को हुआ। उसने झट से कपड़े उतारे और पानी में कूद गया। ओलसन ने कभी भी ग़ोता नहीं लगाया था, पर शीघ्र ही उसने देखा कि वह पानी के नीचे पेशेवर ग़ोताख़ोरों से ज़्यादा देर तक रह सकता था। इसलिए वह भी ग़ोताख़ोरों के साथ शामिल हो गया। एक ऐसे काम में जो उसके लिए नया था, उसे बहुत मज़ा आने लगा।

तीसरी बार तल पर पहुंचने पर ओलसन ने देखा कि दो इण्डियन, जो साथ-साथ काम कर रहे थे, सहसा उछल पड़े और बेतहाशा तैरते हुए सतह पर आये, मानो शार्क-मछलियों या सा-फ़िश का कोई झुण्ड उनका पीछा कर रहा हो। ओलसन ने मुड़कर देखा। मेंढ़क की तरह तेज़ी से हाथ उचका-उचकाकर आगे को बढ़ता हुआ, चांदी से झिलमिलाते चोइंटोंवाला कोई अनोखा-सा जीव, आधा आदमी आधा मेंढ़क, जिसकी आंखें बड़ी-बड़ी और बाहर को निकली हुई थीं और पंजे झिल्लीदार थे, उसकी ओर बढ़ता चला आ रहा था।

ओलसन अभी खड़ा भी न हो पाया था कि वह दैत्य उसके पास पहुंच गया और मेंढ़क जैसे अपने पंजे से ओलसन का बाज़ू पकड़ लिया। ओलसन बेहद डर गया, लेकिन उसने देखा कि उस जीव का चेहरा सुन्दर और इनसानों का सा था, केवल फूली हुई चमकती आंखें उसे बिगाड़ रही थीं। वह अनोखा जीव प्रकटत: यह भूलकर कि वह पानी के नीचे था ओलसन के साथ बातें करने लगा। ओलसन को एक शब्द भी सुनाई नहीं पड़ा। उसे केवल होंठ हिलते दिखाई दिये। अपने अगले दो पंजों से वह जीव ओलसन की बांह को कसकर पकड़े हुए था। ओलसन पैरों से तल को झटककर उस बाज़ू को चलाता हुआ, जो स्वच्छन्द थी, ऊपर को उठा। दैत्य ने उसकी बांह को नहीं छोड़ा और उसके पीछे-पीछे चला आया। सतह पर पहुंचने पर ओलसन ने नाव का पहलू पकड़ लिया, टांग ऊपर रखी, फिर कठिनाई से नाव पर चढ़ आया, और मेंढ़क के से पंजोंवाले इस अर्द्ध-मानव को धक्का देकर पानी में फेंक दिया। पानी में ज़ोर का छपाका हुआ। नाव पर के इण्डियन पानी में कूद गये थे और दम साधे तट की ओर तैरते जा रहे थे।

इकथियांदर तैरता हुआ फिर नाव के पास आ गया।

"सुनो, ओलसन," उसने स्पेनी भाषा में कहा, "मैं

तुम्हारे साथ गुत्तिएरे के बारे में बात करना चाहता हूं।"

इस सम्बोधन ने ओलसन को उतने ही अचम्भे में डाल दिया, जितना पानी के नीचे इस मुलाक़ात ने डाला था। लेकिन ओलसन साहसी व्यक्ति था और समझदार था। अगर वह जीव उसके नाम से परिचित है और गुत्तिएरे को जानता है तो इसका मतलब है कि वह इनसान है, दैत्य नहीं।

"कहो, क्या कहना चाहते हो," उसने कहा।

इकथियांदर नाव पर चढ़ गया, नाव के सामने वाले भाग में पालथी मारकर बैठ गया और पंजे छाती पर आड़े रख लिये।

अजनबी के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए ओलसन ने सोचा कि उसने आंखों पर मोटा चश्मा लगा रखा है।

"मेरा नाम इकथियांदर है, मैं एक बार तुम्हारे लिए समुद्र के तल पर से मोतियों का हार निकाल लाया था।"

"पर उस वक़्त तुम्हारी आंखें और हाथ इनसानों जैसे थे।"

इकथियांदर मुस्कराया और अपने मेंढ़कों के से पंजे हिलाये।

"दस्ताने हैं," उसने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"मैंने भी यही सोचा था।"

तट पर चट्टानों के पीछे से इण्डियन झांक-झांककर उन्हें बातें करते हुए देख रहे थे, हालांकि उनके कानों में एक भी शब्द नहीं पड़ रहा था।

"क्या तुम गुत्तिएरे से प्रेम करते हो?" कुछ देर के बाद इकथियांदर ने पूछा।

"हां," ओलसन ने सीधा-सा जवाब दिया।

इकथियांदर ने गहरी सांस ली।

"क्या वह भी तुमसे प्रेम करती है?"

"हां, वह भी मुझसे प्रेम करती है।"

"पर वह तो मुझसे प्रेम करती।"

"यह उसका काम है, वह जाने," ओलसन ने कन्धे बिचका दिये।

"क्या मतलब? वह तो तुम्हारी दुलहन है।"

ओलसन के चेहरे पर आश्चर्य का भाव आया, लेकिन उसने पहले-सी स्थिरता के साथ जवाब दिया:

"नहीं, वह मेरी दुलहन नहीं है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो!" इकथियांदर भड़क उठा। "मैंने खुद एक सांवले आदमी को, जो घोड़े पर सवार था, उसे दुलहन कहकर पुकारते सुना था।"

"मेरी दुलहन?"

इकथियांदर घबरा गया। नहीं, सांवले आदमी ने यह नहीं कहा था कि वह ओलसन की दुलहन थी। पर गुत्तिएरे जैसी जवान लड़की उस बदसूरत बूढ़े की दुलहन तो नहीं हो सकती थी? निश्चय ही ऐसा नहीं हो सकता था। वह सांवला आदमी ज़रूर गुत्तिएरे का रिश्तेदार रहा होगा। इकथियांदर ने दूसरे ढंग से पूछताछ करने का निश्चय किया।

"तुम यहां क्या कर रहे थे? मोती खोज रहे थे क्या?"

"मुझे तुम्हारे सवाल पसन्द नहीं हैं," ओलसन ने भौंहें चढ़ाकर कहा, "अगर गुत्तिएरे ने तुम्हारे बारे में मुझे कुछ न बताया होता तो मैं तुम्हें नाव में से उठाकर पानी में फेंक देता। अपना हाथ चाकू से दूर रखो। तुम्हारा हाथ उठने से पहले ही मैं चप्पू से तुम्हारा सिर फोड़ सकता हूं। लेकिन मुझे तुमसे यह छिपाने की ज़रूरत नहीं है कि मैं सचमुच यहां मोती ही खोज रहा था।"

"क्या वह बड़ा-सा मोती जिसे मैंने समुद्र में फेंका था?"

ओलसन ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

इकथियांदर को यह सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

"देखा, मैंने गुत्तिएरे से कहा था कि ओलसन इनकार नहीं करेगा। मैंने उससे कहा था कि तुम ले लो और

ओलसन को दे देना। उसने साफ़ इनकार कर दिया, और अब तुम उसे खोज रहे हो।"

"इसलिये कि इस वक़्त वह समुद्र की मिल्कियत है, तुम्हारी नहीं। अगर मुझे मिल गया तो मुझ पर किसी का एहसान नहीं होगा।"

"क्या तुम्हें मोती इतने ही ज़्यादा प्यारे लगते हैं?"

"मैं औरत नहीं हूं कि टूम-छल्लों से प्यार करूं," ओलसन ने प्रत्युत्तर दिया।

"लेकिन तुम उसे—क्या कहते हैं—हां, तुम उसे बेच सकते हो, और उसके लिए बहुत सा धन प्राप्त कर सकते हो।"

ओलसन ने फिर स्वीकृति में सिर हिलाया।

"क्या तुम्हें धन से प्रेम है?"

"तुम्हें मुझसे क्या चाहिये?" ओलसन ने गुस्से से पूछा।

"मैं यह जानना चाहता हूं कि गुत्तिएरे ने तुम्हें मोतियों का हार क्यों दिया था? तुम तो उससे शादी करना चाहते थे न?"

"नहीं, मैं गुत्तिएरे से शादी करने नहीं जा रहा था," ओलसन ने कहा, "अगर करने जा भी रहा था, तो अब उसके बारे में सोचने का कोई लाभ नहीं। उसकी शादी हो चुकी है।"

इकथियांदर का चेहरा पीला पड़ गया, उसने ओलसन का हाथ पकड़ लिया।

"उस सांवले आदमी के साथ तो नहीं?" उसने भयाकुल होकर पूछा।

"हां, उसी के साथ, पेद्रो ज़ुरीता के साथ।"

"पर गुत्तिएरे... मैं तो सोचता था गुत्तिएरे मुझसे प्रेम करती है," इकथियांदर ने धीमे-से कहा।

ओलसन ने उसकी ओर सहानुभूतिपूर्ण आंखों से देखा और अपना छोटा-सा पाइप सुलगाया।

"हां, मैं सोचता हूं वह तुमसे प्रेम करती थी। पर तुमने

उसकी आंखों के सामने समुद्र में छलांग लगा दी और डूब गये—कम से कम गुत्तिएरे ने ऐसा ही समझा था।"

इकथियांदर हैरान होकर ओलसन की ओर देखने लगा। यह सच है, उसने गुत्तिएरे को यह कभी नहीं बताया था कि वह पानी के नीचे रह सकता है। लेकिन उसे यह सूझा तक न था कि समुद्र में छलांग लगाने को गुत्तिएरे आत्म-हत्या समझ बैठेगी।

"कल रात मैं उससे मिला था," ओलसन ने कहा। "तुम्हारी मौत से वह बहुत ज़्यादा व्याकुल हुई है। 'इकथियांदर की मौत के लिए मैं दोषी हूं,' वह कह रही थी।"

"पर इतनी जल्दी उसने दूसरे आदमी के साथ शादी क्यों कर ली? मैंने गुत्तिएरे की जान बचायी थी। हां, बचायी थी। बहुत समय से मुझे यह लग रहा था कि गुत्तिएरे उस लड़की से मिलती-जुलती है, जिसे मैंने एक बार समुद्र में से निकाला था। मैं उसे तट पर ले आया और ख़ुद चट्टानों के पीछे छिप गया। फिर वह सांवला आदमी आ पहुंचा—मैं तो उसे देखते ही पहचान गया था—और गुत्तिएरे को यक़ीन दिलाने की कोशिश करने लगा कि उसने उसकी जान बचायी है।"

"गुत्तिएरे ने मुझे इस बारे में बताया था," ओलसन ने कहा। "वह निश्चय नहीं कर पायी कि वास्तव में किसने उसकी जान बचायी थी—ज़ुरीता ने या किसी विचित्र जीव ने, जिसे उसने होश में आने पर क्षण भर के लिए देखा था। तुमने उसे बताया क्यों नहीं कि तुमने उसकी जान बचायी थी?"

"अपने बारे में बात करने में झेंप होती है। इसके अलावा मुझे पहले यक़ीन नहीं था, वास्तव में उस वक़्त तक यक़ीन नहीं था, जब तक मैंने ज़ुरीता को नहीं देखा। लेकिन गुत्तिएरे मान कैसे गयी?" इकथियांदर ने पूछा।

"यह मैं ख़ुद नहीं जानता," ओलसन ने धीरे-से कहा।

"जो कुछ भी जानते हो, मुझे बताओ, तुम्हारी मेहरबानी होगी।"

"मैं एक बटन बनानेवाली फ़ैक्टरी में काम करता हूं, सीपों की जांच करता हूं। वहीं पर गुत्तिएरे से मेरी जान-पहचान हुई थी। जब कभी उसका बाप बहुत व्यस्त होता तो वह वहां सीप लाती थी। हमारी दोस्ती हो गयी। कभी कभी हम बन्दरगाह पर मिल जाते और समुद्र के किनारे इकट्ठे घूमने निकल जाते। तब उसने मुझे अपने दुर्भाग्य के बारे में बताया कि एक अमीर स्पेनी उससे विवाह करना चाहता है।"

"वही आदमी? ज़ुरीता?"

"हां, ज़ुरीता। गुत्तिएरे का बाप—इण्डियन बाल्तासार इस विवाह के पक्ष में था और गुत्तिएरे को मनाने की, उस धनी राजा के साथ उसका विवाह करने की, पूरी पूरी कोशिश कर रहा था।"

"उसमें राजाओं की कौन सी बात है? वह तो इतना बूढ़ा, कुरूप आदमी है, उससे तो बू आती है..." इकथियांदर अपने को रोक नहीं सका।

"बाल्तासार ज़ुरीता से बेहतर दामाद की कल्पना नहीं कर सकता था। इसलिए भी कि बाल्तासार ज़ुरीता के कर्ज़ के नीचे दबा जा रहा था। अगर गुत्तिएरे नहीं मानती तो ज़ुरीता उसे मिट्टी में मिला सकता था। ज़रा कल्पना करो, गुत्तिएरे की क्या हालत थी: एक ओर ज़ुरीता परेशान करता था, दूसरी ओर बाप नाक में दम किये था, उसे सारा वक़्त धिक्कारता, डांटता-धमकाता..."

"गुत्तिएरे ने उसे चलता क्यों नहीं किया? और तुम जो इतने तगड़े जवान हो, तुमने ज़ुरीता की मरम्मत क्यों नहीं की?"

ओलसन मुस्करा दिया और हैरान भी हुआ: इकथियांदर बेवकूफ़ नहीं था, फिर भी उसके सवाल कुछ अजीब-से थे। वह कहां पलकर बड़ा हुआ था?

"यह कह देना आसान है," ओलसन ने जवाब दिया। "क़ानून, पुलिस, अदालत, सभी ज़ुरीता और बाल्तासार का पक्ष लेते। मैं यह नहीं कर सकता था।"

लेकिन बात इकथियांदर की समझ में नहीं आयी।

"पर फिर वह भाग क्यों नहीं गयी?" इकथियांदर ने पूछा।

"बेशक, यह ज़्यादा आसान होता। वास्तव में गुत्तिएरे यही करना चाहती थी, और मैंने उसे सहायता देने का वचन भी दिया था। सच तो यह है कि मैं मुद्दत से ब्वेनस-ऐरीज़ से उत्तरी अमरीका जाने की तैयारी कर रहा था, और मैंने गुत्तिएरे के सामने यह सुझाव रखा कि वह मेरे साथ चल दे।"

"क्या तुम उसके साथ शादी करना चाहते थे?" इकथियांदर ने पूछा।

"तुम अजीब आदमी हो," ओलसन ने कहा और फिर मुस्करा दिया। "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं कि हम केवल दोस्त थे। बाद में क्या होता, मैं नहीं जानता।"

"फिर तुम गये क्यों नहीं?"

"क्योंकि हमारे पास किराये के पैसे नहीं थे।"

"क्या 'हार्राक्स' जहाज़ पर जाने के लिए बहुत पैसे देने पड़ते हैं?"

"'हार्राक्स' पर! 'हार्राक्स' पर लखपती सफ़र करते हैं। तुम क्या चांद पर से उतरे हो?"

झेंप के कारण इकथियांदर का मुंह लाल हो गया और उसने सोचा कि वह और सवाल नहीं पूछेगा, जिससे ओलसन को यह पता चले कि वह मामूली बातें भी नहीं जानता।

"'हार्राक्स' की बात तो दूर रही, हमारे पास तो मालवाहक जहाज़ पर जाने के लिए भी पूरे पैसे नहीं थे। और किराये से कुछ ज़्यादा ही पैसे साथ ले जाने होते

हैं ताकि पहुंचने पर कुछ दिन गुज़र चल सके। मुंह मांगे तो नौकरी नहीं मिल जाती।"

इकथियांदर एक और सवाल पूछना चाहता था लेकिन उसने अपने पर नियन्त्रण रखा।

"तभी गुत्तिएरे ने मोतियों का हार बेचने की ठानी थी।"

"काश, मुझे मालूम होता!" उन मोतियों को याद करते हुए, जो उसने पानी के नीचे जमाकर रखे थे, इकथियांदर ने चिल्लाकर कहा।

"क्या मालूम होता?"

"कोई बात नहीं। आगे कहो, ओलसन..."

"भाग निकलने की सारी तैयारी मुकम्मल हो चुकी थी..."

"ज़रा ठहरो। और मुझे... मेरा मतलब है, यह कैसे हो सकता था। क्या इसका यह मतलब है कि वह मुझे भी छोड़ जाना चाहती थी?"

"यह सब कुछ तुम्हारे साथ उसका परिचय होने से पहले हुआ। पर फिर, जहां तक मुझे मालूम है, गुत्तिएरे तुम्हें आगाह कर देना चाहती थी। शायद तुम्हें साथ चलने के लिए निमन्त्रित करना चाहती थी। अन्त में, अगर वह भागने से पहले तुम्हें न बता पाती तो वह तुम्हें बाद में रास्ते से पत्र द्वारा सूचित कर सकती थी।"

"पर तुम्हारे साथ क्यों, मेरे साथ क्यों नहीं? तुम्हारे साथ ही सलाह की, तुम्हारे साथ ही भागने की तैयारी की!"

"वह मुझे एक साल से ज़्यादा अर्से से जानती थी, जबकि तुम्हें..."

"आगे कहो, मेरी बातों पर ध्यान न दो।"

"तो, जैसा कि मैंने कहा, तैयारी मुकम्मल हो चुकी थी," ओलसन कहने लगा। "पर फिर तुमने ज़ुरीता की मौजूदगी में, गुत्तिएरे की आंखों के सामने समुद्र में छलांग

लगा दी। दूसरे दिन सुबह, अपनी पाली शुरू होने से पहले मैं गुत्तिएरे से मिलने गया। यह पहली बार न था कि मैं उससे मिलने गया था। मुझे लगा जैसे बाल्तासार को मेरा आना बुरा नहीं लगा। शायद इसलिए कि वह मेरे घूंसे से डरता था, शायद इसलिए कि अगर ज़ुरीता गुत्तिएरे की ढिठाई से ऊब उठे और उसका जोश ठण्डा पड़ जाये तो मैं उसकी जगह ले सकूं। कुछ भी हो, बाल्तासार ने कोई आपत्ति नहीं की, केवल इस बात का आग्रह किया कि ज़ुरीता की मौजूदगी में हम एक दूसरे से न मिलें। बेशक, बूढ़े इण्डियन को हमारी योजनाओं के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। उस रोज़ सुबह मैं गुत्तिएरे को यह बताने गया था कि मैंने जहाज़ के दो टिकट ख़रीद लिये हैं और उसे रात के दस बजे चलने के लिए तैयार रहना चाहिए। बाल्तासार मुझसे मिला, वह बड़ा उत्तेजित था। 'गुत्तिएरे घर पर नहीं है—वह सदा के लिए चली गयी हैं' उसने मुझे बताया। 'आधा घण्टा पहले ज़ुरीता एक चमकती, नयी मोटर-गाड़ी लेकर आया था। ज़रा सोचो तो!' वह कहता गया, 'हमने कभी अपनी सड़क पर मोटर-गाड़ी नहीं देखी और ख़ास कर ऐसी मोटर-गाड़ी, जो खटाक से सीधी हमारे ही घर के सामने आ खड़ी हो। गुत्तिएरे और मैं दोनों भागकर बाहर गये। ज़ुरीता पहले ही मोटर-गाड़ी में से निकल आया और गुत्तिएरे को निमन्त्रित कर रहा था कि चलो मोटर में तुम्हें बाज़ार तक सैर करवा लाऊं। वह जानता था कि इसी वक़्त गुत्तिएरे बाज़ार जाती है। गुत्तिएरे ने उस भड़कीली मोटर की ओर देखा। तुम समझ सकते हो कि एक युवती के लिए उसका कितना आकर्षण रहा होगा। लेकिन गुत्तिएरे चालाक लड़की है और किसी का विश्वास नहीं करती। उसने बड़ी शिष्टतापूर्वक इनकार कर दिया। 'ऐसी ढीठ लड़की मैंने कभी नहीं देखी!' बाल्तासार ने क्रोध से कहा, मगर फिर हंसने लगा। 'लेकिन ज़ुरीता

11 1536

की भी समझ-बूझ क़ायम थी। 'तुम शर्मा रही हो,' उसने कहा, 'आओ, मैं तुम्हें बिठा दूं।' और उसने गुत्तिएरे को झपटकर अन्दर धकेल दिया, गुत्तिएरे 'पिता जी!' भर ही कह पायी होगी कि मोटर रवाना हो चुकी थी। 'मैं समझता हूं कि वे लौटकर कभी नहीं आयेंगे। मुझसे पूछो तो मैं कहूंगा कि ज़ुरीता उसे अपने घर ले गया है,' बाल्तासार ने अपनी कहानी ख़त्म करते हुए कहा। मैंने देखा कि वह काफ़ी मज़ा ले-लेकर उसे सुनाता रहा था। 'तुम्हारी आंखों के सामने एक आदमी तुम्हारी बेटी को उठाकर ले गया है, और तुम यहां खड़े मुझे ऐसे बता रहे हो मानो यह कोई चुटकुला हो!' मैंने क्रुद्ध होकर बाल्तासार से कहा। 'मैं क्यों चिन्ता करूं?' बाल्तासार ने हैरान होकर कहा। 'अगर कोई और आदमी होता तो मुझे चिन्ता होती। लेकिन ज़ुरीता को तो मैं मुद्दत से जानता हूं। अगर उस जैसा कंजूस मोटर ख़रीदने के लिए पैसे निकाल सकता है तो इसका मतलब है वह गुत्तिएरे के बिना नहीं रह सकता। यक़ीनी तौर पर वह गुत्तिएरे से शादी कर लेगा। और गुत्तिएरे को अपनी ढिठाई का सबक़ मिल जायेगा। मुंह मांगे अमीर आदमी नहीं मिल जाते। उसके लिए रोने का कोई कारण नहीं है। ज़ुरीता के पास 'दोलोरेस' नाम की हासियेन्दा है, पाराना नामक नगर के ऐन बाहर। वहां उसकी मां रहती है। वहीं शायद वह मेरी गुत्तिएरे को ले गया है।'"

"और तुमने बाल्तासार के दांत नहीं तोड़े?" इकथियांदर ने पूछा।

"तुम्हारी बातों से तो जैसे लोगों को पीटने के अलावा मेरा कोई और काम ही नहीं है," ओलसन ने कहा। "मेरा मन तो आया था कि उसकी पिटाई कर दूं। पर फिर मैंने सोचा कि इससे मामला बिगड़ेगा ही, सुधरेगा नहीं। अभी मामला बिल्कुल हाथ से नहीं निकला है। मैं सारा ब्योरा तुम्हें नहीं सुनाऊंगा। पर जैसा कि मैंने तुमसे कहा, मैं गुत्तिएरे से मिला था।"

"'दोलोरेस' हासियेन्दा में?"

"हां।"

"और तुमने ज़ुरीता को मारकर गुत्तिएरे को आज़ाद नहीं किया?"

"अब मुझे लोगों को क़त्ल भी करना चाहिए। कौन सोचेगा कि तुम ख़ून के इतने प्यासे हो।"

"मैं ख़ून का प्यासा हरगिज़ नहीं हूं," इकथियांदर ने कहा, उसकी आंखों में आंसू भर आये। "लेकिन यह सुनकर तो किसी का भी ख़ून खौलने लगेगा!"

ओलसन को इकथियांदर पर तरस आ रहा था।

"तुम ठीक कहते हो," ओलसन ने कहा। "ज़ुरीता और बाल्तासार दोनों बदमाश हैं। वे इसी योग्य हैं कि उनकी अच्छी पिटाई की जाये। लेकिन जीवन उससे कहीं ज़्यादा जटिल है, जितना कि तुम सोचते हो। गुत्तिएरे ने ज़ुरीता के घर से भाग जाने से इनकार कर दिया।"

"क्या? इनकार कर दिया?" इकथियांदर को यक़ीन नहीं हो रहा था।

"हां।"

"मगर क्यों?"

"एक तो इसलिए कि उसे यक़ीन हो गया था कि तुम उसी की ख़ातिर अपनी जान पर खेल गये थे। तुम्हारी मौत से वह बेहद दुखी है। बेचारी, वह ज़रूर तुमसे बड़ी मुहब्बत करती होगी। 'मेरी ज़िन्दगी तो ख़त्म हो चुकी है, ओलसन,' गुत्तिएरे ने मुझसे कहा। 'मुझे अब किसी चीज़ की ख़्वाहिश नहीं है। मुझे किसी बात की परवाह नहीं है। जब पादरी—जिसे ज़ुरीता ने निमन्त्रित किया था—हमारा विवाह-संस्कार कर रहा था, तो मुझे सब कुछ तैरता-सा नज़र आ रहा था। मेरी उंगली में विवाह की अंगूठी डालते हुए उसने कहा कि भगवान की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता, और जिन्हें भगवान ने एक दूसरे से मिलाया है, उन्हें कोई इनसान जुदा नहीं कर सकता।

ज़ुरीता के साथ जीवन में मुझे सुख नहीं मिलेगा, लेकिन मैं भगवान के कोप का शिकार भी नहीं बनना चाहती। मैं उसे छोड़ूंगी नहीं।' "

"क्या बकवास है! भगवान, वाह। पिताजी कहते हैं कि भगवान तो केवल कपोल-कल्पना है!" इकथियांदर ने बड़े जोश से कहा। "क्या तुम उसे समझा नहीं पाये?"

"यह एक ऐसी कपोल-कल्पना है, जिसमें, दुर्भाग्यवश, गुत्तिएरे विश्वास करती है। मिशनरियों ने उसे कट्टर रोमन कैथोलिक बना दिया है। मैं मुद्दत से उसके विश्वास को तोड़ने की कोशिश करता रहा हूं, लेकिन कामयाब नहीं हुआ। उसने मुझे यहां तक कह दिया कि अगर मैं उसके सामने भगवान और पवित्र रोमन कैथोलिक धर्म को बुरा-भला कहूंगा तो वह मुझे फिर कभी देखना भी नहीं चाहेगी। इसलिए मुझे रुकना ही पड़ा। हासियेन्दा में तो इस मामले में और ज़्यादा गहराई में जाने का मेरे पास वक़्त ही नहीं था। मैं मुश्किल से उसे कुछेक शब्द कह पाया। लेकिन गुत्तिएरे ने मुझे एक और बात भी बतायी। शादी के बाद ज़ुरीता ने ठहाका मारकर कहा: 'एक काम से तो निपट लिया। नन्ही चिड़िया को तो पकड़कर पिंजरे में बन्द कर लिया, अब नन्ही मछली को पकड़ना बाक़ी है।' तब उसने गुत्तिएरे को समझाया कि नन्ही मछली से उसका क्या मतलब है, और गुत्तिएरे ने मुझे बताया। ज़ुरीता ने कहा कि वह 'समुद्री दैत्य' को पकड़ने ब्वेनस-ऐरीज़ जा रहा है, जिससे गुत्तिएरे एक करोड़पति की पत्नी बन जायेगी। कहीं तुम ही तो वह 'समुद्री दैत्य' नहीं हो? तुम घण्टों पानी के नीचे रहते हो, मोती निकालनेवाले ग़ोताख़ोरों के दिल में त्रास पैदा करते फिरते हो..."

इकथियांदर सावधान रहा और उसने ओलसन को अपना भेद नहीं बताया। वह यों भी उसे समझा नहीं पाता। इसलिए ओलसन के सवाल का जवाब दिये बिना, उसने स्वयं पूछा:

"ज़ुरीता उसे क्यों पकड़ना चाहता है?"

"पेद्रो चाहता है कि 'समुद्री दैत्य' उसके लिए मोती निकाला करे, अगर तुम वही 'समुद्री दैत्य' हो तो बचकर रहना!"

"चेतावनी के लिए शुक्रिया," इकथियांदर ने कहा।

इकथियांदर को इस बात का तनिक भी ज्ञान नहीं था कि उसकी हरकतें तट पर रहनेवाले सभी लोगों को मालूम हैं और ब्वेनस-ऐरीज़ की पत्र-पत्रिकाओं में उसके बारे में बहुत कुछ छपता रहा था।

"मैं गुत्तिएरे को देखे बिना नहीं रह सकता," इकथियांदर ने उद्विग्न होकर कहा। "मैं उससे ज़रूर मिलूंगा। भले ही यह आख़िरी बार हो। पाराना नामक नगर तुमने कहा था न? हां, मैं इसके बारे में जानता हूं। वह पाराना नदी पर स्थित है। पर मैं हासियेन्दा 'दोलोरेस' का कैसे पता लगा पाऊंगा?"

ओलसन ने उसे समझाया।

इकथियांदर ने ओलसन के साथ ज़ोर से हाथ मिलाया।

"मैं माफ़ी चाहता हूं। मैं मिलने तो आया था एक दुश्मन से और पाया मैंने एक दोस्त। विदा। मैं गुत्तिएरे से मिलने जा रहा हूं।"

"सीधे इसी वक़्त जा रहे हो?" ओलसन ने मुस्कराकर कहा।

"हां, बिना एक भी मिनट खोये," इकथियांदर ने कहा, पानी में कूद गया और तट की ओर तैरकर जाने लगा।

ओलसन ने केवल सिर हिला दिया।

भाग 2

सफ़र की मुश्किलें

यात्रा की तैयारी में इकथियांदर को बहुत वक़्त नहीं लगा। उसने अपना शहरी सूट और जूते निकाले और उन्हें शरीर के साथ चमड़े की उस पेटी से बांध लिया, जिससे वह अपना चाक़ू बांधा करता था, फिर चश्मा और दस्ताने लगाये और निकल पड़ा।

रिओ-दि-ला-प्लाता में बहुत से जहाज़ लंगर डाले पड़े थे और उनके बीच बोझ ढोनेवाली छोटी वाष्प-चालित नावें आ जा रही थीं। पानी के नीचे से उन्हें देखो तो लगता था जैसे जल-कीट इधर से उधर भागे जा रहे हों। उसके चारों ओर तल से सतह तक लंगरों की ज़ंजीरें और रस्से जलमग्न जंगल के पतले पतले पेड़ों की तरह फैले हुए थे। खाड़ी के तल पर तरह तरह की चीज़ें बिखरी पड़ी थीं, लोहे के छड़, कोयले के ढेर, खंगर, पुरानी नलियों के टुकड़े, बादबानों के टुकड़े, कनस्तर, ईंटें, टूटी हुई बोतलें, खाद्य-पदार्थों के ख़ाली डिब्बे और तट के निकट कुत्तों और बिल्लियों की लाशें।

पानी की सतह पर पेट्रोलियम की पतली-सी परत बिछी

थी। सूर्य अभी आकाश में ही था लेकिन यहां, जल के नीचे, हरे-धूसर रंग के संधि-प्रकाश का बोलबाला था। पाराना नदी अपना जल खाड़ी में उंडेल रही थी, और साथ ही मिट्टी और कीचड़ भी। यदि समुद्र में गिरनेवाली नदी की यह धारा न होती तो लंगरों की ज़ंजीरों और रस्सियों के इस जाल में इकथियांदर बड़ी आसानी से अपना रास्ता भूल सकता था। समुद्र-तल की ओर वितृष्णा से देखते हुए, जो एक विशाल कूड़े का ढेर नज़र आ रहा था, उसने मन ही मन कहा: "हैरानी है कि लोग इतने गन्दे भी हो सकते हैं।" वह खाड़ी के बीचोंबीच, जहाज़ों के पेंदों के निकट तैर रहा था। खाड़ी के गन्दे जल में सांस लेना उसके लिए उतना ही कठिन हो रहा था, जितना किसी आदमी के लिए घुटन भरे कमरे में होता है।

अनेक स्थानों पर उसे समुद्र-तल पर लोगों की लाशें और जानवरों के पंजर नज़र आये। उनमें से एक लाश की खोपड़ी फटी हुई थी और गले में रस्सी के साथ वज़नदार पत्थर बंधा था। यहां पर किसी का अपराध दफ़न था। इकथियांदर ने रफ़्तार तेज़ कर दी ताकि इस अवसादपूर्ण दृश्य से जल्दी ही दूर निकल जाये।

लेकिन खाड़ी में वह जितना ही ऊपर जाता गया नदी का विरोधी प्रवाह उतना ही ज़्यादा तेज़ होता गया। आगे तैरना कठिन होता गया। महासागर में भी जल-धाराएं थीं, लेकिन वहां वे इकथियांदर की सहायता करती थीं। इकथियांदर उन्हें भली भांति जानता था और उनका वैसे ही प्रयोग करता था जैसे नाविक अनुकूल हवा का प्रयोग करता है। यहां पर केवल एक ही जल-धारा थी और वह प्रतिकूल दिशा में बह रही थी। इकथियांदर सधा हुआ तैराक था, लेकिन यहां वह मन ही मन खीज रहा था कि वह इतनी धीमी रफ़्तार से आगे बढ़ रहा है।

सहसा एक बोझल सी चीज़ तेज़ी से उसके पास से निकल गयी, लगभग उसे छूती हुई। किसी जहाज़ का

लंगर फेंका गया था। "अरे! यह तो तैरने के लिए ख़तरनाक जगह जान पड़ती है," इकथियांदर ने सोचा और अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी। पीछे से एक विराटकाय जहाज़ चला आ रहा था।

इकथियांदर पानी में और नीचे चला गया और जब जहाज़ ऊपर से जा रहा था तो उसने उसके पेंदे को पकड़ लिया। इस्पात की चादरों पर असंख्य बार्नेक्ल चिपटे हुए थे, जिनसे पेंदे को पकड़ पाना संभव हो पाया। जहाज़ के पेंदे से इस तरह लटकना आसान तो नहीं था लेकिन इससे वह ख़तरे से बाहर हो गया था और अच्छी तेज़ रफ़्तार से धारा के विरुद्ध बढ़ने लगा था।

मुहाना समाप्त हुआ और जहाज़ बहाव के विरुद्ध पाराना नदी में जाने लगा। मिट्टी और रेत से भरे पानी में इकथियांदर के लिए सांस लेना कठिन हो रहा था। उसके बाज़ू सुन्न हो रहे थे लेकिन वह जहाज़ के पेंदे को छोड़ना नहीं चाहता था। "कितने खेद की बात है कि मैं इस सफ़र में लीडिंग को नहीं ला पाया," डालफ़िन को याद करते हुए उसने मन ही मन कहा। उसे अपनी मौलिक योजना त्याग देने पर मजबूर होना पड़ा था। सारा रास्ता डालफ़िन पानी के नीचे नहीं तैर पाती, और इकथियांदर के लिए ऐसी नदी में जहां जहाज़रानी इतनी ज़्यादा हो, सतह पर आना ख़तरनाक था।

इकथियांदर के बाज़ू इतने थक गये थे कि उसके लिए पेंदे को पकड़े रहना अधिकाधिक कठिन हो रहा था। साथ ही उसे बेहद भूख लग रही थी। घण्टों से उसके पेट में कुछ नहीं गया था। यह निश्चय करके कि उसे थोड़ा आराम करना चाहिये उसने जहाज़ को छोड़ दिया और नदी के तल पर उतर गया।

सन्धि-प्रकाश गहरा हो रहा था। उसने मिट्टी और रेत से भरे तल की जांच की। उसे न तो वहां फ़्लौंडर मछली नजर आयी और न घोंघे ही। उसके निकट जो मछलियां

भाग-दौड़ रही थीं, वे मीठे पानी में रहनेवाली मछलियां थीं, जिनसे इकथियांदर अनभिज्ञ था। उन्हें पकड़ने की अनेक बार नाकाम कोशिश करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि ये मछलियां अपनी समुद्री बहनों से ज़्यादा चालाक हैं। केवल जब रात घिर आयी और मछलियां सो गयीं तो इकथियांदर एक बड़ी-सी पाइक-मछली पकड़ पाया। उसका मांस कड़ा था और उसमें मिट्टी का स्वाद था लेकिन भूखे जलथलिये ने चटखारे ले लेकर उसे खाया, और हड्डियों समेत उसे चटकर गया।

फिर उसका मन हुआ कि थोड़ा आराम कर ले। नदी में यह सुविधा ज़रूर थी कि शार्क-मछलियों और अठबहियों का डर नहीं था और इस तरह वह कुछेक घण्टे आराम से सो सकता था। उसे केवल एक ही बात की फ़िक्र थी कि सोते समय नदी का बहाव उसे नीचे की ओर न बहा ले जाये। उसे तल पर कुछेक पत्थर मिल गये, जिन्हें उसने एक साथ जोड़ लिया और लेटते समय एक पत्थर को पकड़े रहा।

परन्तु वह ज़्यादा देर तक सो नहीं पाया। उसे लगा जैसे कोई जहाज़ आ रहा है, आंखें खोलीं तो उसे जहाज़ के सिग्नल की बत्तियां नज़र आयीं। जहाज़ नदी के ऊपर, बहाव के विरुद्ध चला जा रहा था। इकथियांदर झट से ऊपर गया ताकि उसके पेंदे से लटक जाये, लेकिन अब की बार वह जहाज़ न होकर एक मोटर-बोट निकली, जिसका पेंदा शीशे की तरह चिकना था। कुछेक बार कोशिश करने के बाद जिसमें वह पंखे में फंसते-फंसते बचा, इकथियांदर ने और कोशिश करना छोड़ दिया।

केवल उसी वक़्त जब बहुत-सी नावें बहाव के साथ साथ नीचे की ओर जा चुकी थीं, इकथियांदर नदी के बहाव के विरुद्ध जानेवाले एक बड़े-से जहाज़ के पेंदे को पकड़ने में सफल हुआ।

इस भांति इकथियांदर पाराना नगर पहुंचा। सफ़र का

पहला हिस्सा समाप्त हो चुका था। लेकिन उसका सबसे कठिन भाग—थल-यात्रा—अभी बाक़ी था।

दूसरे दिन सुबह ही इकथियांदर तैरता हुआ शोरगुल से भरे पोतघाट से दूर चला गया और नदी-तट के एक छोटे से टुकड़े पर चढ़ गया जहां कोई भी जीव नज़र नहीं आ रहा था। किनारे पर उसने अपना चश्मा और दस्ताने दबा दिये, फिर धूप में अपना सूट सुखाया और पहन लिया। मुचड़ा हुआ सूट पहने वह आवारागर्द नज़र आता था। पर इसकी उसे कोई चिन्ता नहीं थी।

ओलसन की हिदायत के मुताबिक़ इकथियांदर नदी के दायें तट के साथ-साथ जाने लगा। वह रास्ते में मिलनेवाले मछुओं से पेद्रो ज़ुरीता की मिल्कियत 'दोलोरेस' हासियेन्दा का रास्ता पूछता जाता।

मछुए सन्देह भरी नज़र से उसकी ओर देखते और सिर हिला देते।

एक के बाद एक घण्टों बीत गये, तपिश बढ़ने लगी, लेकिन अपने रास्ते के बारे में उसकी जानकारी अब भी उतनी ही अनिश्चित थी जितनी सुबह चलते समय थी। ज़मीन पर अपरिचित स्थानों पर इकथियांदर रास्ता मालूम करने में असमर्थ था। इसके अतिरिक्त गरमी के कारण उसका सिर चकरा रहा था और वह ठीक तरह से सोच नहीं सकता था।

किसी किसी वक़्त वह ताज़ादम होने के लिए नदी में नहा लेता।

अन्त में, जब दोपहर के चार बजने में कुछ ही मिनट रह गये, तो उसे एक बूढ़ा किसान मिला जो शक्ल-सूरत से खेत-मज़दूर जान पड़ता था। इकथियांदर की बात सुनने के बाद उसने स्वीकृति में सिर हिलाया और बोला:

"खेतों के बीच उस सड़क पर सीधे चलते जाओ, जब एक बड़े-से तालाब के पास पहुंचोगे तो पुल पार करना,

छोटी-सी पहाड़ी चढ़ जाना और आगे तुम्हें मुछैल 'दोलोरेस' मिल जायेगी।"

"मुछैल क्यों? 'दोलोरेस' तो हासियेन्दा है न?"

"ठीक है। लेकिन हासियेन्दा की बूढ़ी मालकिन का नाम भी दोलोरेस है। पेद्रो उसका बेटा है। मोटी-ताज़ी बूढ़ी औरत है और उसकी ख़ूब बड़ी-बड़ी मूछें हैं। लेकिन उसके यहां मज़दूरी न करना। सूट समेत तुम्हें कच्चा चबा जायेगी। पूरी चुड़ैल है। लोग कहते हैं ज़ुरीता एक जवान लड़की को ब्याह लाया है। उसकी सास बहू की नाक में दम किये रहेगी," बातूनी बूढ़ा बोलता जा रहा था।

"वह ज़रूर गुत्तिएरे ही होगी," इकथियांदर ने सोचा।

"क्या यहां से दूर है?"

"शाम होते होते वहां जा पहुंचोगे," सूरज की ओर देखकर बूढ़े ने कहा।

उसको धन्यवाद देकर इकथियांदर गेहूं और मकई के खेतों के पास से होकर जाने लगा। घण्टों तेज़ चलते रहने के कारण वह थकने लगा था। एक अन्तहीन फ़ीते की भांति सड़क दूर तक चली गयी थी। गेहूं के खेत ख़त्म हुए तो चरागाहें शुरू हो गयीं, जिनमें ख़ूब घनी और ऊंची घास उग रही थी और जिनमें भेड़ों के झुण्ड चर रहे थे।

उसके होंठ सूख रहे थे लेकिन आस-पास कहीं भी पानी की बूंद नज़र आ रही थी। इकथियांदर थककर चूर हो रहा था, और उसकी कमर में तीखा दर्द फिर उठने लगा था। "मैं कब उस तालाब के पास पहुंचूंगा," उसने मन ही मन कहा। उसकी आंखें अन्दर घुस गयी थीं, गाल पिचक गये थे और सांस लेना मुश्किल हो रहा था। उसे भूख लगी थी। लेकिन सड़क के नज़दीक कोई भी ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे वह खा सकता। दूर एक चरागाह में भेड़ें चर रही थीं। एक गड़रिया और उसके कुत्ते उनकी रखवाली कर रहे थे। पत्थर की एक दीवार के पार आड़ू और संतरे के पेड़ पक्के फलों से लदे नज़र आ रहे थे। यह

महासागर नहीं था। यहां पर हर चीज़ किसी न किसी की मिल्कियत थी, हर चीज़ बंटी हुई थी, उसके इद-गिर्द बाड़ लगी थी, उसकी रखवाली की जा रही थी। केवल पक्षी ही किसी की मिल्कियत नहीं थे, जो ऊपर चहक रहे थे और इधर-उधर फुदक रहे थे। लेकिन उन्हें पकड़ने की कोशिश तो करके देखो, और फिर क्या पक्षियों को पकड़ने की उसे इजाज़त थी? शायद वे भी किसी की मिल्कियत हों। यहां धरती पर, बाग़ों, तालाबों और जानवरों के झुण्डों के बीच भी इनसान भूख और प्यास से मर सकता था।

सफ़ेद टोपी लगाये और चमकते बटनोंवाला सफ़ेद कोट पहने एक मोटा-सा आदमी, जिसकी पेटी के साथ पिस्तौल का कबूर लटक रही थी और जो पीठ पर हाथ बांधे था, इकथियांदर की ओर चला आ रहा था।

"क्या आप मुझे बता सकते हैं कि 'दोलोरेस' हासियेन्दा यहां से कितनी दूर है?" इकथियांदर ने पूछा।

मोटे आदमी ने सन्देह भरी नज़र से इकथियांदर की ओर देखा।

"वहां तुम्हारा क्या काम है? तुम आये कहां से हो?"

"ब्वेनस-ऐरीज़ से।"

मोटे आदमी की आंखें सतर्क हो गयीं।

"वहां मुझे किसी से मिलना है," इकथियांदर ने जोड़ा।

"अपने हाथ आगे बढ़ाओ," उस आदमी ने कहा।

यह अनुरोध सुनकर इकथियांदर को अचम्भा तो हुआ, लेकिन बिना किसी क़िस्म का कोई शक किये उसने हाथ आगे बढ़ा दिये।

मोटे आदमी ने उसी वक़्त जेब में से हथकड़ियों का जोड़ा निकाला। पलक मारते ही इकथियांदर की कलाइयों पर हथकड़ियां लग गयीं।

"लो," मोटा आदमी बुदबुदाया और इकथियांदर को धक्का देकर बोला: "अब चलो मेरे साथ! मैं तुम्हें हासियेन्दा 'दोलोरेस' ले चलूंगा।"

"आपने मेरे हाथों के इर्द-गिर्द यह चीज़ क्यों डाल दी है?" हथकड़ियों की ओर घबराकर देखते हुए इकथियांदर ने पूछा।

"बोलो मत। चलते जाओ!" वर्दीवाले आदमी ने कड़ककर कहा।

इकथियांदर सिर झुकाये जाने लगा। "कम से कम मुझे वापस तो नहीं भेज दिया गया," इकथियांदर ने सोचा, लेकिन वह नहीं जानता था कि आगे उसके साथ क्या बीतने वाली थी। उसे मालूम नहीं था कि पिछली रात नज़दीक ही किसी फ़ार्म में चोरी हो गयी थी और एक आदमी को मार डाला गया था और पुलिस मुजरिमों की तलाश में थी। उसे इस बात का भी एहसास नहीं था कि मुचड़े हुए कपड़ों में वह सन्दिग्ध व्यक्ति जान पड़ता था। उसके अस्पष्ट जवाबों से कि उसके सफ़र का उद्देश्य क्या है स्थिति और भी उसके लिए प्रतिकूल हो गयी थी।

पुलिस का सिपाही इकथियांदर को निकट के एक गांव में ले जा रहा था ताकि वहां से उसे पाराना नगर की जेल में भेज दिया जाये।

एक बात इकथियांदर ज़रूर समझ गया था कि वह अपनी राह जाने के लिए अब आज़ाद नहीं था। उसने निश्चय किया कि पहला ही मौक़ा मिलने पर वह निकल भागने की कोशिश करेगा।

मोटा सिपाही अपने सौभाग्य पर फूला नहीं समा रहा था, उसने एक लम्बा-सा सिगार सुलगाया और इकथियांदर के ऐन पीछे पीछे चलने और कड़वे धुएं के कश छोड़ने लगा। इकथियांदर का दम घुटा जा रहा था।

"कृपया तम्बाकू न पीजिये, मेरे लिए सांस लेना कठिन हो रहा है," उसने घूमकर सिपाही से कहा।

"क्या? तम्बाकू नहीं पियूं? यह ख़ूब रही!" सिपाही ठहाका मारकर हंस दिया, जिससे उसके सारे चेहरे पर झुर्रियों का जाल बिछ गया। "बड़े नाज़ुक हो!" और

सिगार का कश लेकर धुआं सीधा इकथियांदर के मुंह पर छोड़ते हुए चिल्लाया: "चलो आगे!"

इकथियांदर हुक्म मानकर आगे-आगे चलने लगा।

आख़िर वह तालाब नज़र आया जिसपर तंग-सा पुल बना था और इकथियांदर के क़दम अपने आप तेज़ हो गये।

"अपनी दोलोरेस से मिलने की इतनी बेताबी न दिखाओ," मोटे आदमी ने चिल्लाकर कहा।

उन्होंने पुल पर क़दम रखा। पुल के बीचोंबीच पहुंचने पर इकथियांदर सहसा डंडहरे पर से पानी में कूद गया।

सिपाही को इस बात की तनिक भी आशा नहीं थी कि हथकड़ी से बंधे हाथोंवाला आदमी ऐसा काम करेगा।

पर इसके बाद जो काम सिपाही ने किया उसकी इकथियांदर को भी आशा नहीं थी। इस डर से कि शायद उसका क़ैदी डूब जाये, जो उसकी ज़ेर-निगरानी था और हथकड़ियां पहने था, और इससे तरह-तरह के झंझट पैदा हों, उसने उसके पीछे ख़ुद पानी में छलांग लगा दी। बेशक़ यह काम उसने इतनी जल्दी किया कि इकथियांदर के बाल उसके हाथ में आ गये और उन्हें उसने कसकर पकड़ लिया। इसपर इकथियांदर बालों का जोखम उठाकर सिपाही को नीचे तल की ओर खींच ले गया। शीघ्र ही इकथियांदर के बाल छोड़ दिये गये। इकथियांदर एक ओर तो तैर गया और यह देखने के लिए कि सिपाही ऊपर आ गया है या नहीं, उसने पानी में से सिर निकाला। वह सतह पर आ गया था और इकथियांदर को देखते ही चिल्लाया:

"डूब जाओगे, सूअर! तैरकर मेरे पास आओ!"

"विचार तो बुरा नहीं है," इकथियांदर ने मन ही मन कहा और "बचाओ! बचाओ!" चिल्लाता हुआ पानी में डूब गया।

नीचे से उसने देखा, सिपाही उसे निकालने के लिए बार-बार ग़ोता लगा रहा था। आख़िर नाउम्मीद होकर सिपाही तट पर चढ़ गया।

"अब वह चला जायेगा," इकथियांदर ने सोचा। लेकिन सिपाही नहीं गया। जान पड़ता था कि उसने जांच-अधिकारियों के मौक़े पर पहुंचने तक लाश के पास ठहरने का निश्चय किया था। सिपाही के विचार में इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि लाश तालाब के तल पर पड़ी थी।

एक किसान पुल पर दिखलाई दिया। वह बोरों से लदे खच्चर पर बैठा था। सिपाही ने किसान को हुक्म दिया कि बोरों को वहीं छोड़कर उसका एक पुर्ज़ा सबसे निकट के थाने में ले जाये। इकथियांदर के लिए स्थिति बिगड़ रही थी। इसपर तुर्रा यह कि पानी में जोंकें थीं। उनके झुण्ड के झुण्ड उसके शरीर से चिपट जाते और उसके लिए उन्हें उतारना मुश्किल हो जाता। लेकिन यह भी बड़े ध्यान से करने की ज़रूरत थी ताकि पानी में हलचल न पैदा हो और सिपाही का ध्यान आकृष्ट न हो।

आधे घण्टे में किसान लौट आया। उसने सड़क की दिशा में हाथ हिलाकर इशारा किया, फिर बोरे उठाकर खच्चर पर लादे और वहां से चलता बना। पांच मिनट के बाद तीन सिपाही आये, दो ने सिर पर एक हल्की-सी नाव उठा रखी थी, जबकि तीसरा चप्पू और हुक लगा बांस उठाये हुए था।

नाव को पानी पर उतारा गया, दो सिपाही उसमें बैठ गये और लाश की खोज शुरू हुई। इकथियांदर को खोज का डर नहीं था। उसके लिए यह एक खेल के समान था—वह एक जगह से दूसरी जगह तैरकर निकल जाता। पुल के आस-पास हुक लगे बांस के साथ ख़ूब अच्छी तरह से खोज की गयी, लेकिन बेसूद।

जिस सिपाही ने इकथियांदर को पकड़ा था वह हैरान-परेशान हो रहा था। इससे भी इकथियांदर का मनबहलाव हो रहा था—लेकिन ज़्यादा वक़्त के लिए नहीं। सिपाहियों ने हुकवाले बांस के साथ मिट्टी के बादल तल पर

से उठा दिये थे। पानी इतना ज़्यादा गंदला हो गया था कि इकथियांदर के लिए गज़ भर आगे देखना कठिन हो रहा था, और यह बड़े ख़तरेवाली बात थी। और इससे भी बुरी बात यह थी कि उसके लिए गंदले पानी में सांस लेना कठिन हो रहा था, जहां पहले ही आक्सीजन कम थी।

उसके लिए सांस ले पाना अधिकाधिक कठिन हो रहा था, उसके गलफड़ों में जलन और तेज़ हो गयी थी, यहां तक कि वह और बरदाश्त नहीं कर सकता था। वह कराह उठा: उसके मुंह से कुछेक बुलबुले निकले। वह क्या कर सकता था? उसे सतह पर आना ही था, इसके सिवा कोई चारा नहीं था। कैसा भी जोखम क्यों न उठाना पड़े उसे सतह पर आना था। वे उसे बेशक पकड़ लेंगे, शायद उसे पीटें भी और जेल में डाल दें। उसे कोई परवाह नहीं थी। इकथियांदर लड़खड़ाता हुआ किनारे की ओर गया और उसने पानी में से सिर निकाला।

एक सिपाही इकथियांदर को देखते ही चीख़ने लगा, वह नाव में से कूदकर सीधा तैरता हुआ किनारे की ओर जाने लगा। उसका साथी नाव के पेंदे में पेट के बल लेट गया और बार-बार बोल रहा था:

"भगवान, रक्षा करो!"

किनारे पर खड़े दोनों सिपाही प्रार्थना कर रहे थे, डर के कारण उनके चेहरे ज़र्द पड़ गये थे और सिर से पांव तक कांपते हुए वे एक दूसरे के पीछे छिपने की कोशिश कर रहे थे।

इकथियांदर को इसकी आशा नहीं थी। कुछ देर तक वह उनके भय का कारण नहीं समझ पाया। फिर उसे याद आया कि स्पेनी लोग बड़े ही धार्मिक वृत्ति के और अंधविश्वासी होते हैं। शायद सिपाही समझ बैठे थे कि वह कोई प्रेत है। अगर यह बात है तो वह उन्हें थोड़ा और डरायेगा। उसने दांत दिखाये, आंखें ऊपर चढ़ायीं, ख़ौफ़नाक आवाज़ में चिल्लाया, धीरे-धीरे तट की ओर गया और

वहां से सड़क पर आ गया और नपे-तुले क़दमों से आगे जाने लगा।

उसे रोकने की किसी भी सिपाही ने कोशिश नहीं की। उनकी कर्त्तव्य-भावना उनके अंधविश्वासी डर के सामने पछाड़ खाकर गिर चुकी थी।

यही है 'समुद्री दैत्य'!

पेद्रो ज़ुरीता की मां—दोलोरेस—मोटी, पिलपिली देहवाली बूढ़ी औरत थी, कांटे की शक्ल की नाक, आगे को बढ़ी हुई ठुड्डी और घनी मूंछें थीं जिनसे उसका चेहरा विचित्र-सा और अनाकर्षक लगता था। यह "आभूषण" स्त्री जाति में विरल होने के कारण उसका नाम लोगों ने 'मुछैल दोलोरेस' रखा था, और इसी नाम से स्थानीय लोग उसे जानते थे।

जब पेद्रो अपनी युवा वधु को उससे मिलाने लाया तो वह लड़की को सिर से पांव तक बड़ी अभद्रता से देखती रही। दोलोरेस की आंखें केवल दोष ही देख सकती थीं। लड़की के सौंदर्य से वह पराभूत हो गयी थी लेकिन उसने ज़ाहिर नहीं होने दिया, और बाद में रसोईघर में वह सोच-सोचकर इसी नतीजे पर पहुंची कि गुत्तिएरे की ख़ूबसूरती ही उसका सबसे बड़ा दोष है।

"देखने में अच्छी है! ज़रा ज़रूरत से ज़्यादा अच्छी है!"

जब मां और बेटा अकेले रह गये तो वह सिर हिलाकर बोली, और फिर ठण्डी सांस भरकर कहने लगी: "इतनी सुन्दर पत्नी से तो परेशानियां ही तेरे हाथ लगेंगी। अच्छा होता अगर किसी स्पेनी लड़की से ब्याह किया होता।" फिर थोड़ा देर तक चुप रहने के बाद बोली: "नकचढ़ी भी है। उसके हाथ इतने नाज़ुक हैं कि घर में तिनका तोड़कर दोहरा नहीं करेगी।"

"हम इसे सीधे रास्ते पर ले आयेंगे," पेद्रो ने कहा और फिर अपना बही-खाता देखने में लग गया।

दोलोरेस ने जम्भाई ली और इस ख़्याल से कि बेटे के काम में बाधा न पड़े वह सायंकाल की शीतलता का रस लेने के लिए बाग़ में निकल आयी। चांद की रोशनी में बैठकर दिवा-स्वप्न देखना उसे बहुत भाता था।

लाजवन्ती की भीनी भीनी सुगन्ध बाग़ में व्याप रही थी। चांदनी में श्वेत लिली के फूल झिलमिला रहे थे। लारेल और फ़िकुस के पत्ते हौले-हौले हिल रहे थे।

दोलोरेस हिना के पौधों के बीच बैठ गयी और शीघ्र ही अपने दिवा-स्वप्नों में खो गयी। इन दिवा-स्वप्नों में कहीं तो वह आस-पास ज़मीन का टुकड़ा ख़रीदकर वहां बढ़िया ऊनवाली भेड़ें पाल रही थी और पशुओं के लिए नया बाड़ा बनवा रही थी।

"तुम्हें मौत खाये!" बुढ़िया ने गाल पर ज़ोर से हाथ मारते हुए चिल्लाकर कहा। "ये मच्छर चैन से बैठने ही नहीं देते।"

आकाश में बादल घिरने लगे थे जिससे बाग़ में अन्धेरा छाने लगा था। अन्धियारे बादलों की पृष्ठभूमि में क्षितिज पर नीले रंग की पट्टी—पाराना नगर की बत्तियों की रोशनी—नज़र आ रही थी।

सहसा पत्थर की नीची बाड़ के पीछे उसे एक आदमी का सिर नज़र आया। हथकड़ी लगे दो हाथ उठे और कोई आदमी बड़ी सावधानी से बाड़ पार करके अन्दर आ गया।

डर के मारे बुढ़िया के दांत कटकटाने लगे। कोई क़ैदी जेल से भागकर उसके बाग़ में घुस आया है! वह ज़ोर से चिल्लाना चाहती थी लेकिन उसके मुंह से बोल नहीं फूटा, चाहती थी कि उठकर भाग जाये, लेकिन टांगों ने जवाब दे दिया था। वह जड़वत् अजनबी को देखे जा रही थी।

इस बीच अजनबी बड़ी सावधानी से झाड़ियों के बीच से चलता हुआ घर तक जा पहुंचा था और चुपके-चुपके एक खिड़की से दूसरी खिड़की में जाकर अन्दर झांकने लगा था।

"गुत्तिएरे," बुढ़िया ने उसे धीमी आवाज़ में कहते सुना। या शायद उससे भूल हुई थी?

"ऐसी है तुम्हारी सुन्दरी!" बुढ़िया ने मन ही मन कहा। "ऐसे लोगों के साथ इसकी सोहबत है। अगर यह मुझे और पेद्रो को एक दिन मार डाले, घर का सामान लूटकर इस क़ैदी के साथ भाग जाये तो इसमें कोई अचम्भे की बात नहीं होगी।"

गुत्तिएरे के प्रति बुढ़िया के दिल में गहरी नफ़रत और बदख़्वाही की भावना उठी। इससे उसके बदन में फिर से स्फूर्ति आ गयी। वह झट से उठ खड़ी हुई और भागकर घर की ओर जाने लगी।

"जल्दी करो," दोलोरेस ने अपने बेटे से फुसफुसाकर कहा, "हमारे बाग़ में कोई क़ैदी घुस आया है और गुत्तिएरे को पुकार रहा है।"

पेद्रो भागकर बाहर आया मानो घर को आग लग गयी हो, बाग़ की पथिका पर पड़ा फावड़ा उठा लिया और भागकर मकान के पीछे जाने लगा।

दीवार के पास एक अजनबी खड़ा खिड़की में से झांक रहा था, उसने मुचड़े हुए कपड़े पहन रखे थे और उसके हाथों में हथकड़ी पड़ी थी।

"ख़ुदा तुझे ग़ारत करे!" जुरीता बड़बड़ाया और फावड़ा उठाकर सीधा उसके सिर पर दे मारा।

आदमी वहीं ढेर हो गया।

"इसका काम तो तमाम हुआ," जुरीता ने धीमी आवाज़ में कहा।

"हां, ज़रूर हुआ है," दोलोरेस ने, जो भागती हुई अपने बेटे के पास पहुंच गयी थी, इस अन्दाज़ से कहा, मानो उसके बेटे ने किसी बिच्छू को कुचल दिया हो।

जुरीता ने अपनी मां की ओर देखा।

"इसे फेंकें कहां?"

"तालाब में," बुढ़िया ने इशारा करते हुए कहा, "वह काफ़ी गहरा है।"

"लाश सतह पर तैरने लगेगी।"

"हम इसके साथ वज़न बांध देंगे। ज़रा ठहरो।"

दोलोरेस भागती हुई घर के अन्दर गयी और कोई ख़ाली बोरा ढूंढ़ने लगी, जिसमें लाश को डाला जा सके। पर उसी रोज़ सुबह उसने अपने सारे बोरे गेहूं से भरकर पन-चक्की में भेज दिये थे। इसलिए वह एक सिरहाने का ग़िलाफ़ और रस्सी उठा लायी।

"बोरे नहीं हैं," उसने बेटे से कहा। "लो, गिलाफ़ में कुछेक पत्थर डाल दो और उसे हथकड़ी के साथ बांध दो।"

जुरीता ने स्वीकृति में सिर हिलाया, देह को पीठ पर रखा और उसे बाग़ के पीछे एक छोटे-से तालाब के पास ले गया।

"कपड़ों पर ख़ून न लगने दो," तकिये का ग़िलाफ़ और रस्सी हाथ में पकड़े, पीछे-पीछे आती हुई दोलोरेस ने अपने बेटे से फुसफुसाकर कहा।

"तुम धो देना," पेद्रो ने जवाब दिया, पर साथ ही उसने आदमी का सिर नीचे की ओर कर दिया ताकि ख़ून ज़मीन पर गिरे।

तालाब के पास जुरीता ने बड़ी जल्दी गिलाफ़ में पत्थर भर दिये, उसे युवक के हाथों के साथ कसकर बांध दिया और देह को पानी में झोंक दिया।

"अब मुझे कपड़े बदल लेने चाहिएं।" पेद्रो ने आकाश की ओर देखा। "पानी बरसने वाला है। सुबह होने तक घास पर ख़ून का निशान तक नहीं रहेगा, सब धुल जायेगा।"

"और तालाब? क्या तालाब का पानी ख़ून से लाल नहीं हो जायेगा?" दोलोरेस ने पूछा।

"नहीं, बहते पानी में ऐसा नहीं होता।"

"भाड़ में जाये!" जुरीता ने ग़ुर्राकर कहा और मुट्ठी भींचकर घर की ओर इशारा किया।

"ऐसी है तुम्हारी सुन्दरी," घर की ओर बेटे के पीछे-पीछे जाते हुए बुढ़िया ने कुनमुनाकर कहा।

गुत्तिएरे को मकान की ऊपरवाली मंज़िल में एक कमरा दिया गया था। उस रात कुछ तो घुटन और मच्छरों के कारण और कुछ इस कारण कि उसके मन में तरह-तरह के अप्रिय विचार उठ रहे थे, गुत्तिएरे सो नहीं पायी।

वह इकथियांदर को, उसकी मौत को भूल नहीं पायी। अपने पति से उसे तनिक भी प्रेम नहीं था। अपनी सास से उसे घृणा थी, तिस पर भी वह उनके साथ एक ही घर में रह रही थी।

उस रात गुत्तिएरे को लगा जैसे उसे इकथियांदर की आवाज़ सुनाई दी है। उसे लगा जैसे बाग़ की ओर से दबी दबी सी आवाज़ में वह उसे पुकार रहा है। उसने कान लगाकर सुना पर कुछ भी सुनाई नहीं दिया। पौ फटने से पहले उसने निश्चय किया कि आज रात वह सो नहीं पायेगी। वह उठकर बाग़ में चली आयी।

सूर्य अभी नहीं निकला था। बाग़ पर पौ फटने से पहले का

धुन्धलका छाया था। बादल छितर गये थे, जिससे घास तथा पेड़ों पर ओस की बूंदें रही थीं। हल्का-सा गाउन पहने गुत्तिएरे नंगे पांव घास पर चल रही थी। सहसा वह रुक गयी। उसकी खिड़की के सामने, पथिका की बालू पर ख़ून की बूंदें थीं। नज़दीक ही ख़ून से सना एक फावड़ा पड़ा था।

रात में यहां कोई जुर्म किया गया था। या इन ख़ून के निशानों का कोई और कारण था?

आप ही आप गुत्तिएरे ख़ून के निशानों के साथ-साथ चलती हुई तालाब तक जा पहुंची।

"क्या इसी तालाब में तो जुर्म का भेद नहीं छिपा है?" उसने मन ही मन कहा और सहमकर तालाब के हरे-हरे जल में झांक-झांककर देखने लगी।

नीचे, उस हरियाली-मायल पानी के नीचे उसे इकथियांदर का चेहरा नज़र आया। कनपटी के नज़दीक ज़ख़्म था। चेहरे के भाव में आनन्द की पुट लिये हुए यातना की गहरी छाप थी।

गुत्तिएरे की आंखें जलमग्न इकथियांदर के चेहरे पर से हटाये नहीं हट रही थीं। क्या वह पागल तो नहीं हो गयी थी?

गुत्तिएरे चाहती थी कि वहां से भाग जाये, लेकिन न ही वह भाग पा रही थी और न ही इकथियांदर के चेहरे पर से अपनी आंखें हटा पा रही थी।

इस बीच इकथियांदर का चेहरा धीरे-धीरे ऊपर आने लगा, फिर पानी की सतह पर एक हल्की-सी लहर उठी और इकथियांदर का चेहरा पानी में से बाहर निकल आया। इकथियांदर ने अपने हथकड़ी लगे हाथ गुत्तिएरे की ओर बढ़ा दिये और क्लान्त-सी मुस्कराहट के साथ बोला:

"गुत्तिएरे! प्यारी! आख़िर..." लेकिन वह वाक्य समाप्त नहीं कर पाया।

गुत्तिएरे अपना सिर पकड़कर चिल्ला रही थी:

"दूर हो जाओ, दूर हो जाओ, अभागे प्रेत! मैं जानती हूं

कि तुम मर चुके हो। तुम मेरे सामने क्यों प्रगट हुए हो?"

"नहीं, नहीं, गुत्तिएरे, मैं मरा नहीं हूं," प्रेत ने जल्दी से जवाब दिया, "मैं डूबा नहीं था। मुझे क्षमा कर दो... मेरे बारे में तुम कुछेक बातों को नहीं जानती हो... मैंने तुम्हें बताया क्यों नहीं... जाओ नहीं, गुत्तिएरे, मेरी बात सुनो। मैं ज़िन्दा हूं, मेरे हाथों को छूकर देखो..."

इकथियांदर ने अपने हाथ गुत्तिएरे की ओर बढ़ा दिये। गुत्तिएरे उसकी ओर एकटक देखे जा रही थी।

"डरो नहीं, मैं ज़िन्दा हूं... मैं पानी के नीचे रह सकता हूं। मैं और लोगों की तरह नहीं हूं। उस रोज़ जब मैं समुद्र में कूद गया था तो मैं डूबा नहीं था। मैं इसलिए कूदा था कि ज़मीन पर मेरे लिए सांस लेना कठिन हो रहा था।"

इकथियांदर एक ओर को भूल गया, फिर पहले की ही तरह जल्दी से और असम्बद्ध रूप से बोलने लगा:

"मैं तुझे ढूंढ़ता रहा, गुत्तिएरे। कल रात जब मैं तुम्हारी खिड़की के बाहर खड़ा था तो तुम्हारे पति ने मेरे सिर पर प्रहार किया और मुझे तालाब में फेंक दिया। पानी के अन्दर मुझे होश आया। मैंने पत्थरों से भरे उस ग़िलाफ़ से तो पिण्ड छुड़ा लिया है, लेकिन इनसे," इकथियांदर ने हथकड़ियां दिखाते हुए कहा, "छुटकारा नहीं पा सका..."

गुत्तिएरे को अब क़रीब-क़रीब यक़ीन होने लगा था।

"लेकिन तुम्हारे हाथों पर हथकड़ी क्यों लगी है?"

"इसके बारे में मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा। तुम मेरे साथ चलो, गुत्तिएरे। मैं तुम्हें अपने पिताजी के घर ले चलूंगा। वहां हमें कोई भी नहीं देख पायेगा... और हम एक साथ रहेंगे... मेरे हाथों को छूकर देखो, गुत्तिएरे। ओलसन कहता था लोग मुझे 'समुद्री दैत्य' कहते हैं, लेकिन मैं तो इनसान हूं। तुम मुझसे डर क्यों रही हो?"

सिर से पांव तक मिट्टी और कीच से लथपथ इकथियांदर तालाब में से निकल आया और थका-मांदा घास पर पड़ा रहा।

गुत्तिएरे उसपर झुक गयी और उसने उसका हाथ थाम लिया।

"मेरा बेचारा लड़का," गुत्तिएरे ने कहा।

"कैसा प्रेम-मिलन है," साहसा किसी की व्यंग भरी आवाज़ सुनायी दी।

उन्होंने घूम कर देखा, नज़दीक ही ज़ुरीता खड़ा था।

गुत्तिएरे की ही तरह ज़ुरीता भी रात भर सो नहीं पाया था। गुत्तिएरे की चीख़ सुनकर वह बाग़ में चला आया था और उसके बाद उनका सारा वार्तालाप सुनता रहा था। जब पेद्रो ने देखा कि जिस 'समुद्री दैत्य' को पकड़ने की वह इतनी मुद्दत से कोशिश करता रहा था, वह ऐन उसके सामने मौजूद था तो उसके आनन्द की सीमा न रही और उसने निश्चय किया कि उसी वक़्त वह इकथियांदर को अपने 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर ले जायेगा। लेकिन फिर उसके मन में दूसरे विचार उठे।

"मैं सोचता हूं कि तुम गुत्तिएरे को डाक्टर साल्वातोर के घर नहीं ले जा पाओगे। तुम्हें मालूम है, वह मेरी पत्नी है। इसके अलावा पुलिस तुम्हारी तलाश कर रही है।"

"लेकिन मैंने कोई जुर्म नहीं किया है," युवक ने चिल्लाकर कहा।

"जो लोग जुर्म नहीं करते उन्हें पुलिस इतने ख़ूबसूरत 'कंगने' भेंट नहीं करती। चूंकि अब तुम मेरे हाथ में हो, इसलिए मेरा फ़र्ज़ हो जाता है कि मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूं।"

"क्या सचमुच तुम ऐसा करोगे?" गुत्तिएरे ने अपने पति से गुस्से से पूछा।

"मेरा फ़र्ज़ तो यही कहता है," अपने कन्धे बिचकाते हुए पेद्रो ने कहा।

"बड़ी अच्छी बात होगी, अगर क़ैदी को खुला छोड़ दिया जाये," दोलोरेस ने, जो उसी समय घटना-स्थल पर पहुंच गयी थी, बीच में बोलते हुए कहा। "और किसलिये?

पराये बाग़ में घुस आने के लिए, और परायी बीवी को भगा ले जाने की टोह लगाने के लिए?"

गुत्तिएरे अपने पति के पास गयी, उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और बड़े कोमल स्वर में बोली:

"कृपया इसे जाने दीजिये। मैंने आपके प्रति कोई अपराध नहीं किया है।"

दोलोरेस ने ज़ोर से सिर हिलाया, इस डर से कि उसका बेटा कहीं अपनी बीवी की बातों में न आ जाये।

"उसकी बात नहीं सुनो, पेद्रो!" उसने चिल्लाकर कहा।

"मैं एक औरत की फ़रमाइश को नहीं टाल सकता," ज़ुरीता ने अनुग्रहपूर्ण आवाज़ में कहा, "जैसा तुम चाहोगी, मैं वैसा ही करूंगा।"

"आदी होने की देर है कि उसकी चूल से बंध गया है," बुढ़िया ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"ज़रा ठहरो, तुम्हारी हथकड़ियां काट डालेंगे, तुम्हें अच्छे कपड़े पहना कर 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर ले चलेंगे। जब हम रिओ-दि-ला-प्लाता में पहुंच जायें तो जहां तुम्हारा मन आये समुद्र में कूद जाना। लेकिन मैं एक शर्त पर तुम्हें जाने दूंगा: तुम्हें गुत्तिएरे को भूल जाना होगा। गुत्तिएरे, तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा। मेरे साथ तुम ज़्यादा हिफ़ाज़त से रहोगी।"

"मैं तुम्हारे बारे में जो कुछ सोचती थी उससे तुम कहीं अच्छे निकले," गुत्तिएरे ने सच्चे दिल से कहा।

ज़ुरीता ने बड़े आत्म-विश्वास के साथ अपनी मूंछें ऐंठीं और झुककर अपनी पत्नी का अभिवादन किया।

दोलोरेस, जो अपने बेटे की रग-रग से वाक़िफ़ थी, समझ गयी कि वह कोई कुयोजना बना रहा है। लेकिन उसके खेल में हाथ बंटाने के लिए वह अभी भी बड़बड़ाती जा रही थी:

"बीवी ने जादू डाल रखा है, अब चाटो उसके तलुवे।"

पूरी रफ़्तार से

"साल्वातोर कल लौट रहा है। हमें बहुत-सी बातों पर विचार करना था, लेकिन ऐन उसी वक़्त मुझे बुख़ार ने जकड़ लिया और मैं तुमसे मिल नहीं पाया," बाल्तासार की दूकान में क्रिस्टो अपने भाई से कह रहा था। "अब कान खोलकर सुनो, और बीच में मत बोलना, ताकि मुझे कोई भी बात भूल न जाये।"

बीमारी के कारण क्रिस्टो दुबला हो रहा था, वह अपने विचारों को तरतीब देता हुआ थोड़ी देर के लिए चुप रहा, फिर बोला:

"हमने ज़ुरीता के लिए बहुत कुछ किया है, भैया। उसके पास बहुत धन है, हम दोनों से ज़्यादा, लेकिन वह और चाहता है। वह 'समुद्री दैत्य' को पकड़ना चाहता है।"

बाल्तासार ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला।

"ठहरो, भैया, बीच में मत बोलो, वरना मैं कोई बात भूल जाऊंगा। ज़ुरीता चाहता है कि 'समुद्री दैत्य' उसके

लिए पसीना बहाये। और क्या तुम जानते हो वह 'समुद्री दैत्य' क्या बला है? वह तो पूरा ख़ज़ाना है, ख़ज़ाना। सोने की खान है। 'समुद्री दैत्य' समुद्र के तल पर से जितने चाहो मोती चुन सकता है। लेकिन इतना ही नहीं। समुद्र के तल पर कितने ही ख़ज़ाने डूबे पड़े हैं, वह उन्हें हमारे लिए निकाल सकता है। मैं कहता हूं हमारे लिए, ज़ुरीता के लिए नहीं, हरगिज़ नहीं। क्या तुम्हें मालूम है, भैया, कि इकथियांदर गुत्तिएरे से प्रेम करता है?"

बाल्तासार ने फिर कुछ कहने के लिए मुंह खोला लेकिन क्रिस्टो ने उसे रोक दिया।

"चुप रहो और मेरी बात सुनो। अगर लोग बात काटते रहें तो मैं कुछ कह नहीं सकता। हां, इकथियांदर गुत्तिएरे से प्रेम करता है। मेरी आंख से कोई भी बात छिपी नहीं रहती। जब मैंने इस बात का भेद पाया तो मैंने मन ही मन कहा: 'यह तो बुरी बात नहीं है। इस प्रेम पर ज़रा और रंग चढ़ने दो।' वह ज़ुरीता से कहीं अच्छा पति—और दामाद—बनेगा। और गुत्तिएरे भी इकथियांदर से प्रेम करती है। मैं उनका पीछा करता रहा हूं, इकथियांदर के रास्ते में बिना किसी क़िस्म की रुकावट डाले। 'इन्हें मिलने दो, जितनी बार मिलना चाहते हैं, मिलने दो,' मैंने सोचा।"

बाल्तासार ने ठण्डी सांस भरी लेकिन कुछ कहने की चेष्टा नहीं की।

"इसी पर बस नहीं है, भैया। आगे सुनो। मैं तुम्हें कुछ ऐसी घटनाओं की याद दिलाना चाहता हूं, जो बहुत साल पहले घटी थीं। तुम्हें याद होगा, लगभग बीस साल पहले की बात है, मैं तुम्हारी बीवी को साथ लेकर उसके मायके से लौट रहा था। हम उसकी मां को दफ़नाने पहाड़ों में गये थे। रास्ते में तुम्हारी पत्नी एक बच्चे को जन्म मर गयी थी। बच्चा भी मर गया। उस वक़्त मैंने तुम्हें सारी बात नहीं बतायी थी। मैं नहीं चाहता था कि तुम्हें बहुत

क्लेश पहुंचे। सारी कहानी इस तरह है। यहां आते हुए रास्ते में तुम्हारी पत्नी की तो सचमुच मृत्यु हो गयी थी, लेकिन बच्चा ज़िन्दा ही रहा, हालांकि दुबला बहुत था। यह घटना एक छोटे-से इण्डियन गांव में घटी थी। एक बुढ़िया ने मुझे बताया कि कुछ ही दूर साल्वातोर नाम का एक देवता रहता है, जो बड़े-बड़े चमत्कार करता है..."

बाल्तासार दत्तचित्त होकर सुनने लगा।

"उसने मुझे सलाह दी कि मैं बच्चे को साल्वातोर के पास ले जाऊं। उसने कहा कि वह बच्चे को चंगा कर देगा। मैंने वैसा ही किया। साल्वातोर ने बालक को—वह बालक ही था—ले लिया, अपना सिर हिलाया और कहा: 'इसे बचा पाना बहुत मुश्किल है।' लेकिन उसने फिर भी उसे दाखिल कर लिया। मैं अन्धेरा होने तक वहीं इन्तज़ार करता रहा। जब रात हो गयी तो एक नीग्रो ने आकर मुझे बताया कि बच्चा मर गया है। फिर मैं वहां से चला आया..."

"इस तरह," कुछ देर रुकने के बाद क्रिस्टो कहने लगा, "साल्वातोर ने नीग्रो के मुंह से कहलवा भेजा था कि बच्चा मर गया है। तब मैंने नवजात बच्चे के शरीर पर जन्म का एक चिन्ह देखा था। न जाने कैसे, वह मुझे याद था, उसका आकार, उसका रंग, सब कुछ।"

क्रिस्टो फिर थोड़ी देर के लिए चुप रहा और उसके बाद अपनी कहानी कहने लगा:

"कुछ मुद्दत हुई इकथियांदर एक दिन घर लौटा तो उसके गले पर ज़ख़्म था। जब मैं उसकी पट्टी कर रहा था तो उसके चोइंटे उठाने पर मुझे जन्म-चिन्ह नज़र आया, बिल्कुल वैसा ही जैसा तुम्हारे बेटे के जिस्म पर था।"

उत्तेजना के कारण बाल्तासार की आंखें खुली की खुली रह गयीं:

"तुम सोचते हो, इकथियांदर मेरा बेटा है?"

"चुप रहो, भैया, सुनते जाओ। हां, मैं बिल्कुल ऐसा ही सोचता हूं। साल्वातोर ने मेरे सामने झूठ बोला था।

तुम्हारा बेटा मरा नहीं था। साल्वातोर ने उसे 'समुद्री दैत्य' बना दिया है।"

"उंह!" बाल्तासार ने चिल्लाकर कहा। वह आपे से बाहर हो रहा था। "उसकी यह हिम्मत! मैं अपने इन हाथों से उसका गला घोंट दूंगा!"

"चुप रहो। साल्वातोर तुमसे ज़्यादा ताक़तवर है। फिर, मुझसे भूल भी तो हो सकती है। बीस साल बीत चुके हैं। किसी दूसरे व्यक्ति के भी ऐन उसी जगह पर जन्म-चिन्ह हो सकता है। इकथियांदर तुम्हारा बेटा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। तुम्हें अपना दांव सोच-समझकर खेलना चाहिए। तुम साल्वातोर के पास जाओ और उससे कहो कि इकथियांदर तुम्हारा बेटा है। मैं तुम्हारा गवाह हूंगा। तुम कहो कि तुम्हारा बेटा तुम्हें लौटाया जाये। अगर वह न माने तो तुम कहना कि तुम उसपर इस बात का मुक़दमा चलाओगे कि वह बच्चों को पंगु बनाता है। इससे वह बेहद डर जायेगा। अगर उसने हठ किया तो तुम मामले को अदालत में ले जाना। अगर अदालत ने हमारे हक़ में फ़ैसला नहीं दिया तो इकथियांदर गुत्तिएरे से शादी कर लेगा, और सब बात पटरी पर आ जायेगी। आखिर गुत्तिएरे तुम्हारी गोद ली बेटी ही तो है..."

बाल्तासार स्टूल पर से उठ खड़ा हुआ और दूकान में चक्कर लगाने लगा, उसके पांव केकड़ों और सीपों से बार-बार टकरा रहे थे।

"मेरा बेटा! मेरा बेटा! हाय, कैसी मुसीबत है!"

"मुसीबत क्यों?" हैरान होकर क्रिस्टो ने पूछा।

"मैंने तुम्हारी बात सुनी है, अब तुम मेरी बात सुनो। जब तुम बीमार पड़े थे तो गुत्तिएरे की शादी पेद्रो ज़ुरीता से कर दी गयी थी।"

ख़बर सुनते ही क्रिस्टो के पांव लड़खड़ा गये।

"और बेचारा इकथियांदर, मेरा बेटा," बाल्तासार ने सिर लटकाकर कहा, "इस वक़्त ज़ुरीता के चंगुल में है।"

"नामुमकिन है," क्रिस्टो बोला।

"हां, इकथियांदर 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर है। आज सुबह ज़ुरीता मुझसे मिलने आया था। वह हंसता और हमें गालियां देता रहा। कहने लगा कि हम उसे धोखा देते रहे थे। ज़रा सोचो तो, उसने इकथियांदर को अपने आप, हमारी मदद के बिना पकड़ लिया। वह हमें एक फूटी कौड़ी भी अदा नहीं करेगा। पर यों भी मैं उससे कुछ नहीं लेता। मैं अपने सगे बेटे को तो नहीं बेचूंगा।"

बाल्तासार व्याकुलता में दूकान के अन्दर घूम रहा था। क्रिस्टो ने उसकी ओर असम्मति की दृष्टि से देखा। यह वक़्त था दृढ़ता से काम करने का। लेकिन इस तरह तो बाल्तासार मामले को चौपट कर देगा। बाल्तासार इकथियांदर का बाप था, इसमें स्वयं क्रिस्टो को बहुत विश्वास नहीं था। यह सच है कि उसने नवजात बच्चे के शरीर पर वह जन्म-चिन्ह देखा था। लेकिन क्या उसे निर्विवाद प्रमाण माना जा सकता है? ऐसा ही जन्म-चिन्ह इकथियांदर की गर्दन पर देखकर क्रिस्टो ने इससे लाभ उठाने का निश्चय किया। उसे कैसे मालूम हो सकता था कि बाल्तासार पागलों की तरह व्यवहार करने लगेगा? और फिर बाल्तासार के मुंह से उसने जो ख़बर सुनी थी, उससे वह काफ़ी घबरा गया था।

"अब रोने-बिलखने का वक़्त नहीं है। हमें काम करना होगा। कल तड़के ही साल्वातोर आ रहा है। अब हिम्मत बांधो और मेरी बात सुनो। पौ फटने के समय तुम बांध के पास मेरा इन्तज़ार करना। हमें इकथियांदर को हर हालत में बचाना है। अब ध्यान रखना, साल्वातोर से यह नहीं कहना कि तुम इकथियांदर के बाप हो। ज़ुरीता कहां जा रहा है?"

"उसने बताया तो नहीं, लेकिन मैं सोचता हूं कि उत्तर की ओर जा रहा है। मुद्दत से ही उसने निश्चय कर रखा था कि वह पनामा के तट पर जायेगा।"

क्रिस्टो ने सम्मति में सिर हिलाया।

"याद रखना, पौ फटते ही बांध पर पहुंच जाना, और वहीं रहना, भले ही तुम्हें रात तक इन्तज़ार क्यों न करना पड़े।"

क्रिस्टो जल्दी से घर चला गया। रात भर वह साल्वातोर के साथ अपनी मुलाक़ात के बारे में सोचता रहा। और कोई रास्ता नहीं था—साल्वातोर के सामने अपनी सफ़ाई देने की ज़रूरत थी।

प्रभात के समय साल्वातोर आ गया। अपने मालिक का अभिवादन करते समय क्रिस्टो के चेहरे पर क्षुब्धता और स्वामीभक्ति का भाव झलक रहा था।

"हुज़ूर, हम पर मुसीबत आ पड़ी है," उसने कहा, "मैंने इकथियांदर को सावधान कर दिया था कि खाड़ी में न जाया करे..."

"हुआ क्या?" साल्वातोर ने अधीरता से पूछा।

"उसे पकड़कर किसी जहाज़ में ले गये हैं। मैं..."

साल्वातोर ने ज़ोर से क्रिस्टो को कन्धे से पकड़ लिया और घूर-घूरकर उसकी आंखों में देखने लगा। यह स्थिति थोड़ी देर तक ही रही लेकिन इस बीच उस कड़ी नज़र के नीचे क्रिस्टो का चेहरा पीला पड़ गया। तब साल्वातोर के तेवर चढ़ गये, वह कुछ बड़बड़ाया और क्रिस्टो के कन्धे पर अपना हाथ ढीला करते हुए बोला:

"बाद में पूरा ब्योरा देकर मुझे बताना।"

फिर उसने एक नीग्रो को बुलाया, उसे कुछेक शब्द एक ऐसी भाषा में कहे जिसे क्रिस्टो नहीं जानता था, और फिर इण्डियन की तरफ़ मुख़ातिब हुआ।

"मेरे साथ आओ!" साल्वातोर ने हुक्म दिया।

सफ़र के बाद बिना आराम किये या कपड़े तक बदले, साल्वातोर लम्बे डग भरता हुआ घर में से निकलकर सीधा बाग़ में जा पहुंचा। क्रिस्टो के लिए उसके साथ-साथ चलना

कठिन हो रहा था। तीसरी दीवार के पास पहुंचने पर दो नीग्रो भागकर उनसे जा मिले।

"हुज़ूर, मैं तो दिन-रात इकथियांदर की चौकीदारी करता रहा, मालिक का वफ़ादार कुत्ता क्या करेगा," हांफता हुआ क्रिस्टो कह रहा था। "मैं सारा वक़्त उसके साथ रहता था..." लेकिन साल्वातोर उसकी बात नहीं सुन रहा था। तालाब के पास खड़ा साल्वातोर अधीरता से पैर पटक रहा था जबकि तालाब में खोले गये जल-द्वारों में से पानी बह-बहकर निकल रहा था।

"मेरे साथ आओ," साल्वातोर ने फिर हुक्म दिया और ज़मीन के नीचे जानेवाली सीढ़ियों से उतरने लगा। क्रिस्टो और दोनों नीग्रो डाक्टर के पीछे-पीछे उतरते हुए अन्धेरे में जा पहुंचे। साल्वातोर तेज़ी से दो-दो सीढ़ियां उतर रहा था, प्रकटत: वह भूमिगत रास्तों के जाल से भली भांति परिचित था।

सबसे निचले चबूतरे पर पहुंचकर साल्वातोर ने पहले की तरह बटन दबाकर बिजली नहीं जलायी, बल्कि क्षण भर टटोलने के बाद अपनी दायीं ओर का एक दरवाज़ा खोला और एक अन्धियारे गलियारे में से तेज़-तेज़ चलकर जाने लगा। वहां पर सीढ़ियां नहीं थीं और घुप अन्धेरा होने के बावजूद साल्वातोर बड़ी तेज़ी से क़दम बढ़ाता जा रहा था।

"मैं यहां किसी फंदे में फंस जाऊंगा और सीधा किसी कुएं में जा गिरूंगा," क्रिस्टो सोच रहा था और तेज़ी से साल्वातोर के पीछे-पीछे जा रहा था। वे काफ़ी देर तक चलते रहे। अचानक क्रिस्टो को लगा जैसे फ़र्श क्रमश: ढालुवां होने लगा है। उसे लगा जैसे हल्की-सी पानी की छप-छप सुनाई दी है। यहां उनका सफ़र समाप्त हुआ। साल्वातोर, जो उनसे काफ़ी आगे था, रुक गया और सहसा बिजली की रोशनी जगमगा उठी। क्रिस्टो ने देखा कि वह पानी से भरी एक लम्बी और बड़ी गुफ़ा में खड़ा है जो

अण्डाकार मेहराब की शक्ल की है। आगे चलकर यह मेहराब क्रमश: पानी की सतह से जा मिली थी। पानी में, पत्थर के उस फ़र्श के ऐन किनारे पर, जिसपर वे खड़े थे, उसने एक छोटी-सी पनडुब्बी खड़ी देखी। सभी लोग पनडुब्बी पर चढ़ गये। साल्वातोर ने केबिन की बत्ती जलायी, जबकि एक नीग्रो ने ऊपर का कपाट ज़ोर से बन्द किया और दूसरा नीग्रो इंजन चलाने लगा। क्रिस्टो ने महसूस किया जैसे पनडुब्बी में थर्राहट हुई है, वह धीरे-धीरे मुड़ी, जलमग्न हुई और उसी तरह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। दो-एक मिनट के बाद पनडुब्बी फिर सतह पर आयी। साल्वातोर और क्रिस्टो डेक पर गये। क्रिस्टो पहले कभी भी किसी पनडुब्बी में नहीं चढ़ा था, इसलिए वह बड़ी उत्सुकता से चारों ओर देखने लगा। सागर की छाती पर फिसलती चली जा रही यह पनडुब्बी अच्छे जहाज़निर्माताओं को भी चकित कर देती। यह विचित्र डिज़ाइन की थी और इसमें बहुत शक्तिशाली इंजन लगे थे। यद्यपि इसे पूरी रफ़्तार से नहीं चलाया जा रहा था, फिर भी वह बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ती चली जा रही थी।

"जिन लोगों ने इकथियांदर को पकड़ा है वे किस ओर गये हैं?"

"उत्तर की ओर, तट के साथ-साथ," क्रिस्टो ने कहा, "गुस्ताख़ी माफ़ हो, हुज़ूर, आप मेरे भाई को साथ ले चलें। उसे सावधान कर दिया गया है और वह तट पर इन्तज़ार कर रहा है।"

"किसलिए?"

"इकथियांदर को मोतियों के व्यापारी ज़ुरीता ने पकड़ा है।"

"यह सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" साल्वातोर ने सन्देहपूर्ण आवाज़ में पूछा।

"मैंने अपने भाई को जहाज़ का ब्योरा दिया तो उसे यक़ीन हो गया कि वह पेद्रो ज़ुरीता का 'जेलीफ़िश' जहाज़

ही था। मेरा अन्दाज़ है, मालिक, कि जुरीता इकथियांदर को समुद्र में से मोती निकालने के लिए इस्तेमाल करेगा। मेरे भाई बाल्तासार को आस-पास के वे सभी स्थान मालूम हैं जहां से मोती निकाले जाते हैं। उससे बड़ी सहायता मिलेगी।"

साल्वातोर थोड़ी देर तक सोचता रहा।

"अच्छी बात है, हम तुम्हारे भाई को भी साथ ले लेंगे।" किश्ती तट की ओर मुड़ गयी, जहां बाल्तासार पहले से खड़ा इन्तज़ार कर रहा था। बांध पर खड़ा बाल्तासार भौंहें चढ़ाये उस आदमी की ओर घूरे जा रहा था जिसने उसके बेटे को चुराया और विकृत किया था। परन्तु जब पनडुब्बी तट के निकट पहुंची तो उसने बड़ी विनम्रता से झुककर अभिवादन किया और पानी में से चलता हुआ पनडुब्बी पर सवार हो गया।

"पूरी रफ़्तार से चलो," साल्वातोर ने हुक्म दिया।

साल्वातोर डेक पर खड़ा रहा और दूर दूर तक फैले हुए महासागर में आंखें फाड़-फाड़कर देखता रहा।

विलक्षण क़ैदी

अपने वचनानुसार ज़ुरीता ने इकथियांदर की हथकड़ियां काट डालीं, उसे पहनने के लिए कपड़े दिये और नदी के पास ले गया, जहां उसने इकथियांदर को बालू में गड़ा अपना चश्मा और दस्ताने उठाने की इजाज़त दे दी। पर ज्यों ही वे 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर पहुंचे तो ज़ुरीता के आदेश पर नाविकों ने इकथियांदर को पकड़कर जहाज़ के तलपेट में बन्द कर दिया। ब्वेनस-ऐरीज़ पर ज़ुरीता खाद्य-सामग्री लेने के लिए थोड़ी देर के लिए रुका। अपने सौभाग्य की डींग मारने के लिए वह बाल्तासार से मिलने गया और फिर जहाज़ ने बन्दरगाह में से निकलकर किनारे के साथ-साथ रियो-दि-जानेरो की राह ली। ज़ुरीता का इरादा यह था कि वह उत्तर की दिशा में तट के किनारे-किनारे जाता हुआ सारे दक्षिणी अमेरिका को लांघकर कैरीबियन सागर में मोती निकालना शुरू करेगा।

गुत्तिएरे को उसने कप्तान के केबिन में रखा। उसने उसे

विश्वास दिलाया कि इकथियांदर को रिओ-दि-ला-प्लाता की खाड़ी में छोड़ दिया गया है। परन्तु गुत्तिएरे को शीघ्र ही पता चल गया कि यह सच नहीं था। शाम के वक़्त गुत्तिएरे को तलपेट से हल्की-हल्की कराहने की आवाज़ सुनायी दी जिसे उसने तुरंत ही पहचान लिया। वह केबिन में अकेली थी। जब उसने बाहर निकलने की कोशिश की तो देखा कि दरवाज़ा बन्द था। उसने ज़ोर-ज़ोर से उसपर घूंसे मारे, चिल्लायी लेकिन किसी ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

इकथियांदर का कराहना सुनकर ज़ुरीता गन्दी गालियां बकने लगा, फिर कप्तान के मंच पर से उतरकर वह एक इण्डियन जहाज़ी को साथ लिये अन्धेरे और घुटन भरे तलपेट में गया।

"क्यों चिल्ला रहे हो?" ज़ुरीता ने पूछा।

"मेरा दम घुट रहा है," इकथियांदर की आवाज़ आयी। "मैं पानी के बिना नहीं रह सकता। यहां बहुत घुटन है। मुझे तैरकर चले जाने दो। मैं सुबह तक ज़िन्दा नहीं बचूंगा।"

ज़ुरीता ने कपाट बन्द किया और डेक पर आ गया।

"अगर सचमुच ही इसका दम घुट गया तो?" उसे चिन्ता हुई। उसके मर जाने से ज़ुरीता को कोई लाभ नहीं होगा।

उसने हुक्म दिया कि एक पीपा तलपेट में रख दिया जाये और उसे पानी से भर दिया जाये।

"यह रहा तुम्हारा हमाम," ज़ुरीता ने इकथियांदर से कहा, "इसमें तैर सकते हो। कल मैं तुम्हें समुद्र में तैरने दूंगा।"

इकथियांदर पीपे में उतरा। जहाज़ के इण्डियन नाविक आंखें फाड़-फाड़कर कपाट में से झांक रहे थे। उन्हें अभी तक मालूम नहीं था कि क़ैदी 'समुद्री दैत्य' है।

"भागो यहां से!" ज़ुरीता ने उन्हें धमकाकर कहा।

तैरना तो दूर रहा, इकथियांदर उस पीपे में पूरी तरह

से पांव भी नहीं फैला सकता था। पूरी तरह से उसमें डूब पाने के लिए उसे उकड़ूं बैठना पड़ता था। इसके अलावा पीपे में पहले कभी नमक लगाया हुआ मांस रखा जाता था, इस कारण शीघ्र ही पानी में से बदबू आने लगी थी, जिससे इकथियांदर उसमें पहले से बेहतर महसूस नहीं कर रहा था।

समुद्र पर उस समय स्वच्छ दक्षिण-पूर्वी हवा चल रही थी और जहाज़ को उत्तर की ओर धकेले लिये जा रही थी।

ज़ुरीता देर तक कप्तान के मंच पर खड़ा रहा और पौ फटने से कुछ ही देर पहले अपने केबिन में गया। वह समझ बैठा था कि उसकी पत्नी कब से सो रही होगी। लेकिन उसने देखा कि वह छोटे से मेज़ पर, अपने बाज़ुओं पर सिर रखे बैठी थी। ज़ुरीता के अन्दर आने पर गुत्तिएरे उठी। छत पर से लटकते हुए लैम्प की मद्धिम सी रोशनी में ज़ुरीता को एक पीला और क्रुद्ध चेहरा नज़र आया।

"तुमने मुझे धोखा दिया है," उसने कर्कश आवाज़ में कहा।

पत्नी की क्रुद्ध नज़र से ज़ुरीता झेंप गया, फिर भी अपनी घबराहट छिपाने के लिए बेतकल्लुफ़ी का दिखावा करते हुए उसने मूंछों को ऐंठकर कहा:

"तुम्हारे नज़दीक बने रहने के लिए इकथियांदर ने 'जेलीफ़िश' में रहने का निश्चय किया है।"

"यह झूठ है! तुम बड़े नीच और घिनौने आदमी हो! मैं तुमसे नफ़रत करती हूं!" गुत्तिएरे ने कहा और लपककर दीवार पर से एक खंजर उतार लिया और उससे ज़ुरीता पर वार करने के लिये हाथ उठाया।

"ओहो!" ज़ुरीता ने कहा और गुत्तिएरे की कलाई पकड़कर इस ज़ोर से उसे मरोड़ा कि खंजर नीचे गिर गया।

फिर उसने पांव की ठोकर से खंजर को केबिन में

से बाहर फेंक दिया और अपनी पत्नी का हाथ छोड़ते हुए बोला :

"बेहतर हो कि थोड़ा ठण्डा पानी पियो ताकि तुम्हारा चित्त ठिकाने आये।"

यह कहते हुए वह बाहर निकल आया, केबिन को ताला लगाया और ऊपर डेक पर चला गया।

पौ फट रही थी, पूर्वी क्षितिज पर लालिमा छायी थी। सूर्य अभी नहीं निकला था, लेकिन बादलों के झीने पर्दे में अभी से आग लग रही थी। सुबह की नमकीन, ताज़ा हवा से बादबान फूल रहे थे। आसमान में समुद्री चिल्लियां असावधान मछलियों की घात में मण्डरा रही थीं।

सूर्योदय के बाद भी ज़ुरीता डेक पर ही पीठ पीछे दोनों हाथ बांधे चहलक़दमी करता रहा।

"ऐसी भी क्या बात है, इससे भी बुरी स्थितियों को मैंने साधा है," गुत्तिएरे के बारे में सोचते हुए उसने आखिर अपने आप से कहा।

इसके बाद उसने नाविकों को हुक्म दिया कि बादबान समेट दें। शीघ्र ही 'जेलीफ़िश' जहाज़ लंगर के बल लहरों पर हिचकोले खाने लगा।

"क़ैदी को ले आओ, और साथ में एक ज़ंजीर भी," ज़ुरीता ने हुक्म दिया। वह मोतियों के ग़ोताख़ोर के रूप में इकथियांदर के कौशल को देखने के लिये बेक़रार था। "इसके अलावा," उसने सोचा, "पानी में वह कुछ ताज़ादम भी हो जायेगा।"

दो इण्डियन इकथियांदर को डेक पर ले आये। वह बहुत थका-मांदा लग रहा था। उसने अपने आस-पास देखा। वह छोटे मस्तूल के पास खड़ा था। जहाज़ की रेलिंग से वह कुछेक क़दम की ही दूरी पर था। सहसा इकथियांदर आगे की ओर लपका और रेलिंग तक जा पहुंचा। वह समुद्र में कूदने को ही था जब उसके सिर पर ज़ुरीता का

ज़बरदस्त घूंसा पड़ा। इकथियांदर वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा।

"जल्दबाज़ी से काम बिगड़ते हैं, संवरते नहीं," उसने सीख देने के लहजे में कहा।

लोहे के खनकने की आवाज़ आयी। एक नाविक पतली-सी लोहे की ज़ंजीर, जिसके सिरे पर लोहे की ही एक पट्टी लगी थी, डेक पर ले आया। ज़ुरीता ने बेहोश इकथियांदर की कमर में पट्टी डालकर उसपर ताला लगा दिया।

"इसके सिर पर थोड़ा पानी डालो," उसने नाविकों से कहा।

थोड़ी देर बाद इकथियांदर को होश आया और उसने उद्भ्रान्त नज़रों से उस ज़ंजीर की ओर देखा, जो उसकी कमर में बंधी थी।

"यह इसलिए बांधी गयी है कि तुम भाग न पाओ," ज़ुरीता ने समझाया। "मैं तुम्हें समुद्र में छोड़ने जा रहा हूं। तुम मेरे लिए मोतियों वाले सीप ढूंढ़ोगे। जितनी ज़्यादा मोती निकालोगे उतना ही ज़्यादा पानी में रह पाओगे, लेकिन ख़बरदार जो कोई चालाकी की तो, वरना तुम्हें फिर से पीपे में डाल दूंगा। समझे? अब बोलो, मंज़ूर है?"

इकथियांदर ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

समुद्र के स्वच्छ जल में रह सकने के एवज़ में वह ज़ुरीता के लिए सागर के सभी ख़ज़ाने बटोरकर ला देने के लिए तैयार था।

ज़ुरीता, इकथियांदर—जिसके साथ ज़ंजीर बंधी थी—और उसका इण्डियन मुहाफ़िज़ फिर रेलिंग के पास गये। गुत्तिएरे का केबिन जहाज़ के दूसरी ओर था: ज़ुरीता नहीं चाहता था कि गुत्तिएरे इकथियांदर को ज़ंजीर से बंधा देखे।

इकथियांदर को पानी में, सीधा समुद्र-तल तक उतारा गया। काश, वह ज़ंजीर तोड़ पाता! लेकिन यह उसके बस

की बात नहीं थी, इसलिए लाचार होकर उसने मोतियों के सीप चुनना और उन्हें कमर से लटकते थैले में डालना शुरू कर दिया। लोहे की पट्टी कमर में चुभती थी, जिससे सांस लेने में रुकावट पड़ती थी। फिर भी सारी रात उस बदबूदार पीपे में उकड़ूं पड़े रहने के बाद इकथियांदर ख़ुश महसूस कर रहा था।

डेक पर खड़े नाविक आंखें फाड़-फाड़कर इस घटना को देख रहे थे। कितने ही मिनट बीत गये लेकिन समुद्र-तल पर से वह आदमी ऊपर आने का नाम नहीं ले रहा था। शुरू-शुरू में पानी की सतह पर बुलबुले उठते रहे, लेकिन बाद में वे भी उठना बन्द हो गये थे।

"मुझे शार्क-मछली खाये अगर इसके फेफड़ों में तनिक भी हवा रह गयी हो। लगता है वहां नीचे वह मछलियों की तरह अपने घर जैसा महसूस करता है," एक बड़ी उम्र के ग़ोताख़ोर ने पानी में नज़रें गड़ाये, जहां युवक चारों पंजों के बल समुद्र-तल पर रेंग रहा था, आश्चर्यचकित होकर कहा।

"शायद यही 'समुद्री दैत्य' हो?" एक नाविक ने फुसफुसाकर कहा।

"'समुद्री दैत्य' हो या नहीं, कप्तान ने सौदा ख़ूब पटाया है," एक जहाज़ी बोला, "ऐसा एक ग़ोताख़ोर दर्जनों ग़ोताख़ोरों के बराबर है।"

सूरज आकाश के ऐन बीचोंबीच पहुंच गया था जब इकथियांदर ने ज़ंजीर को हिलाया ताकि उसे ऊपर खींच लिया जाये। उसका थैला लबालब भर चुका था और वह उसे ख़ाली करना चाहता था ताकि अपना काम जारी रख सके।

पलक झपकते ही इण्डियन जहाज़ियों ने विलक्षण ग़ोताख़ोर को डेक पर खींच लिया। हर कोई यह देखने के लिए ललक रहा था कि उसने कितने सीप चुनने हैं।

आम तौर पर मोतियों की सीपियां कुछ दिन के लिए गलने-सड़ने के लिए छोड़ दी जाती हैं, लेकिन अब की बार

ज़ुरीता और उसका नाविक-मण्डल बहुत ही अधीर हो रहे थे। इसलिए हर आदमी काम पर जुट गया, और चाक़ुओं से सीप खोले जाने लगे।

सीपियों से निबट चुकने पर सभी एक साथ बोलने लगे। डेक पर शोर मच गया। शायद सौभाग्यवश इकथियांदर ऐसी जगह उतरा था जहां सीप बहुत थे, लेकिन अपने पहले थैले में ही जो माल वह भरकर लाया था, वह सभी की उम्मीदों से बाहर था। बहुत से मोतियों के बीच लगभग बीस मोती बड़े-बड़े और वज़नी और अत्यन्त सुन्दर आकार और रंग के थे। बेशक पहले ही ग़ोते में इकथियांदर ज़ुरीता के लिए भरपूर दौलत उठा लाया था। वज़नी मोतियों में से एक मोती के दाम से ही वह एक नया जहाज़ ख़रीद सकता था। ज़ुरीता के सामने धन-दौलत का रास्ता खुल गया था। उसके स्वप्न साकार होने लगे थे।

ज़ुरीता ने देखा कि नाविक ललचाई आंखों से मोतियों की ओर देख रहे हैं। उसे यह अच्छा नहीं लगा, इसलिए उसने मोतियों को जल्दी से अपने टोप में डाल लिया।

"नाश्ता करने का वक़्त हो गया है," नाविकों को हटाते हुए उसने कहा, "और हां, इकथियांदर, तुम बढ़िया ग़ोताख़ोर हो। मेरे पास एक फ़ालतू केबिन है, मैं वह तुम्हें दे दूंगा। वहां बहुत घुटन नहीं होगी। मैं तुम्हारे लिए जस्ते का एक हौज़ बनवा दूंगा, हालांकि तुम्हें उसकी ज़रूरत नहीं रहेगी क्योंकि तुम लगभग हर रोज़ ही समुद्र में तैरा करोगे। बेशक, ज़ंजीर बंधी रहेगी। इस बारे में मैं लाचार हूं। तुम डुबकी लगाकर अपने केकड़ों के पास जा पहुंचोगे और लौटकर नहीं आओगे।"

ज़ुरीता के साथ बात करने में इकथियांदर को घिन उठती थी। लेकिन जब तक वह उसके चंगुल में था, कम से कम उससे रहने का अच्छा स्थान लेने की तो कोशिश करनी ही चाहिए।

"बदबूदार पीपे से हौज़ बेशक बेहतर है," उसने ज़ुरीता से कहा, "लेकिन उसमें भी आपको पानी बार-बार बदलना पड़ेगा ताकि मैं ठीक से सांस ले सकूं।"

"कितनी बार?"

"हर आधे घण्टे के बाद," इकथियांदर ने कहा, "चलता पानी इससे भी बेहतर रहेगा।"

"मैं देखता हूं कि तुम अभी से ऐंठने लगे हो। हमने तुम्हारी थोड़ी तारीफ़ कर दी है और अब तुम मुतालिबे करने लगे हो, यह नहीं लूंगा और वह नहीं लूंगा।"

"नहीं, मैं मुतालिबे नहीं करने लगा हूं," इकथियांदर के दिल को ठेस लगी। "मैं... क्या आप यह नहीं जानते कि अगर किसी बड़ी-सी मछली को पानी के डोल में डाल दिया जाये तो वह जल्दी ही सो जाती है। मछली पानी में से आक्सीजन खींचती है, और मैं... वास्तव में एक बड़ी मछली हूं," इकथियांदर ने मुस्कराकर रहा।

"मैं आक्सीजन के बारे में तो नहीं जानता, लेकिन इतना ज़रूर जानता हूं कि पानी नहीं बदलो तो मछलियां मर जाती हैं। शायद तुम ठीक कहते हो। लेकिन मैं आदमी लगाकर चौबीस घण्टे तुम्हारे लिये पानी बदलवाता रहूं तो मेरा दीवाला पिट जायेगा। जितनी क़ीमत के मोती तुम बटोरकर लाओगे, उससे ज़्यादा पैसे यहां लग जायेंगे।"

इकथियांदर को मालूम नहीं था कि मोतियों के क्या दाम होते हैं, न ही वह यह जानता था कि ज़ुरीता अपने जहाज़ियों को पैसा बहुत कम देता था। उसने ज़ुरीता की बात पर यक़ीन कर लिया।

"अगर मुझे रखना आपके लिये बहुत महंगा पड़ता है तो मुझे समुद्र में छोड़ दीजिये!" इकथियांदर ने समुद्र की ओर हसरत भरी नज़र से देखते हुए कहा।

"बड़े चुस्त हो, हैं?" और ज़ुरीता ठहाका मारकर हंस दिया।

"मेहरबानी कीजिये। मैं ख़ुद आपके लिए मोती ले आया

करूंगा। मैंने ढेर-से मोती इकट्ठे कर रखे हैं, बड़े चिकने और गोल हैं। इतना ऊंचा ढेर होगा," इकथियांदर ने अपने घुटने को छूते हुए कहा। "सभी एक जैसे हैं, सेम के दानों की तरह। मैं सबके सब आपकी नज़र कर दूंगा, केवल आप मुझे छोड़ दें।"

ज़ुरीता हक्का-बक्का रह गया।

"यह सच नहीं हो सकता," अपनी उत्तेजना छिपाने की कोशिश करते हुए उसने कहा।

"मैंने अभी तक किसी के सामने झूठ नहीं बोला," इकथियांदर क्रुद्ध हो उठा।

"तुम्हारा वह ख़ज़ाना कहां दबा पड़ा है?" ज़ुरीता ने पूछा। वह ज़्यादा देर तक अपनी उत्तेजना को दबा नहीं पा रहा था।

"एक जलमग्न गुफ़ा में। लीडिंग के सिवा कोई नहीं जानता कि वह कहां है।"

"लीडिंग कौन है?"

"मेरी डालफ़िन मछली।"

वाह! यह कोई जादू-टोना है, ज़ुरीता ने सोचा। अगर यह सच है, तो इतना बड़ा ढेर तो मैंने स्वप्न में भी कभी नहीं देखा। मेरे हाथ बेशुमार दौलत आ जायेगी। मेरे मुक़ाबले में राथ्शाइल्ड और राकफ़ेलर भिखमंगे नज़र आयेंगे। मुझे लगता है कि इस आदमी का यक़ीन किया जा सकता है। तो उठाऊं जोखिम?"

लेकिन ज़ुरीता ऐसा आदमी नहीं था कि किसी की ज़बान पर यक़ीन कर ले। वह व्यापारी था। फिर इकथियांदर से उसका ख़ज़ाना लेकर उसे अपने क़ाबू में रखने में ही फ़ायदा समझा। उसे एक विचार सूझा। अगर गुत्तिएरे इसे मोती लाने को कहे तो यह ले आयेगा, उसने सोचा।

"शायद मैं तुम्हें छोड़ दूंगा," ज़ुरीता ने कहा, "लेकिन फ़ौरन नहीं। मैं कुछ देर और तुम्हें अपने पास रखूंगा। इसके

कारण हैं। तुम्हें इसका अफ़सोस नहीं होगा। जितनी देर तुम मेरे पास रहोगे, मैं तुम्हारे आराम की व्यवस्था कर दूंगा। शायद लोहे का पिंजरा ज़्यादा मुनासिब रहेगा। टैंक बहुत महंगा बैठेगा। उसमें तुम्हें पानी में उतार दिया जायेगा — इससे शार्क-मछलियों से भी तुम बचे रहोगे।"

"लेकिन कभी कभी मुझे हवा में सांस लेने की भी ज़रूरत होगी।"

"इसके लिए हम तुम्हें ऊपर खींच लिया करेंगे। हौज़ में पानी बदलते रहने से यह ज़्यादा सस्ता रहेगा। बस, मुख़्तसर बात, हम सब इन्तज़ाम कर देंगे, तुम ख़ुश हो जाओगे।"

ज़ुरीता का दिल बल्लियों उछल रहा था। उसने नाश्ते के साथ जहाज़ियों को एक-एक गिलास वोद्का देने का भी हुक्म दिया, जो ज़ुरीता के लिए अनसुनी बात थी।

इकथियांदर को फिर जहाज़ के तलपेट में ले गये — हौज़ अभी तैयार नहीं था। इस बीच ज़ुरीता ने नीचे जाकर कप्तान के केबिन का ताला खोला।

"मुझे अपना वचन याद है," उसने मुस्कराते हुए अपनी बात शुरू की। "मेरी बीवी को मोती पसन्द हैं, तोहफ़े पसन्द हैं। लेकिन ज़्यादा मोतियों के लिए ज़्यादा अच्छे ग़ोताख़ोर की ज़रूरत होती है। इसी लिए मैंने इकथियांदर को यहां रोक रखा है। देखो, एक ही सुबह में कितने मोती हाथ लगे हैं।"

गुत्तिएरे ने मोतियों की ओर सरसरी नज़र से देखा। वह बड़ी कठिनाई से अपनी हैरत को छिपा पायी। पर ज़ुरीता ने भांप लिया और बड़े आत्म-सन्तोष के साथ हंसने लगा।

"तुम न सिर्फ़ अर्जेन्टीना की सबसे धनी महिला होगी, बल्कि अमरीका भर की। तुम्हारे पास सब कुछ होगा। मैं तुम्हारे लिए एक महल बनवाऊंगा, जिस पर बादशाह रश्क करेंगे। अब मेरे तोहफ़े की पहली किश्त — आधे मोती क़बूल करो।"

"नहीं। मैं इन मोतियों को हाथ तक नहीं लगाऊंगी, जिन्हें तुमने जुर्म करके हासिल किया है," गुत्तिएरे ने कड़ककर जवाब दिया, "और अब यहां से चले जाओ।"

जुरीता हत्प्रभ और क्रुद्ध हो उठा। उसे ऐसे व्यवहार की आशा नहीं थी।

"ज़रा ठहरो। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता था। क्या तुम चाहती हो कि मैं इकथियांदर को छोड़ दूं?"

गुत्तिएरे ने जुरीता की ओर अविश्वास भरी नज़र से देखा और यह अनुमान लगाने की कोशिश करने लगी कि अब वह कौन-सी धूर्त्तता करने जा रहा है।

"अब आगे क्या करोगे?" उसने उपेक्षा से पूछा।

"इकथियांदर की क़िस्मत तुम्हारे हाथ में है। तुम उसे इतना भर कहो कि जो मोती उसने पानी के नीचे कहीं छिपा रखे हैं, उन्हें निकालकर 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर ले आये, बस, मैं उसे जहां चाहेगा जाने दूंगा।"

"अब कान खोलकर सुन लो, जुरीता। मुझे तुम्हारी एक भी बात पर विश्वास नहीं है। तुम मोती भी लोगे और इकथियांदर को भी अपने क़ाबू में रखोगे। मुझे इस बात का उतना ही यक़ीन है जितना इस बात का कि मैं दुनिया के सबसे बड़े मक्कार और धोखेबाज़ आदमी की बीवी हूं। इस बात को याद रखना और फिर कभी मुझे अपने काले कारनामों में घसीटने की कोशिश न करना। मैं फिर एक बार कहूंगी, यहां से चले जाओ, मुझे चैन से बैठने दो।"

जुरीता के पास कहने को और कुछ नहीं था, इसलिए वह वहां से चला गया। अपने केबिन में पहुंचकर उसने मोतियों को एक थैली में डाला, फिर थैली को एक सन्दूक़ में रखकर ताला लगा दिया और उसके बाद डेक पर चला गया। उसकी पत्नी की बातों का उसपर बहुत असर नहीं हुआ था। अपनी कल्पना में वह अपने को एक धनाढ्य समझने लगा, जिसे चारों ओर से लोग झुक-झुककर सलाम कर रहे हैं।

वह कप्तान के मंच पर चढ़ गया और उसने सिगार सुलगाया। भावी धन-वैभव के स्वप्नों से उसके दिल में गुदगुदी हो रही थी। आम तौर पर सतर्क रहनेवाला यह आदमी उस समय यह नहीं देख पा रहा था कि नाविक छोटी-छोटी टोलियों में खड़े किसी बात पर विचार कर रहे हैं।

‘जेलीफ़िश’ का परित्याग

ज़ुरीता रेलिंग के नज़दीक आगे के मस्तूल के सामने खड़ा था। पहले मेट का इशारा पाकर बहुत से नाविकों ने एक साथ उस पर हमला कर दिया। उनके हाथों में हथियार तो नहीं थे लेकिन वे संख्या में बहुत थे। पर ज़ुरीता को क़ाबू करना आसान काम नहीं था। दो नाविकों ने उसे पीछे से कसकर पकड़ लिया। लेकिन ज़ुरीता भीड़ में से निकलकर कुछेक क़दम पीछे की ओर हटा और पूरे ज़ोर के साथ रेलिंग पर जा गिरा।

नाविकों की पकड़ ढीली पड़ गयी और वे रोते-कराहते डेक पर गिर गये। ज्यों ही और लोगों ने उस पर फिर हमला करने की कोशिश की, ज़ुरीता उठ खड़ा हुआ और दायें-बायें घूंसे मारने लगा। वह अपनी रिवाल्वर हमेशा अपने साथ रखता था, लेकिन यह हमला इतना अप्रत्याशित था, कि उसे रिवाल्वर निकालने का वक़्त ही नहीं मिल पाया। धीरे-धीरे पीछे हटते हुए वह बड़े मस्तूल तक जा

पहुंचा और फिर एक बन्दर की फुर्ती से उस पर चढ़ने लगा।

एक नाविक ने उसका पैर पकड़ लिया। लेकिन ज़ुरीता ने इतनी ज़ोर से दूसरे पैर से उसके सिर पर चोट की कि वह झन्नाकर डेक पर गिर गया। ज़ुरीता सीधा ऊपर तक जा पहुंचा और वहां गालियां बकता हुआ बैठ गया। कुछ वक़्त के लिए तो उसे लगा जैसे वह ज़्यादा सुरक्षित है। उसने रिवाल्वर निकाल ली और चिल्लाकर कहा:

"जो भी मेरे नज़दीक आयेगा मैं उसका भेजा निकाल दूंगा!"

नीचे नाविक शोर मचा रहे थे और फ़ैसला करने की कोशिश कर रहे थे कि आगे क्या करें।

"कप्तान के केबिन में बन्दूक़ें रखी हैं," पहले मेट ने चिल्लाकर कहा, "चलो दरवाज़ा तोड़ डालें!"

कुछेक आदमी कपाट की ओर भागे।

"लगता है अब नहीं बचूंगा," ज़ुरीता ने सोचा, "ये लोग मुझे बैठे-बिठाये मार डालेंगे।"

उसने आंख उठाकर सागर की ओर देखा, मानो मदद ढूंढ़ रहा हो और वह यह देखकर हक्का-बक्का रह गया कि एक पनडुब्बी समुद्र की सतह को चीरती हुई असाधारण तेज़ी के साथ 'जेलीफ़िश' जहाज़ की ओर बढ़ती आ रही थी।

"कितना अच्छा हो अगर वह पानी में ग़ोता न मार जाये," ज़ुरीता मन ही मन सोच रहा था, "मंच पर कुछ लोग खड़े हैं। क्या सचमुच वे मेरी ओर नहीं देखेंगे और पास से गुज़र जायेंगे?"

"बचाओ! बचाओ! मार डाला!" उसने चिल्लाकर कहा।

पनडुब्बी पर के लोगों ने शायद उसे देख लिया था। बिना रफ़्तार कम किये पनडुब्बी 'जेलीफ़िश' जहाज़ की ओर सीधी बढ़ती आ रही थी।

हथियारबन्द नाविक डेक पर दिखाई देने लगे थे। वे डेक पर निकल आये थे और अब दुविधा में खड़े थे। 'जेलीफ़िश' की ओर हथियारबन्द पनडुब्बी बढ़ी आ रही थी। ज़ुरीता को इन बिनबुलाये गवाहों की आंखों के सामने तो नहीं मारा जा सकता था।

ज़ुरीता ख़ुशियां मना रहा था, लेकिन उसकी ख़ुशियां लघु-जीवी साबित हुईं। बाल्तासार और क्रिस्टो पनडुब्बी के चबूतरे पर खड़े थे और उनके साथ एक ऊंचा-लंबा आदमी खड़ा था, जिसकी नाक बड़ी क्रूर-सी और आंखें उक़ाब की आंखों जैसी थीं। इस आदमी ने चिल्लाकर कहा :

"पेद्रो ज़ुरीता! इकथियांदर को फ़ौरन हमारे हवाले कर दो, जिसे तुम अगवा कर लाये हो। मैं तुम्हें पांच मिनट की मोहलत देता हूं, वरना तुम्हारा जहाज़ डुबो दिया जायेगा।"

"ग़द्दार!" क्रिस्टो और बाल्तासार की ओर घृणा से देखते हुए ज़ुरीता ने सोचा। "इकथियांदर हाथ से भले ही निकल जाये मैं अपनी जान तो नहीं गंवा सकता।"

"मैं अभी उसे हाज़िर किये देता हूं," मस्तूल के रस्सों पर से फिसलकर उतरते हुए ज़ुरीता ने कहा।

नाविक समझ गये कि अब उन्हें अपनी जान बचानी चाहिए। उन्होंने जल्दी से किश्तियां उतारीं, पानी में कूद गये और तैरकर किनारे की ओर जाने लगे। उनमें से हरेक को केवल अपनी ही जान की फ़िक्र थी।

ज़ुरीता सीढ़ी पर से उतरकर सीधा अपने केबिन में गया, जल्दी से मोतियों की गुत्थी निकाली, उसे कमीज़ के नीचे खोंसा और एक पेटी और रूमाल उठा लिया। दूसरे क्षण उसने गुत्तिएरे के केबिन का दरवाज़ा खोला, उसे बांहों में उठा लिया और डेक पर ले आया।

"इकथियांदर की तबीयत कुछ ख़राब है, आप को वह केबिन में मिल जायेगा," गुत्तिएरे को बांहों में से उतारे बिना ज़ुरीता ने कहा और भागता हुआ जहाज़ के पहलू की ओर गया। वहां उसने गुत्तिएरे को एक किश्ती में बिठाया, किश्ती को पानी में उतारा और ख़ुद भी उसमें कूद गया।

पनडुब्बी किश्ती का पीछा नहीं कर सकती थी क्योंकि वहां पानी बहुत छिछला था। लेकिन गुत्तिएरे ने पनडुब्बी के चबूतरे पर अपने बाप को पहचान लिया।

"पिताजी, इकथियांदर को बचाइये! वह..." पर गुत्तिएरे अपना वाक्य पूरा नहीं कर सकी। ज़ुरीता ने रूमाल से उसका मुंह बन्द कर दिया और जल्दी से पेटी में उसके हाथ बांधने लगा।

"औरत को छोड़ दो!" इस अत्याचार को देखकर साल्वातोर ने चिल्लाकर कहा।

"यह औरत मेरी बीवी है, और हमारे बीच दख़ल देने का किसी को हक नहीं है!" जवाब में ज़ुरीता ने चिल्लाकर कहा और ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चलाता हुआ वहां से जाने लगा।

"औरत के साथ ऐसा बर्ताव करने का किसी को हक़ नहीं है," साल्वातोर ने ग़ुस्से से चिल्लाकर कहा। "रुक जाओ वरना मैं गोली चला दूंगा!"

लेकिन ज़ुरीता ने चप्पू चलाना जारी रखा।

साल्वातोर ने रिवाल्वर निकालकर गोली चला दी। गोली किश्ती के पहलू से लगी।

ज़ुरीता ने अपनी हिफ़ाज़त के लिए आड़ के तौर पर गुत्तिएरे को उठा लिया।

"अब चलाओ गोली!" उसने चिल्लाकर कहा।

गुत्तिएरे उसकी बांहों में छटपटा रही थी।

"ऐसा बदमाश और कोई नहीं होगा," साल्वातोर बुदबुदाया और रिवाल्वर नीची कर दी।

किश्ती को पकड़ने के लिए बाल्तासार ने मंच पर से पानी में छलांग लगा दी और किश्ती की ओर तैर कर जाने लगा। लेकिन ज़ुरीता तट के नज़दीक पहुंच चुका था और ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चलाता जा रहा था। शीघ्र ही एक लहर ने किश्ती को धकेलकर रेतीले तट तक पहुंचा दिया। पेद्रो ने गुत्तिएरे को उठा लिया और तटवर्ती चट्टानों के पीछे ग़ायब हो गया।

यह देखकर कि ज़ुरीता को पकड़ पाना नामुमकिन है बाल्तासार मुड़कर जहाज़ की ओर तैरने लगा और जहाज़ के लंगर की ज़ंजीर के सहारे चढ़ता हुआ डेक पर जा पहुंचा। फिर वह सीढ़ियों पर से जहाज़ के भीतरी भाग में नीचे उतर गया और चारों ओर इकथियांदर को ढूंढ़ने लगा। बाल्तासार ने सारा जहाज़ छान मारा, यहां तक कि तलपेट तक को भी देख गया, लेकिन जहाज़ पर कोई भी नहीं था।

"जहाज़ पर इकथियांदर नहीं है!" उसने साल्वातोर को पुकारकर कहा।

"लेकिन वह ज़िन्दा है और ज़रूर यहीं कहीं होगा," क्रिस्टो बोला, "गुत्तिएरे बताने जा रही थी कि इकथियांदर कहां है। अगर उस ज़ालिम ने उसका मुंह न बन्द कर दिया होता तो हमें पता चल जाता कि उसे कहां ढूंढ़ें।"

समुद्र की सतह पर नज़र दौड़ाते हुए क्रिस्टो को पानी के ऊपर किसी जहाज़ के मस्तूलों के शिखर नज़र आये। संभवत: यहां कुछ ही मुद्दत पहले कोई जहाज़ डूब गया था। उसने सोचा कि मुमकिन है इकथियांदर उस डूबे हुए जहाज़ के अन्दर हो।

"मुमकिन है ज़ुरीता ने इकथियांदर को डूबे हुए जहाज़ में किसी ख़ज़ाने को ढूंढ़ निकालने के लिए भेजा हो!" क्रिस्टो ने कहा।

बाल्तासार ने डेक पर से एक ज़ंजीर उठायी जिसके सिरे पर कमर को बांधने की पट्टी लगी थी।

"लगता है जैसे इस ज़ंजीर से इकथियांदर को बांधकर ज़ुरीता उसे पानी में उतारा करता था। इसके बिना वह तैरकर निकल जाता। नहीं, वह उस जहाज़ पर नहीं हो सकता।"

"हां," गहरे सोच में डूबा हुआ साल्वातोर बुदबुदाया, "हमने ज़ुरीता को तो हरा दिया लेकिन इकथियांदर हमारे हाथ नहीं लगा।"

डूबा हुआ जहाज़

ज़ुरीता का पीछा करनेवालों को उन घटनाओं की कोई ख़बर नहीं थी जो 'जेलीफ़िश' जहाज़ पर उस दिन सुबह घटी थीं।

रात भर नाविक साज़िश करते रहे और सुबह होते-होते उन्होंने यह निश्चय किया था कि पहला मौक़ा मिलने पर वे ज़ुरीता पर हमला करके उसका काम तमाम कर देंगे और इकथियांदर तथा जहाज़ को क़ाबू में कर लेंगे।

सुबह तड़के ही ज़ुरीता कप्तान के मंच पर खड़ा था। हवा बन्द थी और 'जेलीफ़िश' जहाज़ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, उसकी रफ़्तार तीन समुद्री मील फ़ी घण्टा से ज़्यादा नहीं होगी।

ज़ुरीता की आंखें समुद्र की सतह पर किसी नुक़्ते पर लगी थीं। दूरबीन में से देखने पर उसे पता चला कि वह नुक़्ता किसी डूबे हुए जहाज़ के रेडियो-मस्तूल हैं।

शीघ्र ही ज़ुरीता को पानी की सतह पर तैरती हुई एक बचाव-पेटी नज़र आयी।

उसने हुक्म दिया कि एक किश्ती नीचे उतारी जाये और बचाव-पेटी को उठा लाया जाये।

जब वह उसके पास लायी गयी तो उसने देखा कि बचाव-पेटी पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'मफ़ाल्डू' शब्द लिखा था।

"'मफ़ाल्डू' डूब गया?" ज़ुरीता हैरान रह गया। वह उस बड़े अमरीकी एक्सप्रेस जहाज़ को जानता था। "उस जैसे जहाज़ पर ज़रूर बहुत-सी क़ीमती चीज़ें होंगी," उसने सोचा। "कैसा रहे अगर इकथियांदर डूबे हुए जहाज़ में से इन क़ीमती चीज़ों को निकाल लाये? लेकिन क्या ज़ंजीर की लम्बाई काफ़ी होगी? शायद ही... और अगर इकथियांदर को ज़ंजीर के बिना भेजा गया तो वह लौटकर नहीं आयेगा..."

ज़ुरीता सोच में पड़ गया। उसके दिमाग़ में एक ओर लालच और दूसरी ओर इकथियांदर को खो देने के भय में खींचा-तानी हो रही थी।

धीरे-धीरे 'जेलीफ़िश' उस जगह के अधिकाधिक निकट होता जा रहा था, जहां पानी में से मस्तूलों के सिरे निकले हुए थे।

नाविक रेलिंग के पास भीड़ बनाकर खड़े हो गये। हवा बिल्कुल बन्द हो गयी। जहाज़ खड़ा हो गया।

"किसी ज़माने में मैं 'मफ़ाल्डू' जहाज़ पर काम किया करता था," एक नाविक बोला, "बहुत बड़ा, शानदार जहाज़ था। इतना बड़ा कि उसमें पूरा शहर का शहर समा जाये। उसके मुसाफ़िर धनी अमरीकी हुआ करते थे।"

"'मफ़ाल्डू' डूब गया है, लगता है वह रेडियो द्वारा अपने डूबने का समाचार नहीं दे पाया," ज़ुरीता सोच रहा था, "शायद उसका रेडियो-यन्त्र ख़राब हो गया था। वरना

आस-पास के सभी बंदरगाहों से तेज़ रफ़्तार मोटर-बोट, ग्लाइडर, बादबानी किश्तियां राज्यों के प्रतिनिधियों, संवाददाताओं, फ़ोटोग्राफ़रों, सिनेआपरेटरों, पत्रकारों, ग़ोताख़ोरों से लदी हुई वहां पहुंच गये होते। अब देर नहीं की जा सकती। बिना ज़ंजीर के इकथियांदर को भेजने का जोखिम उठाना ही पड़ेगा। और कोई चारा नहीं। लेकिन उसे वापस लौटने पर कैसे मजबूर किया जा सकता है? और अगर जोखिम उठाना ही है तो इकथियांदर को अपनी छुड़ौती लाने के लिए, अपना मोतियों का ढेर उठा लाने के लिए क्यों न भेजा जाये? क्या मोतियों का ढेर सचमुच बहुत क़ीमती होगा? क्या इकथियांदर बहुत बढ़ा-चढ़ाकर तो उसका बयान नहीं कर रहा था?"

बेशक उसे दोनों ख़ज़ाने हासिल करने चाहिएं। मोतियों के ढेर को जहां है, वहीं रहने दो। इकथियांदर के बिना उसे कोई नहीं निकाल सकता, और जब तक इकथियांदर हाथ में है, वह मोतियों का ढेर सुरक्षित है। जहां तक 'मफ़ाल्डू' के ख़ज़ाने का सवाल है, कुछ ही दिनों में, बल्कि कुछ ही घण्टों में वह पहुंच के बाहर हो जायेगा।

ज़ुरीता ने पहले 'मफ़ाल्डू' पर हाथ साफ़ करने का निश्चय किया। उसने हुक्म दिया कि लंगर डाल दिया जाये। फिर वह नीचे, अपने केबिन में गया, एक पुर्ज़ा लिखा और उसे लेकर इकथियांदर के केबिन की ओर गया।

"क्या तुम पढ़ सकते हो, इकथियांदर? गुत्तिएरे ने तुम्हारे नाम यह रुक्क़ा भेजा है।"

इकथियांदर ने जल्दी से पुर्ज़ा खोला। लिखा था:

"इकथियांदर, जैसे मैं कहती हूं वैसे करो। 'जेलीफ़िश' के पास ही एक जहाज़ डूबा पड़ा है। समुद्र में जाओ और उस जहाज़ में से जो भी क़ीमती चीज़ें मिलें निकाल लाओ। ज़ुरीता तुम्हें ज़ंजीर के बिना पानी में जाने देगा। लेकिन

तुम्हें 'जेलीफ़िश' पर ज़रूर लौट आना होगा। मेरी ख़ातिर तुम यह काम कर दो, इकथियांदर, और तुम्हें जल्दी ही आज़ाद कर दिया जायेगा। गुत्तिएरे।"

पहले कभी भी इकथियांदर को गुत्तिएरे की ओर से पत्र नहीं मिला था, इसलिए वह उसके हाथ की लिखावट नहीं जानता था। रुक्क़ा पाकर वह क्षण भर के लिए बहुत ख़ुश हुआ। लेकिन शीघ्र ही उसे ख़्याल आया कि यह ज़ुरीता की एक और चाल हो सकती है।

"वह मुझसे ख़ुद क्यों नहीं कहती?" इकथियांदर ने पूछा।

"उसकी तबीयत ठीक नहीं," ज़ुरीता ने जवाब दिया, "लेकिन लौटने पर तुम फ़ौरन उससे मिलोगे।"

"गुत्तिएरे को इन क़ीमती चीज़ों से क्या मतलब?"

"अगर तुम असली इनसान होते तो यह सवाल कभी भी न पूछते। क्या कोई ऐसी औरत है जो सुंदर कपड़े और बढ़िया ज़ेवर न पहनना चाहती हो? पर इनके लिए पैसे की ज़रूरत होती है। उस डूबे हुए जहाज़ में पैसा बहुत है। अब वह किसी की मिल्कियत नहीं, उसे गुत्तिएरे को ही क्यों न ला दो? मुख्यत: सोने के सिक्कों को ढूंढ़ने की ज़रूरत है। वहां डाक के चमड़े के थैले ज़रूर होंगे। इसके अलावा मुसाफ़िरों के बदन पर सोने की चीज़ें होंगी, अंगूठियां ..."

"क्या तुम समझ बैठे हो कि मैं लाशों की तलाशी लूंगा?" इकथियांदर ने ग़ुस्से से कहा। "और फिर मुझे तुम पर विश्वास नहीं है। गुत्तिएरे लालची लड़की नहीं है, वह मुझे इस काम के लिए नहीं भेज सकती।"

"लानत है तुम पर!" ज़ुरीता फट पड़ा। उसने देख लिया कि अगर वह इकथियांदर को समझा-बुझाकर राज़ी नहीं करेगा तो उसका सब खेल बिगड़ जायेगा।

इसलिए उसने अपने को संभाला, शरीफ़ों की तरह हंस पड़ा और बोला :

"मैं देखता हूं कि तुम्हें धोखा नहीं दिया जा सकता। मैं तुम्हारे साथ खुलकर बात करूंगा। अब सुनो। 'मफ़ाल्डू' जहाज़ से गुत्तिएरे नहीं, मैं सोना हासिल करना चाहता हूं। इसपर तो तुम्हें विश्वास है?"

इकथियांदर मुस्कराये बिना नहीं रह सका।

"बिल्कुल!"

"बड़ी अच्छी बात है। तुम मुझ पर विश्वास करने लगे हो, जिसका मतलब है हमारे बीच समझौता हो जायेगा। हां, मुझे वह सोना चाहिये। अगर तुम मुझे 'मफ़ाल्डू' जहाज़ पर से उतनी ही क़ीमत का सोना ला दो जितनी क़ीमत के तुम्हारे वे मोती हैं, तो मैं तुम्हें फ़ौरन ही आज़ाद कर दूंगा। दिक़्क़त इस बात की है कि तुम मुझ पर बहुत विश्वास नहीं करते। ज़ंजीर के बिना तुम्हें भेजने में मुझे डर लगता है, क्योंकि तुम समुद्र में ग़ोता लगाओगे और फिर..."

"अगर मैं लौटने का वचन दूंगा तो ज़रूर लौटूंगा।"

"अभी तक मुझे यह आज़माने का मौक़ा नहीं मिला है। तुम्हें मुझसे कोई लगाव नहीं है, इसलिए अगर तुम वचन पर क़ायम न रहे तो इसमें मुझे कोई ताज्जुब नहीं होगा। लेकिन गुत्तिएरे से तुम्हें प्रेम है और उसका कहा तुम ज़रूर मानोगे। ठीक है? इसलिए मैंने उससे बात की और वह फ़ौरन राज़ी हो गयी। बेशक वह चाहती है कि मैं तुम्हें छोड़ दूं। इसीलिए तुम्हारी आज़ादी के रास्ते को ज़्यादा आसान बनाने की इच्छा से उसने यह पुर्ज़ा लिखकर मुझे दिया। अब सारी बात साफ़ हो गयी?"

ज़ुरीता ने जो कुछ कहा, इकथियांदर को विश्वासजनक और संभाव्य जान पड़ा। परन्तु इकथियांदर ने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया कि ज़ुरीता केवल उसी शर्त पर उसे

रिहा करने का वचन दे रहा था कि 'मफ़ाल्डू' से प्राप्त होनेवाला सोना मात्रा में उतना ही होगा जितना इकथियांदर के मोतियों के ढेर।

"उनकी तुलना करने के लिए," ज़ुरीता मन ही मन तर्क कर रहा था, "इकथियांदर को अपना मोतियों का ढेर भी लाना पड़ेगा—मैं इसके लिए इसरार करूंगा। तब 'मफ़ाल्डू' का सोना, मोतियों का ढेर और इकथियांदर, तीनों मेरे हाथ में होंगे।"

परन्तु इकथियांदर नहीं जान सकता था कि ज़ुरीता क्या सोच रहा है। ज़ुरीता की साफ़दिली पर उसे विश्वास हो गया और कुछ देर सोचने के बाद वह रज़ामंद हो गया।

ज़ुरीता ने चैन की सांस ली।

"यह मेरे साथ धोखा नहीं करेगा," उसने सोचा।

"अब चलो, जल्दी।"

दोनों तेज़ी से डेक पर आ गये और इकथियांदर समुद्र में कूद गया।

इकथियांदर को ज़ंजीर के बिना छलांग लगाते देख कर नाविक फ़ौरन समझ गये कि वह 'मफ़ाल्डू' का डूबा हुआ ख़ज़ाना लाने गया है। क्या अकेला ज़ुरीता ही उस सारी दौलत पर अधिकार जमा लेगा? अब देर नहीं की जा सकती, उन्होंने सोचा, और ज़ुरीता पर पिल पड़े।

जिस वक़्त नाविक ज़ुरीता का पीछा कर रहे थे, इकथियांदर डूबे हुए जहाज़ की जांच करने में लगा था।

सब से ऊपरवाले डेक के एक बड़े से कपाट में से निकल कर चौड़ी सीढ़ियों के रास्ते, जो एक बहुत बड़े घर की सीढ़ियां जान पड़ती थीं, इकथियांदर तैरता हुआ नीचे गया और एक चौड़े बरामदे में जा पहुंचा। वहां पर लगभग घुप अंधेरा था, केवल हल्की-हल्की रोशनी खुले दरवाज़ों में से आ रही थी।

एक दरवाज़े में से इकथियांदर तैरता हुआ निकल गया

और एक विशाल आरामदेह बैठक में जा पहुंचा। बड़े-बड़े गोल प्रकाश-छिद्रों में से आनेवाली मद्धिम रोशनी विशाल हॉल में पड़ रही थी, जिसमें कई सौ लोग बैठ सकते थे। इकथियांदर एक शानदार झाड़-फ़ानूस पर बैठ गया और आस-पास का दृश्य देखने लगा। बड़ा ख़ौफ़नाक नज़ारा था। चारों ओर लकड़ी की कुर्सियां और छोटे-छोटे मेज़ तैरकर ऊपर आ गये थे और छत के निकट झूल रहे थे। एक छोटे-से स्टेज पर ग्रैंड पियानो खड़ा था, उसका ढक्कन उठा हुआ था, फ़र्श पर गुदगुदे क़ालीन बिछे थे। दीवारों पर लाल लकड़ी की वार्निशदार तख़्ताबंदी कहीं-कहीं पर टेढ़ी-मेढ़ी हो चुकी थी। एक दीवार के साथ ताड़ के पौधों की क़तार लगी थी।

इकथियांदर झाड़-फ़ानूस पर से हटकर तैरता हुआ ताड़ के पौधों की ओर जाने लगा। सहसा वह आश्चर्यचकित होकर जहां था वहीं रुक गया—कोई आदमी उसकी ओर तैरता हुआ चला आ रहा था और उसी की भांति रुक गया था। "आईना है," इकथियांदर ने समझ-बूझ लिया। दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक विशालकाय दर्पण लगा था, जिसमें बैठक की सजावट मद्धिम-सी प्रतिबिम्बित हो रही थी।

यहां ढूंढ़ने को कोई ख़ज़ाने नहीं थे। इकथियांदर तैरता हुआ बरामदे में आ गया, वहां से वह एक और डेक के नीचे चला गया। वहां वह एक हॉल में पहुंचा, जो ऊपरवाले हॉल की ही भांति सजा-धजा और आकार में बड़ा था। प्रकटत: वह रेस्तरां था। बार के तख़्तों और उनके निकट फ़र्श पर शराब की बोतलें, टिन और डिब्बे बिखरे पड़े थे, पानी के दबाव के कारण अधिकांश बोतलों के डाट बोतलों के अन्दर घुस गये थे और कुछेक टिन लगभग पूर्ण रूप से चपटे हो चुके थे। मेज़ों पर प्लेटें लगी थीं, लेकिन चांदी के छुरी-कांटे और अन्य बहुत-से बरतन फ़र्श पर लोट रहे थे।

इकथियांदर केबिनों की ओर जाने लगा।

वह कुछेक केबिनों में तैरकर गया, जो अमरीकी आराम-आसाइश की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट थे, पर कहीं भी उसे कोई लाश नहीं मिली। केवल तीसरे डेक पर एक केबिन में उसने एक सूजी हुई लाश छत के निकट लहकती हुई देखी।

"मुसाफ़िरों को ज़रूर किश्तियों में कूदकर बच निकलने का मौक़ा मिल गया होगा," उसने सोचा।

लेकिन इससे भी निचले डेक पर, जहां तीसरे दर्जे के मुसाफ़िर सफ़र करते हैं, इकथियांदर ने एक भयानक दृश्य देखा। सारा डेक पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की लाशों से, सफ़ेद चमड़ीवालों, चीनियों, हबशियों और इण्डियनों की लाशों से पटा पड़ा था।

प्रत्यक्षत: जहाज़ के नाविक पहले दर्जे के मुसाफ़िरों की जानें बचाने के लिए सब से पहले भाग खड़े हुए थे और अन्य लोगों को उनकी क़िस्मत पर छोड़ दिया था। कुछेक केबिनों में इकथियांदर घुस तक नहीं सका। दरवाज़े लाशों से पटे थे। भगदड़ में लोग एक दूसरे को धकेलते-दबाते रहे, बाहर निकलने के रास्ते पर कसमसाते एक दूसरे का रास्ता रोकते रहे और इस तरह बचाव के अन्तिम रास्ते से भी कट गये।

खुले प्रकाश-छिद्रों में से पानी बह-बहकर लम्बे बरामदे में आ रहा था और फूली हुई लाशों को झुला रहा था। इकथियांदर डर गया और जल्दी से इस जलमग्न क़बरिस्तान में से भाग निकला।

"बेशक, गुत्तिएरे नहीं जानती थी कि वह मुझे कहां भेज रही है," इकथियांदर ने सोचा। "यह मुमकिन नहीं कि वह चाहती हो कि मैं मरे हुए लोगों के जेबों की तलाशी लूं और उनके बक्स खोल-खोलकर देखूं। इसका मतलब है कि मैं फिर एक बार ज़ुरीता के फंदे में फंस गया हूं।" अत: इकथियांदर ने निश्चय किया कि वह इस

बात का तक़ाज़ा करेगा कि गुत्तिएरे स्वयं डेक पर आये और अपनी फ़रमाइश की तसदीक़ करे।

मछली की तरह तेज़ी से तैरता हुआ इकथियांदर एक डेक से दूसरे डेक को लांघने लगा और शीघ्र ही समुद्र की सतह पर पहुंच गया।

वह तेज़ी से 'जेलीफ़िश' की ओर तैरकर जाने लगा।

"ज़ुरीता!" उसने पुकारा, "गुत्तिएरे!"

मगर कोई जवाब नहीं आया। मौन 'जेलीफ़िश' जहाज़ समुद्र की लहरों पर इठलाता रहा।

"वे सब कहां चले गये," इकथियांदर सोचने लगा। "अब की बार ज़ुरीता कौन-सी चाल खेल रहा है?" सावधानी से इकथियांदर 'जेलीफ़िश' की ओर तैरकर गया और जहाज़ पर चढ़ गया।

"गुत्तिएरे!" उसने फिर पुकारा।

"हम यहां हैं!" तट की ओर से ज़ुरीता की मन्द आवाज़ उसके कानों में पड़ी। इकथियांदर ने घूमकर देखा, ज़ुरीता तट पर की झाड़ियों के पीछे से झांक रहा था।

"गुत्तिएरे बीमार पड़ गयी है! यहां आओ, इकथियांदर!" उसने पुकारकर कहा।

गुत्तिएरे बीमार थी! वह अभी उसे देख पायेगा! इकथियांदर ने पानी में छलांग लगा दी और तेज़ी से तट की ओर तैरकर जाने लगा।

इकथियांदर पानी में से निकल आया था, जब गुत्तिएरे की रुंधी हुई आवाज़ उसके कानों में पड़ी:

"ज़ुरीता झूठ बोल रहा है! भागो, इकथियांदर!"

इकथियांदर ने घूमकर पानी में ग़ोता लगाया और तैरता हुआ वहां से निकल गया। तट से क़ाफ़ी दूर निकल जाने के बाद वह सतह पर आया और उसने पीछे मुड़कर देखा। तट पर सफ़ेद-सी कोई चीज़ झलक रही थी।

शायद गुत्तिएरे उसे विदा कर रही थी। क्या वह फिर कभी उससे मिल पायेगा?

तेज़ी से इकथियांदर खुले सागर की ओर तैर चला। दूर कहीं एक छोटा-सा जहाज़ नज़र आ रहा था। फेन उछालता वह दक्षिण की ओर बढ़ रहा था, उसका नुकीला अग्रभाग पानी को चीरता हुआ चला जा रहा था।

"इनसानों से जितना दूर हो सके, निकल जाऊं," इकथियांदर ने सोचा और गहराई में ग़ोता लगाकर समुद्र में खो गया।

भाग 3

नया बाप

पनडुब्बी की उस असफल यात्रा के बाद बाल्तासार बहुत ही उदास रहने लगा था। इकथियांदर मिला नहीं और ज़ुरीता गुत्तिएरे को लेकर कहीं लापता हो गया।

"बुरा हो इन सफ़ेद चमड़ीवालों का!" अपनी दूकान में अकेला बैठा वह बड़बड़ा रहा था। "इन्होंने हमारी ज़मीनें हमसे छीन लीं और हमें अपना ग़ुलाम बना लिया। ये हमारे बच्चों को पंगु बनाते हैं और हमारी बेटियों को चुरा ले जाते हैं। आख़िरी बच्चे तक ये हमें मार मिटाना चाहते हैं।"

"कहो, भैया," उसके कान में क्रिस्टो की आवाज़ पड़ी। "मैं ख़बर लाया हूं। बहुत बड़ी ख़बर है। इकथियांदर मिल गया है।"

"क्या?" बाल्तासार उछलकर खड़ा हो गया। "जल्दी कहो।"

"कहूंगा लेकिन तुम मेरी बात मत काटो, वरना मैं भूल जाऊंगा। वह वापस आ गया है। मैंने उस वक़्त ठीक कहा था: वह उसी डूबे हुए जहाज़ में था। हम वहां से दूर चले गये और वह उसमें से निकलकर तैरता हुआ घर चला आया।"

"इस वक़्त वह कहां है? साल्वातोर के यहां?"

"हां।"

"मैं साल्वातोर के यहां जाकर अपना बेटा मांगूंगा।"

"वह तुम्हें नहीं देगा," क्रिस्टो बोला। "और उसने इकथियांदर को समुद्र में तैरकर जाने से भी मना कर दिया है। हां, कभी-कभी मैं उसे चुपके-से निकल जाने देता हूं..."

"अगर मेरे बेटे को नहीं देगा तो मैं साल्वातोर का सिर क़लम कर दूंगा। चलो, अभी चलते हैं।"

क्रिस्टो ने घबराकर हाथ हिलाया।

"कम से कम कल तक इन्तज़ार करो। मैं बड़ी मुश्किल से अपनी 'नातिन' से मिलने की इजाज़त हासिल कर पाया हूं। साल्वातोर बड़ा शक्की हो गया है। अपनी पैनी आंखों से यों देखता है मानो नश्तर से काट रहा हो। मैं कहता हूं कल तक रुक जाओ।"

"अच्छी बात है, कल सही। आज मैं खाड़ी में जाऊंगा। शायद वहां मैं अपने बेटे को एक नज़र देख पाऊं, दूर से ही सही।"

उस रोज़ बाल्तासार रात भर खाड़ी के किनारे एक चट्टान पर बैठा आंखें फाड़-फाड़कर लहरों को देखता रहा। समुद्र में तूफ़ान उठ रहा था। ठण्डी दक्षिणी हवा के तेज़ झोंके तरंग-शिखरों से झाग नोचकर तटवर्त्ती चट्टानों पर फेंक रहे थे। सागर की मौजें तट को थपेड़े लगा रही थीं। भागते हुए बादलों के बीच में से चांद झांक-झांककर देखता, जिस से लहरें कभी चमक उठतीं, कभी फिर ढक जातीं।

उस उबलते सागर में हर मुमकिन कोशिश करने पर भी बाल्तासार कुछ नहीं देख पाया। पौ फटने पर वह चट्टान पर बुत का बुत बना बैठा था। सागर का रंग काले से धूसर पड़ गया था, लेकिन सागर पहले की ही तरह निर्जन और वीरान था।

सहसा बाल्तासार चौंक उठा। उसकी पैनी आंखों को पानी की सतह के ऊपर कोई काली-सी चीज़ उठती-गिरती नज़र आयी। कोई आदमी था, या शायद किसी डूबे हुए आदमी की लाश थी! नहीं, कोई आदमी पीठ के बल लेटा, सिर के नीचे अपने हाथ रखे आराम से बहता जा रहा था। क्या वह इकथियांदर था?

बाल्तासार ग़लती पर न था। वह सचमुच इकथियांदर ही था।

बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और हाथ छाती से चिपकाये ज़ोर से चिल्लाया:

"इकथियांदर, मेरे बेटे!" और बांहें ऊंची उठाकर पानी में कूद गया।

बाल्तासार ने गहरा ग़ोता लगाया, लेकिन जब वह सतह पर आया तो वह व्यक्ति जा चुका था। लहरों से जूझते हुए बाल्तासार ने फिर एक बार ग़ोता लगाया, लेकिन एक ज़बरदस्त लहर ने उसे उठा लिया, उलटा-पलटा, तट पर पटक दिया और गुर्राती हुई वापस लौट गयी।

बाल्तासार सिर से पांव तक भीग चुका था। वह उठा और लहरों की ओर देखते हुए ठंडी सांस ली।

"क्या यह मेरी कल्पना ही तो नहीं थी?"

जब धूप और हवा में उसके कपड़े सूख गये तो वह साल्वातोर की हवेली की ऊंची दीवार के पास जा पहुंचा और लोहे के फाटक को खटखटाने लगा।

"कौन है?" छोटी-सी अध-खुली खिड़की में से झांकते हुए एक नीग्रो ने पूछा।

"मैं डाक्टर से मिलना चाहता हूं, ज़रूरी काम है।"

"डाक्टर किसी से नहीं मिल रहे हैं," नीग्रो ने कहा और छोटी खिड़की को बन्द कर दिया।

इस पर बाल्तासार चिल्ला-चिल्लाकर फाटक पर घूंसे मारने लगा लेकिन फाटक बन्द का बन्द रहा। दीवार के पीछे से केवल एक ही आवाज़ आ रही थी और वह भी कुत्तों के भोंकने की डरावनी आवाज़।

"ज़रा ठहरो, मरदूद स्पेनी! मैं अभी तुम्हें मज़ा चखाता हूं!" बाल्तासार ग़ुर्राया और शहर की ओर चल दिया।

कचहरी के नज़दीक ही एक पुरानी, सफ़ेद रंग की, पत्थरों की मोटी दीवारोंवाली इमारत थी, जिसमें 'पाल्मा' नाम का एक पुल्केरिया (कहवाख़ाना) था। उसके प्रवेशद्वार के सामने एक छोटा-सा, धारीदार शामियाने से ढका बरामदा था, जिसमें मेज़-कुर्सियां लगी थीं और नीले इनेमल के गुलदानों में कैक्टस के पौधे रखे थे। शाम के वक़्त वहां बहुत चहल-पहल रहती थी, दिन के वक़्त ग्राहक नीची छतोंवाले शीतल कमरों में बैठना ज़्यादा पसंद करते थे। अदालत के वक़्त पुल्केरिया कचहरी के ही एक विभाग के समान हुआ करता था, जहां मुद्दई और मुद्दालेह, प्रतिवादपक्ष के गवाह और वाद-पक्ष के गवाह, जो अभी तक अदालत में पेश नहीं हुए थे, वक़्त काटने के लिए, शराब या पुल्के के गिलास सामने रखे घंटों बैठे रहते। एक चुस्त छोकरा कचहरी और पुल्केरिया के बीच डोलता रहता और अदालत की ख़बरें देता रहता। यह व्यवस्था सभी के अनुकूल थी। बदनाम वकील और झूठे गवाह ग्राहकों की तलाश में यहां घूमा करते थे।

अपनी दूकान के काम से बाल्तासार कई बार यहां आ चुका था। वह जानता था कि यहां उसे अर्ज़ी लिखने के लिए आदमी मिल सकता है। इसलिए उसने इसी जगह का रुख़ किया।

जल्दी से बरामदा लांघ कर उसने ठण्डी ड्योढ़ी में प्रवेश किया, ठण्डी हवा में सांस ली, माथे पर से पसीना पोंछा और नज़दीक ही मंडराते हुए एक लड़के से पूछा:

"लार्रा आ गया है?"

"दोन फ़्लोरेस दि लार्रा यहीं पर हैं और अपनी जगह पर तशरीफ़ रखते हैं," लड़के ने तत्परता से जवाब दिया।

दोन फ़्लोरेस दि लार्रा जैसे आडम्बरपूर्ण नामवाला व्यक्ति किसी ज़माने में कचहरी का मामूली क्लर्क हुआ करता था, लेकिन रिश्वतख़ोरी के इलज़ाम में उसे बरख़्वास्त कर दिया गया था। अब उसके बहुत-से मुवक्किल थे: संदिग्ध कामोंवाले सभी लोग इस मीन-मेख निकाल सकनेवाले वकील से मश्विरा लेने आया करते थे। बाल्तासार का भी इसके साथ वास्ता रहा था।

लार्रा एक चौड़े दासेवाली गॉथिक ढंग की खिड़की के पास मेज़ लगाये बैठा था। उसके निकट ही मेज़ पर शराब से भरा गिलास और बड़ा सा भूरे रंग का बैग रखे थे। जैतूनी रंग के घिसे-पिटे सूट के ऊपरी जेब में से उसका सदैव-तत्पर फ़ौउंटेन-पेन झांक रहा था। लार्रा मोटा, गंजा, सुर्ख़ गालों और सुर्ख़ नाकवाला, सफ़ाचट और दंभी आदमी था। खिड़की में से बह-बहकर आनेवाली हवा में उसके बचे-खुचे सफ़ेद बाल उड़ रहे थे। मुख्य न्यायाधीश भी इतने बड़प्पन से अपने मुवक्किलों से नहीं मिलता होगा जिससे लार्रा मिलता था।

बाल्तासार को अपनी ओर आते देखकर लार्रा ने लापरवाही से सिर हिलाया और उसे अपने सामने बेंत की कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया।

"तशरीफ़ रखिये," उसने कहा, "कहिये कैसे आना हुआ? शराब या पुल्के मंगवाऊं?"

सामान्यत: आर्डर लार्रा दिया करता था और बिल मुवक्किल को अदा करना पड़ता था।

बाल्तासार ने सुना अनसुना कर दिया।

"ज़रूरी काम है, बहुत ज़रूरी काम है, लार्रा।"

"दोन फ़्लोरेस दि लार्रा," वकील ने उसकी ग़लती दुरुस्त करते हुए कहा और शराब की चुस्की ली।

पर बाल्तासार ने इस दुरुस्ती की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"क्या काम है?"

"तुम तो जानते हो, लार्रा..."

"दोन फ़्लेरोस दि..."

"ये दांव नौसिखुओं के साथ खेलना," बाल्तासार ने बिगड़ते हुए कहा। "यहां बहुत संजीदा मामला है।"

"तो कहो क्या कहते हो," लार्रा ने पूछा। अब की बार उसका लहजा बदला हुआ था।

"क्या तुम 'समुद्री दैत्य' को जानते हो?"

"उनसे निजी तौर पर मिलने का सम्मान तो प्राप्त नहीं हुआ लेकिन उनके बारे में सुना बहुत कुछ है।" एक बार फिर आदत के मुताबिक अपनी भड़कीली ज़बान में लार्रा ने कहा।

"तो, जिस व्यक्ति को लोग 'समुद्री दैत्य' के नाम से पुकारते हैं, वह मेरा बेटा इकथियांदर है।"

"लेकिन यह नामुमकिन है! जान पड़ता है आज तुमने कुछ ज़्यादा पी रखी है," लार्रा ने कहा।

रेड इण्डियन ने मेज़ पर ज़ोर से घूंसा मारा।

"कल से मेरे मुंह में एक दाना भी नहीं गया समुद्र के खारे पानी के कुछेक घूंट छोड़कर।"

"इसका मतलब है हालत और भी बुरी है।"

"तुम मुझे पागल समझ रहे हो? नहीं, मेरी समझ-बूझ बिल्कुल ठिकाने है। अब अपना मुंह बंद करो और मेरी बात सुनो।"

बाल्तासार ने लार्रा को सारी कहानी कह सुनायी। लार्रा

ने दत्तचित्त होकर बाल्तासार का वृत्तान्त सुना, उसकी सफ़ेद भौंहें उसके माथे पर चढ़ती गयीं। जब इण्डियन ने बोलना बंद किया तो अपने बड़प्पन को भूलकर उसने अपने स्थूल हाथ से मेज़ पर घूंसा मारा और चिल्लाकर कहा:

"लाख शैतान!"

सफ़ेद एप्रन पहने और गंदा-सा नेप्किन उठाये एक छोकरा भागता हुआ मेज़ के पास आया:

"क्या हुक्म है?"

"दो बोतल सफ़ेद शराब लाओ, बर्फ़ के साथ!" और बाल्तासार की ओर मुख़ातिब होकर लार्रा ने कहा: "ख़ूब! यह बहुत बढ़िया मामला है। यह सब तुम्हारे दिमाग़ की उपज है क्या? पर सच कहूं कि इसमें तुम्हारे बाप होने के बारे में जो नुक़्ता है, वह मामले की सब से कमज़ोर कड़ी है।"

"तुम्हें इसमें शक है क्या?" बाल्तासार का चेहरा ग़ुस्से से तमतमाने लगा।

"नहीं, नहीं, नाराज़ मत होओ, दोस्त। मैं तो एक वकील के नाते बात कर रहा हूं, तुम्हारे मामले को क़ानून की नज़र से देख रहा हूं, अगर तुम मेरा मतलब समझते हो तो। यह जो नुक़्ता है, आख़िरी नुक़्ता, इसका आधार कमज़ोर है। लेकिन, मुझे यक़ीन है, इसको ज़्यादा मज़बूत बनाया जा सकता है। हां, और इससे कुछ पैसा भी बन सकता है।"

"मुझे पैसा नहीं, अपना बेटा चाहिए," बाल्तासार ने झट से जवाब दिया।

"हर किसी को पैसे की ज़रूरत होती है और ख़ास तौर पर तुम जैसे लोगों को जिन्हें उम्मीद हो कि उनके परिवार में एक और सदस्य आनेवाला है," लार्रा ने आडम्बरपूर्ण ढंग से कहा और अपनी चालाक आंखों को सिकोड़ते हुए कहने लगा, "सब से क़ीमती और सब से विश्वसनीय नुक़्ता, जिससे सारा मामला पकड़ में आ जाता है, यह

है कि हमें मालूम हो गया है कि साल्वातोर किस ढंग के आपरेशन और तजरबे करता है। इस नुक्ते को ऐसा रुख दिया जा सकता है कि उस धनी की तिजोरियों में से यों पैसे झरने लगेंगे जैसे पतझड़ की आंधी में पकी हुई नारंगियां।"

होंठ तर करने के लिए बाल्तासार ने उस शराब की हल्की सी चुस्की ली जो लार्रा ने उसके सामने रखी थी और बोला:

"मुझे अपना बेटा चाहिए। मेरी ओर से तुम्हें साल्वातोर के ख़िलाफ़ अदालत में अर्ज़ी देनी चाहिए।"

"कभी नहीं," लार्रा ने चिल्लाकर कहा, मानो डर गया हो, "मामले की इस मंज़िल पर तो कभी नहीं। ऐसा करने से तो सारा मामला ही चौपट हो जायेगा। अर्ज़ी देने का यह मौक़ा नहीं।"

"तो फिर तुम क्या सलाह देते हो?"

"सब से पहले तो यह," लार्रा ने अपनी स्थूल सी उंगली को मोड़ते हुए कहा, "हम साल्वातोर के नाम अत्यधिक शिष्टतापूर्ण शब्दों में एक पत्र लिखेंगे। हम उसमें लिखेंगे कि हमें उसके ग़ैर-क़ानूनी तजरबों और आपरेशनों के बारे में सब कुछ मालूम है और इस भेद को छिपाये रखने के लिए उसे चाहिए कि हमें अच्छी ख़ासी रक़म भेंट करे। एक लाख पेसो। हां, पूरे एक लाख पेसो, एक दमड़ी भी कम नहीं।"

लार्रा ने कुतूहलपूर्ण आंखों से बाल्तासार की ओर देखा। इण्डियन ने त्योरी चढ़ायी लेकिन मुंह से कुछ नहीं बोला।

"दूसरे," लार्रा ने अपना कथन जारी रखते हुए कहा, "उपरोक्त रक़म मिल जाने पर, और मुझे यक़ीन है कि यह हमें मिल जायेगी—हम साल्वातोर को एक और पत्र लिखेंगे। यह पहले पत्र से भी ज़्यादा विनम्र होगा। उसमें हम लिखेंगे कि इकथियांदर के असली बाप का पता चल

गया है और इसके बारे में हमारे पास अकाट्य प्रमाण मौजूद हैं। फिर हम उसे बतायेंगे कि बाप अपने बेटे को पाने का पक्का निश्चय किये हुए है, यदि इसके लिए उसे साल्वातोर पर मुक़द्दमा भी चलाना पड़ा तो चलायेगा, और अदालती कार्रवाई से लोगों की आंखें खुल जायेंगी कि साल्वातोर ने इकथियांदर का किस भांति अंग-भंग किया है। अगर साल्वातोर अदालती कार्रवाई से बचना चाहता है और लड़के को अपने पास बनाये रखना चाहता है, तो उससे दरख़्वास्त है कि वह अमुक व्यक्तियों को अमुक समय और स्थान पर दस लाख डालर देने की कृपा करे।"

लेकिन बाल्तासार ने एक न सुनी। उसने झपटकर बोतल उठायी और उसे वकील के सिर पर मारने के लिए लपका। लार्रा ने उसे पहले कभी भी इतना क्रुद्ध नहीं देखा था।

"रुको, रुको, इतना आपे से बाहर होने की ज़रूरत नहीं है। मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। बोतल रख दो," अपनी चमकती खोपड़ी को एक हाथ से बचाने की कोशिश करते हुए लार्रा ने कहा।

"तुम," बाल्तासार ने चिल्लाकर कहा, "तुम यह सलाह दे रहे हो कि मैं अपने बेटे को बेच दूं, अपने इकथियांदर को! तुम्हारे सीने में दिल है या नहीं? या तुम इनसान न होकर कोई बिच्छू या मकड़ी हो, एक पिता की भावनाओं का तुम्हें कोई अहसास नहीं!"

"हां, मुझे ज़रा भी अहसास नहीं!" लार्रा ने जवाब में चिल्लाकर कहा। उसका भी पारा गरम हो रहा था। "मेरे अन्दर पांच दिल हैं! मेरे पांच बेटे हैं! छोटे-बड़े आकार के पांच बंदर हैं! पांच पेट हैं जिन्हें मुझे भरना होता है! मैं सब कुछ जानता-समझता और महसूस करता हूं। तुम्हें तुम्हारा बेटा मिल जायेगा। पर पहले धैर्य से मेरी बात अन्त तक सुन लो।"

बाल्तासार तनिक शांत हुआ। उसने बोतल मेज़ पर रख दी और लार्रा की ओर देखकर बोला:

"कहो, क्या कहते हो।"

"हां, तो साल्वातोर दस लाख डालर हमारी नज़र करेगा। यह इकथियांदर का दहेज होगा! और कुछ मुझे भी, मेरी मेहनत और मेरी हिकमत के लिए बस केवल एक लाख डालर मिल जायेंगे। इस पर झगड़ने की ज़रूरत नहीं है। साल्वातोर सब उगल देगा। मैं शर्त बांधकर कह सकता हूं। ज्यों ही हमारे हाथ पैसा लगेगा..."

"हम उसे अदालत में ले जायेंगे।"

"थोड़ा और धैर्य रखो। हम सबसे बड़े अख़बारों के किसी प्रकाशक को एक सनसनीख़ेज़ जुर्म की कहानी बीस या तीस हज़ार पेसो के लिए—महज़ जेब-ख़र्च के लिए—पेश करेंगे। शायद ख़ुफ़िया पुलिस के धन का भी कुछ थोड़ा-सा हिस्सा तुम्हारे हाथ लग जाये। इस जैसे मामले पर तो कुछ लोग बड़े-बड़े ओहदे हासिल कर सकते हैं, तुम जानते हो। जब हम साल्वातोर को पूरा का पूरा निचोड़ लेंगे, तब तुम बेशक अदालत में जाओ, तब अपनी पैतृक भावनाओं की दुहाई दो और तब भगवान करे, न्याय की देवी स्वयं तुम्हारी मदद करे और तुम अपना दावा साबित कर पाओ और अपने बिछुड़े हुए बेटे को छाती से लगा पाओ।"

लार्रा ने ग़ट-ग़ट करके गिलास ख़त्म कर दिया, ज़ोर से उसे मेज़ पर रखा और विजय-भाव से बाल्तासार की ओर देखकर बोला:

"अब कहो तुम्हारी क्या राय है?"

"मुझे न दिन को चैन है न रात को, और यहां तुम मुझे सलाह दे रहे हो कि मैं इतने लम्बे अर्से तक इस मामले को तूल देता जाऊं," बाल्तासार ने कहना शुरू किया।

"मगर ज़रा सोचो तो इससे तुम कितने मालामाल हो जाओगे!" लार्रा ने ग़ुस्से से बात काटते हुए कहा।

"लाखों, ला-खों! क्या तुम्हारा दिमाग़ घास चरने गया हुआ है? आखिर पिछले बीस बरस से तुम इकथियांदर के बिना रहते रहे हो या नहीं?"

"हां, रहता रहा हूं। पर अब... मेरे लिए अदालत में अर्ज़ी लिख दो।"

"ठीक है, तुम्हारा दिमाग़ सचमुच घास चरने गया है!" लार्रा ने चिल्लाकर कहा। "होश में आओ, बाल्तासार! समझने की कोशिश करो! यहां लाखों के वारे-न्यारे हो जायेंगे! रुपया! सोना! मुंह-मांगी चीज़ें हासिल कर सकोगे। बढ़िया से बढ़िया तम्बाकू, मोटरें, जहाज़, यह पुल्केरिया भी..."

"तुम अर्ज़ी लिखो वरना मैं किसी दूसरे वकील के पास जा रहा हूं," बाल्तासार ने बात को ख़त्म करते हुए कहा।

लार्रा जानता था कि अब उसकी बात नहीं चल सकती। उसने अनमने ढंग से सिर हिलाया, आह भरी, बैग में से कागज़ निकाला और फ़ौउन्टेन-पेन को झटककर खोला।

कुछ ही मिनटों में साल्वातोर के ख़िलाफ़ मुनासिब ढंग की अर्ज़ी लिख डाली गयी कि उसने बाल्तासार के बेटे को ग़ैर-क़ानूनी ढंग से क़ाबू में कर रखा है और उसका अंग-भंग किया है।

"मैं आख़िरी बार तुमसे कह रहा हूं, बाल्तासार, होश में आओ," लार्रा ने कहा।

"इधर लाओ," काग़ज़ की ओर हाथ बढ़ाते हुए इण्डियन बोला।

"प्रधान सरकारी वकील को दे दो। जानते हो कहां मिलेगा?" फिर लार्रा बड़बड़ाया, "भगवान करे सीढ़ियों पर से ऐसे गिरो कि तुम्हारी हड्डी-पसली एक हो जाये!"

सरकारी वकील के दफ़्तर में से निकलने पर बड़ी-बड़ी सफ़ेद सीढ़ियों पर बाल्तासार की भेंट ज़ुरीता से हो गयी।

"यहां किस काम से आये हो?" संदेह भरी नज़र से बाल्तासार की ओर देखते हुए ज़ुरीता ने पूछा। "कहीं मेरे ख़िलाफ़ तो नालिश नहीं कर दी?"

"नालिश तो तुम सब के ख़िलाफ़ करनी चाहिये," बाल्तासार ने कहा, उसका मतलब सभी स्पेनी लोगों से था, "लेकिन यहां कोई ऐसा व्यक्ति है नहीं, जिसके सामने तुम लोगों को पेश किया जा सके। मेरी बेटी को कहां छिपा आये हो?"

"मैं तुम्हें तमीज़ से बात करना सिखाऊंगा!" ज़ुरीता ने बौखलाकर कहा। "अगर तुम मेरी बीवी के बाप न होते तो मैं तुम्हें इस छड़ी का मज़ा चखा देता।"

और बाल्तासार को धकेलकर अपने रास्ते में से हटाते हुए ज़ुरीता सीढ़ियां चढ़ गया और मज़बूत बलूत के बने विशाल दरवाज़े के पीछे ग़ायब हो गया।

लाट पादरी

ब्वेनस-ऐरीज़ के प्रधान सरकारी वकील से मिलने के लिए एक विरल व्यक्ति आया—वह था स्थानीय मुख्य गिरजाघर का लाट पादरी ख़ुआन दि गार्सिलासो।

छोटी-छोटी धुन्धली आंखों, छोटे-कटे बालों और रंगी हुई मूंछोंवाला स्थूलकाय किन्तु चुस्त-दुरुस्त सरकारी वकील मेज़ के पीछे से उठकर लाट पादरी से मिलने आया। मेज़बान ने अपने मेज़ के पास चमड़े की बोझल आराम-कुर्सी में अपने प्रिय अतिथि को बड़ी सावधानी से बिठाया।

मेहमान और मेज़बान के बीच रूप-रंग के नाते आश्चर्यजनक रूप से कोई भी समानता नहीं थी। सरकारी वकील का चेहरा लाल और स्थूल था, होंठ मोटे और नाक नाशपाती जैसी फूली थी। उसकी गठीली उंगलियां सॉसेज जैसी—मांस से भरी नलियों जैसी—थीं, और कोट के बटन किसी भी वक़्त तोंद के उतार-चढ़ाव के कारण टूटकर अलग हो जाने की धमकी दे रहे थे।

लाट पादरी के चेहरे की दो विशेषताएं थीं: पीलापन और पतलापन। पतली सी चोंचदार नाक, नुकीली ठुड्डी, पतले से रक्तहीन होंठ, जिनके कारण वह जैसूट सम्प्रदाय का एक नमूना नज़र आता था। लाट पादरी कभी भी अपने साथ बातें करनेवाले व्यक्ति की ओर सीधा नहीं देखता था, फिर भी वह सारा वक़्त बड़े पैने ढंग से उसका निरीक्षण करता रहता। लाट पादरी का बड़ा प्रभाव था और वह बड़े शौक से गिरजे से सम्बन्धित अपने कार्य-कलाप से वक़्त निकालकर राजनीति के जटिल खेल का संचालन किया करता था।

अभिवादन की औपचारिकता के बाद लाट पादरी सीधा मतलब की बात पर आ गया।

"मैं यह जानना चाहता हूं," उसने धीमी आवाज़ में कहा, "कि प्रोफ़ेसर साल्वातोर का मुक़द्दमा किस स्थिति में है।"

"वाह, कृपानिधान," सरकारी वकील ने बड़ी मिलनसारी के लहजे में कहा, "आप भी इस मुक़द्दमे में दिलचस्पी रखते हैं! यह सचमुच बड़ा विलक्षण मुक़द्दमा है!" और एक मोटी-सी फ़ाइल उठाकर उसके पन्ने उलटते हुए बोला, "पेद्रो ज़ुरीता की मुख़बिरी के आधार पर हमने प्रोफ़ेसर साल्वातोर के घर की तलाशी ली। ज़ुरीता के इस अभियोग की पूर्ण रूप से पुष्टि हुई है कि साल्वातोर जानवरों पर असाधारण आपरेशन करता रहा है। वास्तव में साल्वातोर के बाग़ भयंकर जानवरों की सचमुच की फ़ैक्टरी हैं। यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है! मिसाल के तौर पर साल्वातोर..."

"तलाशी के बारे में मैंने अख़बारों से सब कुछ जान लिया है," लाट पादरी ने धीमी आवाज़ में कहा। "साल्वातोर के ख़िलाफ़ आपने कौन-से क़दम उठाये हैं? क्या वह हिरासत में है?"

"जी हां, हिरासत में है। इसके अलावा हम भौतिक

प्रमाण और वाद-पक्ष के गवाह के रूप में इकथियांदर नाम के एक युवक को, जो 'समुद्री दैत्य' के नाम से भी प्रसिद्ध है, पकड़कर नगर में ले आये हैं। यह बड़ी विचित्र बात है कि कुख्यात 'समुद्री-दैत्य', जिसके कारण हमें इतनी परेशानी उठानी पड़ी, साल्वातोर के चिड़ियाघर का ही एक निवासी था! ख़्याल कीजिये! इस समय विशेषज्ञों का एक दल, जिसमें अधिकांश विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर हैं, मौक़े पर इन सभी विचित्र जंतुओं की जांच कर रहे हैं, क्योंकि चिड़ियाघर इतना बड़ा था कि उसे दूसरी जगह स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता था। पर, जैसा कि मैंने कहा, इकथियांदर को शहर ले जाया गया है और कचहरी के नीचे एक तहख़ाने में उसे रख दिया गया है। पर मैं अर्ज़ करूं कि वह परेशानी का कारण है। आप ख़याल फ़रमाइये, हमें उसके लिए एक बड़े हौज़ का इन्तज़ाम करना पड़ा, क्योंकि जान पड़ता है कि वह पानी के बिना नहीं रह सकता। उसकी हालत सचमुच अच्छी नहीं है। प्रकटत: साल्वातोर ने उसके शरीर में कुछेक असाधारण परिवर्तन करके उसे एक तरह का जलथलिया बना दिया है। हमारे विशेषज्ञ इस समय इस सवाल के साथ जूझ रहे हैं।"

"मेरी दिलचस्पी ख़ुद साल्वातोर में ज़्यादा है," पहले की तरह ही धीमी आवाज़ में लाट पादरी ने कहा, "क़ानून की किस धारा के अन्तर्गत उसे सज़ा दी जा सकती है? क्या उसे सचमुच सज़ा दी जायेगी या नहीं, इस बारे में मैं आपकी राय जानना चाहता हूं।"

"साल्वातोर का मुक़द्दमा इस बात में बड़ा विलक्षण है कि उसकी कोई मिसाल नहीं है," सरकारी वकील ने कहा। "सच कहूं तो मैं अभी तक इस बात का निश्चय नहीं कर पाया कि क़ानून की कौन-सी धारा उसके जुर्म पर लागू होती है। बेशक सब से आसान बात तो यही होगी

कि उस पर ग़ैर-क़ानूनी तौर पर चीर-फाड़ करने और इस युवक का अंग-भंग करने का अभियोग लगाया जाये..."

लाट पादरी के माथे पर हल्का-सा बल पड़ गया।

"तो आप यह समझते हैं कि साल्वातोर जो कुछ करता रहा है उसमें क़ानून का उल्लंघन नहीं हुआ?"

"उल्लंघन तो ज़रूर हुआ है, लेकिन कैसे, यह कह पाना कठिन है," सरकारी वकील ने कहा। "इस विषय पर एक और अर्ज़ी मुझे बाल्तासार नामक एक रेड इण्डियन की तरफ़ से मिली है। उसका दावा है कि इकथियांदर उसका बेटा है। उसने जो सबूत पेश किये हैं, वे तो कुछ कमज़ोर हैं, लेकिन हम शायद उसे वाद-पक्ष के एक गवाह के तौर पर बुलायेंगे, बशर्ते कि विशेषज्ञों की इस बात का विश्वास हो जाये कि इकथियांदर सचमुच उसी का बेटा है।"

"क्या आपका यह मतलब है कि साल्वातोर पर ज़्यादा से ज़्यादा यह अभियोग लगाया जायेगा कि उसने व्यावसायिक आचार-नीति का उल्लंघन किया है और केवल इस जुर्म के लिए उस पर मुक़द्दमा चलाया जायेगा कि उसने मां-बाप की रज़ामंदी के बिना बच्चे पर आपरेशन किया है?"

"जी, और शायद अंग-भंग के लिए भी। और यह उससे कहीं ज़्यादा बुरा है। पर मामले को देखने का एक और दृष्टिकोण भी है, जिससे यह मामला बिल्कुल दूसरी रोशनी में नज़र आ सकता है। विशेषज्ञों का झुकाव यह मानने की ओर है—हालांकि अभी तक वे अन्तिम रूप से निश्चय नहीं कर पाये—कि एक भला-चंगा व्यक्ति जानवरों पर इस प्रकार के भयंकर आपरेशनों के बारे में सोच भी नहीं सकता था, इनसान पर उन्हें करने की बात तो दूर रही। शायद वे साल्वातोर को पागल घोषित कर दें।"

लाट पादरी चुपचाप बैठा था, उसके पतले होंठ भिंचे

हुए थे और उसकी आंखें मेज़ के एक कोने पर एकटक लगी हुई थीं।

"मुझे आपसे इस बात की आशा नहीं थी," अन्त में उसने मौन भंग करते हुए धीमी आवाज़ में कहा।

"क्या फ़रमाया आपने, कृपानिधान?" सरकारी वकील ने हैरान होकर पूछा।

"आप भी, जो न्याय के रक्षक हैं, साल्वातोर की करतूतों को माफ़ करते जान पड़ते हैं, उसके आपरेशनों को निर्दोष ठहराने की कोशिश कर रहे हैं।"

"पर उनमें इतना बुरा भी क्या है?"

"और क़ानून के उल्लंघन को निर्धारित करने में झिझक रहे हैं। हमारे पवित्र कैथोलिक चर्च का न्यायालय साल्वातोर की करतूतों को दूसरे दृष्टिकोण से देखता है। आपकी इजाज़त हो तो मैं आपकी सहायता करूं और आपको परामर्श दूं।"

"फ़रमाइये," पदाधिकारी ने झेंपकर कहा।

लाट पादरी ने धीमी आवाज़ में बोलना शुरू किया, धीरे-धीरे आवाज़ ऊंची उठती गयी, मानो गिरजे के मंच पर से वह धर्मोपदेश दे रहा हो, नास्तिक विज्ञान का पर्दाफ़ाश कर रहा हो।

"लगता है आपके विचार में साल्वातोर के कामों में कुछ न कुछ औचित्य ज़रूर पाया जाता है। आप यह सोचते हैं कि जिस मनुष्य को और जिन जानवरों को उसने विकृत किया है, उन्हें अब कुछ ऐसी सुविधाएं मिल गयी हैं, जो उन्हें पहले प्राप्त नहीं थीं। इसका क्या मतलब है? क्या इसका यह मतलब है कि भगवान ने मनुष्य को सम्पूर्ण नहीं बनाया, कि मनुष्य के शरीर को मुकम्मल बनाने के लिए प्रोफ़ेसर साल्वातोर की किसी दख़लन्दाज़ी की ज़रूरत थी?"

मेज़बान सिर झुकाये, बिना हिले-डुले बैठा था। गिरजाघर के लाट पादरी के सामने वह स्वयं अभियुक्त की स्थिति में लगने लगा था। इसकी उसे आशा नहीं थी।

"क्या आप पवित्र इंजील के उत्पत्ति सम्बन्धी विभाग के प्रथम अध्याय, पद 26 में जो कुछ लिखा है उसे भूल गये हैं? 'भगवान ने कहा, हम मनुष्य को अपना ही प्रतिरूप बनायेंगे, अपनी ही आकृति के अनुसार बनायेंगे' और आगे चल कर पद 27 में, 'अत: भगवान ने मनुष्य की सृष्टि अपनी आकृति के अनुरूप की'। साल्वातोर इस आकृति और एकरूपता को विकृत बनाने का दु:साहस करता है और आप—आप भी!—इसे उचित ठहराते हैं।"

"मुझे क्षमा कीजिये, फ़ादर," सरकारी वकील के मुंह से यही कुछ निकल पाया।

"क्या भगवान ने अपनी रचना को सम्पूर्ण नहीं पाया, जिसमें कोई भी त्रुटि नहीं थी?" लाट पादरी ने जोश में आते हुए कहा, "आपको इनसान के क़ानूनों की धाराएं तो याद हैं, लेकिन आप भगवान के क़ानूनों की धाराओं को भूल चुके हैं। उत्पत्ति संबन्धी विभाग के उसी अध्याय के पद 31 को याद कीजिये, 'और भगवान ने अपनी समस्त रचना की ओर देखा और ओ हो! वह बहुत ही अच्छी थी!' और आपका साल्वातोर अपने नास्तिक दम्भ में यह समझ बैठा है कि सुधार की गुंजाइश है, कि मनुष्य को जलथलिया बनाना चाहिए, और आप उस पर केवल आश्चर्यचकित हो रहे हैं और उसे उचित ठहराते हैं। क्या यह ईश्वर-निन्दा नहीं है? क्या यह धर्मापमान नहीं है? या क्या हमारे दीवानी क़ानून भगवान के विरुद्ध किये जानेवाले अपराधों को अब दण्डनीय नहीं समझते? यदि सभी लोग आप ही की तरह कहने लगें कि भगवान ने इनसान को ठीक तरह से नहीं बनाया और उसे फिर से बनाने के लिए साल्वातोर के हवाले करना चाहिए, तो क्या होगा? क्या यह धर्म का घोर विनाश नहीं होगा? भगवान ने उन सभी चीज़ों को—सभी जीवों को—जिनकी उन्होंने रचना की थी बहुत अच्छा पाया। मगर साल्वातोर जानवरों के सिर और खाल एक से उतार कर दूसरे पर लगाता है और घिनौने

दैत्य बनाता फिरता है, मानो भगवान का मज़ाक़ उड़ा रहा हो। उसकी करतूतों में आपके लिए क़ानून का उल्लंघन देख पाना कठिन हो रहा है!"

लाट पादरी रुक गया। सरकारी वकील पर अपने भाषण का प्रभाव देख कर वह मन ही मन ख़ुश हो रहा था। क्षण भर चुप रहने के बाद उसने फिर बोलना शुरू किया, पहले धीमी आवाज़ में और धीरे-धीरे उसे ऊंचा उठाते हुए:

"मैंने कहा है कि मुझे इस बात में ज़्यादा दिलचस्पी है कि साल्वातोर की क्या गति होगी। पर क्या मैं इस बात की उपेक्षा कर सकता हूं कि इकथियांदर का क्या होगा? इस जीव का तो क्रिस्चियन नाम तक नहीं है, इकथियांदर का यूनानी भाषा में अर्थ है 'मत्स्य-मानव'। मगर मान भी लिया जाये कि इसमें इकथियांदर का कोई दोष नहीं है, कि उसे शिकार बनाया गया है, फिर भी वह भगवान-विरोधी पाप की कृति है। इसका अस्तित्व ही साधारण लोगों को पाप की ओर आकृष्ट कर सकता है, उनके मन में धर्म-विरोधी सन्देह पैदा कर सकता है, उन लोगों की अस्थिरता का कारण बन सकता है जो दृढ़विश्वासी नहीं हैं। इकथियांदर का अस्तित्व ख़त्म कर दिया जाना चाहिए! उस अभागे युवक के लिए यही सब से अच्छी बात होगी कि भगवान उसे अपने पास बुला लें, कि वह अपनी विकृत प्रकृति के दोष के कारण मर जाये।" इस पर लाट पादरी ने बड़ी अर्थपूर्ण दृष्टि से वकील की ओर देखा। "हर हालत में उसे अभियुक्त ठहराया जाना चाहिए और बाहर से उसका कोई भी सम्पर्क नहीं रहने देना चाहिए। आख़िर उसने दण्डनीय अपराध भी तो किये हैं! मछुओं की मछलियां चुरायीं, उनके जाल काट डाले और—आप को याद होगा—मछुए इस हद तक डर गये कि उन्होंने मछलियां पकड़ना बंद कर दिया और नगर को मछलियां मिलना बंद हो गया। अनीश्वरवादी साल्वातोर और उसकी यह घिनौनी कृति भगवान के लिए और हमारे पवित्र चर्च के लिए चुनौती

के समान हैं! और जब तक इनका नाश नहीं हो जाता चर्च हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा रहेगा।"

लाट पादरी ने अपना भाषण जारी रखा। सरकारी वकील सिर नीचा किये, खिन्न-सा बैठा रहा। क्रोध भरे इस शब्द-प्रवाह का विरोध करने का उसमें साहस नहीं था।

आख़िर जब लाट पादरी ने बोलना बन्द किया तो सरकारी वकील उठा और गिरजाघर के उच्च पदाधिकारी के पास गया।

"एक ईसाई के नाते," उसने खोखली-सी आवाज़ में कहा, "मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए हाज़िर होऊंगा। क़ानून के पदाधिकारी के नाते मैं उस सहायता के लिए, जो आपने मुझे दी है, आभार प्रगट करता हूं। साल्वातोर के जुर्म के प्रति आपने मेरी आंखें खोल दी हैं। उस पर मुक़द्दमा चलाया जायेगा और उसे सज़ा दी जायेगी। और इन्साफ़ की तलवार इकथियांदर को भी नहीं बख़्शेगी।"

प्रतिभासम्पन्न पागल

हिरासत में रखे जाने के बावजूद डाक्टर साल्वातोर की हिम्मत नहीं टूटी। वह सदा की तरह शांत था और उसका आत्मविश्वास ज्यों का त्यों क़ायम था। जांच-अधिकारी और विशेषज्ञों के साथ वह ग़रूर के साथ और इस तरह बातें करता जैसे बड़ी उम्र का आदमी बच्चों के साथ बातें करता है। उसका क्रियाशील स्वभाव निष्क्रियता को सहन नहीं कर सकता था। वह बहुत कुछ लिखता रहता, जेलख़ाने के अस्पताल में उसने अनेक सफल आपरेशन किये। अन्य आपरेशनों के अलावा उसने जेलर की पत्नी का कैंसर का आपरेशन करके उसकी जान बचा दी जबकि अन्य डाक्टरों ने उसे लाइलाज घोषित कर दिया था।

मुक़द्दमे का दिन आया।

कचहरी का बड़ा हॉल लोगों से खचाखच भरा था। जिन लोगों को हॉल के अन्दर बैठने की जगह नहीं मिली थी, वे बरामदों में, कचहरी के सामने के आंगन में भीड़ जमाये

थे, खिड़कियों में से झांक रहे थे और अच्छी तरह से देख पाने के लिए पेड़ों पर चढ़कर बैठे हुए थे।

सात्वातोर क़ैदी के कटघरे में शांतचित्त बैठा था। उसके रोबीले चेहरे को देख कर लगता था कि वह मुजरिम न हो कर न्यायाधीश है। उसने अपने लिए सफ़ाई का वकील रखने से इनकार कर दिया था।

सभी की आंखें उसी पर टिकी थीं, लेकिन साल्वातोर की एकटक निगाह को सहन कर पाना किसी के लिए भी कठिन था।

इकथियांदर भी लोगों की दिलचस्पी को कम नहीं उकसाता, लेकिन वह कचहरी में मौजूद नहीं था। मुक़द्दमा शुरू होने से कुछ दिन पहले सेहत ख़राब होने के कारण और लोगों की कुतूहल भरी नज़रों से बचने के लिए वह ज़्यादा वक़्त हौज़ में ही घुसा रहता था। इसके अतिरिक्त साल्वातोर के मुक़द्दमे में इकथियांदर केवल वाद-पक्ष की ओर से एक गवाह मात्र था, या यों कहें कि उसकी स्थिति—जैसा कि सरकारी वकील ने कहा था—भौतिक प्रमाण जैसी थी। उसका अपना मुक़द्दमा बाद में और अलग तौर पर पेश किया जाना था। इसकी व्यवस्था लाट पादरी की इच्छानुसार इस ढंग से की गयी थी ताकि साल्वातोर को जल्दी सज़ा दी जा सके। इस बीच इकथियांदर के ख़िलाफ़ साक्ष्य तैयार किया जा सकता था। सरकारी वकील के कारिन्दे पुल्केरिया में जाया करते और बड़ी सावधानी और गर्मजोशी से भावी मुक़द्दमे के लिए गवाह भरती करते। परन्तु लाट पादरी अभी भी सरकारी वकील को इस आशय के इशारे करता रहता कि अभागे युवक—इकथियांदर—के लिए सब से अच्छी बात तो यही होगी कि भगवान उसे अपने पास बुला लें। ऐसी मृत्यु इस बात का सब से अच्छा प्रमाण प्रस्तुत करेगी कि भगवान की सृष्टि को मनुष्य का हाथ केवल बिगाड़ ही सकता है।

तीन विशेषज्ञ वैज्ञानिकों ने जो विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर

थे, अपने परिणाम पढ़कर सुनाये। वैज्ञानिकों की राय को हॉल में बैठे लोगों ने दत्तचित्त हो कर सुना, वे उसका एक भी शब्द खोना नहीं चाहते थे।

"अदालत के आदेशानुसार," अदालत के प्रमुख विशेषज्ञ अधेड़ उम्र के प्रोफ़ेसर शैन ने अपना भाषण शुरू करते हुए कहा, "हमने उन जानवरों का तथा इकथियांदर नाम के युवक का मुआइना किया है, जिन पर प्रोफ़ेसर साल्वातोर ने शल्य-प्रयोग किये हैं। हमने प्रोफ़ेसर साल्वातोर का छोटा-सा किन्तु उपकरणों से सुसज्जित आपरेशन-कक्ष और प्रयोगशालाएं भी देखी हैं। अपने काम में प्रोफ़ेसर साल्वातोर ने न केवल नवीनतम प्रविधि का—जैसे बिजली द्वारा चीर-फाड़ और अल्ट्रा-वायोलेट किरणों द्वारा संक्रामकता नष्ट करने के तरीक़े का प्रयोग किया है, बल्कि अनेक ऐसे उपकरणों का भी, जिनसे आधुनिक शल्य-विज्ञान अनभिज्ञ है। प्रकटत: ये औज़ार प्रोफ़ेसर साल्वातोर के लिए उनके अपने रूपांकों के अनुसार बनाये गये थे। जानवरों पर किये गये प्रोफ़ेसर साल्वातोर के प्रयोगों का मैं विस्तार के साथ विवेचन नहीं करना चाहता। संक्षेप में कहूं तो उनके आपरेशन उद्देश्य की दृष्टि से अत्यंत साहसिक और क्रियान्विति की दृष्टि से विलक्षण थे। प्रोफ़ेसर साल्वातोर ने मांस-तन्तुओं, समूचे अंगों और शरीर के हिस्सों को स्थानान्तरित किया है, दो जानवरों को एक साथ सी दिया है, एक-श्वासी जानवरों को दो-श्वासी जानवरों में तथा दो-श्वासी को एक-श्वासी में बदला है, मादा जीवों को नर जीवों में रूपान्तरित किया है, कायाकल्प के भी प्रयोग किये हैं। साल्वातोर के बाग़ों में हमने विभिन्न रेड इण्डियन जातियों के बच्चों को भी देखा, जिनकी उम्र चंद महीनों से लेकर चौदह साल तक थी।"

"आपने उन्हें किस स्थिति में पाया?" सरकारी वकील ने पूछा।

"सभी बच्चे बहुत अच्छी हालत में थे। वे काफ़ी ख़ुश

नज़र आते थे। कुछेक तो अपने जीवन तक के लिए डाक्टर साल्वातोर के ऋणी थे। रेड इण्डियनों को डाक्टर साल्वातोर में विश्वास था और वे उनके पास दूर दूर से—अलास्का से टिएरा देल फ़्यूगो तक अपने बच्चों को लाते थे।"

स्तब्ध हॉल में किसी के आह भरने की आवाज़ सुनायी दी।

सरकारी वकील चिंतित हो उठा। लाट पादरी से मुलाक़ात के बाद—जब उसके विचारों को नया रुख दिया गया था—वह साल्वातोर की प्रशंसा को चुपचाप सहन नहीं कर सकता था।

"क्या आप यह समझते हैं कि मुजरिम जो आपरेशन करता रहा है, उनका कोई न्यायोचित अभिप्राय था?" उसने विशेषज्ञ से पूछा।

लेकिन अधिष्ठाता जज ने, जो पके बालों और कठोर चेहरेवाला आदमी था, इस आशंका से कि विशेषज्ञ कहीं सकारात्मक उत्तर दे दे, बड़ी तत्परता से हस्तक्षेप किया:

"वैज्ञानिक मामलों में विशेषज्ञ की निजी राय से अदालत को कोई दिलचस्पी नहीं है। आगे कहिए, प्रोफ़ेसर। आराउकाना जाति के इकथियांदर नामक युवक के बारे में आप को क्या पता चला?"

"हमें यह पता चला कि इसका शरीर इनसान के हाथ के बने चोइंटों से ढका था," प्रोफ़ेसर शैन ने अपना वक्तव्य जारी रखते हुए कहा। "ये चोइंटे किसी अज्ञात पदार्थ के बने हैं, जिन्हें मोड़ना तो आसान है लेकिन बेधना कठिन है। इस पदार्थ के विश्लेषण के परिणामों का हम अभी इन्तज़ार कर रहे हैं। तैरते समय इकथियांदर ऐसा चश्मा आंखों पर चढ़ा लेता था जिसमें विशेष प्रकार का फ़्लिंट-कांच लगा था और जिसका वर्त्तनांक लगभग दो था। इसकी मदद से वह पानी के अन्दर अच्छी तरह से देख सकता था। चोइंटे हटाने पर हमने दोनों कन्धों की हड्डियों के नीचे एक-एक गोल छेद देखा, जिनका व्यास दस

सेंटीमीटर था और जो पांच पतली-पतली पट्टियों से ढके थे। ये सब शार्क-मछली के गलफड़ों से मिलते-जुलते थे।"

हॉल में विस्मय की दबी हुई आवाज़ सुनायी दी।

"हां," विशेषज्ञ ने अपना वक्तव्य जारी रखते हुए कहा, "भले ही यह बात विस्मयकारी जान पड़े, इकथियांदर के बदन में इनसान के फेफड़े और शार्क-मछली के गलफड़े, दोनों मौजूद हैं। यही कारण है कि वह ज़मीन पर और पानी में, दोनों जगह रह सकता है।"

"जलथलिया?" सरकारी वकील ने व्यंग से कहा।

"हां, वास्तव में वह मानवी जलथलिया है।"

"पर इकथियांदर को शार्क-मछली के गलफड़े कैसे मिल गये?" अधिष्ठाता जज ने पूछा।

विशेषज्ञ ने अपने दोनों हाथ फैला दिये और बोला:

"इस पहेली का उत्तर केवल प्रोफ़ेसर साल्वातोर ही दे सकते हैं। फिर भी मैं विशेषज्ञों की राय का निचोड़ पेश करने की कोशिश करूंगा। हैइकल के जीवोत्पत्ति संबन्धी नियम के अनुसार हर जीव अपने विकास में शरीर-रचना के उन रूपान्तरों को दुहराता है जो यह जाति पृथ्वी पर अपने अस्तित्व के आरम्भ से विकास के क्रम में अनुभव कर चुकी होती है। यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि किसी ज़माने में मनुष्य के दूर-पार के पुरखे गलफड़ों द्वारा सांस लिया करते थे।"

विरोध प्रदर्शित करने के लिए सरकारी वकील कुर्सी पर से तनिक-सा उठा, लेकिन जज ने इशारे से उसे बिठा दिया।

"भ्रूण-विज्ञान इस का समर्थन करता है। बीसवें दिन इनसान के भ्रूण में एक के पीछे एक गलफड़ों के चार उभाड़ प्रगट होते हैं। परन्तु बाद में मानव-भ्रूण के गलफड़ों में परिवर्तन आ जाता है: गलफड़ों का पहला उभाड़, श्रवण हड्डियों, श्रवण नली और यूस्टेकिओ नली में बदल जाता है; निचला उभाड़ निचले जबड़े का रूप ले लेता है; दूसरा

उभाड़ द्वितास्थि का, तीसरा कंठ की उपास्थि का रूप लेता है। यह है सामान्य विकास और हम नहीं समझते कि इकथियांदर की स्थिति में प्रोफ़ेसर साल्वातोर इसे रोक सकते थे। फिर भी विज्ञान को ऐसी स्थितियों का पता है जब वयस्कों तक में निचले जबड़े के ऐन नीचे गले पर गलफड़े का खुला छिद्र पाया गया। लेकिन उनके लिए इस छिद्र में से सांस लेने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। परन्तु यदि भ्रूण की सामान्य विकास प्रक्रिया में विकृति हुई होती, तो गलफड़े श्रवणेन्द्रिय तथा अन्य क्रियाओं को नुक़सान पहुंचाकर पनपते और इकथियांदर एक दैत्य बन जाता, जिसका आधा धड़ मछली का होता। परन्तु इकथियांदर एक ऐसा युवक है जिसका विकास सामान्य रूप से हुआ है, जिसकी श्रवण शक्ति अच्छी है, जिसका निचला जबड़ा काफ़ी बढ़ा हुआ है, जिसके फेफड़े अच्छे हैं और इसके अतिरिक्त जिसके गलफड़े भी भली भांति विकसित हैं। इकथियांदर के गलफड़े और फेफड़े कैसे काम करते हैं, एक दूसरे पर यदि उनका घात-प्रतिघात होता है तो उसका क्या रूप है, उसके गलफड़ों को मुंह और फेफड़ों के रास्ते से पानी पहुंचता है या उन दो छोटे-छोटे छिद्रों में से जो हमें उसके शरीर में प्रत्येक गलफड़े के छिद्र के ऐन ऊपर मिले थे—यह सब हम नहीं जानते। बिना चीर-फाड़ किये हम इन प्रश्नों का उत्तर दे भी नहीं सकते। मैं फिर एक बार कहूंगा कि यह एक ऐसी पहेली है जिसका उत्तर स्वयं प्रोफ़ेसर साल्वातोर ही दे सकते हैं। केवल प्रोफ़ेसर साल्वातोर ही जागुआरों से मिलते-जुलते उन कुत्तों और ऐसे ही अन्य जानवरों की तथा इकथियांदर के प्रतिरूपों—जलथलिये बंदरों—की व्याख्या कर सकते हैं।"

"आप किस सामान्य निष्कर्ष पर पहुंचे हैं?" जज ने पूछा।

विशेषज्ञ ने, जो स्वयं एक प्रसिद्ध सर्जन था, कहा:

"साफ़-साफ़ कहूं तो मेरे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा। मैं केवल इतना कह सकता हूं कि जो कुछ प्रोफ़ेसर साल्वातोर ने कर दिखाया है, वह केवल एक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति ही कर सकता है। ऐसा ज़रूर जान पड़ता है कि प्रोफ़ेसर साल्वातोर ने अपने कौशल में पारंगत होने पर यह निश्चय किया कि वह इनसानों अथवा जानवरों को टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें अपनी इच्छानुसार किसी दूसरे ढंग अथवा व्यवस्था में फिर से जोड़ेंगे। वह ऐसा करते रहे हैं, और बड़ी कुशलता के साथ, फिर भी मैं यह कहने पर मजबूर हूं कि उनके चिन्तन का साहस और विस्तार पागलपन की हद तक जा पहुंचे हैं।"

इस पर साल्वातोर के चेहरे पर एक हल्की-सी घृणापूर्ण मुस्कान दौड़ गयी। वह नहीं जानता था कि विशेषज्ञों ने उसके भाग्य को सहल बनाने के लिए उसके अनुत्तरदायित्व का सवाल उठाने का निश्चय किया है ताकि उसे क़ैदी के स्थान पर एक बीमार की हैसियत से रखना संभव हो सके।

"मैं यह नहीं कहता कि प्रोफ़ेसर साल्वातोर पागल हैं," साल्वातोर की मुस्कराहट को देखकर वक्ता ने कहा, "पर हम यह सुझाव ज़रूर देते हैं कि मुजरिम की अच्छी तरह से डाक्टरी जांच की जाये।"

"मुजरिम के अनुत्तरदायित्व का सवाल अदालत द्वारा नहीं उठाया गया। अदालत इस नयी स्थिति पर विचार करेगी," जज ने कहा। "प्रोफ़ेसर साल्वातोर, क्या आप उन नुक़्तों की व्याख्या करना चाहेंगे जो विशेषज्ञों तथा सरकारी वकील द्वारा उठाये गये हैं?"

"जी हां," साल्वातोर ने कहा, "मैं व्याख्या करूंगा, और मैं चाहूंगा कि यही मेरा अन्तिम वक्तव्य हो।"

मुलज़िम का बयान

साल्वातोर कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ और हॉल में बैठे लोगों की ओर देखे जा रहा था मानो उसकी आंखें किसी को खोज रही हों। अगली क़तार में उसने लाट पादरी को देखा, क्षण भर के लिए उसकी उड़ती नज़र ठिठक गयी, और एक हल्की सी मुस्कराहट उसके होंठों पर फैल गयी। इसके बाद वह पीछे बैठे लोगों की ओर देखने लगा, जिनमें उसे बाल्तासार, क्रिस्टो और ज़ुरीता नज़र आये। इसके बाद वह फिर से, पहले से अधिक सावधानी के साथ हॉल में बैठे लोगों की ओर देखने लगा।

"अदालत में मुझे मुद्दई नहीं दिखाई पड़ रहा," उसने कहा।

"मुद्दई मैं हूं!" बाल्तासार ने कुर्सी पर से उछलकर सहसा चिल्लाकर कहा। क्रिस्टो द्वारा पीछे खींचे जाने पर ही वह फिर से कुर्सी पर बैठा।

"आपका मतलब किस मुद्दई से है?" जज ने पूछा।

"अगर आपका अभिप्राय उन जानवरों से है जिन्हें आपने विकृत किया है तो उनके बारे में तो हमने निश्चय लिया है कि उन्हें यहां नहीं दिखाया जायेगा। जहां तक मानवीय जलथलिये का सवाल है, तो वह कचहरी की इमारत में मौजूद है।"

"मेरा अभिप्राय भगवान से है," साल्वातोर ने गंभीर, धीमी आवाज़ में कहा।

ये शब्द सुनते ही जज त्रास के मारे कुर्सी की पीठ से लगकर बैठ गया। "क्या साल्वातोर सहसा पागल हो गया है," वह सोचने लगा, "या शायद जेलखाने से बच निकलने के लिए पागलपन का बहाना कर रहा है?"

"आपका मतलब?" उसने पूछा।

"मैं समझता हूं, अदालत को इसका मतलब साफ़ होना चाहिए," साल्वातोर ने कहा। "मौजूदा मुक़द्दमे में मुख्यत: और एकमात्र बलि किसकी दी गयी है? स्पष्टत: भगवान की। अभियोग के अनुसार भगवान के क्षेत्र में कथित दखलन्दाज़ी करते हुए मैंने अपने काम से भगवान की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचायी है। भगवान को अपनी कृतियां भली लगती हैं, पर फिर एक डाक्टर उठ खड़ा होता है, जो कहता है, 'यह बुरा है, इसे बदल देना चाहिए।' और उन कृतियों को जिनकी रचना भगवान ने अपने विचारानुसार की थी, बदलने लगता है।"

"यह भगवान का अपमान है! मैं चाहता हूं कि मुलज़िम का बयान दर्ज कर लिया जाये," सरकारी वकील ने बीच में बोलते हुए इस अन्दाज़ से कहा मानो उसकी पवित्र भावनाओं को ठेस पहुंची हो।

साल्वातोर ने कन्धे बिचका दिये।

"मैं तो वही बातें कह रहा हूं, जिन्हें आरोप-पत्र में कहा गया है। क्या उसका यही निचोड़ नहीं निकलता? पहले मुझ पर केवल यह इलज़ाम लगाया गया था कि मैं चीर-फाड़ करता हूं, जिससे शरीर विकृत हो जाते हैं। अब मुझ पर

एक और इलज़ाम, भगवान का अपमान करने का इलज़ाम, लगाया जा रहा है। यह कहां से टपक पड़ा? कहीं गिर्जे की दिशा से तो नहीं आया?" और साल्वातोर ने सीधा लाट पादरी की ओर देखा।

"आपने स्वयं ऐसा मुक़द्दमा खड़ा किया है जिसमें मुद्दई के रूप में भगवान है जब कि चार्ल्स डार्विन मेरे साथ मुलज़िम के कटघरे में खड़ा है। शायद मेरी बातों से यहां उपस्थित कुछ लोगों के दिल को ठेस पहुंच रही है लेकिन मैं एक बार फिर कहूंगा कि जानवरों का, यहां तक कि मनुष्य का शरीर भी आदर्श नहीं है, निश्चय ही उनमें सुधार किया जा सकता है। मुझे आशा है कि लाट पादरी ख़ुआन दि गार्सिलासो, जो यहां अदालत में मौजूद हैं, मेरा समर्थन करेंगे।"

इससे हॉल में बैठे लोग हैरान रह गये।

"1915 में मोर्चे पर जाने से कुछ ही समय पहले," साल्वातोर कहे जा रहा था, "मुझे माननीय लाट पादरी के शरीर में थोड़ा सुधार करने का मौक़ा मिला था, मैंने उनके एपेन्डिक्स को, या बोलचाल की भाषा में कहें तो अंधी आंत के उस फ़िज़ूल और जोखिम भरे हिस्से को काटा था। उस समय जब भगवान की छवि के अनुरूप बने उनके शरीर के एक हिस्से को काटकर मैं भगवान का अपमान करने जा रहा था तो शल्य-चिकित्सा के मेज़ पर लेटे हुए मेरे पादरी-मरीज़ ने कोई आपत्ति नहीं की थी। क्या यह सच नहीं है?" लाट पादरी की ओर सीधा देखते हुए साल्वातोर ने पूछा।

ख़ुआन दि गार्सिलासो के ज़र्द चेहरे पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी, वह मूर्त्तिवत् बैठा रहा, उसके हाथों की उंगलियों में हल्का-सा कम्पन हुआ।

"क्या उन्हीं दिनों, जब मैं प्राइवेट प्रैक्टिस करता था, एक और मामला नहीं हुआ था? क्या हमारे माननीय

सरकारी वकील, सीन्योर आउगूस्तो मेरे पास इस लिए नहीं आये थे कि मैं उनका कायाकल्प कर दूं?"

सरकारी वकील प्रतिवाद करने के लिए उठ खड़ा हुआ लेकिन लोगों की हंसी में उसके शब्द डूबकर रह गये।

"कृपया विचाराधीन विषय पर बात कीजिये, इधर-उधर की बातें मत कीजिये," जज ने रुखाई के साथ कहा।

"यह अनुरोध तो आरोप-पत्र के लिखनेवालों से किया जाना चाहिए," साल्वातोर ने कहा। "सब से पहले उन्होंने ही मामले को यह रुख दिया है। प्रकटत: यहां उपस्थित कुछ लोगों के गले से यह बात नहीं उतर सकती कि अन्य सभी लोगों की तरह वे भी कल के बंदर हैं, या मछलियां हैं, जो केवल इस कारण बोलने और सुनने की क्षमता रखते हैं कि उनके गलफड़े विकास पाकर सुनने और बोलने के अंगों में बदल गये हैं। बिल्कुल बंदर या मछलियां तो नहीं, बेशक, लेकिन उनके वंशज।" और सरकारी वकील की ओर मुखातिब होकर, जो बहुत बेचैन नज़र आ रहा था, साल्वातोर ने कहा: "धैर्य रखिये, यहां क्रम-विकास के सिद्धान्त पर भाषण देने का मेरा कोई इरादा नहीं है।" फिर कुछ देर रुककर वह बोला: "मनुष्य के बारे में परेशानी की बात यह नहीं कि वह जानवर से इनसान बना है, बल्कि यह कि उसने जानवर बने रहना नहीं छोड़ा है, धूर्त्तता, गुस्ताखी, बेसमझी का उसने अभी तक त्याग नहीं किया है। भ्रूण सम्बन्धी विकास के बारे में बोलते हुए मेरे विद्वान सहकर्मी ने व्यर्थ ही आपको डराया। क्योंकि भ्रूणों पर प्रभाव डालने या जानवरों का मेल कराने की कोशिश मैंने कभी नहीं की है। मैं एक सर्जन हूं और सर्जन का नश्तर ही मेरा एकमात्र औज़ार रहा है। शल्य-चिकित्सा में अक्सर ट्रांसप्लांटेशन की ज़रूरत रहती है। इसलिए प्रयोगाधीन तरीक़ों में सुधार करने के लिए मैं जानवरों पर तजरबे करने लगा। मेरा अंतिम लक्ष्य मनुष्य के रुग्ण अंगों के स्थान पर स्वस्थ अंग लगाना था।

"जिन जानवरों पर मैं आपरेशन करता था, उन्हें मैं अपनी प्रयोगशाला में रखता, उनके उन अंगों और हिस्सों की गति-विधि का अध्ययन करता, जिन्हें बिल्कुल नये परिवेश में स्थानांतरित किया गया था। मेरा निरीक्षण-कार्य समाप्त हो जाने पर जानवरों को बाग़ में छोड़ दिया जाता था। इस भांति मेरा चिड़ियाघर तैयार हुआ। दूर-पार की जातियों की, मिसाल के तौर पर मछलियों और स्तनपायी जानवरों की मांसपेशियों और अंगों को स्थानांतरित करने में मेरी विशेष रुचि थी। इस विशिष्ट क्षेत्र में मेरी उपलब्धि को समकालीन वैज्ञानिक अभी भी नामुमकिन समझते हैं। पर क्या यह सचमुच नामुमकिन है? मुझे विश्वास है कि जो बात आज केवल मैं कर सकता हूं, उसे कल आम सर्जन करने लगेंगे। प्रोफ़ेसर शैन शायद उन नवीनतम आपरेशनों के बारे में जानते हैं जिन्हें जर्मन सर्जन साउरब्रूख़ ने सम्पन्न किया है। वे जांघ की रुग्ण हड्डी के स्थान पर एक स्वस्थ पिंडली की हड्डी लगाने में कामयाब हो गये हैं।"

"हां, लेकिन इकथियांदर के बारे में आप क्या कहेंगे?" विशेषज्ञ ने पूछा।

"इकथियांदर? अब इकथियांदर पर मुझे विशेष रूप से गर्व है। उसकी स्थिति में जो कठिनाई थी, वह तकनीक के बारे में इतनी नहीं थी जितनी मानव शरीर की मुख्य क्रियाओं को बदलने की ज़रूरत के बारे में थी। छः बंदर क़ुर्बान करने के बाद ही मुझे ख़ुद इस बात का विश्वास हो पाया था कि मैं एक बच्चे पर बिना किसी जोखिम के आपरेशन कर सकता हूं!"

"आपरेशन का स्वरूप क्या था?" अधिष्ठाता जज ने पूछा।

"मैंने एक युवा शार्क-मछली के गलफड़ों को एक बच्चे के शरीर में स्थानान्तरित किया था, जिससे वह ज़मीन और पानी दोनों में रहने के योग्य हो गया था।"

हॉल में विस्मय की आवाज़ें सुनाई दीं। रिपोर्टर भागते हुए बाहर गये ताकि टेलीफ़ोन द्वारा अपने संपादकों तक इस ख़बर को पहुंचा दें।

"बाद में मैं अपनी मौलिक उपलब्धि में भी सुधार करने में समर्थ हो गया था। जलथलिया बंदर—मेरे काम का नवीनतम परिणाम—अनिश्चित समय के लिए दोनों पानी में या ज़मीन पर रह सकता है, और इससे उसके स्वास्थ्य को कोई नुक़सान नहीं पहुंचता। लेकिन इकथियांदर पानी के बाहर लगातार तीन, या ज़्यादा से ज़्यादा चार दिन से अधिक नहीं रह सकता। ज़मीन पर ज़्यादा देर तक रहने से उसके फेफड़ों पर दबाव पड़ता है, उसके गलफड़े सूखने लगते हैं और इसकी पहली अलामत यह होती है कि उसकी कमर में तीखा दर्द उठने लगता है। दुर्भाग्यवश मेरी अनुपस्थिति में उसकी नियमित दिन-चर्या भंग हो गयी। वह बहुत बार अपने फेफड़ों का अत्यधिक प्रयोग करता रहा, जिसके बड़े दुःखद परिणाम निकले। उसके शरीर में सन्तुलन भंग हो गया है और अपनी वर्तमान स्थिति में उसे बहुत समय पानी के अन्दर रहना पड़ रहा है। जलथलिया इनसान एक मानवरूपी मछली में परिवर्तित हो रहा है।"

"जलथलिया इनसान बनाने का विचार आपको कैसे सूझा, और ऐसा करने में आपका अभिप्राय क्या था?" जज से इजाज़त लेकर सरकारी वकील ने पूछा।

"इसी विचार से मुझे प्रेरणा मिली कि इनसान दोषरहित नहीं है। क्रम-विकास में अपने पशु-पुरखों की तुलना में बहुत कुछ प्राप्त करते हुए मनुष्य ने इस प्रक्रिया में खोया भी बहुत कुछ है। मिसाल के तौर पर, पानी के अंदर रहने से मनुष्य को एक बहुत बड़ी सुविधा प्राप्त होगी। निश्चय ही उसे इस सुविधा का उपभोग करना चाहिए। क्रम-विकास का सिद्धान्त हमें बताता है कि इस समय ज़मीन पर रहनेवाले सभी जानवरों की उत्पत्ति जलचरों से हुई है। और हम यह भी जानते हैं कि ज़मीन

पर रहनेवाले कुछेक जानवर बाद में जल में वापस लौट गये थे। डालफ़िन मूलत: एक मछली थी, फिर वह ज़मीन पर आयी और एक स्तनपायी जीव बन गयी, और बाद में फिर पानी में लौट गयी, हालांकि व्हेल की तरह वह स्तनपायी बनी रही। वे दोनों फेफड़ों से सांस लेती हैं। डालफ़िन को भी जलथलिये में परिणत किया जा सकता है। वास्तव में इकथियांदर इसी बात का मुझसे अनुरोध करता रहा है कि उसकी मित्र—एक डालफ़िन मछली लीडिंग—पानी के नीचे ज़्यादा देर तक उसके साथ रह सके। मैं इसके लिए आवश्यक आपरेशन करने जा ही रहा था। इकथियांदर—जो इनसानों के बीच पहली मछली और मछलियों के बीच पहला इनसान है—अकेला महसूस किये बिना नहीं रह सकता था। अब यदि बहुत से लोग उसका अनुसरण करेंगे तो स्थिति बहुत कुछ भिन्न हो जायेगी। तब शक्तिशाली तत्त्व—जल—अभिभूत होकर इनसान के क़दमों पर लोटेगा। मैं उसकी शक्ति की एक झलक आपको दिखाना चाहूंगा। आप जानते हैं कि सागर का प्रसार 36 करोड़ 10 लाख 50 हज़ार वर्ग किलोमीटर है। ज़मीन की सतह का 0,7 भाग पानी से ढका है। इनसान महासागर के स्तरों को आबाद कर सकता है। करोड़ों लोगों को रहने के लिए खुली जगह मिल जायेगी और साथ ही ख़ुराक और कच्चे माल की अक्षय राशि उनकी पहुंच के भीतर होगी।

"अब महासागर के ऊर्जा-स्रोतों को लीजिये। सुविदित है कि महासागर का जल 79 अरब अश्व-शक्ति के बराबर सौर-ऊर्जा को ग्रहण कर लेता है। अगर हवा को गर्माहट न दी जाती और अन्य रूपों में गर्माहट जाया न जाती तो सागर कब का ऊबल रहा होता। ऊर्जा के वस्तुत: इस अक्षय भण्डार को इनसान किस काम में लाता है? लगभग किसी भी काम में नहीं लाता।

"सागर की धाराओं की क्षमता के बारे में क्या कहा जाये? अकेले गल्फ़ स्ट्रीम और फ़्लोरीडा की धारा ही

91 अरब टन पानी प्रति घण्टा बहा ले जाती है, जो एक बड़ी नदी के बहाव का 3000 गुना है। इसके साथ सागर की अन्य धाराओं की शक्ति को जोड़िये! इनसान इस शक्ति का क्या प्रयोग करता है? फिर कहना होगा कि लगभग कुछ भी प्रयोग नहीं करता।

"सागर की लहरों और ज्वार-भाटा की शक्ति के बारे में क्या कहा जाये? मालूम रहे कि एक लहर की प्रहार-शक्ति सतह के प्रति वर्ग मीटर पर 38 हज़ार किलोग्राम—38 टन होती है, वह 43 मीटर की ऊंचाई तक उठ सकती है और अपने साथ, मिसाल के तौर पर, दस लाख किलोग्राम वज़न की चट्टानें उठा सकती है; सब से ऊंचा ज्वार-भाटा 16 मीटर की ऊंचाई तक जाता है। इन शक्तियों का मनुष्य क्या प्रयोग करता है? एक बार फिर कहना होगा कि लगभग कुछ भी प्रयोग नहीं करता।

"पृथ्वी पर मनुष्य ज़मीन की सतह से न तो बहुत ऊंचा उठ सकता है, न ही बहुत गहराई तक नीचे जा सकता है। समुद्र में जीवन हर जगह है—उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक, सतह से तल तक।

"इस असीम सम्पदा का हम क्या प्रयोग करते हैं? हम मछलियां पकड़ते हैं—और यह तो, यों कहें, कि सतह के निकट का ही ख़ज़ाना है, अधिक गहराइयां तो अछूती पड़ी रहती हैं; हम जलसोख मूंगे, मोती, घास-पात इकट्ठे करते हैं—और बस।

"थोड़ा-बहुत काम हम जल के नीचे भी करते हैं, पुलों और बांधों के लिये पुश्ते खड़े करते हैं, डूबे हुए जहाज़ों को निकालकर पानी की सतह पर ले आते हैं। इसमें भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, जोखिम उठाना पड़ता है और अक्सर जानें ज़ाया हो जाती हैं। फिर उस इनसान से किस बात की उम्मीद की जा सकती है जो पानी के नीचे दो मिनट तक रहे तो जान से हाथ धो बैठता है?

"अब, बिना ग़ोताख़ोरी की पोशाक या आक्सीजन

सिलिंडर के यदि इनसान पानी के नीचे रह सके और काम कर सके तो स्थिति बहुत कुछ भिन्न होगी। कितनी विराट सम्पदा उसके हाथ लगेगी! इकथियांदर ने एक बार मुझे बताया—मगर नहीं, मैं मानवीय ईर्ष्या के प्रेत को जगाना नहीं चाहता। वह मेरे पास विरल धातुओं और चट्टानों के नमूने, जो उसे समुद्र के तल पर पड़े मिलते थे, उठाकर ले आता था। चिन्ता नहीं कीजिये, वे बहुत ही छोटे-छोटे नमूने हुआ करते थे, लेकिन सागर में उनके ज़ख़ीरे बहुत बड़े हो सकते हैं।

"डूबे हुए ख़ज़ानों के बारे में क्या कहना होगा? 'लूसिटानिया' जहाज़ की दु:खद घटना को ही याद कर लेना काफ़ी होगा, जिसे 1916 में आयरलैंड के तट के निकट जर्मनों ने डुबो दिया था। उस बेशक़ीमती सामान के अलावा जो 'लूसिटानिया' जहाज़ के एक हज़ार से ज़्यादा यात्रियों के पास था, जहाज़ में सोने के सिक्कों के रूप में लगभग 15 करोड़ डालर नक़द और 5 करोड़ डालर की क़ीमत का सोना-चांदी ले जाये जा रहे थे। (अदालत में विस्मय की आवाज़ें।) इसके अतिरिक्त जहाज़ पर दो बक्से हीरे-जवाहरात के थे, जिन्हें अमस्टरडम ले जाया जा रहा था। इनमें लाखों डालर की क़ीमत का 'ख़लीफ़ा' नाम का संसार का सब से बड़ा पानीदार हीरा भी शामिल था। बेशक इतनी अधिक गहराई तक इकथियांदर जैसा आदमी भी नहीं उतर सकता था, इसके लिए ऐसे इनसान की सृष्टि करने की ज़रूरत होगी (इस पर सरकारी वकील ने ग़ुस्से से फुंकारा) जो गहरे पानी में रहनेवाली मछलियों की तरह उच्च दाब को सहन कर सके। यह नामुमकिन नहीं है, केवल समय की बात है।"

"आपने तो, जान पड़ता है, सर्वशक्तिमान की भूमिका अपना रखी है," सरकारी वकील ने कहा।

उसके शब्दों की ओर ध्यान दिये बिना साल्वातोर कहता गया:

"यदि इनसान पानी के नीचे रह पाये तो वह बहुत

जल्दी महासागर पर, उसकी गहराइयों पर अपना अधिकार क़ायम कर लेगा। फिर महासागर जान और माल की भारी क़ुरबानी तलब नहीं करेगा, और हमें अपने उन लोगों का शोक नहीं मनाना पड़ेगा जो समुद्र में डूबकर जान देते रहे हैं।"

साल्वातोर के वक्तव्य को सुननेवाले लोग उसकी वाक्पटुता से अभिभूत होकर अपनी आंखों के सामने मनुष्य द्वारा विजित एक जलगत संसार का दृश्य देखने लगे। यहां तक कि खुद जज भी इसके जादू से न बच सका।

"तब आपने अपने तजरबों के परिणाम प्रकाशित क्यों नहीं किये?" उसने पूछा।

"मुझे मुजरिम के कटघरे में पहुंचने की ख़ास जल्दी नहीं थी," साल्वातोर ने मुस्कराकर कहा, "इसके अलावा, हमारी सामाजिक पद्धति को देखते हुए मुझे इस बात का भी डर था कि शायद मेरी खोजों से फ़ायदे के बजाय नुक़सान ज़्यादा हो। यों भी इकथियांदर को ले कर खींचातानी शुरू हो गयी थी। आखिर मेरे खिलाफ़ किसने मुखबिरी की? ज़ुरीता ने, जिसने यह देखकर कि इकथियांदर उसके हाथ से निकल गया है, मुझसे बदला लेना चाहा। फिर ज़ुरीता से इकथियांदर को नौसेना के उच्चाधिकारी छीन लेते और जंगी जहाज़ों को डुबोने के लिए उसे प्रशिक्षित करते। नहीं, एक ऐसे देश में जहां धन-लोलुपता और संघर्ष बड़ी-बड़ी खोजों को एक बुराई में बदल देते हैं और केवल मानव-यन्त्रणा को बढ़ाते हैं, मैं इकथियांदर—और अन्य 'इकथियांदरों' को सार्वजनिक सम्पत्ति नहीं बना सकता था। मैंने सोचा..."

साल्वातोर रुक गया। जब उसने फिर बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज़ बहुत कुछ भिन्न थी।

"मैं इसकी चर्चा नहीं करूंगा। वरना शायद मुझे फिर पागल कहा जाये," उसने मुस्कराकर कहा और विशेषज्ञों की ओर देखा। "इस गौरव का मैं यहीं पर परित्याग

करना चाहता हूं, भले ही उसके साथ प्रतिभा शब्द भी टांक दिया जाये। मैं पागल नहीं हूं, न ही जनूनी हूं। मैंने वही कुछ किया है जो मैं करने निकला था, क्या यह ठीक नहीं है? आपने वह सब देख लिया है। अगर आपको मेरा कार्य-कलाप अपराधपूर्ण जान पड़े तो मुझ पर अदालती कार्रवाई करना और मुझे सज़ा देना आपका काम है। मैं किसी रिआयत का प्रार्थी नहीं हूं।"

जेलख़ाने में

अदालत के हुक्म को अमली जामा पहनाते हुए विशेषज्ञों ने इकथियांदर की न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक योग्यता की भी जांच की। उन्होंने देखा कि सरल से सरल प्रश्नों का उत्तर देते हुए भी उसे कठिनाई हो रही थी। साल, महीने अथवा दिन तक के बारे में पूछे जाने पर भी इकथियांदर एक ही जवाब दिये जाता: "मैं नहीं जानता।" फिर भी उसे मानसिक दृष्टि से असमर्थ घोषित नहीं किया जा सकता था, क्योंकि विशेषज्ञ महसूस करते थे कि उसकी मानसिक स्थिति का कारण उसकी असाधारण पृष्ठभूमि थी और उसकी जानकारी की परिधि का सीमित होना अनिवार्य था। अन्त में वे इस बात पर सहमत हुए कि "अपनी कार्रवाइयों के लिए वह ज़िम्मेदार नहीं है।" इससे क़ानूनी तौर पर उसे जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता था। उसके ख़िलाफ़ मुक़द्दमा वापस ले लिया गया

और अभिभावक मुक़र्रर किये जाने का सुझाव रखा गया। फ़ौरन ही दो व्यक्ति सामने आ गये: ज़ुरीता और बाल्तासार।

साल्वातोर ने ठीक ही कहा था कि अपना बदला चुकाने के लिए ज़ुरीता ने उसके ख़िलाफ़ मुख़बिरी की थी। लेकिन यह कहानी का केवल एक अंश था। ज़ुरीता इकथियांदर को अपने हाथों में वापस लेना चाहता था और उसने देखा कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अभिभावकता सब से सहज रास्ता है। ज़ुरीता ने अधिकारियों को रिश्वत के तौर पर कई दर्जन बढ़िया मोती देने में भी संकोच नहीं किया और अब वह मज़े से विश्वासपूर्वक नतीजे का इन्तज़ार कर रहा था।

अपने पितृत्व का दावा करते हुए बाल्तासार ने भी मांग की कि उसे अभिभावकता का अधिकार दिया जाये। लेकिन यह व्यर्थ चेष्टा थी। लार्रा की कोशिशों के बावजूद विशेषज्ञों ने उसके मुवक्किल की पितृता पर केवल एक गवाह के आधार पर— और वह भी बाल्तासार का भाई—विचार करने से इनकार कर दिया।

इस मामले में पर्दे के पीछे जो प्रभाव काम कर रहे थे, उनके बारे में लार्रा को मालूम नहीं था। साल्वातोर के मुक़द्दमे में बाल्तासार मुद्दई के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उपयोगी था, जिसका बेटा उससे छीन लिया गया था; लेकिन इकथियांदर के अभिभावक के रूप में बाल्तासार क़ानून और गिर्जे के हितों के प्रतिकूल बैठता था।

क्रिस्टो, जो अब अपने भाई के पास रहने लगा था, बाल्तासार के बारे में बड़ा चिन्तित था। बूढ़ा इण्डियन खाना-सोना भूलकर घण्टों जड़वत् बैठा रहता, फिर सहसा बेहद उत्तेजित होकर दूकान के अंदर चक्कर लगाने और "मेरा बेटा! मेरा बेटा!" चिल्लाने लगता और प्रत्येक स्पेनी को गालियां देता।

ऐसे ही एक दौरे के बाद बाल्तासार ने एक दिन क्रिस्टो से कहा:

"भैया, मैं जेलख़ाने जा रहा हूं। मैं अपने सब से बढ़िया मोती जेलरों की नज़र कर दूंगा ताकि वे मुझे मेरे बेटे से मिलने दें। मैं उससे बातें करूंगा। वह जान जायेगा कि मैं उसका बाप हूं। उसकी रगों में मेरा ख़ून ज़रूर बोल उठेगा।"

क्रिस्टो ने बहुतेरा समझाया लेकिन बाल्तासार ने एक नहीं सुनी। वह अपने हठ पर अड़ा रहा।

जेलख़ाने में उसने कुछ रखवालों की मिन्नत-समाजत की, कुछेक के सामने रोया-गिड़गिड़ाया, सभी को मोती नज़र किये और अंत में इकथियांदर की कोठरी में जा पहुंचा।

छोटी-सी कोठरी घुटन और बदबू से भरी थी। सीखचों से अटी खिड़की की दरार में से मद्धिम सी रोशनी अंदर आ रही थी; जेल के संतरियों ने बार-बार हौज़ का पानी बदलने की चिन्ता नहीं की, न ही वे मछलियों की वह जूठन उठाकर ले जाते रहे जो यह विचित्र क़ैदी भोजन करने के बाद छोड़ दिया करता था।

बाल्तासार हौज़ के निकट गया और पानी की सतह की ओर देखा जो एक अन्धियारे दर्पण के समान थी।

"इकथियांदर!" उसने आहिस्ता से कहा, फिर एक बार "इकथियांदर!" कहकर, पुकारा, परन्तु पानी की सतह पर हल्की सी लहर के अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ।

बाल्तासार ने कुछ देर तक इन्तज़ार किया, फिर अपना कांपता हाथ आगे बढ़ाकर गुनगुने पानी को छुआ। उसका हाथ किसी कन्धे से जा लगा। उसी क्षण इकथियांदर का सिर और उसके पीछे उसके कन्धे हौज़ में से बाहर निकल आये।

"तुम कौन हो? क्या चाहते हो?"

बाल्तासार घुटनों के बल बैठ गया और अपने हाथ आगे की ओर फैलाकर जल्दी-जल्दी बोलने लगा:

"इकथियांदर, तुम्हारा बाप तुमसे मिलने आया है।

तुम्हारा सगा बाप। यह साल्वातोर नहीं है। साल्वातोर बुरा आदमी है। उसने तुम्हारे शरीर को विकृत किया है। इकथियांदर! मेरी ओर ध्यान से देखो। तुम जानते हो न, मैं ही तुम्हारा बाप हूं!"

पानी इकथियांदर के घने बालों में से उसके पीले चेहरे पर से चू-चू कर गिर रहा था और ठुड्डी पर से पानी की बूंदें नीचे टपक रही थीं। उसकी उद्विग्न और कुछ कुछ चकित आंखें बूढ़े इण्डियन पर लगी थीं।

"मैं आपको नहीं जानता," इकथियांदर ने कहा।

"फिर एक बार देखो, इकथियांदर!" बाल्तासार बोला और सहसा उसने इकथियांदर का सिर अपनी छाती से लगा लिया और पागलों की तरह सिसकियां भरते हुए उसे बार-बार चूमने लगा।

इस अप्रत्याशित दुलार से बचने के लिए इकथियांदर हौज़ में तैरने और छींटे उड़ाने लगा, जिससे पानी की छोटी-छोटी लहरियां उठ-उठकर हौज़ के बाहर फ़र्श पर गिरने लगीं। सहसा एक मज़बूत हाथ बाल्तासार की गर्दन पर पड़ा और दूसरे क्षण किसी ने उसे ऊंचा उठा कर एक ओर पटक दिया। उसका सिर दीवार के साथ टकराया और वह फ़र्श पर लुढ़क गया।

आंखें खोलने पर बाल्तासार ने देखा कि ज़ुरीता की चौड़ी काया सामने खड़ी है, ज़ुरीता का दायां हाथ मुट्ठी की शक्ल में भिंचा हुआ है और दायें हाथ में वह एक काग़ज़ पकड़े विजेता की तरह उसे हिला रहा है।

"इसे देखते हो? यह अभिभावकता का हुक्मनामा है। अपने लिए किसी अमीर बेटे की तलाश तुम्हें अब किसी दूसरी जगह करनी होगी। जहां तक इस युवक का सवाल है, इसे मैं कल अपने साथ घर ले जा रहा हूं। समझे?"

दीवार के पास से, जहां वह पड़ा था, बाल्तासार ज़ोर से ग़ुर्राया। दूसरे क्षण वह चीख़ मार कर उठा और अपने दुश्मन पर टूट पड़ा। ज़ुरीता के हाथ में से हुक्मनामा

छीनकर उसे अपने मुंह में ठूंस लिया और उस स्पेनी पर घूंसे पर घूंसा चलाने लगा। ज़ुरीता ने ज़बरदस्त जवाबी वार किया।

संतरी ने जो दहलीज़ पर खड़ा लड़ाई देखे जा रहा था, महसूस किया कि वक़्त का तकाज़ा यही है कि तटस्थ रहा जाये; दोनों ने खुले दिल से उसकी मुट्ठी गरम की थी और वह दोनों के प्रति वफ़ादार रहना चाहता था। लेकिन जब ज़ुरीता बाल्तासार का गला घोंटने पर उतारू हो गया, तब संतरी कुछ हरकत में आया।

"बस, बस, इसका गला न घोंटिये।"

परन्तु ज़ुरीता ग़ुस्से में बावला हो रहा था और बाल्तासार को दबोचे जा रहा था। ऐन उसी वक़्त अगर एक सुपरिचित आवाज़ न सुनाई देती तो न जाने इसका क्या अंत होता।

"श्रीमान अभिभावक अपने नये कर्तव्य निभाने की तैयारी कर रहे हैं, ख़ूब!" साल्वातोर ने कहा। "तुम वहां खड़े-खड़े क्या देख रहे हो? क्या तुम अपना फ़र्ज़ नहीं जानते?" उसने संतरियों को इतने ज़ोर से फटकारा मानो वह उस जगह का गवर्नर हो।

साल्वातोर के शब्दों का फ़ौरी असर हुआ: दोनों आदमियों को छुड़ाने के लिए संतरी लपककर आगे बढ़े। शोर सुनकर अन्य संतरी भी आ गये और शीघ्र ही व्यवस्था क़ायम कर दी गयी।

जेलख़ाने में क़ैदी की स्थिति में भी साल्वातोर का आध्यात्मिक ओज और आदेश देने की सामर्थ्य क़ायम थी।

"इन्हें यहां से ले जाओ," उसने हुक्म दिया, "मैं इकथियांदर के साथ अकेला रहना चाहता हूं।"

संतरियों ने वैसा ही किया। ज़ुरीता और बाल्तासार ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर प्रतिवाद किया लेकिन इसके बावजूद उन्हें वहां से ले जाया गया और दरवाज़ा बंद कर दिया गया।

बूटों की चाप बंद होने पर साल्वातोर हौज़ के पास गया।

"बाहर निकल आओ, इकथियांदर," उसने जलथलिये से कहा, जिसने उसी क्षण पानी में से सिर निकाला था। "मैं तुम्हारी जांच करना चाहता हूं।"

इकथियांदर चुपचाप हुक्म बजा लाया।

"रोशनी के और नज़दीक आ जाओ," साल्वातोर ने कहा। "बस, ठीक है। सांस खींचो और निकालो। और गहरा। एक बार और। गहरी सांस लेना बंद कर दो। बस, ठीक है," इकथियांदर की छाती को ठकोरते और उसकी अव्यवस्थित श्वास-क्रिया को सुनते हुए साल्वातोर ने कहा।

"तुम्हारा दम फूल जाता है क्या?"

"हां, पिताजी," इकथियांदर ने कहा।

"इसमें दोष तुम्हारा ही है, तुम जानते हो," साल्वातोर ने कहा, "तुम्हें एक वक़्त में ज़्यादा देर ज़मीन पर नहीं रहना चाहिए था।"

इकथियांदर का सिर झुक गया और वह घड़ी भर के लिए गहरे विचारों में डूब गया। फिर उसने सीधा साल्वातोर की आंखों में आंखें डालकर देखा।

"परन्तु क्यों, पिताजी?" उसने पूछा, "क्या कारण है कि और लोग ज़मीन पर रहते हैं और मैं नहीं रह सकता?"

कचहरी में सवालों का जवाब देते समय साल्वातोर को इतनी कठिनाई नहीं हुई थी जितनी इस समय इकथियांदर की आंखों से आंखें मिलाने में, जिनमें से छिपी भर्त्सना झांक रही थी। लेकिन वह बराबर उसकी ओर देखता रहा।

"इसलिए कि तुममें एक ऐसा गुण है जो किसी अन्य मनुष्य में नहीं है: पानी के नीचे रहने की क्षमता," उसने कहा। "फ़र्ज़ किया तुम्हें यह चुनने का मौक़ा दिया जाये

कि या तो अन्य सभी लोगों की तरह ज़मीन पर रहो या केवल सागर में रहो, तो तुम क्या चुनोगे?"

"मैं नहीं जानता," क्षण भर सोचने के बाद इकथियांदर ने धीरे-से कहा। सागर और ज़मीन—जिसका मतलब था गुत्तिएरे—उसे समान रूप से प्रिय थे, पर अब वह गुत्तिएरे को खो चुका था।

"अब मैं तो कहूंगा, सागर," उसने कहा।

"वास्तव में उसे तुमने पहले से अपनी हुक्म अदूली के कारण चुन लिया है। अब चूंकि तुम्हारे शरीर के अंदर सन्तुलन बिगड़ गया है, मुझे डर है कि तुम केवल सागर में ही रहने के क़ाबिल रह गये हो।"

"सागर में, पिताजी, पर इस भयानक हौज़ में नहीं। मैं यहां मर जाऊंगा। काश, मैं फिर से सागर में लौट सकता!"

"जितनी जल्दी हो सका मैं जेलखाने से तुम्हें छुड़वाने की हर मुमकिन कोशिश करूंगा," अपनी आह को दबाते हुए साल्वातोर ने कहा। "दिल मज़बूत रखो, बेटा," और प्रोत्साहन के लिए उसका कन्धा थपथपाने के बाद साल्वातोर बाहर चला गया।

अपनी कोठरी में वापस पहुंच कर साल्वातोर एक तंग से मेज़ के पास रखे स्टूल पर बैठ गया और गहरे विचारों में डूब गया।

अन्य किसी भी सर्जन की भांति वह भी नाकामयाबी की कड़वाहट से परिचित था। वर्तमान कुशलता की प्राप्ति से पहले उसके नश्तर के नीचे बहुत से लोग दम तोड़ चुके थे। फिर भी उसका मन स्मृतियों के बोझ के नीचे दबा नहीं जा रहा था। हज़ारों की जान बचाने के लिए दर्जनों ने जान दी थी। इस अनुपात से उसके दिल को ढाढ़स मिलती थी।

पर यह स्थिति और थी। इकथियांदर उसके लिए विशेष गर्व का कारण था। इकथियांदर से प्रेम करते हुए वह

अपनी सर्वोत्तम उपलब्धि से प्रेम करता था। इसके अलावा इतने साल बीत जाने पर वह उस युवक से प्रेम करने लगा था और उसे अपना बेटा समझने लगा था। इसलिए साल्वातोर चिन्तित था और इकथियांदर की वर्तमान स्थिति के बारे में तथा इस बारे में सोच रहा था कि भविष्य में उसकी क्या गति होगी।

किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"अन्दर आ जाओ," साल्वातोर ने कहा।

"मैं मदाख़लत तो नहीं कर रहा हूं, प्रोफ़ेसर साहब?" अंदर क़दम रखते हुए जेलर ने धीमी आवाज़ में कहा।

"नहीं, नहीं, आइये," स्टूल पर से उठते हुए साल्वातोर बोला, "आपकी बीवी और बच्चा कैसे हैं?"

"कुशलपूर्वक हैं, धन्यवाद। मैंने उन्हें पत्नी की मां के पास, दूर एण्डीज़ में भेज दिया है।"

"ठीक किया, पहाड़ों की हवा से उन्हें निश्चय ही बहुत लाभ होगा," साल्वातोर ने कहा।

दरवाज़े की ओर घूम कर देखने के बाद जेलर साल्वातोर के और निकट आ गया।

"आपने मेरी पत्नी की जान बचायी है, प्रोफ़ेसर साहब," वह कहने लगा, उसकी आवाज़ पहले से भी ज़्यादा धीमी थी। "मैं उससे प्रेम करता हूं। मैं आपका..."

"शुक्रिया अदा करने की ज़रूरत नहीं है, मैंने केवल अपना फ़र्ज़ अदा किया है।"

"मैं आपका ऋण कैसे उतारूं?" जेलर ने कहा। "इतना ही नहीं। मेरी शिक्षा नाम मात्र को हुई है, परन्तु मैं अख़बार पढ़ता हूं और प्रोफ़ेसर साल्वातोर की योग्यता को जानता हूं। मुझसे पूछें तो आप जैसे आदमी को जेलख़ाने में, चोरों और आवारा लोगों के साथ नहीं रखा जाना चाहिए।"

"जहां तक मैं जानता हूं," साल्वातोर ने मुस्कराकर

कहा, "मेरे विद्वान सहकर्मी तो पागलखाने में मेरी तबदीली करवाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं।"

"पागलखाना भी तो जेल ही है," जेलर ने झट से जवाब दिया, "बल्कि उससे भी बुरा है। वहां आपके साथ चोरों के बजाय पागल लोग होंगे। नहीं, ऐसा हरगिज़ नहीं होना चाहिए!" और अपनी आवाज़ को और भी ज़्यादा धीमी करके, जेलर ने फुसफुसाकर कहा: "मैंने अपने परिवार को केवल स्वास्थ्य के लिए ही पहाड़ों पर नहीं भेजा है। मैंने निश्चय किया है कि मैं यहां से भाग निकलने में आपकी मदद करूंगा और खुद भी यहां से भाग जाऊंगा। ज़रूरत से मजबूर होकर मैंने यह नौकरी की थी, पर मुझे इससे नफ़रत है। वे लोग मुझे ढूंढ़ नहीं पायेंगे। जहां तक आपका सवाल है, आप देश छोड़ जायेंगे। उसके अलावा एक बात और भी मैं आपसे कहना चाहता था," कुछ देर तक सकुचाने के बाद उसने जोड़ा, "मैं एक सरकारी रहस्य बता रहा हूं, एक राजकीय रहस्य..."

"ऐसा कहने की आपको ज़रूरत नहीं है," साल्वातोर ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"हां, लेकिन... मैं ऐसा नहीं कर सकता... मैं उस भयानक हुक्म की तामील नहीं कर सकता, जो मुझे दिया गया है। ज़िन्दगी भर मेरी अन्तरात्मा मुझे कचोटती रहेगी। जब मैं यह सोचता हूं कि मैं यह भेद आपको बता रहा हूं तो मुझे ढाढ़स मिलता है। आपने मुझ पर इतना बड़ा एहसान किया है, और अधिकारी—मुझे उनका कोई भी एहसान नहीं चुकाना है, जो मुझे एक जुर्म करने के लिए मजबूर कर रहे हैं।"

"यह बात है क्या?" साल्वातोर के मुंह से केवल यही शब्द निकल पाये।

"जी हां; मुझे पता चला है कि वे इकथियांदर को न तो बाल्तासार के और न ही ज़ुरीता के हवाले करेंगे, भले ही ज़ुरीता अभिभावक हो और इसके लिए उसने बहुत

बड़ी रिश्वत दे रखी हो। वे—वे इकथियांदर की हत्या करने जा रहे हैं।"

सात्वातोर तनिक चौंका।

"क्या यह बात है? आगे कहिये!"

"उसकी हत्या करने जा रहे हैं। लाट पादरी सारा वक़्त इसी कोशिश में रहा है, हालांकि वह स्पष्टत: इस बात को मुंह पर नहीं लाया। उन्होंने मुझे एक क़िस्म का ज़हर दिया है, जिसे शायद पोटेशियम सायनाइड के नाम से पुकारा जाता है। आज मुझे यह ज़हर इकथियांदर के हौज़ में डालना है। जेलख़ाने का डाक्टर भी इस साज़िश में शामिल है। वह इस बात की तसदीक़ कर देगा कि मौत उस आपरेशन के कारण हुई जो आपने इकथियांदर को जलथलिया बनाने के लिए किया था। अगर मैं यह काम नहीं करूंगा तो मेरे लिए सचमुच मुसीबत खड़ी हो जायेगी। मेरे भी बाल-बच्चे हैं... फिर वे मुझे भी मार डालेंगे और किसी को यह पता न चलने पायेगा। उन्होंने मुझे ऐन उस जगह फंसा लिया है जहां वे चाहते थे। पहले मुझसे एक भूल हो गयी थी—लेकिन कोई गंभीर बात नहीं थी। उसे लगभग आकस्मिक ही कहना चाहिए। कुछ भी हो, मैंने निश्चय कर लिया है, कि मैं भाग जाऊंगा। मैं इकथियांदर की हत्या नहीं कर सकता और न ही करूंगा। आप दोनों को बचा पाना—और इतने कम समय में—नामुमकिन है। लेकिन मैं आपको बचा सकता हूं। मैंने हर बात के बारे में सोच लिया है। इकथियांदर के लिए मुझे अफ़सोस है, लेकिन आपकी ज़िन्दगी ज़्यादा क़ीमती है। आप अपने हुनर से एक और इकथियांदर बना सकते हैं लेकिन संसार का कोई भी व्यक्ति एक और साल्वातोर नहीं बना सकता।"

जब वह अपनी बात कह चुका तो साल्वातोर ने उससे हाथ मिलाया और बोला:

"शुक्रिया, लेकिन अपनी ख़ातिर मैं आपको इस ख़तरे में नहीं डाल सकता।"

"ख़तरे की कोई बात नहीं है! मैंने हरेक बात के बारे में सोच लिया है।"

"ज़रा ठहरिये। मैं अपने लिए इसे मंज़ूर नहीं कर सकता। लेकिन अगर आप इकथियांदर को बचाने पर सहमत हो जायें तो आपका मुझपर बहुत बड़ा एहसान होगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है और मुझे निश्चय ही ऐसे मित्र मिल जायेंगे जो जेलख़ाने में से मुझे निकलवाने में मेरी मदद करेंगे। लेकिन इकथियांदर को आज़ाद करना होगा—जो कुछ आपने मुझे अभी अभी बताया है, उससे तो यह और भी ज़्यादा ज़रूरी हो जाता है।"

"आपका हुक्म सिर आंखों पर," जेलर ने कहा।

जेलर के चले जाने पर साल्वातोर मुस्कराया और मन ही मन कहने लगा:

"अच्छी बात है। इससे झगड़े की जड़ ही कट जायेगी।"

साल्वातोर कुछ देर तक कोठरी में चक्कर लगाता रहा, फिर मेज़ के पास गया, एक काग़ज़ पर कुछ लिखा और उठकर दरवाज़े को अनेक बार खटखटाया।

"कृपया जेलर साहब को मेरे पास आने के लिए कहें।"

जेलर के आने पर साल्वातोर ने उससे कहा:

"मेरी एक और प्रार्थना है। क्या आप ऐसा इन्तज़ाम कर सकते हैं कि मैं आज इकथियांदर से अन्तिम बार भेंट कर सकूं?"

"यह तो बड़ी मामूली बात है। आस-पास कोई भी अफ़सर नहीं है, सारा जेलख़ाना आपके लिए खुला है।"

"ख़ूब। और भी एक बात है।"

"फ़रमाइये।"

"इकथियांदर को आज़ाद करके आप मुझपर बहुत बड़ा एहसान करेंगे..."

"परन्तु प्रोफ़ेसर साहब, आपने भी मुझपर बहुत बड़े एहसान किये हैं।"

"अच्छी बात है, हम समझ लेंगे कि हम बराबर हो

गये," साल्वातोर बीच में बोल उठा। "मैं आपके परिवार की सहायता करना चाहता हूं। लीजिये, यह पुर्ज़ा लीजिये। इसपर केवल एक पता लिखा है जिसके नीचे साल्वातोर के स्थान पर मैंने "स" अक्षर लिखकर हस्ताक्षर किया है। जब भी कभी आपको पनाह या पैसे की ज़रूरत हो तो आप इस पते को याद कर लीजिये। आप इस आदमी पर विश्वास कर सकते हैं।"

"परन्तु..."

"बस बस, कुछ मत कहिये। अब मुझे इकथियांदर के पास ले चलिये।"

साल्वातोर को अपनी कोठरी में उस दिन दूसरी बार प्रवेश करते देख कर इकथियांदर हैरान हुआ। उसकी आंखों के भाव को देखकर तो वह और भी ज़्यादा हैरान हुआ, इतना अधिक अवसाद और दयालुता उसने उन आंखों में पहले कभी नहीं देखी थी।

"इकथियांदर, मेरे बेटे, मेरी बात सुनो," साल्वातोर ने कहा। "हम शीघ्र ही एक दूसरे से बिछुड़ने वाले हैं। इतनी जल्दी बिछुड़ने की मुझे भी आशा नहीं थी। शायद हम लंबे अर्से तक एक दूसरे से नहीं मिल पायेंगे। आज रात तुम्हें आज़ाद कर दिया जायेगा, लेकिन मैं अभी भी तुम्हारे बारे में चिन्तित हूं। अगर तुम यहां रहोगे तो शायद ज़ुरीता या उस जैसे ही किसी अन्य बर्बर के हाथों पड़कर ग़ुलाम बना लिये जाओगे।"

"परन्तु आपकी क्या गति होगी, पिताजी?"

"मुझे सज़ा दी जायेगी, और दो साल या इससे ज़्यादा अर्से के लिए जेलख़ाने में रखा जाऊंगा। यह कठिन समय तुम्हें किसी ऐसी जगह पर काटना होगा जो महफ़ूज़ भी हो और यहां से दूर भी। ऐसा एक स्थान है, दक्षिणी अमरीका से आगे, प्रशांत महासागर में तुआमोतू या निचले द्वीप-समूह पर। वहां पहुंचना और उस जगह को ढूंढ़ पाना तुम्हारे लिए आसान नहीं होगा, लेकिन उन सभी जोखिमों की

तुलना में जिनका सामना तुम्हें यहां रिओ-दि-ला-प्लाता में अपने दुश्मनों के हथकंडों से बचने के लिए करना पड़ेगा, वे सभी जोखिम बड़े सहल होंगे।

"अब तुम्हारे रास्ते के बारे में। तुम वहां दक्षिणी अमरीका के इर्द-गिर्द दक्षिणी अथवा उत्तरी रास्ते से पहुंच सकते हो। दोनों रास्तों की अपनी अपनी सुविधाएं और असुविधाएं हैं। उत्तरी रास्ता कुछ ज़्यादा लम्बा है। इसके अलावा तुम्हें अटलान्टिक महासागर से प्रशान्त महासागर में पनामा नहर में से होकर जाना पड़ेगा जो ख़तरनाक है। तुम फंस सकते हो, विशेषकर बांधों में, या किसी जहाज़ द्वारा कुचले जा सकते हो। नहर तंग और कुछ छिछली है। जिस जगह पर उसका विस्तार सबसे अधिक है, वहां वह 91 मीटर चौड़ी है, और केवल साढ़े बारह मीटर गहरी है, इसलिए महासागरों में जानेवाले आधुनिक जहाज़ों के ढांचे नहर के तले से लगभग रगड़ते हुए से जाते हैं।

"दूसरी ओर, तुम गर्म सागरों में यात्रा करोगे। इसके अलावा जहाज़रानी के तीन प्रधान मार्ग पनामा नहर के पश्चिम की ओर से जाते हैं: दो न्यूज़ीलैंड को जाते हैं, तीसरा फ़िजी द्वीपों तथा उनसे आगे जाता है। न्यूज़ीलैंड को जानेवाले दोनों रास्तों में से किसी एक को चुनकर और जहाज़ों के पीछे-पीछे तैरते हुए या उनसे चिपककर तुम अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच जाओगे। तुम्हें उत्तर की ओर थोड़ा और जाना पड़ेगा, इस तरह तुम वहां जा पहुंचोगे।

"दक्षिणी रास्ता ज़्यादा छोटा है, लेकिन तुम्हें ज़्यादा ठण्डे जल में, सबसे दक्षिणी भाग में बर्फ़ के बहते तोदों के निकट तैरना पड़ेगा, विशेषकर अगर तुम केप हॉर्न का चक्कर काटकर गये, मैगलन जलडमरूमध्य का चक्कर काटकर गये। मैगलन जलडमरूमध्य का चक्कर काटने की कोशिश करना बहुत बड़ी भूल होगी। वहां बहुत तूफ़ान उठते रहते हैं। बादबानी जहाज़ों के लिए तो वह एक तरह का क़ब्रिस्तान हुआ करता था, अब भी उसे बहुत ख़तरनाक

माना जाता है, विशेषकर पश्चिमी हिस्से में जहां वह ज़्यादा तंग है और जहां उसके तट पत्थरों से भरे हैं। सारा वक़्त पश्चिम की तूफ़ानी हवाएं पानी को थपेड़े लगाती रहती हैं, इसलिए तुम्हें बहाव के ख़िलाफ़ तैरकर और ऐसे भंवरों में से होकर जाना पड़ेगा जो तुम्हारे लिए भी घातक सिद्ध हो सकते हैं।

"इस तरह हम केप हॉर्न वाले रास्ते पर वापस पहुंच जाते हैं, भले ही वह ज़्यादा लम्बा हो। ठण्डे पानी की दिक़्क़त ज़रूर है लेकिन मुझे आशा है कि तुम धीरे-धीरे उसके अभ्यस्त हो जाओगे और तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। जहां तक ख़ुराक का सवाल है, महासागर के किसी भी भाग में वह तुम्हें बहुतायत में मिलती रहेगी।

"लेकिन पनामा नहर के रास्ते की तुलना में वहां से तुम्हारे लिए तुआमोतू द्वीप-समूह को ढूंढ़ना कुछ ज़्यादा कठिन होगा। वहां तुम्हें रास्ता दिखाने के लिए जहाज़रानी के चलते रास्ते नहीं होंगे। लेकिन तुम्हें अपने स्थान की स्थिति का पता चल जायेगा इस उपकरण की मदद से जिसे मैंने विशेष रूप से तुम्हारे लिये बनाया था, तुम्हें देशांतरों और अक्षांशों का पता चल जायेगा। मुझे डर है कि वे औज़ार तुम्हारे लिए काफ़ी बड़ा बोझ बन सकते हैं..."

"मैं अपने साथ लीडिंग को ले जाऊंगा। जो भी सामान ले जाना होगा वह उठा ले चलेगी। मैं यों भी उसे छोड़ना नहीं चाहता। वह मेरे बिना उदास भी बहुत होगी।"

"मैं नहीं जानता कौन किसके लिए ज़्यादा शोक मना रहा है," साल्वातोर ने मुस्कराकर कहा। "बस, फ़ैसला हुआ। जब तुम तुआमोतू द्वीप-समूह पर पहुंचो तो एक अलग-थलग मूंगा-द्वीप की खोज करना। उसे तुम एक ऊंचे मस्तूल से पहचान लोगे जिसके ऊपर, वायु की दिशा बतलानेवाली पंखी के तौर पर एक बड़ी मछली लगी होगी। तुम्हारी नजर उसपर ज़रूर पड़ेगी। उसे खोजने में तुम्हें एक, दो या तीन महीने तक का समय लग सकता है, लेकिन अन्त

में तुम अवश्य ही उसे ढूंढ़ लोगे। घबड़ाने की कोई बात नहीं। वहां पानी गुनगुना है और घोंघे भारी मात्रा में पाये जाते हैं।"

साल्वातोर ने इकथियांदर को बिना बीच में बोले धैर्य से बातें सुनना सिखा रखा था, लेकिन यहां इकथियांदर एक सवाल पूछने का लोभ संवरण न कर पाया।

"लेकिन उस द्वीप पर मुझे क्या मिलेगा?"

"मित्र मिलेंगे। दयालु और निष्ठावान मित्र मिलेंगे," साल्वातोर ने कहा। "मेरा पुराना मित्र, विख्यात फ़्रांसीसी सागर-वैज्ञानिक आर्मान विल्बुआ वहां रहता है। बहुत साल पहले जब मैं यूरोप में था, तो मैंने उससे परिचय प्राप्त किया था और उससे मुझे गहरा प्रेम हो गया था। वह बेहद दिलचस्प आदमी है, पर उसकी चर्चा करने का यह वक़्त नहीं। मुझे आशा है तुम स्वयं उसे अपना दोस्त बना सकोगे और जान पाओगे कि वह प्रशांत महासागर में उस अलग-थलग मूंगा-द्वीप पर कैसे जा पहुंचा। वह वहां अकेला नहीं है। उसकी पत्नी, जो बड़ी नेक औरत है, तथा उनके दो बच्चे उसके साथ रहते हैं। उसकी बेटी वहां द्वीप पर ही पैदा हुई थी और अब उसकी उम्र 17 बरस की होगी, उसका बेटा उम्र में लड़की से बड़ा है, वह, मेरा ख़्याल है, कोई 25 साल का होगा।

"मेरे पत्रों से वे तुम्हें भली भांति जान गये हैं और मुझे यक़ीन है कि वे परिवार के एक सदस्य की भांति तुम्हारा स्वागत करेंगे..." साल्वातोर सहसा रुक गया। "बेशक, तुम्हें अपना बहुत सा समय पानी में बिताना पड़ेगा। लेकिन हर रोज़ दिन में कुछ घण्टे तुम तट पर जा सकोगे। शायद अगर तुम्हारी सेहत ने इजाज़त दी, तो बाद में तुम ज़मीन पर भी उतनी ही देर तक रह सकोगे जितनी देर तक पानी में।

"आर्मान विल्बुआ का व्यवहार तुम्हारे प्रति पिता के समान होगा, और तुम उसके वैज्ञानिक काम में उसके

लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हो। वर्त्तमान स्थिति को देखते हुए महासागर और उसके निवासियों के बारे में दर्जन भर प्रोफ़ेसर इतना नहीं जानते जितना तुम जानते हो," साल्वातोर के होंठों पर व्यंगपूर्ण मुस्कान खेल रही थी। "उन सनकी विशेषज्ञों ने तुमसे बेसिरपैर के सवाल पूछे और तुम जवाब नहीं दे पाये क्योंकि उनका तुम्हारे साथ कोई संबंध नहीं था। मिसाल के तौर पर, अगर वे तुमसे प्रवाहों, पानी के तापमान और रिओ-दि-ला-प्लाता और आस-पास के इलाक़े में नमक की मात्रा के बारे में सवाल पूछते, तो वे तुम्हारे जवाबों में से विज्ञान की एक मोटी सी सारगर्भित पुस्तक तैयार कर सकते थे। तुम कल्पना करो कि पानी के अंदर तुम्हारे अभियानों का सीधा संचालन यदि आर्मान विल्बुआ जैसा प्रतिभासम्पन्न वैज्ञानिक करे तो तुम कितनी अधिक मात्रा में तथ्य इकट्ठे कर पाओगे और उन्हें जनता को सौंपोगे। मुझे यक़ीन है कि तुम दोनों मिलकर सागर-विज्ञान पर एक ऐसी पुस्तक तैयार कर सकोगे जो इस विज्ञान के विकास में युगान्तकारी होगी और संसार में हलचल पैदा करेगी। तुम्हारा नाम उस पुस्तक की जिल्द पर आर्मान विल्बुआ के साथ छपेगा—वह ऐसा करने पर इसरार करेगा, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। यहां तुम जाहिल, लोभी लोगों के निकृष्ट हितों की सेवा करोगे, वहां तुम विज्ञान की सेवा करोगे, जिसका अर्थ है, समस्त मानवजाति की सेवा। मुझे विश्वास है कि उस गोलाकार द्वीप के निकट के स्वच्छ जल में और विल्बुआ परिवार में तुम्हें आश्रय और सुख प्राप्त होंगे।

"एक और छोटी-सी नसीहत तुम्हें दे दूं। ज्यों ही तुम सागर में पहुंचो—और यह आज रात को होना चाहिए—गुफ़ा के रास्ते से फ़ौरन घर चले जाना। इस समय अकेला जिम घर में है। जहाज़रानी के उपकरण, चाक़ू और अन्य चीज़ें साथ ले लेना, अपनी लीडिंग को

खोजना और फ़ौरन अपने रास्ते पर निकल जाना, पौ फटने का इन्तज़ार नहीं करना।

"अलविदा, इकथियांदर! नहीं, नहीं, फिर मिलेंगे!"

साल्वातोर ने इकथियांदर को छाती से लगाया और उसका मुंह चूम लिया। ऐसा उसने पहले कभी नहीं किया था। फिर वह मुस्कराया, और यह कहते हुए उसने इकथियांदर का कन्धा थपथपाया:

"तुम कामयाबी से यह रास्ता तय कर लोगे!" और कोठरी में से निकल गया।

छुटकारा

दिन भर काम करने के बाद ओलसन फ़ैक्टरी से लौटकर भोजन करने ही जा रहा था जब दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"कौन है?" इस मदाख़लत से खीझकर ओलसन चिल्लाया। मगर जब दरवाज़ा खुला तो सामने गुत्तिएरे खड़ी थी।

"अरे, यह तो गुत्तिएरे है। ख़ूब!" कुर्सी पर से उठते हुए ओलसन ने चिल्लाकर कहा, वह हैरान भी था और ख़ुश भी।

"ओलसन," गुत्तिएरे ने कहा, "तुम खाना खाते जाओ, मेरी चिन्ता नहीं करो।" और बन्द दरवाज़े से टेक लगाकर बोली: "मैं अपने पति और उसकी मां के साथ और ज़्यादा देर नहीं रह सकती थी। ज़ुरीता—उसकी यह हिम्मत!—उसने मुझपर हाथ उठाया। इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया। मैंने उसे हमेशा के लिए छोड़ दिया है, ओलसन।"

यह ख़बर सुनकर ओलसन के मुंह का कौर मुंह में ही रह गया।

"मैं इतना ज़रूर कहूंगा, कि इसकी सचमुच उम्मीद नहीं थी!" ओलसन ने कहा। "लो, यहां कुर्सी पर बैठो। तुमसे तो खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा है। लेकिन तुमने तो कहा था कि 'जिन्हें भगवान ने मिलाया है, उन्हें कोई भी इनसान अलग नहीं कर सकता।' क्या यह मनसूख़ हो चुका है? यह तुम्हारे लिए अच्छा है। तुम अपने बाप के पास लौट आयी हो क्या?"

"पिताजी को कुछ भी मालूम नहीं। ज़ुरीता ज़रूर मुझे पिताजी के यहां ढूंढ़ने जायेगा, इसलिए मैं अपनी एक सहेली के पास रह रही हूं।"

"तुम अब क्या करना चाहती हो?"

"मैं नौकरी करना चाहती हूं। मैं तुमसे यही पूछने आयी हूं कि क्या तुम अपनी फ़ैक्टरी में नौकरी हासिल करने में मेरी मदद कर सकते हो—भले ही मामूली सी ही नौकरी क्यों न हो।"

ओलसन ने व्यग्रता से सिर हिला दिया।

"इस वक़्त यह आसान नहीं है। पर तुम्हारे लिए मैं कोशिश करूंगा और जो बन पड़ा करूंगा," उसने कहा और कुछ देर रुकने के बाद बोला, "तुम्हारे पति को क्या यह मंज़ूर होगा?"

"मेरी बला से।"

"लेकिन वह ज़रूर तुम्हें नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करेगा। यह मत भूलो कि तुम अभी भी अर्जेन्टीना में हो। वह तुम्हें चैन से नहीं रहने देगा, जानती हो? क़ानून और जनमत भी उसी के पक्ष में होंगे।"

गुत्तिएरे क्षण भर सोचती रही फिर दृढ़ता से बोली:

"तो क्या? मैं कनाडा या अलास्का चली जाऊंगी..."

"ग्रीनलैंड, उत्तरी ध्रुव!" ओलसन भी उसके साथ कहता

गया, और फिर गंभीर आवाज़ में बोला: "हमें मिलकर इस बारे में सोचना होगा। यहां रहना तुम्हारे लिए ख़तरे से ख़ाली नहीं है, यह यक़ीनी बात है। मैं स्वयं इस जगह को छोड़ देने के बारे में सोच रहा हूं। अफ़सोस है कि हम पिछली बार भाग नहीं पाये। ज़ुरीता तुम्हें अग़वा करके ले गया और हमने सफ़र-टिकट और पैसे भी खो दिये। मैं सोचता हूं कि इस समय यूरोप तक का किराया भी तुम नहीं जुटा पाओगी, जिस तरह मैं नहीं जुटा सकता। मगर कौन कहता है कि हमें ज़रूर समुद्र-पार ही जाना चाहिए? अगर हम—मैं 'हम' पर ज़ोर इसलिए दे रहा हूं कि मैं उस वक़्त तक तुम्हें नहीं छोड़ूंगा जब तक मुझे इस बात का यक़ीन न हो जाये कि तुम महफ़ूज़ हो—अगर हम कम से कम सीमा पार करके पाराग्वाय चले जायें, या इससे भी बेहतर, ब्राज़ील पहुंच जायें, तो ज़ुरीता के लिए हमें ढूंढ़ निकालना और भी अधिक कठिन होगा। इससे हमें यूरोप या संयुक्त राज्य अमरीका तक के सफ़र की तैयारी के लिए वक़्त मिल जायेगा। क्या तुम्हें मालूम है कि डाक्टर साल्वातोर और इकथियांदर दोनों जेल में हैं?"

"इकथियांदर? तो क्या उसका पता चल गया है? वह जेल में क्यों है? क्या मैं उससे मिल सकती हूं?"

"इकथियांदर जेल में है और ज़ुरीता को उसका अभिभावक नियुक्त किया गया है। साल्वातोर का मुक़द्दमा कितना घृणित षड्यन्त्र था, तुम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती!"

"कितनी बुरी बात है! क्या उसे बचाया नहीं जा सकता?"

"मैंने हर मुमकिन कोशिश की लेकिन कोई कामयाबी हासिल नहीं हुई। फिर सहसा मुझे एक ज़बरदस्त साथी, जेलर मिल गया। आज रात हम इकथियांदर को आज़ाद

करायेंगे। मुझे अभी अभी दो रुक़्क़े मिले हैं, एक साल्वातोर की ओर से, दूसरा जेलर की ओर से।"

"मैं उससे मिलना चाहती हूं!" गुत्तिएरे ने कहा, "क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूं?"

ओलसन सोच में पड़ गया।

"मेरा ख़्याल है कि तुम्हें नहीं चलना चाहिए," वह अन्त में बोला, "मैं तो समझता हूं कि तुम्हें उससे बिल्कुल नहीं मिलना चाहिए।"

"मगर क्यों?"

"क्योंकि वह बीमार है; मनुष्य के नाते तो वह बीमार है, हालांकि मछली के नाते स्वस्थ है, तुम मेरा मतलब समझती हो न?"

"नहीं।"

"अब वह हवा में सांस नहीं ले सकता। ज़रा सोचो अगर वह तुम्हें देखेगा तो क्या होगा। उसका सुख-चैन छिन जायेगा और शायद तुम्हारा भी। वह तुमसे बार-बार मिलना चाहेगा, लेकिन ज़मीन पर रहना उसके लिए घातक सिद्ध होगा।"

गुत्तिएरे का सिर झुक गया।

"तुम ठीक कहते हो," बहुत देर चुप रहने के बाद वह बोली।

"उसके और अन्य लोगों के बीच एक बाड़ है—समुद्र। उसकी क़िस्मत का फ़ैसला हो चुका है। अब उसके लिए केवल समुद्र ही रह गया है, समुद्र के अतिरिक्त कुछ नहीं।"

"लेकिन वह वहां कैसे रह पायेगा, मेरा मतलब है, समुद्र के उन सभी जन्तुओं के बीच?"

"वह उनके बीच काफ़ी ख़ुश था, पेश्तर इसके कि..."

गुत्तिएरे का चेहरा लाल हो उठा।

"बेशक अब वह इतना ख़ुश तो नहीं होगा जितना पहले था।"

"छोड़ो, छोड़ो, ओलसन," गुत्तिएरे ने उदासी से कहा। "वक़्त गुज़रने पर सभी घाव भर जाते हैं। शायद फिर से उसे पहले सी शांति मिल पायेगी और वह बुढ़ापे तक सागर के जन्तुओं के बीच रहेगा, हां, अगर कोई शार्क मछली उसका वक़्त से पहले ख़ात्मा कर दे तो दूसरी बात है। मौत तो हर जगह समान है।"

बाहर सांझ के साये घिर आये थे, कमरे में अन्धेरा छाने लगा था।

"मुझे जाना है," ओलसन ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा। गुत्तिएरे भी उठ खड़ी हुई।

"पर क्या मैं कम से कम दूर से उसे देख सकती हूं?" गुत्तिएरे ने कहा।

"बेशक, बशर्ते कि तुम उसे दूर से ही देखो।"

"मैं वचन देती हूं।"

रात घिर आयी थी जब ओलसन भिश्ती का बाना पहने हुए छकड़े पर सवार कोर्नेल दिआस सड़क के सामने वाले फाटक में से होकर जेलख़ाने के आंगन में दाख़िल हुआ।

गार्ड ने उसे पुकारा:

"कहां जा रहे हो?"

"'समुद्री दैत्य' के लिए समुद्र का पानी लाया हूं," जेलर द्वारा दी गयी हिदायत के मुताबिक़ उसने जवाब दिया।

जेलख़ाने के उस असाधारण क़ैदी—'समुद्री दैत्य'—के बारे में गार्ड जानते थे, जो समुद्री पानी से भरे हौज़ में इसलिए रखा गया था कि वह साधारण नल का पानी सहन नहीं कर सकता था, और वे पानी के छकड़े को देखने के अभ्यस्त हो चुके थे।

ओलसन छकड़े को सीधा जेलख़ाने की इमारत तक ले गया, फिर जेलख़ाने के उस कोने का मोड़ काट गया जहां रसोईघर था और कर्मचारियों के लिए बने प्रवेशद्वार तक पहुंचकर छकड़े को रोक दिया। जेलख़ाने से सम्बन्ध

रखनेवाली सभी आवश्यक बातों का प्रबन्ध जेलर ने पहले से कर रखा था। प्रवेशद्वार और बरामदे के चौकीदारों को किसी न किसी बहाने से इधर-उधर भेजकर वह इकथियांदर को बाहर आंगन में ले आया।

"पीपे में घुस जाओ, फ़ौरन!" जेलर ने कहा।

इकथियांदर ने फ़ौरन हुक्म तामील की।

"अब यहां से निकल जाओ!"

ओलसन ने लगामों को झटका दिया, छकड़ा जेलखाने के आंगन में से बाहर निकला, आवेनीदा आल्वार के रास्ते से रीतेरो स्टेशन के सामने से होता हुआ आगे बढ़ने लगा।

कुछ दूरी पर एक युवती छकड़े के पीछे-पीछे चली जा रही थी।

जिस समय छकड़ा शहर में से निकलकर बाहर आया और समुद्र-तट के साथ साथ सड़क पर जाने लगा तो रात गहरी हो चुकी थी। हवा तेज़ी से बहने लगी थी। लहरें तट से टकरा रही थीं और इक्की-दुक्की चट्टानों पर बड़े कोलाहल के साथ प्रहार कर रही थीं।

ओलसन ने घूमकर पीछे की ओर देखा। दूर शहर की ओर जाती हुई सड़क पर किसी मोटर की बत्तियों के अलावा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह मोटर के निकल जाने का इन्तज़ार करने लगा।

मोटर हार्न बजाती और धड़धड़ाती पास से गुज़र गयी, उसकी बत्तियों की रोशनी चौंधियाती रही।

"वक़्त आ गया है," ओलसन ने सोचा, और गुत्तिएरे को ओट में हो जाने का इशारा करने के लिए पीछे की ओर घूमा। फिर उसने पीपे को खटखटाया:

"लो, पहुंच गये! बाहर निकल आओ!"

इकथियांदर ने पानी में से सिर निकाला और घूम गया। फिर वह पीपे में से बाहर निकला और कूदकर नीचे ज़मीन पर आ गया। उसकी सांस की गति तेज़ थी और वह कठिनाई से सांस ले पा रहा था।

"बहुत-बहुत शुक्रिया, ओलसन," इकथियांदर ने कहा और अपने भीगे हुए हाथ से ओलसन से हाथ मिलाया।

"शुक्रिया अदा करने की ज़रूरत नहीं। ख़ुदा हाफ़िज़, होशियार रहना। तट के बहुत नज़दीक नहीं तैरना। लोगों से सतर्क रहना वरना तुम्हें पता भी नहीं चल पायेगा और तुम फिर जेल में पड़े होगे।"

ओलसन को भी उन हिदायतों के बारे में मालूम नहीं था जो साल्वातोर ने इकथियांदर को दी थीं।

"अच्छा, अच्छा," इकथियांदर ने कहा, उसकी सांस फूल रही थी। "मैं तैरकर दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा, उन शान्त मूंगा-द्वीपों को चला जाऊंगा जहां जहाज़ नहीं जाते। बहुत-बहुत शुक्रिया, ओलसन!" और वह भागकर तट की ओर जाने लगा।

क़रीब-क़रीब वहां पहुंचने पर उसने घूमकर देखा।

"ओलसन! अगर कभी गुत्तिएरे मिले तो उसे मेरा प्यार देना और उसे कहना कि मैं उसे ज़िंदगी भर नहीं भूल पाऊंगा!"

और "विदा, गुत्तिएरे!" पुकारकर उसने पानी में छलांग लगा दी।

"विदा, इकथियांदर..." गुत्तिएरे ने जवाब में बुदबुदा दिया।

हवा ज़्यादा तेज़ी से बहने लगी थी जिसका मुक़ाबला करने के लिए युवक और युवती को झुककर चलना पड़ रहा था। सागर के अनवरत कोलाहल में बालू की सिसकार और छोटे-छोटे पत्थरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

गुत्तिएरे की बांह को किसी के हाथ ने थाम लिया।

"चलो चलें, गुत्तिएरे," ओलसन का विनम्र-सा आदेश सुनाई दिया।

वह गुत्तिएरे को सड़क पर ले आया।

गुत्तिएरे ने एक बार फिर सागर पर हसरत भरी नज़र डाली, ओलसन की बांह का सहारा लिया और दोनों शहर की ओर चल दिये।

* * *

सज़ा की मीयाद ख़त्म होते ही डाक्टर साल्वातोर घर लौट आया और फिर वैज्ञानिक अनुसन्धान में व्यस्त गया। इस समय वह किसी दूर-दराज़ के सफ़र की तैयारी कर रहा है।

क्रिस्टो अब भी उसका नौकर है।

ज़ुरीता ने एक नया बादबानी जहाज़ हासिल कर लिया है और केलीफ़ोर्निया की खाड़ी में मोती ढूंढ़ने जाता है। वह अमरीका का सब से धनी व्यक्ति तो नहीं बन पाया लेकिन उसे शिकायत करने की भी कोई वजह नहीं है।

गुत्तिएरे ने अपने पति को तलाक़ दे दिया है और ओलसन से शादी कर ली है। वे न्यू-यार्क में रहते हैं और दोनों वहां डिब्बेबन्दी की एक फ़ैक्टरी में काम करते हैं।

लगता है रिओ-दि-ला-प्लाता के तट पर लोग 'समुद्री दैत्य' को भूल चुके हैं। केवल उन रातों को जब बहुत घुटन होती है, समुद्र की ओर से आनेवाली किसी असाधारण आवाज़ को सुनकर बड़ी उम्र के मछुए युवा मछुओं से कहते हैं: "'समुद्री दैत्य' इसी तरह अपना शंख बजाया करता था," और उसके बारे में कोई क़िस्सा सुनाने लगते हैं।

लेकिन ब्वेनस-ऐरीज़ में एक आदमी है जो इकथियांदर को नहीं भूल सकता। नगर के सभी बच्चे उस बूढ़े नीम-पागल रेड इण्डियन को जानते हैं।

"वह देखो, 'समुद्री दैत्य' का बाप चला आ रहा है," वे उसके पीछे आवाज़ कसते हैं।

लेकिन वह उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता।

किसी स्पेनी व्यक्ति को देखते ही बूढ़ा उसे घूरने लगता है, फिर ज़मीन पर थूक देता है और कोई गाली बक देता है।

पुलिसवाले बाल्तासार से छेड़-छाड़ नहीं करते। वह ख़तरनाक पागल नहीं है, उसके सनकीपन से किसी को नुक़सान नहीं पहुंचता।

लेकिन समुद्र में जब कभी तूफ़ान उठता है तो एक अजीब क़िस्म की उत्तेजना उस बूढ़े रेड इण्डियन को जकड़ लेती है और वह शहर से बाहर पानी के किनारे तक जा पहुंचता है। इसकी परवाह किये बिना कि लहरें उसे बहा ले जायेंगी, जितनी देर तक तूफ़ान रहता है, वह चिल्ला-चिल्लाकर "इकथियांदर! इकथियांदर! मेरा बेटा..." पुकारता रहता है।

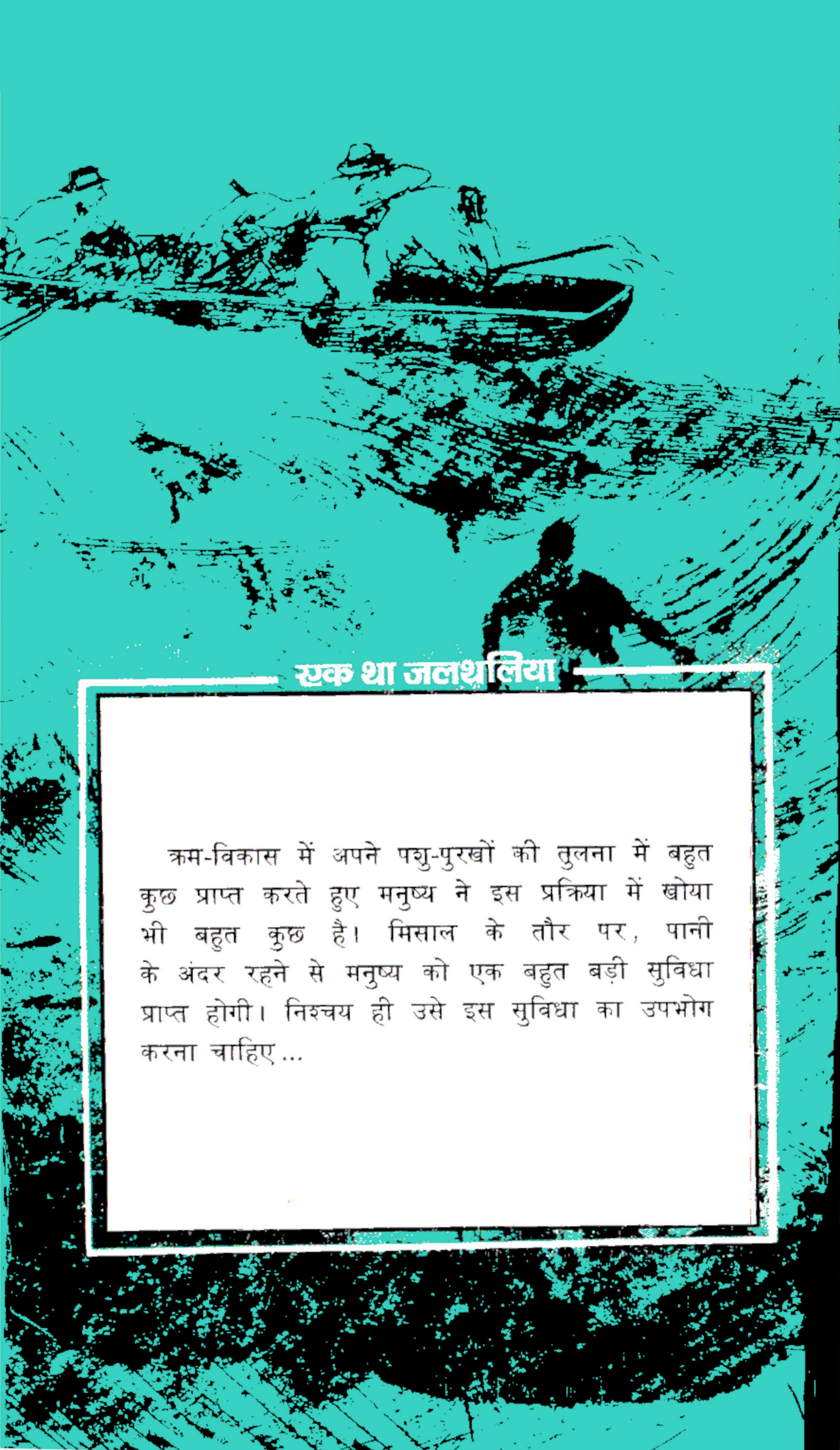
लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिलता।

1928

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा।

हमारा पता :
रादुगा प्रकाशन,
17, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।



एक था जलथलिया

क्रम-विकास में अपने पशु-पुरखों की तुलना में बहुत कुछ प्राप्त करते हुए मनुष्य ने इस प्रक्रिया में खोया भी बहुत कुछ है। मिसाल के तौर पर, पानी के अंदर रहने से मनुष्य को एक बहुत बड़ी सुविधा प्राप्त होगी। निश्चय ही उसे इस सुविधा का उपभोग करना चाहिए...